षड्द्रव्य विचार

मङ्गलम्

नमो अरिहंताणं. नमो सिद्धाण. नमो आ-
रियाण. नमो उवज्झयाण. नमो लोए सव्व
ाहूणं. एसोपंचनमुकारो. सव्व पावप्पणास-
ो. मंगलाणंच सव्वेसिं. पढमं हवइ मगलम्

दुहा.

ाही भगवती भारती, प्रणमी तेना पाय
ानाणीना चार भेद, अनुयोगे करी थाय।१।

गणित चरण करण कथा, द्रव्य ए चार उदार;
द्रव्य ए चारमां सारछे, धरतां भवजल पार २
अति गहन द्रव्यानुयोग, उदधि सम कहे जिन
तेनो लेश हुं वर्णवुं, अति उत्कंठित दीन ३
भाग्य दशा जो आकरी, सद्गुरु करुणा होय
निर्मळ बुद्धयादिकथी, समजे विरलो कोय ४
योग्य जीवने एहनो, लागे मनमां राग;
सम्मतिग्रंथे भाखीयुं, ते साधु महा भाग ५
उदासीनता संपजे, धरतां एहनुं ध्यान
निर्मल थावे आतमा, पामे केवलज्ञान ६
द्रव्यतणा षड् भेद छे, धर्माधर्म विचार
आकाश पुद्गल कालने, आतम ए मनोहार।
पंच धुर ते हेय छे, आतम उपादेय
गुण पर्याय छे तेहना, भविजन ने हेयज्ञे

पूर्व प्रणीत ग्रंथोदधि, सम्मत्यादिक सार
तेहनो लेश लही करी, वचन वदुं धरी प्यार ९
पंडितजन सुदृष्टिथी, देखे जो आ ग्रंथ
तार विचारी धारीने, पामे शिवपुर पथ १०
दुर्जन देखी दोषने, मनमां माने हर्ष
पंडित जन करे पारखु, माने ते उत्कर्ष ११

आ चतुर्गति रुप संसारमां आत्मा अनादि कालथी परिभ्रमण करे छे, अने कर्मना योगे जन्म जरा मरणादिरूप दुःख भोगवे छे. कर्मना संयोगथी एकेंद्री बेरेंद्री तेरेंद्री चौद्री अने पचेंद्रीपणुं पामे छे. दश दृष्टांते दुर्लभ मनुष्य जन्म पामीने पण श्रावककुल, सद्गुरु समागम, जिनवाणीनुं श्रवण तेनी श्रद्धा अने ते प्रमाणे वर्तवुं ए आदि उत्तरोत्तर दुर्लभ छे.

ज्यां सुधी आत्मानुं शुद्ध स्वरुप ओ-ळखातुं नथी त्यांसुधी शुद्ध सद्दहणा थती नथी.

श्री जिनेश्वर कथीत वाणी सांभळवाथी आत्मानुं स्वरुप यथातथ्य समजायछे, माटे ज्ञाननो घणो खप करवो. ज्ञान विना जीव अजीव आदि पदार्थनुं सम्यक् ज्ञान थतुं नथी. आत्मा नित्य केवी रीते छे; अनित्य केवी रीते छे; उत्पाद व्यय अने ध्रुव शी व-स्तु छे तेनुं ज्यां सुधी ज्ञान थतुं नथी, त्यां सु-धी जीव सम्यक् वस्तु जाणी शकतो नथी, अने हेय ज्ञेय अने उपादेय पण जाणी शक-तो नथी. सम्यक् वस्तुना ज्ञान थकी सम्यक्त्व प्राप्त थाय छे. माटे ज्ञाननी आवश्यकता छे.

ज्ञानना पण बे भेद छे १ व्यवहारज्ञान २ निश्चयज्ञान.

व्यवहारज्ञान–एटले अलंकार, व्याकरण, अन्य मतियोना ग्रथ तथा गणितानुयोग, कथानुयोग, चरणकरणानुयोगनुं जाणपणुं, ए सर्व व्यवहार ज्ञान छे. तथा उपयोग विना सूत्र सिद्धांतना अर्थ करवा ए पण व्यवहार ज्ञान छे. हठ समाधि ते पण व्यवहार ज्ञानछे. एमांथी मुक्ति मळती नथी, पण आत्माना स्वरुपनु सम्यक् जाणवुं, षड् द्रव्यना गुण पर्यायनुं जाणवुं,उत्पाद व्यय अने ध्रुवनुं जाणवुं, ते थकी निश्चय ज्ञान पूर्वक मुक्ति थाय छे. पांच द्रव्य त्याग करवा योग्य छे, एमां आत्मानी वस्तु कंइ नथी, ए पांचमां पण पुद्गल द्रव्यना संयोग संबंधे आ आत्मा परवस्तु पोतानी मानी बेठो छे, पण वस्तुतः ते पोतानी नथी. ज्ञान वस्तु आत्मानी छे.

अनंतज्ञान, अनंत दर्शन, अनन्त चारित्र अने अनंत वीर्यनो भोक्ता आत्मा अरुपी असंख्य प्रदेशमयी छे. तेनुं जे ज्ञान तेने निश्चय ज्ञान कहे छे.

आत्मा वस्तु अनादि अनंत छे, तेने अनादिथी कर्मनो संयोग थयो छे, तेथी दुःखी थाय छे. भवी साथे कर्मनो संबंध अनादि सांत भांगे छे. अभवी साथे कर्मनो संबंध अनादि अनंतमे भांगे छे.

कर्मना आठ प्रकार छे—ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र, अने अंतराय एम आठ कर्म छे, तेनी उतर प्रकृति १५८ छे. ते कर्मरुप जड वस्तुनो प्रपंच विचित्र छे. जेम ब्राह्मीरुप जड औ-

पथिना भक्षण थकी बुद्धिनुं स्फुरायमानपणु थाय छे, तेम कर्म वस्तु जे जडरूपे छे, तेना संबंध थकी आत्मा विचित्र आकारे देखाय छे, अने जुदा जुदा प्रकारना शरीरने धारण करे छे, तेम पांचइद्री, मन, वचन अने कायरूप पुद्गल वस्तुने धारण करे छे, ए सर्व कर्मना प्रपच छे, ए कर्म पुद्गलास्तिकाय छे. जड छे. सक्रिय छे, तेमां आत्मापणुं नथी, एम ज्यारे ज्ञान थाय छे त्यारे तेनाथी मोह उतरे छे. षड् द्रव्यनुं ज्ञान थवाथी समकितनी प्राप्ति थाय छे. ते षड् द्रव्य देखाडे छे.

(१) धर्मास्तिकाय (२) अधर्मास्तिकाय (३) आकाशास्तिकाय (४) पुद्गला-

स्तिकाय (५) काळ (६) जीवास्तिकाय—ए छ द्रव्य शाश्वतां छे.

ए छ द्रव्यना अनुक्रमे गुण कहे छे.

१ धर्मास्तिकायना गुण ४ (१) अरुपी (२) अचेतन (३) आक्रिय (४) गतिसहाय

२ अधर्मास्तिकायना गुण ४ (१) अरुपी २ अचेतन (३) आक्रिय (४) स्थितिसहाय

३ आकाशास्तिकायना गुण ४ (१) अरुपी (२) अचेतन (३) आक्रिय (४) अवगाहनादान

४ पुद्गलास्तिकायना गुण४ (१) रुपी (२) अचेतन (३) सक्रिय (४) मिलण विखरण पूरणगलन

५ कालद्रव्यना गुण ४ (१) अरुपी

(२) अचेतन (३) अक्रिय (४) नवापुराण
वर्तना लक्षण

६ जीवद्रव्यना गुण ४ (१) अनंतज्ञान
(२) अनतदर्शन (३) अनंतचारित्र (४) अ-
नतवीर्य ए छ द्रव्यना गुण कह्या ते नित्य
ध्रुव रुपे छे.

छ द्रव्यना अनुक्रमे चार चार पर्याय कहेछे.
१ धर्मास्तिकायना (१) खंध (२) देश
(३) प्रदेश (४) अगुरु लघु
२ अधर्मास्तिकायना (१) खंध (२) देश
(३) प्रदेश (४) अगुरु लघु
३ आकाशास्तिकायना (१) खंध (२) देश
(३) प्रदेश (४) अगुरु लघु
४ पुद्गल द्रव्यना (१) वर्ण (२) गंध

३ रस (४) स्पर्श (अगुरुल-
घु सहित)

५ कालद्रव्यना (१) अतीत (२) अनागत
(३) वर्तमान (४) अगुरु लघु

६ जीवद्रव्यना (१) अव्याबाध (२) अनवगाह
(३) अमूर्तिक (४) अगुरु लघु

ए छ द्रव्यना छ पर्याय कह्या.

हवे ए छ द्रव्यना गुण पर्यायनुं साधर्म्यकहे छे.

अगुरु लघु पर्याय छए द्रव्यमां सरखो छे. अरुपी गुणे करी पांच द्रव्यनुं साधर्म्य छे. एक पुद्गल द्रव्यमां अरुपी गुण नथी. कारण के पुद्गलद्रव्य रुपी छे. तथा अचेतन गुणे करी धर्मास्तिकाय; अधर्मास्तिकाय; आ-

काश;पुद्गल अने काल ए पाच द्रव्यनुं सा-
धर्मपणु छे. जीवद्रव्यमां अचेतन गुण नथी,
'चेतनालक्षणोजीव इति वचनात्' सक्रियगुणे
करी जीव तथा पुद्गल ए बे द्रव्यनुं व्यव-
हारथी साधर्म्य छे. कर्म थकी रहीत सिद्ध
जीवोमां सक्रिय गुण नथी, बाकीना चार
द्रव्यमा सक्रिय गुण नथी; गति सहाय गुण
एक धर्मास्तिकायमां छे. बाकीना पांच द्रव्य-
मां नथी, स्थिति सहाय गुण एक अधर्मा-
स्तिकायमां छे. बीजा पांच द्रव्यमां नथी.
तथा अवगाहना गुण ते एक आकाशास्ति-
काय द्रव्यमां छे, बाकीना पांच द्रव्यमां न-
थी. वर्तना गुण एक काल द्रव्यमां छे, बीजा
पांच द्रव्यमां नथी. मिलण विखरण गुण पु-
द्गल द्रव्यमां छे, बाकीना पाच द्रव्यमां नथी,

तथा ज्ञानना गुण ते एक जीवद्रव्यमां छे, बाकीना पांच द्रव्यमां नथी. ए मूल गुण कोइ द्रव्यना कोइ द्रव्यमां मळता नथी.

एक धर्मास्तिकाय, बीजो अधर्मास्तिकाय, त्रीजो आकाश, ए त्रण द्रव्यना त्रण गुण तया चार पर्याय सरखा छे, अने अरुपी, अचेतन, अक्रिय ए त्रण गुणे करी काल द्रव्य पण ए समान छे.

हवे ए छ द्रव्यना गुण पर्याय स्वरूप जाणवाने सूत्रपाठ गाथा कहे छे.

परिणामि[1] जीव[2] मुत्ता[3] सपएसा[4] एग[5] खित्त[6]
किरिआय[7] ॥ णिच्चं[8] कारण[9] कत्ता[10] सव्वगय[11]
इयर[12] अप्पवेसे[13] ॥ १ ॥

अर्थ. नयानिश्चये छए द्रव्य परि-

णामी छे. कारण के धर्मास्तिकाय पोतानामां निश्चयनये परिणमी रह्युं छे, पण बीजा पांच द्रव्यमां परिणमतु नथी. बीजुं अधर्मास्तिकाय द्रव्य पण निश्चयनये पोताना स्वरुपमां परिणमी रह्युं छे, पण बीजा पांच द्रव्यमां परिणमतुं नथी. आकाशास्तिकाय पण निश्चयनये पोताना स्वरुपमाज परिणमे छे. काल द्रव्य पण निश्चय नये पोताना स्वरुपमां परिणमी रह्युं छे, पण बीजा पांच द्रव्यमां निश्चयनये परिणमतुं नथी. जो निश्चयनये जीव पुद्गल द्रव्यमां परिणमेतो कोइकाले कर्म थकी रहीत थइ सिद्धिपद पामे नही. व्यवहारनये जीवनाटकीयानी पेठे एकेंद्री; बेंद्री; तेंद्री; चौरेंद्री; देवता; मनुष्य; तिर्यंच;

नारकी. अने समुछिंम पंचेंद्रीरुप नवा नवा पुद्गलना वेष पेहेरी नवां नवां नाम धरावी आत्मभान भूल्यो छतो चार गतिरुप संसार नगरना चोराशीलाख चउटामां अनादिकाळथी अनेक दुःख सहन करतो भमतो फरे छे. ए रीते आ जीव कर्मरुप पुद्गलमां परिणम्यो छतो भटक्या करे छे. परंतु निश्चयनये जीव सदा शाश्वतो छे, अने सत्ताए सिद्ध समान छे. व्यवहारनये जीव अने पुद्गल ए बे द्रव्य परिणामी छे. तथा पुद्गलास्तिकाय द्रव्यना पण निश्चय नये परमाणुआ सर्व पोताने स्वभावे रह्या छे, अने व्यवहार नये पुद्गल परमाणुआ मली खंध थाय छे, पण जो निश्चयनये खंध थातो होत तो कोइ

काले ए खंध विखराइ जात नहीं. सदा काल खंध भावेज रहेत. परतु तेमतो रहेता नथी, माटे व्यवहारनये पुद्गलना परमाणुआ मळी खंध थाय छे, अने पाछा खंध विखराइ पण जाय छे. निश्चयनये परमाणुआओ पोतपोताने स्वभावे सदा शाश्वता छे, पण कोइ काले वधशे घटशे नहीं. वाळ्या वळशे नहीं. गाळ्या गळशे नहीं. ए रीते ए छ द्रव्य निश्चयनये पोतपोताने स्वभावे परिणामिक जाणवां. व्यवहार नये धर्म; अधर्म; आकाश; अने काल ए चार द्रव्य अपरिणामी छे. अने जीव तथा पुद्गल ए बे द्रव्य परिणामी छे. केमके व्यवहार नयने मते जीव समये समये अनता कर्मरूप वर्गणानां दळीयां ले छे, अने समये समये अनंतां

कर्मरुप वर्गणानां दळीयां खेरवे छे, पण जो नि-
श्चयनये कर्मनुं ग्रहण जीव करतो होय तो
कोइ काले कर्मथकी रहीत थाय नहीं.
आत्मा राग अने द्वेषे परद्रव्यमां प-
रिणमे छे, रागद्वेष रुप मोहनी अशुद्धताए
पुद्गल परमाणुआना स्कंधोने ग्रहण करे छे
अने मनुष्य देवता नारकी तथा तिर्यंचना
शरीर रुप खंध प्रते नीपजावे छे. ते खंध
स्थिति प्रमाणे रहे छे, वळी पाछा खेरवे छे.
वळी वीजा परमाणुआओने ग्रहण करी नवा
शरीर रुप खंधने नीपजावे छे, केटलाएक
पुद्गल परमाणुआ स्कंधरूपकर्मने ग्रहण करी
पाछा खेरवे छे, एम व्यवहार नये अनादि
काळथी जीव पुद्गलने परिणमनपणानी घ-
टमाल समये समये चाली रही छे, शुभपु-

द्गलनो संबंध थवाथी जीव सुख माने छे, अने अशुभ पुद्गलनो संबंध थवाथी जीव दुःख माने छे, ते पुण्य पापरुप जाणवु पण ए स्ववस्तु नथी. एम व्यवहार नयथी जीव अने पुद्गल ए वे द्रव्य परिणामी छे.

हवे छ द्रव्यमां जीव द्रव्य अने अजीव द्रव्यनुं स्वरूप वतावे छे, नाणंच दंसणचेव चरित्तंच तवोतहा, वीरियंउवओगोअ एअंजीअस्सलरवणं. ॥ १ ॥

अर्थ–ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य अने उपयोग जेनामां होय, तेने जीव कहे छे. अने वाकीनाने अजीव कहे छे. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशस्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय अने काल, ए पांच द्रव्य अजीव

छे. कारण के ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप वीर्य अने उपयोगरुप जीवनुं लक्षण तेमनामां नथी. जीव द्रव्य ते जीव छे. 'चेतनालक्षणो जीव इतिवचनात्'

छए द्रव्यमां पुद्गल द्रव्य मूर्तिमंत छे. अने शेष पांच द्रव्य अमूर्त छे. धर्म, अधर्म आकाश, अने काल ए चार द्रव्य अमूर्त छे. जीवद्रव्यना बे भेद छे. सिद्ध अने संसारी, तेमां सिद्धना जीव अमूर्तिमंत छे. अने संसारी जीवो कर्मोपाधिथी मूर्तिमंत छे. निश्चयनये जीव अरुपी छे माटे अमूर्ति कहेवाय छे. अने व्यवहारनये करी देवता, मनुष्य, तीर्यंच अने नारकी रुप जीवना पांचसे त्रेसठ (५६३)

भेद थाय छे, ते सर्वे मूर्तिरुपे जाणवा. व्यवहार नयथी पुद्गल द्रव्यना अनंता परमाणुआ मळी खंध बने छे, त्यारे नजरे दीठामां आवे छे, माटे एने मूर्त कहेवाय छे. छ द्रव्यना स्वरुपमां मूर्त अमूर्तनो विचार कह्यो.

हवे सप्रदेशी अने अप्रदेशीनो विचार कहे छे.

छ द्रव्यमां पांच द्रव्य सप्रदेशी छे, अने एक कालद्रव्य अप्रदेशी छे, धर्मास्तिकाय असंख्यात प्रदेशमय छे. अधर्मास्तिकाय असंख्य प्रदेशमय छे. आकाश द्रव्य अनंत प्रदेशी छे. जीवद्रव्य असंख्यात प्रदेशी छे. जीव द्रव्य अनंता जाणवा. तथा पुद्गल परमाणुआ (उपचारथी) अनंत प्रदेशी छे,

अने एकेक परमाणुआमां अनंता पर्याय रह्या छे. परमाणुआ अनंत छे. ए रीते पांच द्रव्य सप्रदेशी छे, अने कालद्रव्य अप्रदेशी छे, एनो गणित काल तो उत्पाद व्ययरुप पलटण स्वभावे अढी द्वीप प्रमाणे जाणवो. ए रीते षड् द्रव्यमां सप्रदेशी अने अप्रदेशीनो विचार कह्यो.

षड् द्रव्यमां त्रण द्रव्य एक, अने त्रण द्रव्य अनेक जाणवां. कारणके धर्मास्तिकाय द्रव्य असंख्यात प्रदेशी,लोकव्यापी एक जाणवुं. तेमज अधर्मास्तिकाय द्रव्य असंख्यात प्रदेशी लोकव्यापी एक जाणवुं. तेमज आकाशास्तिकाय द्रव्य पण अनंत प्रदेशी लोकालोकव्यापी एक जाणवुं, एम ए त्रण द्रव्य ते एक कहीए, अने जीव द्रव्य छे ते लोक

व्यापी अनंतां जाणवां, ते एकेक जीवना असंख्याता प्रदेश छे, अने एकेक प्रदेशे अनंति कर्मनी वर्गणाना थोकडा लाग्या छे. तथा जीवथकी रहीत घटपट दंड प्रमुख वीजा पुद्गलना छुटा स्कंध पण अनंता छे, माटे जीव थकी पुद्गल द्रव्य अनंतगुणां जाणवां, अने एकेकी कर्म वर्गणामां अनंत पुद्गल परमाणुआ रह्या छे ते परमाणुआ द्रव्य थकी सदाकाळ शाश्वता छे,माटे एकेक परमाणुआमां अनंता उत्पाद व्ययरुप कालना समय अतीतकाले व्यतीत थइ गया. तथा हजी पण अनंता समय आवते काले व्यतीत थाशे, अने परमाणुआ तो तेना तेज सदाकाळ शाश्वता छे. माटे पुद्गलद्रव्य थकी पण काळद्रव्यना समय अनंता जाणवा,

ए रीते जीव पुद्गल अने काल ए त्रण अनेक कहीए. ए रीते एक अनेकनो विचार षड्द्रव्यमां कह्यो.

हवे षड् द्रव्यमां क्षेत्र अने क्षेत्रीनो विचार दर्शावे छे.

छ द्रव्यमां आकाश द्रव्य, क्षेत्र छे अने बाकीनां धर्म, अधर्म, काल, पुद्गल, अने आत्मा, ए पांच द्रव्य आकाश क्षेत्रमां रहे छे, माटे क्षेत्री जाणवां. ते केवी रीते रह्यां छे ते बतावे छे. आंखनी पांपणनो एक वाळ ग्रहण करीने तेना खंड [भाग] एवा करीए के एक खंडना बे खंड न थाय. एवा सूक्ष्म खंड प्रमाणे आकाश क्षेत्र लइए, तेटलामां आकाशना असंख्याता प्रदेश रह्या छे, अने

तेटलामां धर्मास्तिकायना असंख्यात प्रदेश छे, तथा अधर्मास्तिकायना पण असंख्यात प्रदेश छे. अने निगोदीया गोळा पण असंख्याता रह्या छे. ते सर्व पड्या मुकीने तेमांहेलो एक गोळो लहीए ते एक गोळामां असंख्याती निगोद रही छे. ते असख्याती निगोद पडती मुकीने ते मांहेथी एक लहीए, ते एक निगोदमां पण अनंता जीव रह्या छे, ते जीवनी गणत्री वतावे छे, अनादि एक अतीतकाल छेडा रहीत, अनंतो काल गयो, तथा अनागत काल ते पण छेडा रहीत छे. ते सर्वेना जेटला समय थाय, तेनी साथे वर्तमान कालनो एक समय पण गणवो. एटले अतीत अनागत अने वर्तमानकालना जेटला समय थाय, ते सर्वने अनंतगुणा करीए एटला जीव

एक निगोदमां रह्या छे. ते सर्व जीव पड्या मुकीने ते मांहेथी मात्र एक जीव लइए ते एक जीवना असंख्याता प्रदेश छे. ते मध्ये एकेका प्रदेशे अनंती कर्मनी वर्गणाओ लागी छे. ते सर्व वर्गणाओ पडती मुकीने ते मांहेथी एक वर्गणा लहीए, ते एक वर्गणामां अनंता पुद्गल परमाणुआ रह्या छे. ते बतावे छे.

प्रथम परमाणुआना बे भेद छे. एक छुटा परमाणु अने बीजा खंधना. वळी स्कंधना बे भेद छे. एक जीव सहीत खंध, अने बीजा जीव रहीत खंध, ते घटपट दंड प्रमुख अजीव खंध जाणवा. त्यां प्रथम जीव सहित खंधनो विचार लखीए छीए.

बे परमाणुआ भेला थाय ते वारे द्व्यणुक खंध कहेवाय छे. त्रण परमाणुआ भे-

ला थाय, तेवारे त्र्यणुक खंध कहेवाय छे, एम असंख्याता परमाणुआ भेळा थाय, त्यारे असख्याताणुक खंध कहेवाय छे, एटला परमाणुआना खध थाय त्यां सुधीना खंध ते सर्वे जीवने ग्रहण करवा योग्य थता नथी. एटला परमाणुआना खंधने कोइ जीव ग्रहण करी शकतो नथी. परंतु अभव्य राशिना जीव चुम्मोत्तरमे वोले छे, ते थकी अनंत गुणाधिक परमाणुआ ज्यारे भेळा थाय, ते वारे औदारिक शरीरने लेवा योग्य वर्गणा थाय छे. ते औदारिकनी वर्गणाथी अनंत गुणाधिक दलीआं जेवारे भेलां थाय तेवारे वैक्रिय शरीरने लेवा योग्य वर्गणा थाय छे. वैक्रियनी वर्गणाथी अनंत गुणाधिक दळीयां जेवारे भेळां थाय, तेवारे आहारक

शरीरने लेवा योग्य वर्गणा थाय छे अने आहारकनी वर्गणाथी अनंतगुणाधिक दळीयां जेवारे भेळां थाय तेवारे तैजस शरीरने लेवा योग्य वर्गणा थाय छे. तैजसनी वर्गणाथी अनंतगुणाधिक दळीयां जेवारे भेळां थाय तेवारे एक भाषाने लेवा योग्य वर्गणा थाय छ तथा भाषानी वर्गणाथी अनंत गुणाधिक दळीयां भेगां थाय, तेवारे एक श्वासोच्छ्वासने लेवा योग्य वर्गणा थाय छे. ते श्वासोश्वासनी वर्गणाथी जेवारे अनंत गुणाधिक दळीआं भेगां थाय, तेवारे एक मनने लेवा योग्य वर्गणा थाय छे, ए सातमी मनोवर्गणाथकी पण आठमी कार्मण वर्गणामां अनंतगुणाधिक परमाणुआ स्कंध जाणवा. एवी जीवने रागद्वेषनी अशुद्धताथी अनंत कर्मनी

वर्गणाओ लागी छे, तेथी जीवना ज्ञानादिक गुण दवाई गया छे. माटे जीव थकी पुद्गल द्रव्य अनंत गुणा जाणवा. ते पुद्गलरुपी छे. अचेतन छे. सक्रिय छे. पूरणगलन छे. जीवे अनंती पुद्गल परमाणुआ रुपी ऐंठ वारवार ग्रहण करी, तोपण तेथी तृप्ति पामतो नथी. पारकी वस्तु पोतानी मानी वेठो छे. अहो जीव द्रव्य अनंत शक्तिवाळु छे तेने पुद्गलद्रव्ये पोताना कवजामां लीधुं छे, तेने संगे राच्यो माच्यो छे, माटे परवस्तु उपरथी मोह उतारवो, अने पुद्गल द्रव्य अन्य वस्तु जाणी तेनाथी दूर रेहेवु ए सार छे.

पूर्वे कहेली आठ वर्गणा जीवने अनादि काळथी लागी छे. औदारिक; वैक्रिय; आहा-

रक; तैजस; ए चार वर्गणा बादर छे. तेमां पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस, अने आठ स्पर्श ए वीश गुण जाणवा. बाकीनी चार वर्गणा सूक्ष्म छे. तेमां शोल गुण छे. तथा एक परमाणुआमां एक वर्ण, एक गंध, एक रस अने बे स्पर्श मळी पांच गुण छे. ते परमाणुआ वधशे घटशे नहीं. छे तेटलाने तेटला रहेवाना. ए प्रकारे जीवनी तथा अजीवनी वेहेंचण करतां धारतां विचारतां समकितनी प्राप्ति थाय छे.

हवे ए छ द्रव्यमां सक्रिय केटलां अने अक्रिय केटलां ते बतावे छे.

निश्चयनये छए द्रव्य सक्रिय छे. अने व्यवहारनये चार द्रव्य अक्रिय छे, धर्मास्ति-

काय, अधर्मास्तिकाय, आकाश द्रव्य, अने काल ए चार अक्रिय छे. जीव अने पुद्गल, ए बे द्रव्य सक्रिय, व्यवहार नये छे. धर्मास्तिकाय द्रव्य ते जीव अने पुद्गल ए बे द्रव्यने चालवामां सहाय आपवा रुप क्रिया करे छे तथा निश्चयनये अधर्मास्तिकाय पण जीव द्रव्य अने पुद्गल द्रव्यने स्थिर थवामां सहाय गुणरूप क्रिया करे छे. तथा निश्चयनये आकाशास्तिकाय द्रव्य पण जीव तथा अजीवने अवगाहना आपे छे. तथा निश्चयनये काल द्रव्य पण जीव अजीवरुप वस्तुमां पोतानी वर्तनारुप क्रिया करतो जाय छे. तथा निश्चयनये जीव द्रव्य पण पोताना स्वरुपमां रमवारुप क्रिया करतो जाय छे, कारणके जो निश्चय-

नये शुभाशुभ रुप विभाव दशामां रमण करवारुप क्रिया करतो होय तो कोइ काळे जीव मोक्ष पामेज नहीं. माटे निश्चय नये तो जीव पोताना स्वरुपमां रमवा रुपज क्रिया करे छे. निश्चय नये पुद्गल परमाणुआ पण अनादि काळना पोतानी मळवा विखरवारुप क्रिया करता जाय छे. ए रीते छए द्रव्य निश्चय नये पोतपोतानी क्रिया करे छे माटे सक्रिय छे.

व्यवहारनये धर्म, अधर्म, आकाश अने काळ, ए चार द्रव्य अक्रिय जाणवां. तथा जीव अने पुद्गल ए बे-द्रव्य सक्रिय जाणवां. कारणके व्यवहार नयने मते जीव, रागद्वेषरुप अशुद्धताए करी समय समय अ-

नंता पुद्गल परमाणुआस्कंधनुं ग्रहणरुप क्रिया करे छे अने पुद्गल परमाणु कर्मस्कंधनो जीवने वळगवानो स्वभाव छे. पुद्गल परमाणुआ कर्मस्कंधो वलगवारुप क्रिया करे छे. अनादिकाळनां जीव अने पुद्गल ए बे द्रव्य मळवा विखरवारुप क्रिया करे छे माटे सक्रिय जाणवां.

हवे ए छ द्रव्यमां नित्य केटलां अने अनित्य केटलां ते बतावे छे. निश्चयनये छए द्रव्य नित्य छे. अने निश्चयनये छए द्रव्य अनित्य पण छे. तथा व्यवहार नये तो चार द्रव्य नित्य जाणवां, अने बे द्रव्य अनित्य जाणवां. धर्मास्तिकायना अरुपी, अचेतन, आक्रिय, अने चलण सहाय, ए चार गुण, अने पर्यायमां धर्मा-

स्तिकायनो एक खंध, ए पांच नित्य जाणवा. तथा देश, प्रदेश, अने अगुरु लघु, ए त्रण पर्याय अनित्य जाणवा, अधर्मास्तिकायना पण अरुपी, अचेतन, अक्रिय, अने स्थिति सहाय, ए चार गुण तथा पर्यायमां अधर्मास्तिकायनो खंध, ए पांच नित्य जाणवा अने देश, प्रदेश तथा अगुरु लघु, ए पर्याय आनित्य जाणवा. आकाशास्तिकायना अरुपी, अचेतन, आक्रिय अने चोथो अवगाहना, ए चार गुण तथा पर्यायमां खंध, ए पांच नित्य जाणवा. तथा देश, प्रदेश अने अगुरु लघु, ए त्रण पर्याय आनित्य जाणवा. काळ द्रव्यना अरुपी, अचेतन, अक्रिय, अने वर्तना लक्षण, ए चारगुण नित्य जाणवा. तथा अतीत, अनागत, अने वर्त-

मान तथा अगुरुलघु ए चार पर्याय अनित्य जाणवा, पुद्‌गल द्रव्यना रूपी अचेतन, सक्रिय, पुरण गलन मिलन विखरण, ए चार गुण नित्य जाणवा तथा वर्ण गंध रस अने स्पर्श अगुरु लघु सहित ए चार पर्याय अनित्य जाणवा. जीवद्रव्यना ज्ञान, दर्शन, चारित्र, अने वीर्य ए चार गुण, अने अव्याबाध, अमौर्तिक, अनवगाह, ए त्रण पर्याय एम सात नित्य जाणवा. एक अगुरु लघु पयार्य अनित्य जाणवो, ए रीते निश्चयनये करी छ द्रव्य नित्य पण कहीए, अने अनित्य पण कहीए.

हवे व्यवहार नये धर्म, अधर्म, आकाश, अने काल, ए चार द्रव्य नित्य कहीए. तथा जीव अने पुद्‌गल ए बे द्रव्य अनित्य जाणवां. कारण के व्यवहार नये

जीव चारगतिमां जन्म मरणे देवता, मनुष्य, तिर्यंच, अने नारकीरुप नवा नवा भव धारण करे छे, माटे अनित्य कहीए. तथा व्यवहारनये पुद्गल द्रव्यना खंध पण सर्व अनित्य जाणवा, कारण के पुद्गल द्रव्यना खंध बने छे, अने पाछा विखरे छे, माटे अनित्य जाणवा. द्रव्यास्तिकायना मते जीव असंख्यात प्रदेशी नित्य सदाकाल शाश्वतो छे, अने अशुद्ध अनित्य पर्याये जीव अशाश्वतो जाणवो. कारणके अशुद्ध अनित्य पर्याये जीव चार गतिरुप संसारमां उत्पाद् व्ययरुप पलटण स्वभावे वर्ते छे. ते आवी रीतेमनुष्य भवना पर्यायनो व्यय थयो अने देवताना भवना पर्यायनो उत्पाद् थयो. वळी तिर्यंच भवना पर्यायनो व्यय थयो, अने म-

नुष्य भवना पर्यायनो उत्पाद थयो. एम जीव अशुद्ध अनित्य पर्याये उत्पाद व्ययरुप पलटण स्वभावे चार गतिरूप संसारमां सदाकाल वर्ते छे, अने जीव एनो ए ध्रुवपणे शाश्वतो छे, तथा जीवना जन्म मरण थाय छे ते सर्व उत्पाद व्यये थाय छे, माटे द्रव्यास्तिकनये जीवने नित्य समजवो, अने पर्यायास्तिक नये करी जीवने अनित्य समजवो. ए रीते षड् द्रव्यमां निश्चय व्यवहारे नित्यानित्यपणुं जाणवुं.

षड् द्रव्यमां जीव द्रव्यने पांच द्रव्य कारण रुप जाणवां, अने जीव द्रव्य अकारण जाणवुं. जेमके जीवकर्त्ता अने तेने धर्मास्तिकाय कारण मळ्युं, तेवारे जीवने चालवा हालवा रुप कार्य थयुं. तेमज जीवकर्त्ता अने

तेने अधर्मास्तिकाय रुप कारण मळ्युं, तेवारे जीवने स्थिर रहेवा रुप कार्य नीपज्युं. तेमज जीवकर्त्ता अने तेने आकाशास्तिकाय कारण मळ्यु तेवारे जीवने अवगाहना रुप कार्य वन्युं. तेमज जीवकर्त्ता अने तेने पुद्गलास्तिकाय रुप कारण मळ्युं तेवारे जीवने समय समय अनंता कर्म स्कंधो लेवा खेरववा रुप कार्य नीपज्युं. तेमज जीव द्रव्यकर्त्ता अने तेने काल द्रव्य कारण मळ्युं. तेवारे नवा पुराणा वर्तनारुप कार्य नीपन्युं. ए रीते षड् द्रव्यमां जीवने पांचे द्रव्य कारण पणे जाणवा, अने जीव पोते अकारण छे.

घणी प्रतियोमां संक्षेपे एटलुं छे के छ द्रव्यमां एक जीव द्रव्य कारण छे, वाकीनां धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्ति-

काय, पुद्गलास्तिकाय, काल, ए पांच द्रव्य अकारण छे, ए वात पण घणी रीतें मळती छे, माटे बहुश्रुत कहे ते खरुं. आगम सार ग्रंथकर्त्तानी ध्यानमां तो एम आवे छे के जीव द्रव्य कारण, अने पांच द्रव्य, अकारण एम संभवे छे.

निश्चयनये छ ए द्रव्य पोते पोताना स्वरुपनां कर्त्ता छे, अने व्यवहार नये अनेक नयनी अपेक्षाए जोतां तो एक जीव द्रव्य कर्त्ता, अने पांच द्रव्य अकर्ता जाणवां. ते आवी रीते व्यवहार नयना छ भेद छे. त्यां प्रथम शुद्धव्यवहारनये जीव शुद्ध निर्मल, कर्म थकी रहीत एवुं पोतानुं स्वरुप नीपजाववुं तेनो कर्त्ता जाणवो. एटले जे जे (चालु) गुणठाणानुं छोडवुं, अने उपरनां

गुणठाणांनुं लेवुं, तेने शुद्धव्यवहारनये कर्त्ता कहीये. पहेले गुणठाणे अनंतानुबंधिनी चोकडी हती ते खपावी अने चोथे गुणठाणे आव्यो त्यारे जीवने एक समकित गुण प्रकाशित थयो, अने अप्रत्याख्यानीनी चोकडी खपावी त्यारे पांचमुं गुणठाणुं प्राप्त करी देशविरति गुण प्राप्त कर्यो. तथा प्रत्याख्यानीनी चोकडी खपावी तेवारे छठ्ठे सातमे गुणठाणे सर्वविरति गुण पाम्यो. अगीआरमे बारमे गुणठाणे पहोंची रागद्वेष रूप मोहनीय कर्म खपावी बारमे गुणठाणे घातीकर्मनो क्षय करी तेरमे गुणठाणे केवलज्ञान पाम्यो. ए रीते पूर्वनां गुणठाणांनु छोडवुं, अने उपरनां गुणठाणांनु ग्रहण करवुं तेने शुद्ध व्यवहार नय जाणवो.

जीव कर्मरुप अशुद्धताने टाळे, अने गुण रुप शुद्धताने नीपजावे, ते जीवमां शुद्ध व्यवहार नय जाणवो.

हवे बीजा अशुद्ध व्यवहारनये जीव मा अज्ञान रागद्वेष, अनादिकाळना शत्रु थइ लाग्या छे, तेथी जीवमां अशुद्धपणुं जाणवुं. ए अशुद्धताए जीवने समय समय अनतां कर्मरुप दलीआं सत्ताए लागे छे. ए अनादिकालनी अशुद्ध जाणवी. ए अशुद्ध व्यवहारनये जीवकर्त्ता छे तेनुं स्वरुप जाणवुं. हवे त्रीजा शुभ व्यवहार नये जीव दान, शील, तप, भाव, पूजा, प्रभावना, सेवा, भक्ति स्वधर्म्यवात्सल्य, विनय, वैयावृत्य, उपकार, करुणा, दया, यत्ना, मीठुं मनोहर वचन बोलवुं, अने सर्व जीवनुं रुडुं चिंतववु

ए आदि अनेक प्रकारनी जीवने शुभ करणी जाणवी. ए शुभ व्यवहारनये जीवकर्त्ता कहीये. चोथा अशुभ व्यवहार नये जीव क्रोध, मान, माया, लोभ, विषय, कषाय, हास्य, रति, अरति, भय, शोक, दुगंछा, निद्रा, चाडी, ममता, हिंसा, मृषा, अदत्त, मैथुन, अने परिग्रह, ए आदि अनेक प्रकारनी जीवने अशुभ करणी जाणवी. ए अशुभ व्यवहारनये जीवकर्त्ता जाणवो.

हवे पांचमा उपचरित व्यवहारनये घर, कुटुंब, परिवार, हाट, वखार, गाम, गरास, देश, चाकर, दास, दासी, वाणोतर, राज्य, वाडी, वन, आराम, कुवा अने सरोवर, ए आदि अनेक प्रकारनी वस्तु ते पोतानाथी प्रत्यक्षपणे जुदी छे, तेने जीव अज्ञानपणे पोतानी करी

जाणे छे. तेने मारुं मारुं करतो फरे छे, तेनी वृद्धि देखी खुशी थाय छे, तेनो नाश देखी रडे छे, कुटे छे, शोक करे छे, अने तेने माटे पोताना प्राणनो पण नाश करे छे, तेने पोतानुं मानी तेना कर्त्तामानी जीव, पापनो अधिकारी पोते थाय छे, ए रीते उपचरित व्यवहारनये जीवने कर्त्ता जाणवो.

हवे छठ्ठा अनुपचरित व्यवहारनये जीव शरीर आदि परवस्तु, जे पोताना स्वरूपथी प्रत्यक्षपणे जुदी छे, पण परिणामिक भावे लोली भूतपणे एकठी मली रही छे, तेने जीव पोतानी करी जाणे छे. एवां शरीरने जीव अनंतिवार पाम्यो, अने अनंतिवार ते शरीरनो त्याग कर्यो, तोपण अज्ञानपणे जीव तेने पोतानुं करी जाणे छे, तेने वास्ते अ-

नेक प्रकारनी हिंसा करे छे, असत्य वचन बोले छे, अदत्त ग्रहण करे छे, पण अंते ते वस्तु पोतानी थती नथी, पण पाप करी जीव भारे थाय छे. ए रीते अनुपचरित व्यवहारनये जीवकर्त्ता जाणवो. ए रीते छ प्रकारे व्यवहारनयने मते जीवने कर्त्तापणुं देखाडयुं.

सव्वगयइयर--कहेतां सर्वगत एटले सर्वव्यापी द्रव्य केटलां अने इयर कहेतां देशव्यापी द्रव्य, छ द्रव्यमां केटलां पामीए ते कहे छे.

षड्द्रव्यमां एक आकाशद्रव्य, सर्व लोकालोकव्यापी छे, अने पांच द्रव्यदेशो व्यापी जाणवां, धर्मास्तिकाय असंख्यात प्रदेशी लोक व्यापी जाणवुं. अधर्मास्ति-

काय द्रव्य असंख्यात प्रदेशी लोकव्यापी जाणवुं. तथा कालद्रव्य गणितकाल ते अढीद्वीपव्यापी जाणवु. तथा जीवद्रव्य पण लोकव्यापी जाणवु. तथा पुद्‌गलद्रव्य पण लोक व्यापी जाणवुं. अकेक जीवने, सत्ताए अनंता कर्मरूप पुद्‌गल परमाणुआ स्कंध लाग्या छे. तथा ते थकी बीजा छुटा लोकव्यापी पुद्‌गल परमाणुआस्कंध पण अनंता छे. ते सर्वे लोकव्यापी छे. ए रीते ए पांच द्रव्य देशव्यापी जाणवां. अने एक आकाशास्तिकाय द्रव्य, अनंत प्रदेशी, सर्वव्यापी जाणवु. ए रीते छ द्रव्यमां सर्वव्यापी तथा देशव्यापीनुं स्वरूप जाणवुं.

छ ए द्रव्य अप्पवेसा–अप्रवेशी एटले कोइ द्रव्य बीजा द्रव्यमां प्रवेश करी भळी

जता नथी, अने एक बीजानुं कोइकोइनुं काम पण करतां नथी. जेम कोइ दुकान उपर पांच वाणोतर रहेता होय ते सर्व पोतपोतानुं कार्य फरमाव्या मुजब कर्या करे, अने सहु सहुनी मर्यादामां चाले, तेम लोकमां छ द्रव्य भेळां रह्यां छे. छ द्रव्य पोतपोतानी मर्यादामां वर्ते छे, पण निश्चयनये कोइपण बीजामां मांहेमांहे भळतां नथी, माटे अप्रवेशी जाणवां. एरीते षड् द्रव्यनुं स्वरूप बार भांगे भव्य जीवोए जाणवुं.

हवे एकेका द्रव्यमां आठ पक्ष कहे छे.

आठ पक्षनां नाम–एक नित्य[1], बीजो अनित्य[2], त्रीजो एक[3], चोथो अनेक[4], पांचमो सत्[5], छठो असत्[6], सातमो वक्तव्य[7], आठमो अवक्तव्य[8].

धर्मास्तिकायना चारगुण नित्य छे. तथा पर्यायमां धर्मास्तिकायनो एक खध नित्य छे. बाकीना देश, प्रदेश, अने अगुरु लघु, ए त्रण पर्याय अनित्य छे. अधर्मास्तिकायना चार गुण, तथा एक लोकप्रमाण खंध नित्य छे. अने बाकीना त्रण पर्याय अनित्य छे. आकाशास्तिकायना चार गुण, तथा लोकालोक प्रमाण खध नित्य छे, अने देश, प्रदेश, तथा अगुरु लघु, ए त्रण पर्याय अनित्य छे. कालद्रव्यना चारगुण नित्य छे अने चार पर्याय अनित्य छे. पुद्गल द्रव्यना चार गुण नित्य छे, अने चार पर्याय अनित्य छे. जीव द्रव्यना चार गुण, अने त्रण पर्याय नित्य छे, अने एक अगुरु लघु पर्याय, अनित्य छे. ए रीते नित्यानित्य पक्ष कह्यो.

हवे षड् द्रव्यमां एक अनेक पक्ष बतावे छे.

एक धर्मास्तिकाय, बीजो अधर्मास्तिकाय, ए बे द्रव्यना खंध लोकाकाश प्रमाणे एक छे अने गुण अनंता छे. आकाश द्रव्यनो लोकाकाश प्रमाण खंध एक छे. अने गुण अनंता छे. पर्याय अनंता छे, प्रदेश अनंता छे, माटे अनेक छे. काल द्रव्यनो वर्तनारूप गुण एक छे, अने बीजा गुण अनंता छे, पर्याय अनंता छे, समय अनंता छे, केमके अतीतकाले अनंता समय गया, अने अनागत काले अनंता समय आवशे, तथा वर्तमानकाले समय एक छे माटे अनेक पक्ष छे. पुद्गल द्रव्यनां परमाणुआ अनंता छे. एक एक परमाणुमां अनंता गुणपर्याय छे

ते अनेकपणु छे, अने सर्व परमाणुमां पुद्गलपणुं ते एकज छे. जीव द्रव्य अनंता छे, एकेका जीवमां प्रदेश असंख्याता छे, तथा गुण अनंता छे. पर्याय अनंता छे ते अनेकपणुं छे, पण जीवितव्य सर्व जीवोमां एक सरखुं छे, माटे एकपणुं छे.

इहां शिष्य पुछे छे के- सर्व जीव एक सरखा छे तो मोक्षना जीव सिद्ध परमानंदमयी देखाय छे, अने संसारी जीव कर्मवश पड्या दुःखी देखाय छे, तेनुं केम ? तेने उत्तर आपे छे के--निश्चयनये तो सर्व जीव सिद्ध समान छे, माटेज सर्व जीव कर्म खपावी सिद्ध थाय छे, तेथी सर्व जीवनी सत्ता एक छे, वळी शिष्य पुछे छे के जो सर्व जीव सिद्ध समान कहो छो तो अभव्य जीव पण

सिद्ध समान छे एम ठर्युं, अने तेतो मोक्षे जाता नथी, तेनुं केम ? तेने उत्तर आपे छे के अभव्य ने कर्म चीकणां छे, अने अभव्यमां, परावर्त धर्म नथी, तेथी सिद्ध थता नथी. अभव्यने कर्मनो संबंध अनादि अनंतमे भांगे छे, तेथी कोइ काले ते मोक्ष जशे नहीं. भव्य जीवमां परावर्त धर्म छे माटे कारण सामग्री मळ्याथी पलटण पामे छे अने गुणश्रेणि चढीने सिद्ध थाय छे. आत्माना आठ रुचक प्रदेश, निश्चय नयथी भव्य तथा अभव्य सर्व जीवोना सिद्ध समान छे, माटे सर्व जीवनी सत्ता एक सरखी छे. ए आठ रुचक प्रदेशने कर्म बीलकुल लागतां नथी ते आचारांगसूत्रनी श्री शिलांगाचार्य कृत टीकाना लोकविजय अ-

ध्ययनमां प्रथमोद्देशके कह्युं छे.

हवे सत् तथा असत् पक्ष कहे छे. ए छ द्रव्य स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल, अने स्वभावपणे सत् एटले छता छे. अने परद्रव्य परक्षेत्र, परकाल, अने परभावपणे असत् एटले अछता छे. तेनी रीत बतावबाने माटे ए षड् द्रव्यनो द्रव्य, क्षेत्र, काल, अने भाव, कहीये छीए.

दव्वंगुणसमुदाउ
खित्तंओगाहवट्टणाकालो
गुणपज्जाय पवत्ति
भावोनिअवथ्थुधम्मोसो ॥१॥

धर्मास्तिकायनो मूल गुण चलण सहाय पणो ते स्वद्रव्य, अधर्मास्तिकायनो मूल गुण

स्थिति सहायपणो ते स्वद्रव्य जाणवो. आकाशास्तिकायनो मूल गुण अवगाहपणो ते स्वद्रव्य, कालद्रव्यनो मूल गुण वर्तना लक्षण पणो ते स्वद्रव्य जाणवो. तथा पुद्गल द्रव्यनो मूलगुण पूरण गलनपणो ते स्वद्रव्य जाणवो. जीव द्रव्यनो मूल गुण ज्ञानादिक चेतना लक्षणपणो ते स्वद्रव्य, ए छ द्रव्यनो स्वद्रव्यपणो कह्यो.

हवे षड् द्रव्यनो स्वक्षेत्र कहे छे–धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकायनो स्वक्षेत्र असंख्यात प्रदेशमय जाणवो. आकाश द्रव्यनो स्वक्षेत्र अनंत प्रदेशमय जाणवो. काल द्रव्यनो स्वक्षेत्र समयरुप छे. पुद्गल द्रव्यनो स्वक्षेत्र एक परमाणु छे. परमाणुआ अनंता छे. जीव द्रव्यनो स्वक्षेत्र एक जीवना असं-

ख्याता प्रदेश छे.

हवे स्वकाल ते षड्द्रव्यमां अगुरु लघु-ानो छे. छए द्रव्यना पोत पोताना गुण पर्याय ते सर्व द्रव्यनो स्वभाव जाणवो. सारांशके धर्मास्तिकायमां पोतानाज द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव छे, पण बीजा पांच द्रव्यना नथी. तथा अधर्मास्तिकायमां पण पोताना ज स्वद्रव्य, क्षेत्रकाल, भाव छे पण बीजा पांच द्रव्यना नथी. आकाशास्ति कायमां आकाशना ज स्वद्रव्यादिक चार छे, पण बीजा पांच द्रव्यना नथी. तथा काल द्रव्यमां कालना स्वद्रव्यादिक चार छे, पण बीजा पाच द्रव्यना नथी. पुद्गल द्रव्यना स्वद्रव्यादि चार पुद्गल द्रव्यमां छे, पण बीजा पांच द्रव्यना नथी. तथा जीव द्रव्यना स्वद्रव्यादिक चार ते जीव द्र-

व्यमां छे, पण बीजा पांच द्रव्यना नथी. "गुणपर्यायवद्द्रव्यम्–" द्रव्यथी अभेदपणे गुणपर्याय होय तेने द्रव्य कहे छे तथा स्वधर्मनो आधारवंतपणो तेने क्षेत्र कहे छे, अने उत्पाद व्ययनी वर्तना तेने काल कहे छे, तथा विशेष गुण परिणति, स्वभाव परिणति, पर्याय प्रमुख ते स्वभाव कहीए.

अत्र एक–भेद स्वभाव, बीजो–अभेद स्वभाव, त्रीजो–भव्य स्वभाव चोथो–अभव्य स्वभाव अने पांचमो–परम स्वभाव, ए पांच स्वभाव जाणवा. तेमां द्रव्यना सर्व धर्मने पोतपोताना स्व स्व कार्य करवेकरी भेद स्वभाव छे, अने अवस्थानपणे अभेद स्वभाव छे. अणपलटण स्वभावे अभव्य स्वभाव छे. तथा पलटण स्वभावे भव्य स्वभाव

छे. द्रव्यना सर्व धर्म ते विशेष धर्मने अनुयायीज परिणमे ते माटे ते परम स्वभाव कहीए. ए सामान्य स्वभाव जाणवा. ए रीते छए द्रव्य स्वगुणे सत् छे अने परगुणे असत् छे.

हवे छए द्रव्यमां वक्तव्य तथा अवक्तव्य पक्ष कहे छे.

ए छ द्रव्यमां अनंता गुण पर्याय ते वक्तव्य एटले वचने कहेवा योग्य छे, अने अनंता गुणपर्याय ते अवक्तव्य एटले वचने करी कही शकाय नहीं एवा छे. केवळ ज्ञानी महाराजे ज्ञाने समस्त भाव दीठा तेना अनंतमे भागे जे वक्तव्य एटले कहेवा योग्य हता ते कह्या. वळी तेनो पण अनंतमो भाग श्री गणधर देवे सूत्रमां गुंथ्यो. जे सू-

त्रमां गुंथ्यो तेना असंख्यातमा भागे हाल आगम रह्यां छे. ए छ द्रव्यमां आठ पक्ष कह्या.

हवे नित्य तथा अनित्य पक्षथी चतुर्भंगी उपनी ते बतावे छे. जेनी आदि नथी अने अंत नथी ते अनादि अनंत पहेलो भांगो जाणवो. तथा जेनी आदि नथी पण अंत छे, ते अनादि सांत बीजो भांगो जाणवो. तथा जेनी आदि पण छे अने अंत पण छे, ते सादि सांत त्रीजो भांगो जाणवो. वळी जेनी आदि छे, पण अंत नथी, ते सादि अनंत नामे चोथो भांगो जाणवो.

हवे ए चार भांगा द्रव्योमां केवी रीते उतरे छे, ते बतावे छे.

जीव द्रव्यमां ज्ञानादिक गुण ते अनादि अनंत छे, नित्य छे. भव्य जीवने कर्म साथे

संबंध अनादि छे. पण सिद्ध थाय, त्यारे अंत आवे छे, तेथी ए अनादि सांत बीजो भांगो जाणवो. देवता, मनुष्य, तिर्यंच अने नारकी प्रमुखना भव करवा, ते सादि सांत भांगो छे. जे जीव कर्म खपावी मोक्षे गया तेनी मोक्षपणे आदि छे, अने पाछुं संसारमां कोइ वखत आववुं नथी माटे अंत नथी, तेथी ते आश्रयी सादि अनंत भांगो छे. अभव्य जीव साथे कर्मनो संबंध अनादि अनंत छे. जीव द्रव्यना चार गुण अनादि अनंत छे. जीवने कर्म साथे संयोग ते अनादि सांत छे, पण अभव्यने नही. अभव्यने कर्म संयोग अनादि अनंत छे.

धर्मास्तिकायमां चार गुण अने पांचमो संध ते अनादि अनत छे, तेमां अनादि सांत

भांगो नथी. तेथी देश, प्रदेश, अने अगुरु लघु ते सादि सांत भांगे छे. तथा सिद्धना जीवो, धर्मास्तिकायना जे प्रदेशे रह्या छे, ते प्रदेश आश्रीने सादि अनंत भांगो छे. एवीज रीते अधर्मास्तिकायमां पण चौभंगी जाणवी.

आकाश द्रव्यमां गुण तथा खंध अनादि अनंत छे. बीजो भांगो नथी. तेना देश, प्रदेश, तथा अगुरु लघु, सादि सांत छे. तथा सिद्धना जीवनी साथे जे संबंध ते सादि अनंतमा भांगे छे. पुद्गल द्रव्यमां गुण, अनादि अनंत छे. जीव पुद्गलनो संबंध अभव्यने अनादि अनंत छे अने भव्य जीवने अनादि सांत छे. पुद्गलना खंध सर्व सादि सांत छे. जे खंध बंधाया ते स्थिति प्रमाणे रही खरे छे, वळी नवा बंधाय छे. सादि

अनंत भांगो पुद्गल द्रव्यमां नथी.

काल द्रव्यमां अनादि अनंतमा भांगे चार गुणो छे. पर्यायमां अतीत काल अनादि सांत छे. अने वर्तमानकाळ सादि सांत छे. तथा अनागत काळ सादि अनंत छे. ए कालनु स्वरूप सर्व उपचारथी छे. ए रीते काल द्रव्यमां चौभंगी जाणवी.

हवे द्रव्य, क्षेत्र, काल, अने भावमां चौभंगी कहे छे.

जीव द्रव्यमां स्वद्रव्यथी ज्ञानादिक गुण छे ते अनादि अनंत छे.

स्वक्षेत्रे जीवना प्रदेश असंख्याता छे. ते सादि सांत छे, तदुद्वर्तनापणे फरे छे, ए हेतुथी, अथवा अवगाहना माटे सादि सांत छे, पण

छतिपणे तो अनादि अनंत छे. स्वकाल अ-
गुरु लघुनो अनादि अनंत छे, अने अगुरु
लघु गुणनो उपजवो, तथा विणसवो ते सादि
सांत छे. तथा स्वभाव गुण पर्याय ते अनादि
अनंत छे अने भेदांतरे अगुरुलघु ते सादि
सांत छे. धर्मास्तिकायमां स्वद्रव्य जे चलण
सहाय गुण ते अनादि अनंत छे, अने स्वक्षेत्र
असंख्यात प्रदेश लोक प्रमाण छे ते अवगा-
हनापणे सादि सांत छे. स्वकाल ते अगुरु-
लघुगुणे अनादि अनंत छे अने उत्पाद व्यय
ते सादि सांत छे. तेमज अधर्मास्तिकायना
पण चार भांगा जाणवा. आकाशास्तिकायमां
स्वद्रव्य अवगाहनादानगुण ते आनादि अनंत
छे. अने स्वक्षेत्र लोकालोक प्रमाण अनंत
प्रदेश ते अनादि अनंत छे. स्वकाल ते अगुरु

लघु गुण सर्वथापणे अनादि अनंत छे, अने उपजवे तथा विणसवे सादि सांत छे.

स्वभाव ते चार गुण, तथा खंध अने अगुरु लघु ते अनादि अनंत छे, तथा देश प्रदेश ते सादि सांत छे. ते आकाश द्रव्यना बे भेद छे, एक चौदराज लोकनो खंध लोकाकाश प्रमाण ते सादि सांत छे, अने बीजो अलोकाकाशनो खध ते सादि अनंत छे.

काल द्रव्यमा स्वद्रव्य जे नवा पुराणवर्तना गुण ते अनादि अनंत छे. स्वक्षेत्र समय ते सादि सांत छे. केमके वर्तमान समय एक छे माटे, तथा स्वकाल ते अनादि अनंत छे. स्वभाव ते गुणचार अने अगुरु लघु अनादि अनंत छे. अतीतकाल अनादि सांत

छे. वर्तमान काल सादि सांत छे. अनागत काल सादि अनंत छे.

पुद्गल द्रव्यमां स्वद्रव्य जे पूरण गलन-धर्म छे ते अनादि अनंत छे. अने स्वक्षेत्र परमाणु ते सादि सांत छे. स्वकाल अगुरु लघु ते अनादि अनंत छे. अगुरु लघुनो उ-पजवो विणसवो ते सादि सांत छे. स्वभाव ते गुण चार, अनादि अनंत छे. वर्णादि प-र्याय चार, वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श ते सादि सांत छे. ए द्रव्यादि चारनी पुद्गल द्रव्यमां चौभंगी जाणवी.

हवे छ द्रव्यना संबंध आश्रयीने चौ-भंगी देखाडे छे.

तेमां प्रथम आकाश द्रव्य छे. तेमां अ-

लोकाकाशमां पांच द्रव्यमांनु कोइ पण द्रव्य नथी. धर्मास्तिकाय; अधर्मास्तिकाय; पुद्गलास्तिकाय; काल अने जीव, ए पांच द्रव्यो अलोकमां नथी.

लोकाकाशमां स्व सहित छ द्रव्य छे, लोकाकाश द्रव्य तथा धर्मास्तिकाय द्रव्य अने अधर्मास्तिकाय ए त्रण द्रव्य ते अनादि अनंत छे. जे लोकाकाशना एकेक प्रदेशमा धर्म द्रव्य तथा अधर्म द्रव्यनो अकेक प्रदेश रह्यो छे, ते कोइ काले विछडशे नहीं. माटे अनादि अनंत जाणवो. लोकाकाश क्षेत्र अने जीव द्रव्यनो अनादि अनंत संबंध जाणवो. ससारी जीव कर्म सहित तथा लोकनाप्रदेशनो सादि सांत सबंध छे. लोकांत सिद्धक्षेत्रना सिद्ध जीवोनो, आकाश

सादि अनंत संबंध छे. लोकाकाश अने पुद्गल द्रव्यनो अनादि अनंत संबंध जाणवो. आकाश प्रदेशनी साथे पुद्गल परमाणुनो सादि सांत संबंध जाणवो. एम आकाश द्रव्यनी पेठे धर्मास्तिकाय तथा अधर्मास्तिकाय द्रव्यनो पण संबंध जाणवो. निश्चयनये छ ए द्रव्य स्वस्वभावे परिणमी रह्यां छे ते परिणामीपणो सदा शाश्वतो छे ते माटे अनादि अनंत छे.

जीव द्रव्य तथा पुद्गल द्रव्य बंने मळी संबंधपणाने पामे छे अने तेथी तेने परपरिणामीपणो छे. ते परपरिणामीपणुं अभव्य जीवने अनादि अनंत छे, अने भव्य जीवने अनादि सांत छे. पुद्गलनो परिणामीपणो ते सत्ताए अनादि अनंत छे अने पुद्गलनुं मळवुं वि-

खरवुं ते सादि सात भांगे जाणवुं. जीव द्रव्य पुद्गल साथे मळेलो सक्रिय छे, अने पुद्गल द्रव्यथी रहित थाय त्यारे जीव द्रव्य अक्रिय छे. पुद्गल द्रव्य सदा सक्रिय छे. .

हवे एक अनेक पक्षथी निश्चय ज्ञान कहेवाने नय कहे छे. सर्व द्रव्यमां अनेक स्वभाव छे, ते एक वचनथी कथा जाय नहीं माटे मांहोमांहे नयोवडे संक्षेपपणे कहे छे.

मूळ नयना बे भेद छे. एक द्रव्यार्थिक अने बीजो पर्यायार्थिक. तेमां उत्पाद व्यय पर्यायने गौणपणे अने प्रधानपणे द्रव्यनी गुण सत्ताने ग्रहे तेने द्रव्यार्थिक नय कहे छे तेना दश भेद छे.

१ सर्व द्रव्य नित्य छे ते नित्य द्रव्या-

२ अगुरु लघु अने क्षेत्रनी अपेक्षा न करे अने मूळ गुणने पिंडपणे ग्रहे ते एक द्रव्यार्थिक.

३ ज्ञानादिक गुणे सर्व जीव एक सरखा छे, माटे सर्व जीवोने एक कहे अने स्वद्रव्यादिकने ग्रहे ते सत्‌द्रव्यार्थिक जेम सल्लक्षणं द्रव्यम्

४ द्रव्यमां केहेवा योग्य गुण अंगीकार करे ते द्रव्यार्थिक जाणवो.

५ आत्माने अज्ञानी कही बोलाववो ते अशुद्ध द्रव्यार्थिक नय जाणवो.

६ सर्व द्रव्य गुण पर्याय सहित छे एम केहेवुं ते अन्वय द्रव्यार्थिक.

७ सर्व जीवनी मूल सत्ता एक छे ते परम द्रव्यार्थिक जाणवो.

८ सर्व जीवना आठ रुचक प्रदेश निर्मल छे ते शुद्ध द्रव्यार्थिक नय जाणवो.

९ सर्व जीवना असंख्याता प्रदेश एक सरखा छे ते सत्ताद्रव्यार्थिकनय जाणवो.

१० गुण गुणी एक छे ते परमभाव ग्राहक द्रव्यार्थिक नय जाणवो. जेम आत्मा ज्ञानरुप छे.

इत्यादिक द्रव्यार्थिक नयना दश भेद कह्या. हवे पर्यायार्थिक नयना छ भेद कहे छे.

जे पर्यायने ग्रहे तेने पर्यायार्थिक नय कहे छे, तेना छ भेद नीचे प्रमाणे.

एक द्रव्य पर्याय, बीजो द्रव्य व्यंजन पर्याय, त्रीजो गुणपर्याय, चोथो गुण व्यजन पर्याय, पांचमो स्वभाव पर्याय, छट्ठो विभाव पर्याय ए छ छे.

१ जीवने भव्यपणुं तथा सिद्धपणुं कहेवुं ते द्रव्यपर्याय.

२ जे द्रव्यना प्रदेशनुं मान ते द्रव्य व्यंजनपर्याय.

३ एक गुणथी अनेकता थाय. जेम धर्माधर्मादि द्रव्य पोताना चलण सहकारादि गुणथी अनेक जीव तथा पुद्गलने सहाय करे तेने गुणपर्याय नय कहे छे.

४ एक गुणना घणा भेद ते गुण व्यंजनपर्याय कहीए.

५ स्वभाव पर्याय ते अगुरु लघु पर्यायथी जाणवो. ए पांच पर्यायो सर्व द्रव्यमां छे.

६ विभाव पर्याय ते जीव पुद्गल ए

वे द्रव्यमां छे. जीव जे चार गतिना नवा नवा भव करे ते जीवमां विभाव पर्याय तथा पुद्गलमां खंधपणु ते विभावपर्याय जाणवो.

हवे पर्यायना बीजा छ भेद कहे छे— एक अनादि नित्य पर्याय, ते पुद्गल द्रव्यनो मेरु प्रमुख. बीजो सादि नित्य पर्याय ते जीव द्रव्यनी सिद्धावस्था सिद्धावगाहनादिक.

त्रीजो अनित्य पर्याय ते समय समयमां द्रव्य उपजे विणसे छे ते. "सादिसांत पर्याया भव शरीराध्यवसायादयः" इति नयचक्रे. चोथो अशुद्ध अनित्य पर्याय ते जन्म मरण थाय छे, ते वडे कहेवो. पाचमो उपाधि पर्याय ते कर्म संबंध. छट्ठो शुद्ध पर्याय जे मूल पर्याय, सर्व द्रव्यना एक सरखा छे ते एवं पर्यायार्थिकनुं स्वरुप कह्युं. नय

चक्र तथा आगमसार कर्त्ताना मते बीजा पर्यायना छ भेदमां तफावत पडे छे. तत्त्वकेवलिगम्यम्.

सातनय.

१ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ४ रुजुसूत्र ५ शब्द ६ समभिरूढ ७ एवंभूत ए सात नयनां नाम जाणवां.

१ नैगमनय.

नथी एक गमो ते जेनो तेने नैगमनय कहे छे, गुणनो वा कार्यनो एक अंश उपन्यो होय तो ते नैगम नय कहीए, जेम कोइ मनुष्यने पाली लाववानुं मन थयुं त्यारे ते वगडामां लाकडां लेवा चाल्यो, तेने रस्तामां बीजो कोइ माणस भेगो थयो. तेणे पूछ्युं

के, तुं क्यां जाय छे ते वारे तेणे कह्युं के हुं, पाली लेवा जाउं छुं. ते पाली तो हजु घडी नथी पण मनविषे चिंतव्युं ते थइ एम गण्यु. तेम नैगम नय सर्व जीवने सिद्ध समान कहे छे. कारण के सर्व जीवोना आठ रुचक प्रदेश निर्मळ सिद्ध समान छे, तेथी एक अंशे सिद्ध छे, ते माटे सिद्ध समान सर्व जीव कह्या. ते नैगम नयना त्रण भेद छे. अतीत नैगम, अनागत नैगम, अने वर्त्तमान नैगम. आ प्रमाणे आगमसार ग्रंथमां कह्यु छे.

नयचक्र बालावबोधमां नैगमनयना त्रण भेद कह्या छे. १ आरोप २ अंश ३ संकल्प. तथा विशेषावश्यकमां चोथो भेद पण उपचारपणे कहे छे. नथी एकगमो--अ-

भिप्राय ते जेनो तेने नैगमनय कहे छे. नैगमनय अनेक आशयी छे, ते नैगमनयना चार भेद छे. नैगमना भेद पैकी आरोप नैगमना चार प्रकार छे.

१ द्रव्यारोप, २ गुणारोप, ३ कालारोप, ४ कारणाद्यारोप.

१ गुणादिकमां द्रव्यपणो मानवो ते द्रव्यारोप. जेम वर्तना परिणाम ते पंचास्तिकायनो परिणमन धर्म छे, तेने काल द्रव्य कहीने बोलाव्यो. ए काल ते भिन्न पिंड रूप द्रव्य नथी, पण आरोपे द्रव्य छे. माटे द्रव्यारोप जाणवो. द्रव्यने गुणनो आरोप ते जेम ज्ञान गुण छे, पण ज्ञानी तेज आत्मा एम ज्ञानने आत्मा कह्यो, ते गुणारोप जाणवो. तथा जेम श्री महावीर स्वा-

मीतुं निर्वाण थयां घणो काळ गयो छे, पण आज दीवालीना दीवसे वीरनिर्वाण छे, एम जे कहेवुं ते वर्तमानकालमां अतीत कालनो आरोप कर्यो जाणवो. तथा आज श्री पद्मनाभ प्रभुनो निर्वाण छे, एम जे कहेवुं ते वर्तमान काळमां अनागतकालनो आरोप. एवी रीते अतीतना वे भेद छे. तथा अनागतना वे भेद छे तथा वर्तमानना पण वे भेद छे ते सर्व मळी कालारोपना छ भेद जाणवा. चोथो वळी कारणविषे कार्यनो आरोप करवो ते कारणाद्यारोप जाणवो.

ते कारण चार छे. १ उपादान कारण. २ निमित्त कारण. ३ असाधारण कारण. ४ अपेक्षा कारण. तेमां बाह्यद्रव्य क्रिया ते साध्य सापेक्षवाळाने धर्मनुं निमित्त कारण

छे तोपण तेने धर्मकारण कहीए. तेमज श्री तीर्थंकर मोक्षनुं कारण छे, तेथी तेमणे 'तारयाणं' कह्या ते कारणमां कर्त्ता पणानो आरोप कर्यो. एम आरोपता अनेक प्रकारे छे ते कारणाद्यारोप.

वळी संकल्प नैगमना बे भेद छे १ स्व-परिणामरुप वीर्य चेतनानो जे नवो नवो क्षयोपशम लेवो ते. २ कार्यांतरे नवे नवे कार्ये नवो नवो उपयोग थाय ते. ए बे भेद थया. तथा अंश नैगमना पण बे भेद छे. १ भिन्नांश ते जुदो अंश, स्कंधादिकनो, बीजो अभिन्नांशते जे आत्माना प्रदेश तथा गुणनो अविभाग इत्यादिक ए सर्व नैगमनयना भेद जाणवा.

(२) संग्रहनय.

सामान्यवस्तुसत्ता संग्राहक संग्रहःस-द्विविधः सामान्य संग्रहः विशेपसंग्रहश्च सामान्य संग्रहो द्विविधः मूलतऊत्तरतश्च मूलतोऽस्तित्वादिभेदतः षड्विध उत्तरतो जाति समुदायभेदरूपः जातितः गवि गोत्वं, घटे घटत्वं, वनस्पतौ वनस्पतित्वं, समुदायतो सहकाराख्ये वने सहकारवनं, मनुष्यसमूहे मनुष्य वृंदं, इत्यादि समुदायरुपः अथवा द्रव्यमिति सामान्य सग्रहः जीव इति विशेप सग्रहः

अर्थः सामान्ये करी मूल सर्व द्रव्य व्यापक नित्यत्वादिक सत्तापणे रह्या जे धर्म तेनो जे संग्रह करे तेने संग्रहनय कहे छे.

तेना बे भेद छे. १ एक सामान्य संग्रह २ बीजो विशेप संग्रह.

सामान्य संग्रहना बे भेद छे. १ मूल सामान्यसंग्रह २ उत्तर सामान्यसंग्रह. वळी मूळ सामान्यना अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व, सत्त्व, अगुरुलघुत्व ए छ भेद छे तथा उत्तर सामान्यना बे भेद छे.

१ जाति सामान्य २ समुदाय सामान्य. तत्र गायना समुहमां गोत्वरुप जाति छे तथा घट समुदायमां घटत्व अने वनस्पतिमां वनस्पतिपणो ते जाति सामान्य कह्यो. आंबान समूहने अंब वन कहे, तथा मनुष्यना समुहमां मनुष्य ग्रहण थाय ते समुदाय सामान्य ए उत्तर सामान्य ते चक्षुदर्शन तथा अचक्षुदर्शनग्राही छे, अने मूल सामान्य ते अवधिदर्शन तथा केवळ दर्शनथी ग्रहवाय छे.

अथवा छ द्रव्यना समुदायने द्रव्य के-

हवुं, ए सामान्य संग्रह, अने जीवने जीव द्रव्य कही अजीव द्रव्य थकी जुदो पाडवो, ते विशेष संग्रह. विशेषावश्यकमां संग्रहनयना चार भेद कह्या छे. १ संग्रहीत संग्रह २ पिंडित संग्रह ३ अनुगम संग्रह ४ व्यतिरेक संग्रह.

१ सामान्यपणे वहेंचण विना ग्रहण थाय एवो जे उपयोग अथवा एवुं जे वचन अथवा एवो धर्म कोईपण वस्तुने विषे होय तेने संग्रहित संग्रह कहीए.

२ एक जाति माटे एकपणो मानीने ते एक मध्ये सर्वनो ग्रहण थाय जेम "एगे आया" "एगे पुग्गले" इत्यादि वस्तु अनंति छे पण जाति एक

माटे ग्रहण थाय छे ते बीजो पिंडित संग्रह-नय कहीए.

३ जे अनेक जीवरुप अनेक व्यक्ति छे ते सर्वमां पामीए, जेम " सच्चिन्मय आत्मा " एटले सर्व जीव तथा सर्व प्रदेश अने सर्व गुण ते जीवनां लक्षण छे. ते अनुगम संग्रह नय कहीए.

४ जेना ना कहेवाथी तेनाथी इतरनो सर्व संग्रहपणे ज्ञान थाय ते जेम अजीव छे तेवारे जे जीव नही ते, अजीव कहीए. एटले कोइक जीव छे एम व्यतिरेक वचने ठर्यो. तथा उपयोगे जीवनो संग्रह थाय छे, ते व्यतिरेक संग्रह कहीए.

एक नाम लीधाथी सर्व गुण पर्याय परिवार सहीत आवे ते संग्रहनय जाणवो.

दृष्टांत—जेम कोइक मनुष्ये प्रभाते दातण करवाने अर्थे पोताना घरना बारणे बेशीने चाकरने कहुं के दातण लेइ आवो ! तेवारे चाकर ब्रुश, पाणीनो लोटो, रुमाल, दातण एम सर्व चीज लइ आव्यो. शेठे तो एक दातण नाम लइने मंगाव्युं हतुं पण सर्वनो संग्रह करी चाकर लइ आव्यो ते रीते संग्रहनय जाणवो.

(३) व्यवहारनय.

संग्रहग्रहीतवस्तु भेदांतरेण विभजनं व्यवहरणं, प्रवर्तनं वा व्यवहारः सद्विविधः शुद्धोऽशुद्धश्च ॥

संग्रहनये ग्रहीत जे वस्तु तेने भेदांतरे वेंचवु, तेने व्यवहारनय कहे छे. जेम द्रव्य

एवुं सामान्य नाम कह्युं. तेमां वली वेहेंचण करीए जे द्रव्यना वे भेद छे. एक जीव द्रव्य, तथा वीजुं अजीव द्रव्य, तेमां पण वहेंचण करीए जे जीवना वे भेद छे. एक संसारी, वीजा सिद्ध, वळी तेमां पण संसारीना वे भेद छे. एक स्थावर, वीजो त्रस. तेमां स्थावरना पृथ्वीकाय, अपूकाय, तेउकाय, वायुकाय, अने वनस्पतिकाय ए पांच भेद छे. त्रसना चार भेद छे. वेरेंद्री, तेरेंद्री, चौरेंद्री, अने पंचेंद्री. पञ्चेन्द्रियना देवता, मनुष्य, तिर्यंच अने नारकी एम चार भेद छे. एम उत्तरोत्तर जीवना ५६३ भेदनी वेहेचण करवी इत्यादिक सर्व व्यवहारनयनो स्वभाव जाणवो. अथवा प्रवर्तन व्यवहारना वे भेद छे १ शुद्ध व्यवहार २ अशुद्ध व्यवहार.

सर्व द्रव्यनी स्वरुप शुद्ध प्रवृत्ति—जेम धर्मास्तिकायनी चलण सहायता तथा अधर्मास्तिकायनी स्थिति सहायता तथा जीवनी ज्ञायकता इत्यादिकने वस्तुगत शुद्ध व्यवहार कहीए.

द्रव्यनो उत्सर्ग नीपजवा माटे जे रत्नत्रयिनी शुद्धता गुणस्थाने श्रेणि आरोहणरुप ते साधन शुद्ध व्यवहार कहीए.

अशुद्ध व्यवहारना बे भेद छे. १ सद्भूत व्यवहार २ असद्भूत व्यवहार. तेमां जे क्षेत्रे अवस्थाने अभेदे रह्या जे ज्ञानादिगुण तेने परस्पर भेदे कहेवा ते सद्भूत व्यवहार. तथा हुं क्रोधी छुं, हुं मानी छुं, अथवा देवता छुं, मनुष्य छुं, इत्यादि देवतापणे ते हेतुपणे परिणमता ग्रहां जे देवगति विपाकी

कर्म तेने उदयरूप प्रभाव छे ते पण यथार्थ ज्ञान विना भेद ज्ञानशून्य जीव ते एक करी माने छे ते असद्भूत अशुद्ध व्यवहार कहीए. तेना बे भेद छे.

१ आ शरीर मारुं छे, हुं शरीरी छुं, इत्यादि केहेवुं तेने संश्लेषित असद्भूतव्यवहार जाणवो.

२ आ पुत्र मारो, आ स्त्री, कुटुंब, धनधान्यादिक नवविध परिग्रह मारो छे, एम जे केहेवुं ते असंश्लेषित असद्भूत व्यवहारनयथी जाणवुं. ते असंश्लेषित असद्भूत अशुद्ध व्यवहारना बे भेद छे. एक उपचरित अने बीजो अनुपचरित.

विशेषावश्यक महाभाष्यमां व्यवहारनयना मूल बे भेद छे.

१ वहेचणरूप व्यवहार.

२ प्रवृत्तिरूप व्यवहार.

प्रवृत्ति व्यवहारना त्रण भेद छे. वस्तुप्रवृत्ति, साधनप्रवृत्ति, लौकिकप्रवृत्ति. तेमां साधन प्रवृत्तिना त्रण भेद छे.

१ जे अरिहंतनी आज्ञाये शुद्ध साधन मार्गे इह लोक संसार पुद्गल भोग आसंसादिदोष रहीत जे रत्नत्रयिनी परिणति, परभव त्याग सहित ते लोकोत्तर साधन प्रवृत्ति नामे पेहेलो भेद जाणवो.

२ स्याद्वाद विना मिथ्याभिनिवेष सहित साधन प्रवृत्ति ते दुःप्रावचनिक साधन प्रवृत्ति.

३ लोकना स्व स्वदेश कुलनी चाले प्रवृत्ति ते लोक व्यवहार प्रवृत्ति ए त्रण प्र-

कारनी प्रवृत्ति जाणवी.

बाह्य स्वरूप देखीने भेदनी वेहेंचण करे अने जे बाह्य देखाता गुणनेज माने पण अंतरंग सत्ताने न माने तेने व्यवहारनय कहे छे, आ नयमां आचार क्रिया मुख्य छे. व्यवहारनये जीवनी अवस्था अनेक प्रकारे छे.

वळी व्यवहारनयना छ भेद छे.

१ शुद्ध व्यवहार. ते पूर्वना गुण ठाणानुं छोडवुं अने उपरना गुणठाणानुं ग्रहण करवुं, तेने शुद्ध व्यवहारनय कहे छे. अथवा ज्ञान, दर्शन, चारित्र गुण ते निश्चय नये एक रूप छे, पण ते शिष्यने समजाववाने जुदा जुदा भेद कहेवा ते शुद्ध व्यवहारनय जाणवो.

२ जीवमां अज्ञान रागद्वेष लाग्या छे ते अशुद्धपणो छे माटे अशुद्ध व्यवहार जाणवो.

३ पुण्यनी क्रिया करवी वा शुभपरिणति प्रवृत्ति ते शुभ व्यवहार.

४ पापनी क्रिया करवी वा अशुभ परिणति प्रवृत्ति ते अशुभ व्यवहार.

५ धन कुटुंब प्रत्यक्षपणे पोतानाथी जुदा छे पण जीवे पोताना करी जाण्या छे ते उपचरित व्यवहार.

६ शरीर, लेश्या, योग अने इंद्रिय इत्यादि वस्तुओ पोताना आत्मा थकी जुदी छे तेने आपणी करी जीव माने छे ते अनुपचरित व्यवहारनय मतथी जाणवु.

इत्यादि व्यवहारनयनु स्वरूप जाणवु.

४ ऋजुसूत्रनय.

ऋजु कहेतां सरल छे, श्रुत कहेतां बोध ते जेनो तेने ऋजु सूत्र नय कहे छे. ऋजु शद्बे–अवक्र एटले समो छे श्रुत ते जेने ते ऋजु सूत्र नय कहीए. अथवा ऋजु–अवक्रपणे वस्तुने जाणे, कहे, तेने ऋजुसूत्रनय कहे छे.

जे अतीतकाल अने अनागत कालनी अपेक्षा न करे पण वर्त्तमान कालमां जे वस्तु जेवा गुणे परिणमे वर्ते ते वस्तुने तेवा ज परिणामे माने तेने ऋजुसूत्रनय कहे छे. ए नय परिणामग्राही छे. जेम कोइ जीव गृहस्थ छे, पण अंतरंग साधु समान परिणाम छे, तो ते जीवने ए नय साधु कहे छे.

नयश कोइक जीव साधुने वेषे छे, पण मनना परिणाम विषयाभिलाषा सहित छे, तो ते जीव अव्रती छे. एम ऋजुसूत्र नयनो मानवो छे. ते ऋजुसूत्र नयना बे भेद छे. एक सूक्ष्म ऋजुसूत्रनय, अने बीजो स्थूल ऋजुसूत्र नय एम बे भेद छे.

सदाकाल सर्व वस्तुमां एक वर्त्तमान समय वर्त्ते छे. एटले जे जीव अतीतकालने विषे अज्ञानी हतो अने अनागतकाले अज्ञानी थशे, एम बे कालनी अपेक्षा राख्या विना वर्त्तमान समये जे जेवो होय तेने तेवो कहे, तेने सूक्ष्म ऋजुसूत्रनय कहे छे.

मोटा बाह्य परिणामने जे ग्रहे तेने स्थूल ऋजुसूत्रनय कहे छे. ए ऋजुसूत्रना बे भेद दिखाड्या छे.

ऋजुसूत्रं वर्तमानग्राहकं तद् वर्तमानं नामादि चतुष्प्रकारं ग्राह्यं. नय चक्र कर्त्ता ऋजुसूत्रनयमां नाम, स्थापना, द्रव्य, अने भाव ए चार निक्षेपा ग्रहण करे छे.

५ शब्दनय.

जे वस्तु गुणवंत, तथा निर्गुणवंत होय, तेने नामे कही बोलावीए. जे भाषा वर्गणाथी शब्दपणे गोचर थाय, ते शब्दनय. जे कारणथी अरुपी द्रव्य वचनथी ग्रह्या जाय नहीं, पण वचनथी कहेवा ते शब्दनय कहीए. अहीं जे शब्दनो अर्थ ते पणो जे वस्तुमां वस्तुपणे पामीए, त्यारे ते वस्तु शब्दनये कहीए. जेम घटनी चेष्टाने करतो होय ते घट कहेवाय. ए शब्दनयमां व्याकरणथी

नीपन्या, अने वीजा पण सर्व शब्द लीधा. आगमसार ग्रंथ कर्त्ता शब्दनयमां चार निक्षेपा ग्रहण करे छे.

१ पहेलो नामनिक्षेपो ते आकार तथा गुणरहित वस्तुने नाम कही बोलावे, तेने नामनिक्षेपो कहे छे. जेम एक लाकडीने लेइने कोइए तेने जीव एवुं नाम कह्युं, ते नाम जीव जाणवो. एवी रीते नाम तप, अथवा नाम सिद्ध. जेम वड प्रमुखने सिद्धवड एम कही बोलावे छे, ते नाम निक्षेपो.

२ जेम कोइ वस्तुमां कोइ वस्तुनो आकार देखीने तेने ते वस्तु कहे. जेम चित्राम अथवा काष्ट पाषाण प्रमुखनी मूर्त्ति नेने घोडा हाथी कहेवाय ते स्थापना निक्षेपो

जाणवो. ए स्थापना निक्षेपो नाम निक्षेपा सहित होय छे. जेम स्थापनासिद्ध जिनप्रतिमा प्रमुख ते सद्भाव स्थापना अने असद्भाव स्थापना पण होय छे. अकृत्रिम जिनप्रतिमा ते नंदीश्वरद्वीप प्रमुखमां अने जे अत्रनी प्रतिमा ते कृत्रिम ते सर्व स्थापना जाणवी. जेम चित्रामणनी स्त्री ज्यां होय त्यां साधु रहे नहीं. कारण के स्थापना स्त्री छे ते स्त्री तुल्य जाणवी. तेमज जिनप्रतिमा जिन सरखी जाणवी. काली दोरीने सापनी बुद्धिथी हणतां सापनी हिंसा लागे छे, तेम जिनप्रतिमाने जिननी बुद्धिए पूजतां मानतां आत्महित जाणवुं.

चित्रामनी मूर्तिने हिंसाना परिणाम थकी फाडे तेने हिंसा लागे छे तेमज जिन-

नर स्थाने, जिनप्रतिमा पूजतां लाभ थाय छे.

३ जेनुं नाम होय तथा आकार स्थापना गुण पण होय अने लक्षण पण होय पण आत्मानो उपयोग मळे नहीं, तेने द्रव्यनिक्षेपो जाणवो. अज्ञानी जीव ते जीव स्वरूपना उपयोग विना द्रव्यजीव छे. "अणुवओगोदव्वम्" इति अनुयोगद्वार वचनात् वळी कह्युं छे के सिद्धांत वांचतां पुछतां पद, अक्षर, मात्रा, शुद्ध अर्थ करे छे, अने गुरु मुखे सद्दहे छे ते पण शुद्धनिश्चयनये पोतानी सत्ता ओळख्या विना सर्व द्रव्यनिक्षेपमां छे. जे भावविना द्रव्यपणुं छे ते पुण्यबंधनुं कारण छे पण मोक्षनुं कारण नथी. एटले जे धर्म करणीरूप कष्ट तपस्या करे छे, पण जीव, अजीव पदार्थनी सत्ता ओळखतो नथी,

तेने भगवती सूत्रमां अव्रती तथा अपच्च-
खाणी कह्या छे. आ कथन जे बाह्यभावमां
राचे छे अने आत्मस्वरूप जाणवा खप क-
रता नथी तेने फटका तरीके छे. एकांत जिन-
वचन नथी. दान, पूजा, तप अने क्रिया
प्रमुख सापेक्षबुद्धिथी मोक्षनुं कारण छे.
कारणे कार्य नीपजे इति वचनात्. ॥

आत्मानुं स्वरूप ओळखवाने बहु उद्यम
करवो. मुनिपणुं आत्मानुं स्वरूप जाणवा-
थी थाय छे. जेम जेम आत्मानुं स्वरूप ग्र-
हाय छे, तेम तेम परभावनो त्याग थाय छे.
श्री उत्तराध्ययन सूत्रमां कह्युं छे के " **न-
मुणीरन्नवासेणं** " जंगलमां वसवाथी
कंइ मुनिपणुं प्राप्त थतुं नथी, पण " **नाणे-**

णय मुणी होइ "-आतमस्वरूपनुं जे ज्ञान ते थकी मुनि थाय छे. इत्यादि द्रव्य निक्षेपानुं स्वरूप जाणवुं. विशेष गुरुगमथकी जिज्ञासुओए तत्त्व जाणवुं. आ वात एकांत समजवी नहि, आ संबंधी गुरुगमताए विशेष अधिकार जाणवो.

४ नाम, स्थापना, द्रव्य, ए त्रण निक्षेपा भाव विना अशुद्ध छे. नाम तथा आकार लक्षण गुण सहित वस्तु ते भावनिक्षेपो जाणवो. " उवओगोभावइतिवचनात् " पूजा, दान, शील, तप क्रिया, अने ज्ञान, ए सर्व भावनिक्षेपा सहित लाभनुं कारण छे. अत्र कोइ कहेशे जे मनना परिणाम दृढ करीने जे करीए, तेने भाव क-

हीए. पण एम कहेवुं ते योग्य नथी,
माणे तो सुखनी वांछाए मिथ्यात्वी प
णा करे छे, पण सूत्रनी साखे वीतर
आज्ञाए हेय तथा उपादेयनी परीक्षा
अजीवतत्त्व, तथा आस्रवतत्व तथा बं
उपर त्याग भाव, अने जीवना स्वगु
संवर निर्जरा अने मोक्ष तत्त्व उपरे उ
परिणाम तेने भाव कहे छे, ए चार निक्षेपा

शब्दनयमां भावनी मुख्यता हे
पण छे.

६ समभिरूढनय.

जे वस्तुना केटलाक गुण प्रगट
अने केटलाक गुण प्रगटया नथी पण
प्रगटशे एहवी वस्तुने जे वस्तु कहे तेने

भिन्ननय कहे छे. ते वस्तुना एक पदार्थवाच्य नामांतरे भिन्नार्थ जाणे. भिन्नभिन्न शब्दनो भिन्नाभिन्न अर्थ माने जेम जीव, चेतन, आत्मा, एनो एक अर्थ करी न सद्दहे, परंतु भिन्न अर्थ करे तेने समभिरुढ नयकहे छे. ए नय एक नय ओछो वस्तुने पूरेपूरी कहे छे. समभिरुढनय, तेरमे गुणठाणे वर्त्तता केवळीने सिद्ध कहे छे.

७ एवंभूतनय.

जे वस्तु पोताने गुणे संपूर्ण छे अने पोतानी क्रिया करे छे, तेने जे वस्तु करी बोलावे छे तेने एवं भूतनय कहे छे. मोक्षस्थानकमां जे जीव पहोंच्या तेने ते सिद्ध कहे छे. पाणीथी भरेलो स्त्रीना माथा उपर आवतां जल भरण क्रिया करतो जे घटतो होय ए तेने एव भूतनय घट कहे छे.

प्रमाण.

हवे प्रमाण बतावे छे.—प्रमाणना बे भेद छे (१) प्रत्यक्ष प्रमाण (२) परोक्ष प्रमाण.

१ जे जीव पोताना उपयोगथी साक्षात् द्रव्योने जाणे, तेने प्रत्यक्ष प्रमाण कहे छे. जेम केवळी छ द्रव्य प्रत्यक्षपणे जाणे छे, तथा देखे छे, ते माटे केवलज्ञान सर्वथी प्रत्यक्ष ज्ञान छे. मनःपर्यव ज्ञान ते मनोवर्गणा प्रत्यक्ष जाणे तथा अवधिज्ञान ते पुद्गलद्रव्यने प्रत्यक्ष जाणे छे माटे ए बे ज्ञान देश प्रत्यक्ष छे.

२ मतिज्ञान अने श्रुतज्ञाननो उपयोग ते परोक्ष प्रमाण छे.

परोक्ष प्रमाणना त्रण भेद छे.

१ अनुमान प्रमाण, २ आगम प्रमाण, ३ उपमान प्रमाण.

१ कोइक सहीनाण–चिह्न देखीने जे ज्ञान थाय. जेम यत्र तत्र धूमस्तत्र तत्राग्निः जे जे ठेकाणे धूम होय ते ते ठेकाणे अग्नि होय. एटले धूमने देखीने जे अग्निनुं अनुमान थयुं, ते अनुमान प्रमाण.

२ शास्त्रनी साक्षीथी जे वात जाणीए. जेम देवलोक, नरक, निगोद विगेरेनो विचार आगमथी जाणीए छीए, ते आगम प्रमाण छे.

३ कोइक वस्तुनो दृष्टांत आपीने वस्तुने ओळखाववी ते उपमान प्रमाण जाणवुं.

सप्तभंगीनुं स्वरूप.

१ स्यात् अस्ति. स्यात् कहेतां अनेकान्तपणे सर्व अपेक्षा लेइने जीवद्रव्यमां आपणो द्रव्य, आपणो क्षेत्र, आपणो काल, तथा आपणो भाव, एम स्वगुण पर्याये जीव छे, तेम सर्व द्रव्य आपणे गुण पर्याये छे. ते स्यात् अस्ति नामनो पहेलो भांगो जाणवो.

२ स्यान्नास्ति. जीवद्रव्यमां बीजा पांच द्रव्यना द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, ते पर द्रव्यना गुणपर्याय जीवद्रव्यमां नथी, एटले पर द्रव्यना गुणनो नास्तिपणो जीव द्रव्यमां छे ए स्यात् नास्ति नामे बीजो भांगो थयो.

३ स्यात्अस्ति नास्ति द्रव्य स्वगुणे अस्ति अने परगुणे नास्ति ए बे भांगा एक

जाणवो (२) तेनो ज्ञाता जीव (३) ज्ञेय ते सर्व द्रव्य.

(१) ध्यान ते जीवना स्वरुपनुं (२) ध्याननो ध्याता जीव (३) ध्येय ते आत्मानु स्वरूप. आत्माना त्रण भेद छे. १ बहिरात्मा २ अन्तरात्मा ३ परमात्मा.

१ शरीर, मन, लेश्या अने इंद्रियादि वस्तुने अज्ञानी जीव आत्मबुद्धिए माने ते पहेलो बहिरात्मा जाणवो. दुहा—पुदगलमां राची रहे, पुदगल मुखनिधान, तस लाभे लोभ्यो रहे, बहिरातम अभिधान ॥ १ ॥ पुद्गलथी न्यारो नहीं, आतम एवी बुद्धि, बहिरातम मृग शु लहे, प्रगटे नहीं स्वबुद्धि ॥ २ ॥

२ देह मंदिर जीव छे पण निश्चय

सत्ता गुणे सिद्ध समान छे एटले पोताना जीवने सिद्ध करी ध्यावे ते अंतरात्मा जाणवो. पुद्गल वस्तु पोताना आत्मानी नथी. आत्माथी शरीर, इंद्रिय, अने लेश्या वगेरे भिन्न छे, आत्मा अरूपी छे, पुद्गल (कर्मरुप) रूपी छे, आत्मा चेतना सहीत छे, कर्म जड छे, आत्माने चार गतिमां भटकवानुं कारण कर्म छे. ते मारी वस्तु नथी, पण पर वस्तु छे. अरे हुं ए पर वस्तुने पोतानी मानी बेठो छुं अने तेथी हुं दुःखी थाउं छुं. हे चेतन ! तुं अरूपी अनंत गुणनो भोक्ता छे. आठ कर्मना नाशथी तुं परमात्मा शुद्धात्मा स्वरूप थइश. कर्म रहित जेवा सिद्धना जीवो छे, तेवो सत्ताए तुं पण छे. कर्मना आवरणथी तारा गुण दबाइ गया

छे. इत्यादि पोताना आत्माने सिद्ध समान ध्याववो ते अन्तरात्मानुं लक्षण छे.

३ सर्व कर्म खपावी केवलज्ञान पाम्या तेवा अरिहंत तथा सिद्ध सर्व परमात्मा जाणवा.

हवे द्रव्य मध्ये छ सामान्य गुण कहे छे.

१ अस्तित्व–ते छ द्रव्य आपणा गुणपर्याय प्रदेशे करी अस्ति छे तेमां धर्म, अधर्म, आकाश अने जीव ए चार द्रव्यना असंख्याता प्रदेश खंध छे अने पुद्गलमां मळवा पणानी शक्ति छे माटे ए पांच द्रव्य अस्तिकाय छे अने छठ्ठो काळ द्रव्यनो समय छे ते कोइ कोइथी मळतो नथी. कारण के एक समय विणश्या पछी बीजो समय थाय छे माटे काळ अस्तिकाय नथी. ए द्र-

व्यमां अस्तित्व कह्यो.

२ वस्तुत्व–एटले छ द्रव्यमां वस्तुपणो कहे छे. ते द्रव्य एकठा एक क्षेत्र मध्ये रह्या छे. एक आकाश प्रदेशमां धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश रह्यो छे. तथा अधर्मास्तिकायनो पण एक प्रदेश रह्यो छे. आगमसार कर्त्ताना मत प्रमाणे जीव अनंताना अनंत प्रदेश रह्या छे एम लख्युं छे. आकाशना एक प्रदेशे आत्माना सर्व प्रदेशो रही शकता नथी एम अन्यागमोथी जणाय छे. पुद्गल परमाणुआ अनंता रह्या छे. ते सर्व पोतानी सत्ता लेइने रह्या छे, पण कोइ द्रव्य कोइ द्रव्य साथे मळी जतुं नथी ते वस्तुपणुं जाणवुं.

३ द्रव्यत्व–कहेतां द्रव्यपणो ते सर्व

समये द्रव्यमां छे. जे समयमां शुद्ध स्वगुणनी अस्ति छे तेज समयमां परगुणनी नास्ति पण छे. यस्मिन् समये शुद्ध स्वगुणस्य अस्तितता आत्मनि तस्मिन् समये एव परगुणस्य नास्तितता आत्मनि वोध्या. माटे अस्ति नास्ति ए बे भांगा एक समयमां भेला छे ते स्यात्अस्तिनास्ति त्रीजो भांगो थयो.

४ स्यात्अव्वक्तव्य. अस्ति अने नास्ति ए बेउ भांगा एक समयमां छे, तो वचने करी अस्ति एटलुं बोलतां असंख्याता समय लागे, तेथी नास्ति भांगो तेज वखते कहेवाय नहीं, अने जो नास्ति भांगो कह्यो तो अस्तिपणो आव्यो, माटे एकज अस्ति कहेतां थकां नास्तित्व तेज स-

मये द्रव्यमां छे, ते कहेवाणो नहीं. माटे मृषावाद लागे, तेमज नास्ति कहेतां अस्तिनो मृषावाद लागे, माटे वचने करी अगोचर छे. एक समयमां वे भांगा वचने करी कह्या जाय नहीं. कारण के एक अक्षर वोलतां असंख्याता समय लागे छे. माटे वचनथी अगोचर छे, ते स्यात् अवक्तव्य चोथो भांगो जाणवो.

५ अवक्तव्यपणो वस्तुमां अस्तित्व-नो पण छे. माटे **स्यात् अस्ति अवक्त-व्य** ए पांचमो भांगो जाणवो.

६ नास्तित्वनो पण अवक्तव्य पणे वस्तु मध्ये छे माटे **स्यात् नास्ति अव-क्तव्य** ए छट्ठो भांगो जाणवो.

७ अस्तित्व तथा नास्तित्व एटले अस्तिपणुं तथा नास्तिपणुं एम बे धर्म एक समये वस्तुमां छे. पण वचन थकी कह्या जाय नहीं, माटे **स्यात् अस्ति नास्ति युगपत अवक्तव्य** ए सप्तमो भांगो जाणवो.

नित्यानित्यत्वादि अनेक धर्ममां सप्तभंगी लागु पडे छे.

१ स्यात् नित्यम् २ स्यात् अनित्यम् ३ स्यात् नित्यानित्यं ४ स्यात् अवक्तव्यं ५ स्यात् नित्यं अवक्तव्यम् ६ स्यात् अनित्यं अवक्तव्यम् ७ स्यात् नित्यानित्यं युगपत् अवक्तव्यम् ए सात भांगा जाणवा.

तेमज एक अनेकना सात भांगा जा-

णवा. तथा गुणपर्यायमां पण कहेवा. केमके सिद्ध मध्ये नयनथी तोपण सप्तभंगी तो छे. ए सप्तभंगीमां आद्य त्रण भांगा सकला देशी छे अने बाकीना चार भांगा विकला देशी छे.

" त्रिभङ्गी "

त्रण दशा बतावे छे १ बाधक २ साधक ३ सिद्ध.

१ मिथ्यात्व दशा ते बाधक दशा जाणवी. २ समकित गुणठाणाथी मांडीने अयोगी केवळी गुणठाणा सुधी साधक दशा जाणवी. ३ सर्व कर्मथी रहित सिद्ध दशा जाणवी.

(१) ज्ञाननो जाणपणो ते जीवनो गुण

द्रव्य पोतपोतानी क्रिया करे छे. धर्मास्तिकायमां चलन सहाय गुण ते सर्व प्रदेश मध्ये छे. सदा पुद्गल तथा जीवने चलन स्वभाव रुप क्रिया करे छे.

प्रश्न–लोकांतसिद्ध क्षेत्रमां धर्मास्तिकाय छे. ते सिद्धना जीवोने चलाववामां सहाय क्रिया केम करतुं नथी?

उत्तर–सिद्धना जीवो अक्रिय छे, माटे चालना नथी. पण ते क्षेत्रमां सूक्ष्म निगोदना जीव तथा पुद्गल छे; तेने धर्मास्तिकाय चलन सहाय आपे छे. पण सिद्धना जीवो अक्रिय छे, तेथी तेमने चलण सहाय, धर्मास्तिकाय आपतो नथी. पुद्गल सक्रिय छे, पण पुद्गल संग त्यागी जे सिद्ध थया ते तो अक्रिय छे अने अक्रिय एवा

सिद्धना जीवो चाली शकता नथी. जे वस्तु सक्रिय होय छे, गति करी शके छे, तेने धर्मास्तिकाय चालवामां सहाय आपे छे, पण अक्रिय एवा सिद्धना जीवो गति करता नथी, तेथी तेमने चालवामां धर्मास्तिकाय सहाय; आपी शकतुं नथी. सिद्धात्माओ अक्रिय छे, माटे धर्मास्तिकाय चलण सहाय आपतो नथी. ते सिद्धना जीवो निश्चल स्वस्वरुपी छे.

अधर्मास्तिकाय जीव तथा पुद्‌गलने स्थिर राखवानी क्रिया करे छे. तथा आकाश द्रव्य ते सर्व द्रव्यने अवगाहना गुण रुप दान आपे छे.

प्रश्न–अलोकाकाशमां बीजुं कोइ द्रव्य नथी तो अलोकाकाश क्या द्रव्यने अवगा-

हना दान आपे छे ?

उत्तर–अलोकाकाशमां अवगाहना दान देवानी शक्ति तो लोकाकाश जेवीज छे, पण त्या अवगाहना दान लेनार कोइ द्रव्य नथी, माटे अवगाहना दान करतुं नथी. तेथी अलोकाकाशमांथी अवगाहना गुण शक्ति, जे स्वभावे छे तेनो नाश थतो नथी. अलोकाकाशमां अवगाह गुणमां अगुरु लघुपर्याययोगेषड्गुण हानि वृद्धिचक्र चाली रह्युं छे.

पुद्गलद्रव्य मिलवा विखरवारुप क्रिया कर्या करे छे. कालद्रव्य वर्तनारुप क्रिया कर्या करे छे. जीव द्रव्य ज्ञानलक्षण उपयोगरूप क्रिया करे छे. ए द्रव्यपणुं षड् द्रव्योमां कह्युं.

४ प्रमेयत्वं–ए प्रमेयपणो छ द्रव्यमां छे. तेनो प्रमाण केवली पोताना ज्ञानथी करे छे. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाश ए अकेक द्रव्य छे. अने जीव द्रव्य अनंता छे. तेहनी गणतरी वतावे छे. संज्ञी मनुष्य संख्याता छे. असंज्ञी मनुष्य असंख्याता छे. नारकी असंख्याता छे. देवता असंख्याता छे. तिर्यंच पंचेंद्रिय असंख्याता छे. द्विन्द्रिय असंख्याता छे. त्रीन्द्रिय असंख्याता छे. चतुरिन्द्रिय असंख्याता छे. ते थकी पृथ्वीकाय असंख्याता छे. अप्काय असंख्याता. तेउकाय असंख्याता. वायुकाय असंख्याता. प्रत्येक वनस्पति जीव असंख्याता. ते थकी सिद्धना जीव अनंता. ते थकी वादर निगोदना जीव अनंतगुणा.

बादर निगोद ते कंद, मूळ, आदु, सूरण, शकरीयां, मुळा, प्रमुख एना सूइना अग्र-भाग जेटला भागमां अनता जीव रह्या छे. ते सिद्धना जीवथी अनंतगुणा छे अने सूक्ष्म निगोदना जीवो, सर्वथी अनंतगुणा छे.

सूक्ष्मनिगोद.

लोकाकाशना जेटला प्रदेश छे, तेटला निगोदना गोला छे. ते एकेक गोलामां असंख्याती निगोद छे. अनंता जीवोनु पिंडभूत एक शरीर तेने निगोद कहे छे. तेमांथी एक निगोदमां अनंता जीव रह्या छे. अतीत काळना सर्व समय तथा वर्तमानकाळनो एक समय तथा अनागतकाळना सर्व समय, ते सर्वने भेला करीए. अने तेने अ-

नंत गुणा करीए तेटला एक निगोदमां जीव रह्या छे. एटले एक निगोदमां अनंता जीव रह्या छे. तेमांथी एक जीव ग्रहण करीए. तेना प्रदेश असंख्याता छे अने एकेका प्रदेशे अनंति कर्मनी वर्गणा लागी छे. ते एकेक वर्गणा मध्ये अनंता पुद्गल परमाणुआ छे. एम अनंता परमाणुआ, जीवनी साथे लाग्या छे. ते थकी अनंतगुणा पुद्गल परमाणु जीवथी रहित छूटा छे.

गाथा.

गोलाय असंखिज्जा, असंख निगोए हवइ गोलो, इक्किकमिनिगोए, अणंता जीवा मुणेयव्वा. ॥ १ ॥

अर्थ—लोकमांहे असंख्याता गोळा छे.

एकेका गोळा मध्ये असंख्याती निगोद छे. अने एकेक निगोदमां अनंता जीव छे.

गाथा.

सत्तरस समहिआ, किरइमाणु पाणमि हुंति सुहुमभवा, सगतिससयतिहुत्तर, पाणुं पुणइग मुहुत्तंमि.

अर्थ-निगोदिया जीव मनुष्यना एक श्वासोच्छ्वासमां सत्तर भव झाझेरा करे छे. एक मुहूर्तमां ३७७३ त्रण हजार सातसो तोतेर श्वासोच्छ्वास थाय छे. तेटलामां निगोदिया जीव केटला भव करे ते बतावे छे.

पणसठिसहस्सपणसय, छत्तिसा इग मुहुत्त खुड्डभवा, आवलियाणं दोसय, छप्पन्ना एगखुड्डभवे.

अर्थ–एक मुहूर्तमां निगोदना जीव ६५५३६ भव करे छे. निगोदनो एक भव २५६ आवलीनो छे. क्षुल्लक भवनो ए प्रमाण छे.

गाथा–अत्थि अणंताजीवा, जेहिंनपत्तोतसाइ परिणामो. उववज्जंति चयंतिय, पुणोवि तथ्थतथ्थेव ॥ निगोदमां अनंताजीव एवा छे के जे जीवो, त्रसपणो कोइ वखते पाम्या नथी. अनंतोकाल पूर्वे गयो तो पण जे जीवो वारंवार त्यांज उपजे छे, अने च्यवे छे. एम एकनिगोदमां अनंताजीव छे. ते निगोदमां बे भेद छे. १ एक व्यवहार राशिनिगोद, अने बीजो अव्यवहार राशिनिगोद. तेमां जे बादर एकेन्द्रियपणो भावे त्रसपणो पामीने पाछा निगोदमां जइ पड्या

छे. ते निगोदिया जीवने व्यवहार राशिया कहीए. अने जे जीव कोइपण काळे निगोदमांथी नीकळ्या नथी, ते जीव अव्यवहार राशिया कहीए.

इहां मनुष्यपणामांथी जेटला जीव कर्म खपावीने मोक्षे जाय छे, तेटला जीवो तेज समये अव्यवहारराशिसूक्ष्मनिगोदमांथी नीकळीने उंचा आवे छे. जो दशजीव मोक्षे जाय तो दशजीव नीकळे. कोइक वेळाए भव्यजीव ओछा नीकळे तो एक बे अभव्य नीकळे पण व्यवहार राशिमां कोइ जीव वधेघटे नहीं. एवा निगोदना असख्याता गोळा लोक माहे छे. घटे न राश निगोदकी वधे न सिद्ध अनन्त.

छदेशिना आव्या पुद्गलस्कधो आहा-

पणे जे लेछेः ते सकलगोला कहेवाय छे, अने लोकांतना प्रदेशे जे निगोदना गोला रह्या छे, तेने त्रण दिशिना आहारनी स्पर्शना छे माटे ते विकल गोला कहेवाय छे. ए सूक्ष्म निगोदमां अनंतु दुःख छे. तेनुं उदाहरण बतावे छे. सातमी नरकनुं आउखुं तेत्रीश सागरोपमनुं छे अने ते तेत्रीश सागरोपमना जेटला समयो थाय तेटला वखत सातमी नरकमां तेत्रीश सागरोपमने आउखे कोइ जीव उपजे तेटला भवमां ते जीवने जेटलुं छेदन भेदननुं दुःख थाय ते सर्व एकठुं करीए, तेथी अनंतगुण दुःख निगोदिया जीवने एक समयमां थाय छे. जेम कोइ देवता साडात्रणक्रोड लोढानी सोयो तपावीने एकदम कोइ मनुष्यना शरीरें चोंपे

तेथी तेने जे वेदना थाय छे, तेथी अनंतगुणी वेदना निगोदिया जीवने एक समयमांज थाय छे. भव्य जीवने निगोद प्राप्त थवानुं कारण अज्ञान छे. माटे तेहनो त्याग करवो ए हित-शिक्षा छे. सर्व प्रमेयनो प्रमाता आत्मा ते पोताना ज्ञान गुणे प्रमेयनो प्रमाण करे छे. ए प्रमेयत्वपणो कह्यो.

५. सत्व कहेतां सत्वपणो ते छ ए द्रव्योमां छे. द्रव्यमां एक समयमां उत्पाद-व्यय थाय छे, अने तेज समयमां स्थिरपणे वर्ते छे. उत्पाद्व्यय, अने ध्रुवपणो तेहो ज सत्पणो छे. " उत्पाद्व्ययध्रुवयुक्तं-सत् इति तत्त्वार्थ वचनात् " तेने विस्तारथी बतावे छे.

६ धर्मास्तिकायना असंख्याता प्रदेश

छे. त्यां एक प्रदेशमां अगुरु लघु असंख्याता छे, अने बीजा प्रदेशमां अगुरु लघु अनंतो छे. त्रीजा प्रदेशमां संख्यातो अगुरु लघु छे एम असंख्याता प्रदेशमां अगुरु लघु पर्याय घटतो वधतो रहे छे, ते अगुरु लघु पर्यायचल छे. ते जे प्रदेशमां असंख्यातो छे, तेज प्रदेशमां अनंतो थाय छे. अने अनंताने ठेकाणे असंख्यातो थाय छे. अने असंख्याताने ठेकाणे संख्यातो अगुरुलघु पर्याय थाय छे. एम लोक प्रमाण असंख्यात प्रदेशमां सरखो समकाले अगुरु लघु पर्याय फरे छे. जे प्रदेशमां असंख्यातो फिटीने अनंतो थाय छे, ते प्रदेशमां असंख्यातपणानो विनाश छे अने अनंतपणानो उपजवो थाय छे, अने छ द्रव्यमां अगुरुलघुपणे गुण ध्रुव

वर्ते छे, एम उपजवो, विणसवो, अने ध्रुव ए त्रण परिणाम छे, तेने उत्पाद, व्यय, अने ध्रुव कहे छे.

अधर्मास्तिकायमां उत्पाद, व्यय, अने ध्रुवरूप त्रणे परिणाम असंख्याता प्रदेशे सदा समय समयमां परिणमी रह्या छे. तेमां पण उपजवुं विणसवुं अने स्थिर रहेवुं, एज सत्य जाणवुं.

आकाशना प्रदेशमां पण एक समये त्रण परिमाण परिणमी रह्या छे. जीवना असंख्याता प्रदेश छे. तेमां पण उत्पाद, व्यय, अने ध्रुव, ए त्रण परिणाम समये २ परिणमा रह्या छे. तथा पुद्गल परमाणुआमां पण सदा समय समय, उत्पाद, व्यय, अने ध्रुव, ए त्रण परिणाम परिणमी रह्या छे.

कालनो वर्तमान समय मटीने अतीतकाल थाय छे, तो ते समयमां वर्तमानपणानो विनाश छे, अने अतीतपणानो उपजवो छे, तथा काळपणे ध्रुव छे, ए स्थूलथकी उत्पाद व्यय अने ध्रुवपणो कह्यो अने वस्तुपणे मूलपणे ज्ञेयने पलटवे ज्ञाननो पण ते भासनपणे परिणमवो थाय छे, तेमां पूर्वपर्यायना भासननो व्यय, अने अभिनवज्ञेय पर्यायना भासननो उत्पाद, तथा ज्ञानपणानो ध्रुव, ए रीते सर्वगुणना धर्मनी प्रवृत्तिरूप पर्यायनो उत्पाद, व्यय श्री सिद्ध भगवंतमां पण समये २ थइ रह्यो छे.

ए धर्मास्तिकायना प्रदेशे जे क्षेत्रगत असंख्याता पुद्गल तथा जीवने पहेले समये चलण सहायीपणो परिणमतो हतो, तेज प्रदे-

शमां बीजा समयमां अनंत परमाणुआ तथा अनंतजीव प्रदेशने चलणसहायीपणो थयो. तेवारे असंख्याता चलणसहायनो व्यय, अने अनंता चलणसहायनो उपजवो, अने चलणसहाय गुणपणे ध्रुव एम धर्म द्रव्यमध्ये उत्पाद, व्यय, अने ध्रुवपणो थइ रह्यो छे. ते प्रमाणे अधर्म, आकाशादि द्रव्यमां जाणवुं. तथा वली कार्य कारणपणे उत्पाद. व्यय तथा अगुरु लघुपर्यायना चलननो उत्पाद, व्यय, पचास्तिकायमां कहेवो. तथा कालद्रव्य ते उपचारथी द्रव्य छे. तेनु सर्व स्वरूप उपचारथीज कहेवु. ए रीते सर्व द्रव्यमां सत्पणो छे. जो अगुरु लघुनो भेद न थाय, तो प्रदेशोनो मांहोमांहे भेद थाय नहीं. माटे अगुरु लघुनो भेद सर्वमां छे.

॥ अगुरु लघु ॥

अगुरु लघुपणो कहे छे.

जे द्रव्यनो अगुरु लघु पर्याय छे, ते छ प्रकारनी हानि वृद्धि करे छे.

१ अनंतभाग वृद्धि. २ असंख्याताभाग वृद्धि. ३ संख्यातभाग वृद्धि. ४ संख्यातगुण वृद्धि. ५ असंख्यातगुण वृद्धि. ६ अनंतगुण वृद्धि.

ए छ प्रकारनी वृद्धि कही. हवे छ प्रकारनी हानि बतावे छे.

१ अनंतभाग हानि. २ असंख्यातभाग हानि. ३ संख्यातभाग हानि. ४ संख्यात गुण हानि. ५ असंख्यातगुण हानि. ६ अनंतगुण हानि.

ए छ प्रकारनी हानि समजवी.

सर्व द्रव्यमां ए छ प्रकारनी हानि तथा वृद्धि सदा समये समये थइ रही छे. उपजवो (उत्पाद) अने हानि कहेतां (व्यय) कहीए. ए अगुरु लघुत्व कह्युं. अगुरु लघु गुणने गोत्रकर्म रोके छे. ए अगुरु लघु स्वभाव सदा समये समये द्रव्यमां परिणमे छे.

ए छ द्रव्यमां जेटला सरखा गुण छे, तेने सामान्य गुण कहे छे.

जे गुण एक द्रव्यमां छे अने ते गुण बीजा द्रव्यमां नथी, तेने विशेष गुण कहे छे.

जे गुण कोइक द्रव्यमां छे, अने कोइक द्रव्यमां नथी, तेने साधारण असाधारण गुण कहे छे.

ए छ द्रव्यमां अनंतगुण, अनंतपर्याय, अने अनंतस्वभाव सदा शाश्वता छे. जेवी रीते श्री केवली महाराजे प्ररूप्या. ते सर्व जे रीते छे, ते रीते शुद्ध सद्दहणापूर्वक यथार्थ उपयोगथी श्रुतज्ञानादिकथी यथार्थपणे जाणवा, सद्दहवा. एवुं निश्चयज्ञान ते मोक्षप्राप्तिनुं कारणीभूत छे. जे जीव ज्ञान पाम्यो, ते जीव विरति करे छे. तेज चारित्र जाणवुं. ज्ञाननुं फळ विरतिपणुं छे, ते मोक्षनुं कारण छे.

४ चार ध्यान.

१ आर्तध्यान २ रौद्रध्यान ३ धर्मध्यान ४ शुक्लध्यान.

१ आर्तध्यान अने २ रौद्रध्यान ए बे दुर्गतिहेतुभूत छे. ए बे ध्यान अशुभ छे.

भव्य प्राणीयोने ए बे ध्यान त्याग करवा योग्य छे. धर्मध्यान अने शुक्लध्यान ए बे शुद्ध उपास्य छे.

आर्तध्यान.

मनमां आहट्ट दोहट्टना परिणाम ते आर्तध्यान कहीए. आर्तध्यानना चार पाया छे.

आर्तध्यानना ४ पाया छे १ इष्टवियोग २ अनिष्टसंयोग ३ रोगचिंता ४ अग्रशौच.

१ इष्टवियोग–पौद्गलिक वस्तु जे मनने आल्हादकारी लागे छे तेनो पोताथी वियोग थवाथी जेजे आहट्ट दोहट्टना परिणाम थाय छे, तेने इष्ट वियोगनामा आर्तध्यान कहे छे. भाइ, मित्र, सज्जन, माता, पिता, स्त्री, पुत्र अने धन प्रमुख इष्ट वस्तुनो

वियोग थवाथी जीव विलाप करे छे, ते इष्ट वियोगनुं लक्षण छे.

२ अनिष्टसंयोग—अनिष्ट एटले दुःखनां कारणभूत, शत्रु, दरिद्रिपणुं. तथा कुभार्या, कुभोजन, कुपुत्र, आदिनो संयोग एटले संबंध थवो. ते थकी मनमां जे दुःखचिंता उपजे, ते अनिष्ठसंयोग नामा बीजो पायो आर्तध्याननो जाणवो.

३ रोगचिंता—शरीरमां अनेक प्रकारना रोगो रह्या छे. मनुष्यना शरीरमां साडात्रण कोटि रोम राजि छे. एकेका रोममां पोणा बबे रोग रह्या छे. तेमांथी केटलाक रोगो उदये आवे छते जीवने चिन्ता थाय छे. हाय हाय हुं हवे शी रीते जीवी शकीश. अरे माराथी आवुं दुःख खमातुं नथी. अरे

हुं मरी जाउं छुं. अरे जो पहेलोथी में दवाओ करावी राखी होत, तो आ वखते खावाथी मारो रोग मटी जात. अरे हुं हवे दुःख सहन कर्या करतां मरी जाउं तो सारु. अरे कोइ सारा वैद्यने बोलावी मारा रोगनी शांति थाय तेम करुं. आवा प्रकारनी रोग संबधथी जे चिंता करवी, ते रोगचिंता नामनो आर्तध्याननो त्रीजो पायो जाणवो.

४ अग्रशौच–अग्र एटले आगळ भविष्यकाल संबंधी शौच–एटले शोक विचार, चिंतवन, शोच करवो ते अग्रशौच कहीए. जो आ वर्षमां अमुक काम करशुं तो आवता वर्षमां अमुक लाभ थशे. दान, शीयल, अने तप वगेरेनुं फल मागे के जो में तप, दान, शीयल पाळ्युं होत, तो आवता भवमां दे-

वता थात, वा अमुक थात, चक्रवर्ति थात, राजा थात अने अमुकनो नाश करनार थात एवी आंगला भवनी जे वाञ्छा तेने अग्रशौच कहे छे.

आर्तध्यानना चार पाया थकी जीव तिर्यंचनी गतिमां जाय छे. माटे भव्य प्राणियोए ए ध्यानथकी दूर रहेवुं, आर्तध्यान रूप शत्रुनो मनमां वास करवा देवाथी आत्मानी अनंतिऋद्धिनो नाश थाय छे. आत्मा, खरेखर आर्तध्यानथी अनादिकाळथी रजक्यो अने हजी जो एनो संग नहीं मूके तो घणा भव भटकशे. जे आर्तध्यानने शत्रुरूप जाणे छे, ते तेनाथी दूर रहेवा अंतःकरणथी महेनत करे छे. संसारमां भूंडनी पेठे रच्या पच्या थका दुर्ध्यान ध्यावे छे, ते पामरो अ-

धोगतिने सेवे छे. संसारमां कोइ कोइनुं नथी. चेतन पर जड वस्तुने पोतानी मानी अनंता दुःख भोगवे छे. खरो शत्रु दुर्ध्यान छे; ए दुर्ध्याने प्रसन्नचंद्रराजर्षिने सातमी नरकनां दलीयां संचाव्यां. (एकठां कराव्यां) पण धर्मध्यान रूपी योद्धाए आवी दुर्ध्यानने हठावी, मोक्षरुप स्त्रीनो मेळाप करावी आप्यो. आश्चर्य एटलुंज थाय छे के जीव पोते हित तथा अहितने जाणे छे, छता अहितमां वर्ते छे. निर्ग्रंथ महात्माओ हृदयरूप महेलमां चंडाल सरखा आर्तध्यानने प्रवेश करवा देता नथी. आत्महितैषियोए हुं कोण छुं, क्यांथी आव्यो, क्यां जाइश, तारु कोण, तुं कोण, ए वाक्यनो उपयोग पूर्वक विचार करी त्याज्य वस्तुनो त्याग करवो,

एज हितकारक छे. वारंवार आ मनुष्यजन्म पामवो दुर्लभ छे. भव्यो!!! जो धर्मसामग्री पामी प्रमाद करशो, तो घणा भव भटकशो. अघोर दुःखमांथी छूटवानो आ उत्तम अवसर छे. एम ज्ञानीओ पुस्तक द्वारा जणावे छे.

आर्तध्यानना परिणाम पांचमा तथा छठ्ठा गुणठाणा सुधी होय छे. कारण के छठ्ठुं गुणठाणुं प्रमत्त छे, माटे त्यां ए ध्याननो परिणाम संभवे छे.

२ रौद्र ध्यान.

१ हिंसानुबंधीरौद्रध्यान २ मृषानुबंधीरौद्रध्यान ३ अदत्तानुबंधीरौद्रध्यान ४ परिग्रहानुबंधीरौद्रध्यान.

१ जे हिंसा करीने हर्ष पामे, बीजो कोइ हिंसा करतो होय तेने देखी खुश थाय. अथवा युद्धनी अनुमोदना (प्रशंसा) करे, तेने हिंसानुबंधी रौद्रध्यान होय छे.

२ जुठुं बोली मनमां हर्ष पामे. अहो में केवुं कपट कर्युं के—मारा जूठापणानी कोइने खबर पडी नहीं. एवो मृषावादरूप परिणाम, ते मृषानुबंधी रौद्रध्यान कहेवाय छे.

३ चोरी करी, ठगाइ करी, मनमां राजी थाय, अने चिंतवे जे मारा जेवो कोण बळवान् छे, के जे पारको माल खाय छे. चोरोने चोरी करवामां सहाय आपवाना परिणाम अने चोरी करनारनी प्रशंसारूप परिणाम ते अस्तेयानुबंधी रौद्रध्यान जाणवुं.

४ धन, धान्य, खेत्र, वास्तुं, रूप सुवर्ण कूप अने द्विपद नव जातनो परिग्रह वधारवानी घणी तृष्णा होय अने तेनी वृद्धिना उपायोनुं चिंतवन करे, कुटुंबना माटे गमे तेवुं पाप करे वा घणो परिग्रह मळवाथी अहंकार करे, अने जगत्‌ने तृणवत्‌ माने. तथा परिग्रह रक्षण करवानी चिंता ए आदि परिणामने परिग्रहानुबंधी रौद्रध्यान कहे छे.

ए चार प्रकारना ध्यान थकी जीव नरकनी गतिमां जाय छे. माटे भव्यात्माओए चार प्रकारनुं रौद्रध्यान ध्यावुं नहीं. महा रौरव भयंकर दुःखनुं कारण रौद्रध्यान छे. रौद्रध्यान पांचमा गुणठाणा सुधी छे. छठ्ठे गुणठाणे पण एक हिंसानुबंधी रौद्रध्यानान परिणाम कोइक जीवने होय छे. रौद्र-

ध्यान रुप सर्प जेने करडे छे, तेने चतुर्गतिरूप भवभ्रमण करवुं पडे छे. जेम मनुष्यने सर्पनो भय लागे छे, तेम वैरागीओने रौद्रध्यान रूप सर्पनो भय लागे छे. मंत्रवडे मंत्रवादीओ जेम सर्पनुं झेर उतारे छे, तेम धर्मध्यानरूप मंत्रवडे वैरागीयो पापरुप झेर उतारे छे. सर्प जेम अनिष्ट लागे छे तेम ज्ञानीओने रौद्र-ध्यानरूप सर्प अनिष्ट लागे छे. जनसमूह सर्पने पासे आववा देतो नथी, तेम ज्ञानीओ रौद्रध्यानरुप सर्पने पासे आववा देता नथी. एटलुं विशेष छे के, सर्पडंसथी एकवार मरवुं पडे छे पण रौद्रध्यानरुप सर्पडंशथी अनंतिवार जन्म मरण करवुं पडे छे. रौद्रध्यान अघोर रात्री समान छे. अघोर अंधारी रात्रीमां जेम माणस अंध समान बनी जाय

छे, तेम माणस रौद्रध्यानरूप अंधारी अघोर रात्रीमां अज्ञानी बनी जाय छे. अघोर रात्रीमां जेम चोरोनो प्रचार थाय छे, अने तेओ खातर पाडे छे, तेम रौद्रध्यानरूप अघोर रात्रीमां राग, द्वेष, मोह, माया अदेखाइ, निंदा, क्लेश, चाडी, अने असत्यरूपी चोरो, आत्मानी अनंत ऋद्धि लुंटे छे. रौद्रध्यानमदिरा अत्यन्त बेभान कर्ता छे तथा अनंत दुःखनो हेतुभूत छे. हे चेतन !!! तुं आपोआप विचार के रौद्रध्यानरूप शत्रु तने हितकर्त्ता छे के अहितकर्ता छे ? हितकर्ता तो कदापिकाले कही शकाय नहीं, अने अहित करनार तो प्रत्यक्ष देखवामां आवे छे छतां तुं केम तेनो संग छोडतो नथी ? शुं ? तने कंइ पैसा बेसे छे ना तेम

पण नथी. दृढप्रहारी जेवा हिंसके पण ए शत्रुनो संग त्याग कर्यो त्यारे ते सुख पाम्यो. हे चेतन!!! तुं विचार के ए रौद्रध्यानरूप शत्रुना वशमां पडेलो मम्मण शेठ, तथा संभूम चक्रवर्ति नरकनां महा रौरव दुःख भोगवे छे, तेम छतां केम तुं कंइपण मनमां विचार करतो नथी सूर्यने तथा चद्रने जेम राहु घेरे छे, तेम तने रौद्रध्यानरूप राहु ग्रहण करे छे. जेम कोयला खावाथी काळुं मुख थाय छे, तेम रौद्रध्यानथी समजवुं. लाखो शत्रुओने जीतनाराओ पण रौद्रध्यानरूप शत्रुने जीती शकता नथी, एवु अशुभ, आत्मघाती, मलीन, रौद्रध्यान छे. एनो यत्न पूर्वक त्याग करवो, एज हितकारी शिक्षण छे. ए बे ध्याननो त्याग करवो जो-

इए. त्यारे हवे कोनो स्वीकार करवो तेवी आकांक्षा थतां धर्म ध्याननो स्वीकार करवो, एम शास्त्रकार जणावे छे.

३ धर्मध्यान.

दुर्गतिमांपडता प्राणियोने धारण करी राखे अर्थात् दुर्गतिमां पडवा दे नहीं अने उच्च गति आपे तेने सामान्य प्रकारे धर्म-ध्यान कहे छे.

१ आज्ञाविचय २ अपायविचय ३ विपाकविचय ४ संस्थानविचय एवं धर्मध्यानना चार पाया छे.

आज्ञाविचय–वीतराग देवनी आज्ञा साची करी सद्दहे, भगवंते छ द्रव्यनुं स्वरूप नयप्रमाण निक्षेपा सहित सिद्ध स्वरूप तथा

निगोद स्वरूप जेवी रीते कह्युं छे, तेवी रीते हृदयमां धारे, यथातथ्य करी माने. सद्दहे, वीतरागनी आज्ञा नित्यानित्यपणे तथा निश्चय व्यवहारपणे माने, श्रद्धा करे, तथा उत्सर्ग अपवादपणे माने, श्रद्धा करे, ते आज्ञा प्रमाणे जेने यथार्थ उपयोग भासन थयो, तेना हर्षथी ते उपयोग मध्ये, निराधार, भासन, रमण, अनुभवता, एकता, तेमां तन्मयपणुं जेने थाय छे तेना ध्यानने आज्ञा विचय धर्मध्यान कहे छे.

२ अपायविचय–जीवमां जे अशुद्धपणाथी कर्मना संयोगे संसारी अवस्थामां अनेक प्रकारनां अपाय कहेतां दूषण छे. ते अज्ञान, राग, द्वेष, अने कषाय अने आस्रव, ते मारा नथी. तेना थकी हुं अनंतोकाळ रझळ्यो,

अने अनेक प्रकारनी आकृतिने धारण करी चारगतिमां भम्या करुं छुं. ते अज्ञान, राग, द्वेष, मारो घात कर्त्ता छे. ने माराथकी भिन्न छे. हुं ते थकी जुदो छुं. अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंत चारित्र अने अनंत वीर्यमयी छुं. शुद्ध, बुद्ध, अविनाशी छुं, अज, अनादि, अनंत, अक्षय, अक्षर, अनक्षर, अचल, अकल, अमल, अगम्य, अनामी, अबंधक, अकर्मी, अरूपी, अछेदी, अभेदी, अवेदी, अलेशी, अयोगी, अभोगी, अरोगी, अकषायी, अखेदी, अशरीरी, अनाहारी, अव्याबाध, अनवगाही, अगुरुलघुपरिणामी, अयोनि, अप्राणी, अतींद्रिय, अमर, अपर, अपरंपर, अव्यापी, अनाश्रित, अकंप, अविरुद्ध, अशोकी, असंगी, लोकालोकज्ञायक, शुद्ध अने

चिदानंदमय मारो आत्मा छे. एवो एकाग्रता· रुप जे ध्यान, तेने अपायविचय धर्मध्यान कहे छे.

३ विपाकविचय–पूर्वोक्त विशेषण युक्त मारो जीव छे, पण अनादिकालथी कर्मनो संबंध आत्मानी साथे लोलीभूतपणे छे तेथी जीव अनंतां दुःख भोगवे छे. कर्मवशे जीव दुःखी छे. कर्मनो विपाक चिंतवे जे–जीवनो ज्ञानगुण ते ज्ञानावरणीय कर्मे दाब्यो छे, जीवनो दर्शन गुण ते दर्शनावरणीय कर्मे दाब्यो छे, अव्याबाध गुण ते वेदनी कर्मे रोक्यो छे, क्षायिक गुण ते मोहनीय कर्मे रोक्यो छे. अक्षयस्थितिरूप जे गुण ते आयुष्य कर्मे दाब्यो छे. जीवनो अरूपी गुण ते नामकर्मे दाब्यो छे, अगुरु लघु गुण ते गोत्र कर्मे दाब्यो

छे, अने अनंत वीर्य गुण ते अंतराय कर्मे रोक्यो छे. एम आत्माना आठ गुण ते आठ कर्मे रोक्या छे. आ संसारमां भमतां थकां जे जीवने सुख दुःख थाय छे ते कर्मथी थाय छे माटे पौद्गलिक सुख उत्पन्न थये छते खुशी थवुं नहि, अने दुःख आवे छते शोक करवो नहीं. कर्म स्वरूपनी प्रकृति, स्थिति, रस, अने प्रदेशनो बंध, उदय, उदीरणा, तथा सत्ता चिंतववानो जे एकाग्रतारूप परिणाम, तेने विपाकविचय धर्मध्यान कहे छे.

४ संस्थानविचय—चौद राजलोकनो स्वरूप आ प्रमाणे विचारे. आ लोक चउद-राज प्रमाण ऊंचो छे. ते मध्ये सातराजे अधोलोक छे. वचमां अढारसो योजन मनुष्य क्षेत्र तिर्छो लोक छे. ते उपर कंइक उंणुं

सातराज उर्ध्वलोक छे. तेमां सर्व वैमानिक देवता वसे छे, अने ते ऊपर सिद्धशिला छे. तेनी ऊपर एक योजनना चोवीस भाग करीए तेमांना त्रेवीश भाग नीचे मूकी उपरना चोवीसमा भागे सिद्धक्षेत्र छे. ए रीते लोकनुं प्रमाण छे. ए लोकनुं संस्थान वैशाख छे. अनंतकाल पर्यंत जीवे संसारमां भमतां सर्व लोकने जन्ममरणवडे स्पर्श्यो छे. एवुं जे लोकनुं स्वरूप चिंतववुं तथा लोकमां रहेला धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आदि पंचास्तिकायनुं अवस्थान तथा परिणमन तथा द्रव्य मध्ये गुणपर्यायनुं अवस्थान तथा द्रव्य मध्ये रहेला उत्पाद, व्यय अने ध्रुवनुं सत्पणु तेनो जे एकाग्रताए तन्मय चिंतवन, परिणाम, तेने संस्थान

विचय धर्मध्यान कहे छे.

आ आरामां भव्य प्राणीयोने धर्मध्याननो आधार विशेष छे. माटे तेने विषे तत्पर थवुं ते सुखकारी छे. धर्मध्यान चोथा गुणठाणाथी मांडीने सातमा गुणठाणा सुधी होय छे.

४ शुक्लध्यान.

शुक्ल कहेतां निर्मल शुद्ध परआलंबन विना आत्माना स्वरूपने तन्मयपणे ध्यावबुं तेने शुक्लध्यान कहे छे. तेना पाया ४ चार छे.

१ पृथक्त्व वितर्क सप्रविचार (२) एकत्व वितर्क अप्रविचार (३) सूक्ष्म क्रिया अप्रतिपाति (४) ऊच्छिन्न क्रिया निवृत्ति ए चार शुक्लध्यानना पाया छे.

१ वितर्क समविचार–पृथक्त्व कहेतां जीवथी अजीव जुदा करवा. स्वभाव तथा विभावनी जुदी पृथक्पणे वहेंचण करवी. स्वरूपने विषे द्रव्य तथा पर्यायनो पृथक्त्व एटले जुदा पणे ध्यान करी पर्याय ते गुणमां संक्रमावे, अने गुण ते पर्यायमां संक्रमावे ए रीते स्वधर्मने विषे धर्मांतर भेद ते प्रथक्त्व कहीए, अने तेनो वितर्क ते जे श्रुतज्ञाने स्थित उपयोग, अने समविचार ते सविकल्प उपयोग एटले एक चितव्या पछी बीजो चिंतववो, तेने सप्रविचार कहीए. एटले निर्मल विकल्प रहित पोतानी सत्ताने ध्यावे, ते प्रथक्त्व वितर्क समविचार नामनो पहेलो पायो जाणवो. ए पहेलो पायो आठमाथी अगीयारमा गुणठाणा सुधी

होय छे.

२ एकत्ववितर्क अप्रविचार–जे जीव आपणा आत्माना गुण पर्यायनी एकता करी ध्यावे, ते आवी रीते के=जीवना गुणपर्याय अने जीव ते एकज छे. मारो जीव सिद्ध स्वरूप एकज छे. एवो एकत्व स्वरूप तन्मयपणे अनंता आत्मधर्मनो एकत्वपणे ध्यान-वितर्क कहेतां श्रुतज्ञानालंबीपणे अने अप्रविचार कहेतां विकल्प रहित दर्शनज्ञाननो समयांतरे कारणता विना रत्नत्रयीनो एक समयी कारण कार्यतापणे जे ध्यान, वीर्य उपयोगनी एकाग्रता ते एकत्ववितर्क अप्रविचार जाणवो. ए बीजो पायो बारमा गुणठाणे ध्यावे. ए बेउ पायामां श्रुतज्ञानालंबीपणो छे, पण अवधि मनःपर्यव

ज्ञानोपयोगे वर्ततो जीव कोइ ध्यान करी शके नही. कारणके ए बे ज्ञान परानुयायी छे माटे, ए ध्यानथी घनघातीयां चार कर्म खपावे. निर्मल केवलज्ञान पामे. पछी तेरमे गुणठाणे ध्यानंतरीए रहे. तेरमाने अंते अने चउदमे गुणठाणे नीचे प्रमाणे बे पाया ध्यावे.

३ सूक्ष्मक्रियाअप्रतिपाति–सूक्ष्म वचन कायाना योगरुंधे. शैलेशी करण करे अयोगी थाय. अप्रतिपाति निर्मल वीर्य अ चलतारूप परिणाम ते सूक्ष्म क्रिया अप्र पाति ध्यान जाणवुं. इहां सत्ताए ८५ [illegible] त रही हती, तेमांथी ७२ खपावे.

४ उच्छिन्न क्रियानिवृत्ति–जे योगरुं-

धन कीधा पछी शेष तेर प्रकृति खपावे. अकर्मी थाय, सर्व क्रियाथी रहित थाय ते समुछिन्न क्रियानिवृत्ति शुकलध्यान जाणवुं. ए ध्यान ध्यावतां शेष कर्मप्रकृति दलखरणरूप क्रिया ऊछेदे. अवगाहना, देहमानमांथी त्रीजो भाग घटाडे, शरीरनो त्याग करी अहींथी सातराज ऊपर लोकने अंते जइ सिद्ध थाय.

हवे बीजां चार ध्यान कहे छे. (१) दस्थ (२) पिंडस्थ (३) रूपस्थ (४) पातीत.

१ अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने साधु ए पंचपरमेष्ठीना गुणने संभारे, तेनुं हृदयमां ध्यान करे ते पदस्थ ध्यान जाणवुं.

२ शरीरमां रह्यो जे आपणो जीव तेमां अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, अने साधुपणाना सर्व गुण छे एहवुं जे ध्यान ते पिंडस्थ ध्यान कहीए. अथवा गुणीना गुणमध्ये एकत्वता उपयोग करवो ते पिंडस्थ ध्यान जाणवुं.

३ शरीरकर्मादि रूपमां रह्यो थको पण मारो आत्मा अरुपी अनंतगुणी छे, शरीरमां रहेला आत्मामां ध्यान वडे तल्लीन थवुं. ब्रह्मरन्ध्रादि स्थानोमां ध्यान धरवु, तेने पिंडस्थध्यान कहे छे. ए त्रण ध्यान धर्म ध्यानमां गणवां.

४ रूपातीत, निराकार, निःसंगी, निर्मल, संकल्प विकल्प रहित, अभेद, एक, शुद्ध, सत्तारूप, चिदानन्द, असङ्ग. अखंड,

अनंतगुण पर्याय रूप आत्मस्वरूपनुं ध्यान, ते रूपातीत ध्यान जाणवुं. अहींयां मार्गणा, गुणठाणां नय, प्रमाण, मति आदिक ज्ञान, क्षयोपशमभाव, सर्व त्याग करवा योग्य छे. ए रूपातीत ध्यान कह्युं. विशेष चार ध्याननुं स्वरूप योगशास्त्र आदिथी जाणवुं.

त्रीजुं धर्म ध्यान तेनी चार भावना कहे छे.

चार भावना.

(१) मैत्री भावना (२) प्रमोद भावना (३) कारुण्य भावना (४) माध्यस्थ्य भावना.

मैत्री भावना.

सर्व जीव साथे मित्रता चिंतववी. कोइ

जीव मारो दुश्मन नथी. सर्वे जीवना आत्माओ सिद्ध समान सत्ताए छे, अने कर्मना वशथी संसारमां सुखी दुःखी देखाय छे, ते सर्व जीव मारा सजातीय भाइ छे. एकेन्द्रियादिथी पञ्चेन्द्रिय सर्व जीव सजातीय छे. ते मारा बांधव छे. मित्र छे. तो तेमना उपर मारे द्वेष करवो न जोइए. तेमनुं भलुं चिंतववुं. मारुं खराब करवाने कोइ समर्थ नथी. कर्मनोज ए प्रपंच छे, कर्म ए जड वस्तु छे. अचेतन छे, रूपी छे; कर्म वस्तु विजातीय छे, ए थकी मारे दूर रहेवुं जोइए अने एना प्रपंचमां फसावुं मारे योग्य नथी. अनादिकालथी कर्म जड वस्तु मने चार गतिमां भटकावे छे, अने मारुं पोतानुं स्वरूप ओळखवा देतुं नथी. जेम

दारु सारा माणसने पण वेभान बनावी दे छे अने तेना गुणनो नाश करे छे, तेम कर्मे मारा गुणनो नाश कर्यो छे.

जेम कोइ पांच मित्रो हळीमळीने दररोज एकठा रहे छे अने एक वीजा साथे सारी रीते मित्रता राखे छे, परस्पर भलुं वांछे छे. एक दिवसे पांच मित्रोए दारु पीधो, ते दारुनी नीशा खूब चढी, त्यारे ते परस्परस गाळो देवा लाग्या, अने एक वीजाने मारवा लाग्या, तेमां ए सर्व प्रपंचनुं कारण दारु छे. हवे ज्यारे ए दारुनो नीशो उतरी गयो त्यारे ते एक वीजा साथे हळीमळीने वातो करवा लाग्या, अने मित्रपणे वर्तवा लाग्या. तेम कर्मरूपी दारुना जुस्साथी सर्व जीवो एक वीजाने शत्रु दु-

श्मन भाइ वेन वगेरे प्रपंच तरीके माने छे, पण तेमां जीवोनो कांइ वांक नथी. ए सर्वनुं कारण कर्म छे. कर्मवडे जीव वीजा जीवने दुश्मन तरीके धारे छे, पण तेमां कोइ जीव कोइनो दुश्मन नथी. कर्म थकी रहीत थएला सिद्ध महाराजनुं कोइ खराव करवा समर्थ नथी तेम हु पण ज्यारे कर्म रहित थइश, त्यारे कोइ मारुं खराव करी शकवा समर्थ नथी, कर्म तेज दुःखकारी छे.

कुतराने कोइ माणस कांकरो मारे तो ते कांकराने करडवा दोडे छे. सिंहने कोइ माणस गोळी मारे तो ते गोळी तरफ नही जता ए गोळी कोणे मारी एम लक्षी मारनार सामो दोडे छे. तेम केटलाक प्राणी कुतरा

अने केटलाक सिंहनां जेवा होय छे. कोइ माणसे कंइ तेनुं वगाडयुं होय तो ते माणसे मारुं वगाडयुं, अरे ए मारो शत्रु छे, अरे ए मारो वैरी छे, एम धारी तेनुं भुंडुं करवा तत्पर थाय छे, अने द्वेष करे छे, पण विचारतो नथी के जो मारे, शुभकर्मनो उदय वर्ततो होत तो मारुं भुंडुं शी रीते करवाने समर्थ थात. हाल माठा कर्मनो विपाक उदये आव्यो छे, तेथी अन्य मनुष्य निमित्त कारणभूत थयो छे. पण तेमां कंइ तेनो दोष नथी. ए अशुभ कर्म में कर्यां छे तेनो ए दोष छे. माटे हे चेतन!!! तुं कर्मबंध रहीत था !!! अने कर्मनी जाळमां फसाइश नहीं. जेटलां कर्म कर्यां छे, तेटलां भोगववां पडसे. तुं बीजा माणस उपर द्वेष शामाटे

करे छे पण ए आत्मा होवाथी तारो मित्र छे. तारुं वगाडवा ए समर्थ नथी, एम मैत्रीभावना भाववी.

सिंह जेम गोळी तरफ नहीं दोडतां गोळी मारनार कोण छे, एम विचारी मारनार सामो दोडे छे, तेम सिंह जेवा पुरुषोए दुःखना निमित्त कारण उपर दृष्टि नहीं देतां एम चिंतववुं के ए दुःख थवानुं मूख्यए कारण कर्म छे. ज्ञानी कर्म दूर करवाना उपायो शोधे छे. जो में माठां वा सारां कर्म कर्यां हशे, तो ते प्रमाणे मारे शुभाशुभ विपाक भोगववा पडशे. तेमां वीजो जीव मारुं भूंडुं करवा वा सारुं करवा समर्थ नथी. सर्व कर्मथी दुःख थाय छे, माटे सिंह समान पुरुषो कर्मनो नाश थाय तेम वर्ते छे, पण

कोइ जीव उपर द्वेषभाव करता नथी.

मारा आत्माने जेम कर्म लाग्यां छे, तेम बीजा जीवोने पण कर्म लाग्यां छे पण आत्माओ तो सर्वना सरखा छे. मारो आत्मा अरूपी, अनंतज्ञान, अनन्त दर्शन अने अनन्त चारित्रनो भोक्ता छे. सर्वे जीवो गुणोवडे एक सरखा छीए. सजातीय छीए. माटे सर्वे जीवो मारा मित्र छे. एवी भावनाने मैत्री भावना कहे छे. सर्व जीव उपर हितबुद्धि राखवी तेने मैत्री भावना कहे छे.

२ बीजी प्रमोद भावनाने कहे छे. गुणवंत अने ज्ञानादिक उपर राग तेने प्रमोद भावना कहे छे. धर्म करता जीवोने देखी खुशी थवुं. ज्ञानवंत वैरागी मुनियोने देखी हर्ष धरवो, तथा दश दृष्टांते दोहीलो

मनुष्य जन्म पामीने श्रावक कुल अवतार आदि धर्मनी जोगवाइ पामी हर्ष धरवो, तेने प्रमोद भावना कहे छे.

३ धर्मवंत उपर राग अने मिथ्यात्वी उपर द्वेष पण नहीं तेने माध्यस्थ भावना कहे छे. हिंसक जीव उपर पण उत्तम जीवने करुणा उपजे. उपदेश देवा थकी जो सारा मार्गे आवे तो तेने शुद्ध मार्गे आणवो. कदाचित् मार्गे न आवे तो पण द्वेष न करवो. केमके ते अजाण छे. एम जाणवु ए माध्यस्थ्य भावना.

४ सर्व जीवने पोताना तुल्य जाणी दयापाले. कोइने हणे नहीं, तथा जे दुःखी होय, धर्महीन होय, तेना उपर करुणा लावे, अने तेनुं भलु करवा चाहे. तथा धर्महीन

मनुष्य देखीने एम इच्छे के आ मनुष्य क्यारे धर्म पामशे ? यथार्थ आत्मतत्त्वनुं स्वरूप धर्मने क्यारे अवलंबशे. एवो जे परिणाम तेने चोथी कारुण्य भावना कहे छे.



बार भावना.

अनित्य भावना.

१ कुटुंब, धन, पुत्र अने परिवारादि सर्व विनाशी छे. प्रत्यक्ष देखाय छे ते शरीर पण एक दिवस नाश पामशे. जीवनो मूलधर्म अविनाशी छे. जे जे नजरे देखवामां आवे छे ते सर्वनो नाश थाय छे एम विचारवुं ते पहेली अनित्यभावना.

२ अशरणभावना.

२ संसारमां जीवने मरण समये शरण राखवा कोइ समर्थ नथी. माता, पिता, भाइ, वेन अने पुत्रादि जोतां शरीर मूकी जीव परलोक प्रयाण करे छे ते कोइनाथी रखातो नथी. राजा होय वा रंक होय, कीडो होय वा इंद्र होय, तो पण मृत्यु कोइने मूकतुं नथी. चार गतिना जीवोने मरण थकी रक्षण करी शरण राखवा कोइ समर्थ नथी. एम विचारवुं ते वीजी अशरणभावना जाणवी.

३ संसारभावना.

३ कर्मना योगे जीव चारगतिरूप संसारमां अनादिकालथी जन्म मरण करे छे,

अने असह्य दुःख भोगवे छे. संसार बळता अग्नि (दावानळ) समान छे. उत्तम पुरुषोए चारित्र ग्रहण करी संसारनो त्याग कर्यो छे. अरे हुं महा पापी संसारमां राच्यो माच्यो छुं. हुं हवे दुःखमय संसारथी क्यारे छुटीश. आ प्रमाणे विचारणा ते संसारभावना जाणवी.

४ एकत्व भावना.

जीव एकलो आव्यो छे, अने अहींथी एकलो बीजी गतिमां जाय छे. धन धान्यादिक परिग्रह, पुत्र, अने कलत्र, वगेरे साथे आववानुं नथी. कुटुंबनुं पेट भरवा सारु हिंसा, असत्य, चोरी—कूड कपटथी हुं लक्ष्मी पेदा करुं छुं, पण तेथी थएला पापमांथी कोइ भाग लेनार नथी. क-

रेल कर्म मारे एकलाने भोगववुं पडशे. सगां, वहालां, वहालीस्त्री, पुत्र अने दीकरीओने जन्मती वखते साथे लाव्यो नहोतो. पूर्वभवना संबंधथी मारे तेमनो मेळाप थयो छे, पण अंते सर्व मूकी मारे एकलुं जवुं पडशे. जे जे प्रमाणे अही हुं धर्म वा अधर्म करुं छु ते ते प्रमाणे परभवमां सुख दुःख पामीश. परने मारुं मानी हुं मलकाउं छुं, पण वस्तुतः कोइ मारुं नथी. संबंधे करी सर्व भेगुं थयुं छे, ते सर्वनो एक दिवस वियोग थाय छे. चोराशीलाख जीवयोनि भमता दश दृष्टांते दोहीलो मनुष्य जन्म पामी, हे चेतन !!! हवे केम प्रमाद करे छे. आखो दिवस घांचीनी घाणीना वळदनी पेठे पाप काममां लागी रह्यो छे, पण जाणतो नथी के, मूढ ! अंते अनंतु

दुःख भोगववुं पडशे. देखाता शरीरनी पण अंते खाख थइ जवानी छे. काया माटीमां माटीरूप थइ जशे. आ वखते जेवी धर्मनी सामग्री मळी छे, तेवी वारंवार मळनार नथी. माटे हे चेतन!!! चेत! चेत! माथे काळ झपाटा देत. तुं क्यांथी आव्यो. क्यां जाइश. तुं कोण छे. तारुं कोण छे. एनो विचार कर. राम, रावण, पांडव, कौरव अने लक्ष्मण जेवा वीरपुरुषो एकला गया, तो तुं केम मोहराजानी घेंनमां उंघे छे. जाग! जाग! एकत्वपणुं धार. इत्यादि विचारणा ते एकत्व भावना जाणवी.

५ अन्यत्वभावना.

आ संसारमां कोइ कोइनुं नथी. सौ

स्वार्थनुं सगुं छे. ज्यारे आपणाथी बीजानो स्वार्थ सरतो नथी, त्यारे अन्योनु आपणा उपरथी हेत उतरी जाय छे. हे चेतन! तारी नजरे जे जे पदार्थो देखाय छे, ते ताराथी जुदा छे, अने तुं तेनाथी जुदो छे. माता, पिता, भाइ, बेन, स्त्री, पुत्र अने धन ए सर्व हे जीव ताराथी जुदुं छे, दृश्य शरीर छे ते पण हे चेतन! ताराथी जुदुं छे, लेश्या, योग, पांच संस्थान, पांच शरीर, तथा पांच संघयण, दस प्राण, अने पांच इन्द्रियो. ए सर्व हे चेतन! ताराथी जुदुं छे. तेनामां पोतापणु मानीश नहीं. एम विचारवुं ते अन्यत्व भावना जाणवी.

६ अशुचिभावना.

सरीर अपवित्र मळ मूत्रनी खाण छे.

अशुचिमय छे, पुरुषनां नव अने स्त्रीनां बार द्वारथी सदा अशुचि नीकळे छे, हाल शरीर पवित्र लागे छे, पण रोग थए छते दुर्गंधी युक्त थइ जाय छे. मांस, रुधिर, मेद अने हाडकां वगेरेथी शरीर बन्युं छे, तेने देखी हे चेतन! तुं शुं राचे छे. गर्भावासे कीडानी पेठे नवमास मळमां रह्यो, सूर्यनो प्रकाश आवे नहीं, अने उंधे मस्तके रहेवुं एहवां गर्भनां दुःख चेतन शुं तुं विसरी गयो ? अशुचिमय काया देखी मोह पामी शुं राचे छे? एम विचारवुं ते छट्ठी अशुचिभावना.

७ आस्रवभावनामिथ्यात्व, अविरति, कषाय, अने योगथकी जीव आस्रवनुं ग्रहण करे छे. शुभाशुभ कर्मनां दळीयां आववानो जे रस्तो तेने आस्रव कहे छे. शुभ दळी-

याने पुण्य कहे छे, अने आत्मानी साथे लागेलां जे कर्मनां अशुभ दळीयां तेने पाप कहे छे, हिंसा, असत्य, चोरी, मैथुन अने परिग्रह रूप आस्रवथी कर्मनो बंध थाय छे. राची माचीने पांच इंद्रियोना त्रेवीश विषय सेववाथकी आस्रवनो बंध थाय छे. प्रमादना वशथकी तेम मन वचन कायाना दुःप्रणिधानथी तेमज क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, दुगंछा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, अने नपुंसकवेद, ए आदिथी आत्मानी साथे आस्रवनो संबंध थाय छे. जीव अनादि काळथी आस्रवना ग्रहण करवाथी चार गतिमा भम्या करे छे, अने तेथी अनेक प्रकारना दुःख पामे छे. ए आस्रव महा दुःखदायी छे. आत्मानुं अहितका-

रक आस्रव छे, माटे तेनाथी हे चेतन! तुं दूर रहे, एम विचारवुं ते आस्रवभावना. आस्रवनो संबंध अभवी जीवने अनादि अनंत छे अने भवी जीवने अनादि सांत छे.

७ सम्वरभावना.

आस्रवनो जेनाथी रोध थाय तेने संवर कहे छे. जीव भावना भावे के-इर्यासमिति, भाषासमिति, एषणासमिति इत्यादि पांचसमिति अने त्रणगुप्ति शुद्ध क्यारे पाळीश, अने बावीस परिसहने समभावे क्यारे सहीश. चेतन! विषयाभिलाषथी मन पाछुं वाळ. क्षांत्यादि दशविध यतिधर्म शुद्ध पाळवा उद्यम कर के जेथी आत्महित थाय. यतिधर्म भवोभवनां दुःख टाळनार छे, अने पंचमी गति जे मोक्ष तेने आपनार छे. धन्य

छे ते मुनिवरनेके के जे मान अने अपमानने चित्तमां समगणे छे, सोनुं अने पाषाण चित्तमा समगणे छे, शत्रु मित्र उपर समदृष्टि राखे छे. पांच प्रकारनां चारित्र हे जीव तने क्यारे प्राप्त थशे. क्यारे एकाकी अप्रतिबद्ध विहार करीश. हे चेतन कोइपण जीव साथे वैर विरोध करीश नहीं. कारण के तेथी भवोभव दुःख पामीश. कपट कर नहीं. विश्वासघाती थाइश नहीं. संसाररूप समुद्रमां बुडाडनार नव प्रकारनो परिग्रह छे, तेनो त्याग कर! मूर्छा—ममता राखवाथी जन्म मरण करवां पडे छे, तो साक्षात् नवविध परिग्रह केवां केवा दुःख पमाडशे, तेनो विचार करी परिग्रहनो त्याग कर. विषयने विष (झेर) सरखो जाण. एकेक इंद्रियना

विषयथी, भमरो, पतंग, मृग अने मीन दुःख
पामे छे, तो जे पांचे इंद्रियोना विषयोना
वशमां थइ गया छे, तेनी शी गति थशे. अ-
नादि काळथी संसारमां उंचनीच कुळमां जीव
उत्पन्न थाय छे. पुण्यना योगे उंच कुळमां अ-
वतरे छे. नीच कुळमां उत्पन्न थएलानी निंदा
करी पाछो नीच कुळमां उत्पन्न थयो. एम हे
चेतन!!! तुं अनंतिवार उंचपणुं तथा नीचपणुं
पाम्यो. बटाटा, शकरीयां, गाजरीयां, मूळा,
आदु अने लसणमां जीव अनंतिवार उत्पन्न
थयो, तो ते वखते जीवनुं उंचपणुं क्यां गयुं
हतुं. एम समजी आठ मदने करीश नहीं. ए
आठमद आत्माना गुणोनो नाश करनार छे.
स्थूलिभद्र, मरीचि अने सनत्कुमार आदि,
एकेक मद करवाथी कटुक विपाकने पाम्या

छे, माटे ए आठ मदनो त्याग कर. कर्मवस्तु थकी तुं जुदो छे. तुं अनंत रत्नत्रयीनो भोक्ता छे. तुं अरूपी छे, अज छे, अविनाशी छे, अकषायी छे, अरोगी छे, अमायी छे, अवेदी छे अने अछेदी छे, इत्यादि संवरभावना जाणवी.

९ निर्जरभावना.

९ निर्जरा=जेनाथी कर्म निर्जरे (दूर थाय) तेने **निर्जरा** कहे छे. हे चेतन!!! तुं निर्जरभावनाने हृदयमां धारण कर, अने व्रतपच्चखाणनो आदर कर. ज्ञान सहित क्रिया करवी ते निर्जरानुं कारण छे. बारभेदे तपश्चर्या करवाथी निर्जरा थाय छे. निकाचित कर्म पण तप थकी दूर थाय छे. सुकोशल

मुनि, ढंढणकुमार अने गजसुकुमाल जेवा मुनीश्वरोने धन्य छे के जेओए उग्र तपश्चर्या करी छे. हुं पण ज्यारे तेवी रीते तपश्चर्या करीश, त्यारे धन्य दिवस मानीश. इत्यादि विचारणा ते निर्जर भावना जाणवी.

१० लोकस्वरूप भावना.

चउदराज लोकनुं स्वरूप विचारवुं ते लोक स्वरूप भावना जाणवी. एनुं स्वरूप पूर्वे लखवामां आव्युं छे तेथी अहीं नथी लख्युं.

११ बोधिदुर्लभभावना.

संसारमां भमतां जीवने समकितनी प्राप्ति थवी दुर्लभ छे. समकित पाम्या छतां पण चारित्र ग्रहण करवुं दुर्लभ छे. इ-

त्यादि विचारणा ते बोधिदुर्लभ भावना जाणवी.

१२ धर्मना कथक सद्गुरुनी दुर्लभता.

धर्मना कथन करनार सद्गुरु तथा जिनेश्वर भगवान्नी स्याद्वादमय वाणी सांभळवानी सामग्री पामवी दुर्लभ छे, धर्मगुरुनी प्राप्ति दुर्लभ छे. ते बारमी धर्मदुर्लभ भावना जाणवी.

ए बार भावनानो विस्तार, अत्र ग्रंथ गौरवना भयथी कर्यो नथी. विशेष अधिकार बीजा ग्रंथोथकी जाणवो. मनुष्य जन्म पामी आलस्य, विषय, कषाय अने परभावमां जो आयुष्य गाळीश तो हे चेतन!!! दुर्गतिमां जाइश. आत्मस्वरूप ओळखवु

घणुं दुर्लभ छे. चिंतामणि रत्न पामवुं ते सहेल छे पण स्याद्वाद रीते आत्मज्ञान थवुं मुश्केल छे. मारो आत्मा शाश्वतो छे, पण कर्मना प्रपंचथी चतुर्गतिरूप संसारमां भटके छे. हे चेतन!!! तुं ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप रत्नत्रयी सहित छे. धन, कुटुंब, इंद्रिय, शरीर, लेश्या अने योग, ए सर्व परवस्तु छे. एमां तारुं कंइ नथी. जीव पोते धन, पुत्र, अने स्त्रीना मोहमां फसाइ तेने पोतानुं मानतो अनंत दुःखनी परंपरा पामे छे. संयोगी वस्तु, धन, अने कुटुंब, ए सर्व ताराथकी अत्यंत भिन्न छे. हुं चेतन छुं, ए पुद्गल अचेतन जड छे. तेनी संगतिथी हुं पण जड जेवो थयो छुं. हुं अमूर्त छुं, अने पुद्गल मूर्ति छे. हुं शुद्ध निर्मल छुं.

शुद्ध छु, ज्ञानानंदी छुं. हुं विकल्प संकल्प थकी रहित छुं. मारुं स्वरूप अलक्ष्य छे. हुं कर्म रोग थकी रहित, अरोगी छु. हुं छलेश्याथी रहित अलेशी छु. हु चार प्रकारना आहार थकी रहित अनाहारी छुं. हुं अव्याबाध सुखनो भोगी छु, हु अगुरु लघु छु. अने आ सर्व प्रपंच कर्म थकी छे. एम आत्मार्थी आत्मस्वरूपनी भावना भावे छे अने स्वगुण रमणताने आदरे छे. जेम जेम संसारथकी उदासीनपणुं थाय छे, तेम तेम तेम संवेगरंगे रंगीत आत्मा थाय छे. आ काळमां भव्य प्राणीओने ज्ञाननो आधार छे. ज्ञानवडे आत्मानुं यथातथ्य स्वरूप जणाय छे, माटे ज्ञाननो घणो अभ्यास करवो एज हितकारी छे.

समकित सहित ज्ञान, दर्शन, चारित्र ते मोक्षनुं कारण छे. ज्ञान सहित चारित्र न ग्रहण थइ शके, तो पण श्रेणिक राजानी पेठे सद्दहणा शुद्ध राखवी. जो समकित शुद्ध छे तो मोक्ष आसन्न छे. कह्युं छे के **दंसण भट्ठोभट्ठो, दंसण भट्ठोइनत्थि निव्वाणं, सिज्झंति चरण रहिया, दंसण रहिया न सिज्झंति ॥ १ ॥** वळी आगममां कह्युं छे के-**जंसक्कइतंकीरइ, अहवा नसक्कई तयंमिसद्दहणा; सद्दहमाणो जीवो, वच्चइ अयरामरंठाणं॥** अर्थ-रे जीव तुं करी शके तो कर अने जो न करी शके तोपण जेवो वीतराग भगवंते धर्म स्याद्वादरूप उपदेश्यो छे, ते प्रमाणे द्द-

दयमां शुद्ध श्रद्धा राख. श्रद्धा धरनार अनुक्रमे मोक्षस्थानक पामे छे. **जीवाजीवा पुण्णं, पावासवसंवरो य निज्झरणा, बंधो मुख्खो य तहा, नव तत्ता हुंति नायव्वा**—जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा, वध, अने मोक्ष, ए नवतत्त्व जाणवा योग्य छे.

हेया बंधासव पुण्ण पावा, जीवाजीवाय हुंति विन्नेया, संवर निज्झर मुखो, तिन्निवि ए उवादेया ॥ १ ॥ वंध, आस्रव, पुण्य अने पाप ए चार तत्त्व त्याग करवा योग्य छे. जीव अने अजीव तत्त्व जाणवा योग्य छे, संवर,

निर्जरा अने मोक्ष ए त्रण तत्त्व आदरवा योग्य छे.

जीवो संवर निज्जर, मुखो चत्तारि हुंति अरुवी, रुवी वंधासव-पुण्ण पावा, मिस्स हुंति अजीवो—

जीव, संवर, निर्जरा अने मोक्ष ए चार तत्त्व अरूपी छे. वंध, आस्रव, पुण्य अने पाप ए चार तत्त्वरूपी छे, अने अजीव तत्त्व रूपी पण छे, अने अरूपी पण छे. धर्म, अधर्म, आका, श अने काळ ए चार द्रव्य अजीव तथा अरूपी छे अने पुद्गल द्रव्य अजीव रूपी छे.

छ द्रव्यना अगीआर ११ सामान्य स्वभाव कहे छे.

१ अस्तिस्वभाव २ नास्तिस्वभाव ३

नित्यस्वभाव ४ अनित्यस्वभाव ५ एकस्वभाव ६ अनेकस्वभाव ७ भेद स्वभाव ८ अभेदस्वभाव ९ भव्यस्वभाव १० अभव्यस्वभाव ११ परमस्वभाव ए अगीआर सामान्य स्वभाव छे.

छ द्रव्यना दश विशेष स्वभाव कहे छे.

१ चेतन २ अचेतन ३ मूर्ति ४ अमूर्ति ५ एक प्रदेश ६ अनेक प्रदेश ७ शुद्ध ८ अशुद्ध ९ विभाव १० उपचरित स्वभाव ए दश विशेष स्वभाव छे. ते श्री केवळी भगवान केवळज्ञानथी जाणे छे अने देखे छे ए दश विशेष स्वभाव ते कोइक द्रव्यमा छे. अने कोइ द्रव्यमा नथी. ए सर्व स्वभाव सिद्ध भगवान् ज्ञानवडे जाणी रह्या छे. एवा अनंत गुणी सिद्ध भगवान् समान पोताना आ-

ली आज्ञानुं मान्यपणुं तेने आज्ञारुचि कहे छे.

४ **सूत्ररुचि**–वर्तमानकालमां विद्यमान, पिस्तालीश आगमादि मूलसूत्र, तथा निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका ए पंचांगीनां वचन माने ते जीव सूत्ररुचिमंत कहेवाय छे. आगम भणवानी तथा सांभळवानी घणी चाहना होय ते सूत्ररुचि जाणवी.

५ **बीजरुचि**–गुरु मुखथी एक पदनो अर्थ सांभलीने अनेक पद सद्दहे. ते बीजरुचि.

६ **अभिगमरुचि**–सूत्र–सिद्धांत अर्थ सहित जाणवानी इच्छाने अने अर्थ विचार सांळवानी घणी चाहनाने अभिगमरुचि कहे छे.

७ **विस्ताररुचि**-षड्द्रव्यना गुणपर्याय-

ने चार प्रमाण तथा सातनये विस्तारथी जाणवानी रुचिने विस्ताररुचि कहे छे.

८ क्रियारुचि–ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, विनय, वैयावच्च, समिति, गुप्ति, चरण सित्तरी अने करण सित्तरी सहित, आत्मधर्म साथे जे रुचि तेने क्रियारुचि कहे छे.

९ संक्षेपरुचि–अर्थज्ञान थोडुं कहे छते घणुं जाणीने कुमतिमां पडे नहीं, ते संक्षेपरुचि जाणवी.

१० धर्मरुचि–पांच अस्तिकायनुं स्वरूप जाणवानी तथा श्रुतज्ञाननो स्वभाव अंतरग सत्ता सद्दहवानी रुचिने धर्मरुचि कहे छे. समकितना सडशठ बोल जाणी, आदरे, ते जीव समकिती कहेवाय छे. हे भव्यो! पूर्व पुण्ययोगे मनुष्य जन्म पाम्या

छो, माटे शुद्धदेव, शुद्धगुरु, अने शुद्धधर्म तेने आदरो. सामायक-पूजा, प्रभावना, पडिक्कमण, पोसह, श्रावकनां बारव्रत, साधुनां पंचमहाव्रत, तीर्थयात्रा, सद्गुरुवाणी, जीर्णोद्धार अने शुद्धक्रियानो खप धर्मकरणीने हृदयमां धारण करो के जेथी अनुक्रमे शिवसुख पामो.



समकितनुं स्वरूप.

॥ तत्त्वार्थश्रद्धानंसम्यगूदर्शनम् ॥

(तत्त्वार्थसूत्र)

देवत्वधीर्जिनेष्वेव, मुमुक्षुषुगुरुत्वधीः धर्मधीरार्हतांधर्मे, तत्स्यात्सम्यक्त्व-दर्शनम् ॥ १ ॥ (उपदेशप्रासाद)

भावार्थ–राग द्वेपने जीतनारा जिन कहेवाय छे ते नामजिन, स्थापनाजिन, द्रव्यजिन, अने भावजिन एम चार प्रकारे जिन छे. ते जिनेश्वरोमांज देवबुद्धि राखवी तथा भव (ससार) थकी पोताना आत्माने मुक्त करवाने इच्छनार जे मुमुक्षु पुरुषो तेमांज गुरुपणानी बुद्धि राखवी, तेमज दुर्गतिमां पडता जीवोने धारण करनार जिनेश्वर प्रणीत धर्ममां धर्मपणानी श्रद्धा राखवी तेने सम्यग्दर्शन कहे छे. ते सम्यक्त्व स्वभावथी अथवा गुरुना उपदेशथी एम बे प्रकारे प्राप्त थाय छे.

स्वभावथी एटले गुरु विगेरेना उपदेशनी अपेक्षा रहित स्वभावथी (क्षयोपशमथी)

जे प्राप्त थाय छे तेने निसर्ग सम्यक्त्व कहे छे अने गुरु उपदेशथी जे सम्यक्त्व थाय छे तेने अधिगम सम्यक्त्व कहे छे.

न्याय्यश्चसति सम्यक्त्वेऽणुव्रतप्रसुखग्रहः जिनोक्ततत्त्वेषुरूचिः शुद्ध-सम्यक्त्व मुच्यते ॥ अंतोमुहुत्तमित्तंपि, फासिय हुज्जजेहिं सम्मत्तं तेसिंअवड्ढपुग्गल-परियट्टोचेवसंसारो॥ सम्मदिठीजीवो, गच्छइनियमाविमाणवासीसु जइनाविगयसम्मत्तो, अहवनबद्धाउओ पुविं ॥

सम्यक्त्व प्राप्त करनार त्रणकरण करे छे.

त्रण करणनुं स्वरूप.

(१) अनादिकाळथी चाल्या आवता ससाररूप सागरमां पडेलो प्राणी, भव्यत्वना परिपाकयोगे पर्वतपरथी नदीमां पडेला पथ्थरना न्याये (ते पथ्थर अथडातो कुटातो गोळ थाय छे तेम) अनाभोगपणाथी यथा प्रवृत्तिकरण करे छे. अध्यवसाय विशेष रूप ते यथा प्रवृत्तिकरण छे. तेवडे एक आयुकर्म विना "आयुवर्जित साते कर्मनीजी; सागर कोडाकोडी हीणरे, स्थिति पढम करणेक रीजी; वीर्य अपूरव मोगर लीधरे ॥ समकित० ॥ १ ॥" "बीजा ज्ञानावरणीयादि सात कर्मोने पल्योपमना असंख्यातमा भागे

न्यून एवा एक सागरोपम कोटाकोटिनी स्थितिवाळा करे छे. अहींया जीव कर्मथी उत्पन्न थएल अत्यंत निविड रागद्वेषना परिणामरुप कर्कश अने दुर्भेद्य एवी ग्रंथि सुधी आवे छे. आ ग्रंथीदेशसुधी तो अभव्यजीवो चारित्र लइने पण संख्याती वा असंख्यातीवार आवे छे. आ यथा प्रवृत्तिकरणनो काळ अंतर्मुहूर्तनो जाणवो.

अनाद्यनन्तसंसाराऽऽवर्त्तवर्त्तिषुदेहिषु । ज्ञानदृष्ट्यावृत्तिवेद–नीयान्तरायकर्मणाम् ॥१॥ सागरोपमकोटीनां,कोटय स्त्रिंशत्परास्थितिः। विंशतिर्गोत्रनाम्नोश्च मोहनीयस्य-

सतातिः ॥ २ ॥ ततोगिरिसरिद्ग्राव घोलनान्यायतः स्वयम् । एकाब्धिकोटिकोट्यूना, प्रत्येकंक्षीयते स्थितिः ॥३॥ शेषाब्धिकोटिकोटयन्तः स्थितौसकलजन्मिनः यथा प्रवृत्तिकरणाद्ग्रन्थिदेशंसमिर्यति॥४॥रागद्वेषपरीणामो दुर्भेदोग्रन्थिरुच्यते। दुरुच्छेदोदृढतरः काष्ठादेरिवसर्वथा ॥५॥ ग्रन्थिदेशंतुसंप्राप्ता रागादिप्रेरिताः पुनः । उत्कृष्टबन्धयोग्याः स्यु श्चतुर्गतिजुषोऽपिच ॥६॥

(२) अपूर्वकरण=पूर्वे कोइ पण वखत

नहि भास थएला एवा आत्माना परिणाम थाय छे ते परिणामवडे रागद्वेषनी जे गांठ छे के जे समकित पामवामां अंतरायभूत छे ते गांठने छेदी शकाय छे. अहींयां भव्य-जीव रसघात–स्थितिघात- गुणश्रेणि अने अपूर्ववंध ए चार वानाने करे छे तथा अ-नंतानुबंधी कषायना जे दलीयाओ उदय आव्या छे तेने क्षय करे छे अने जे हवेपछी थोडा वखतमां उदयमां आववाना छे, तेनी उदीरणा करीने उदयमां लावी उपशमावे छे, क्षय करे छे. आ अपूर्वकरणनो काळ अंत मुहूर्तनो जाणवो.

तेषांमध्येतुयेभव्या भाविभद्राः श-रीरिणः आविष्कृत्यपरंवीर्य मपूर्व-

करणेकृते ॥७॥ अतिक्रामन्तिस-हसा। तंग्रन्थिदुरातिक्रमम् । अतिक्रान्तमहाध्वानो घट्टभूमिमिवाध्वगाः ॥ ८ ॥

(३) अनिवृत्तिकरण=जे करण याने वीर्यशक्ति प्राप्त थया बाद जेनी निवृत्ति थती नथी अर्थात् सम्यक्त्व प्राप्त थया विना जेनी निवृत्ति थती नथी. तेने अनिवृत्ति करण कहे छे आ करणनो केटलोक काळ गये थके अने एक भाग वाकी रहे थके मोटी जे स्थिति तेना बे विभाग करे छे. एक नानी स्थिति अने बीजी मोटी स्थिति. नानी स्थितिने आ करणमां भोगवी क्षय करे छे अने मोटी स्थितिमांथी जे दलीयाओ थोडा स-

मय पछी उदय आववाना छे तेनी उदीरणा करी उदयमां लावी (एटले नानी जे स्थिति छे तेनी अंदर मेळवी भोगवी क्षय करे छे) आनी उदीरणा वे आवलीका वाकी रहे थके टळी जाय छे. अहींया मिथ्यात्वना केटलाएक दलीयाओ क्षय थइ जाय छे. अहींयां पण जीव, रसघात–स्थितिघात, गुणश्रेणि अने अपूर्ववंध ए चारने करे छे. अहींयां जीव, अंतरकरण करे छे. शेष एक आवलीका बाकी रहे थके त्रण पुंज करे छे. मिथ्यात्वना चौठाणीया रसवाळा दलीयाओ छे तेमांना केटलाएकने उच्चपरिणामवडे एकठाणीया करे छे अने केटलाएकने वे ठाणीया अने त्रण ठाणीया रसवाळा करे छे. केटलाएक तेवाने तेवा चौठाणीया रसवाळा

टलीया रहे छे. एटले ते त्रसने सत्तामांने सत्तामां हीन करे छे. त्रण पुंज थया पछी जीव उपशम समकित पामे छे. आ करणनो अने उपशम समकितनो काळ अतरमुहूर्त्तनो छे. त्रण करणने प्रांते जीव उपशम समकित पामे छे. उपशम समकितनो काळ पूर्ण थया पछी जो एकठाणीया रसनो उदय थाय तो तेनुं नाम समकित मोहनीय जाणवुं. ते वडे क्षयोपशम समकित प्राप्त थाय छे. बे अथवा त्रण ठाणीया रसनो उदय थाय तो मिश्रमोहनीय जाणवी. ते वडे मिश्रसमकित पामे छे, तेनाथी जीवने धर्ममां उदासीन वृत्ति थाय छे अने चोठाणीया रसनो उदय थाय तो मिथ्यात्व मोहनीय जाणवी. ते वडे जीव मिथ्यात्वने पामे छे. कर्मग्रंथना मते ससारचक्रमा

प्रथम उपशम समकित प्राप्त थाय छे अने सिद्धांतना मते प्रथम क्षयोपशम समकित प्राप्त थाय छे.

॥ अथानिवृत्तिकरणादन्तरकरणेकृते । मिथ्यात्वंविरलंकुर्युर्वेदनीयंयदग्रतः ॥९॥ आन्तर्मुहूर्त्तिकंसम्यग्–दर्शनंप्राप्नुवन्तियत्; निसर्गहेतुकमिदं । सम्यक्श्रद्धानमुच्यते ॥१०॥ गुरूपदेशमालम्ब्य सर्वेषामपि देहिनाम् । यत्तत्सम्यग्श्रद्धानं स्यादधिगमजंपरम् ॥११॥

उपशमसम्यक्त्व जीव ज्यारे अनंतानु

वंधी चोकडी तथा समकित मोहनीय मिश्र-मोहनीय अने मिथ्यात्वमोहनीय ए सात प्रकृतिने उपशमावे छे (शान्त करे छे) त्यारे तेने उपशम सम्यक्त्व प्राप्त थाय छे.

तच्चानादिमिथ्यादृष्टेः करणत्रयपूर्वकमान्तर्मुहूर्त्तिकं चतुर्गतिकस्याऽपिसंज्ञिपर्याप्तपञ्चेन्द्रियस्यजन्तोर्ग्रन्थिभेदानन्तरं भवतीत्युक्तप्रायम् ॥ उवसमसेढिगयस्सउ, होइउवसामियं तु सम्मत्तं । जोवाअकयतिपुंजो । अखविअमिच्छो लहइ सम्मं ॥

क्षयोपशमसम्यक्त्व = अनंतानुवंधीनी चोकडी, मिथ्यात्त्वमोहनीय, मिश्रमोहनीय अने समकितमोहनीय ए सात प्रकृतिनो प्रदेशोदय अने समकित मोहनीयनो प्रदेशोदय अने रसोदय जेमां होय तेने क्षयोपशम सम्यक्त्व कहे छे.

कम्मगंथेसुधुवं । पढमोवसमी करेइ तिपुंजं ! तव्वडीओपुणगच्छइ । सम्मे मिसंमि मिच्छेवा ॥

उपशम सम्यक्त्वथी च्युत थतां जो जीव सम्क्त्व मोहनीयने पामे छे तो तेने क्षयोपशम सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे. कर्मग्रन्थना मत प्रमाणे एम जाणवुं. सिद्धांतना मत प्रमाणे औपशमिक सम्यक्त्वथी च्युत अवश्य

मिथ्यात्वने पामे छे. **उक्तं च कल्पभाष्ये–आलंवण मलहंती, जहसठाणं न मुंचए इलिआ, एवंअकयति पुंजी । मिच्छंचिअउवसमीएइ ॥ मिच्छत्तंजमुइन्नं, तंखीणंअणुइअंचउवसंतं । मीसीभावपरिणयं । वेइज्जंतं खओवसमं ॥ तच्च सत्कर्मवेदकमप्युच्यते, औपशमिककंतुसत्कर्मवेदनारहिमित्यौपशमिकक्षायोपशमिकयोर्भेदः ॥**

सास्वादन सम्यक्त्व–अनंतानुबंधी कषायना उदये उपशम समकित वमतां मिथ्यात्व गुणस्थानक पाम्या पहेला आंतरे

जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट छ आवली-
का सुधी क्षीर वमन स्वाद सरखो जे भाव
रहे छे तेने सास्वादन सम्यक्त्व कहे छे.

सास्वादनं च पूर्वोक्तौपशमिक सम्यक्त्वात् यततो जघन्यतः समय उत्कर्षतश्च षडावलिकायामवशिष्टायामनन्तानुबन्ध्युदयात्तद्--मनेतदास्वादरूपं यतः ॥ उवसम सम्मत्ताओ चयओमिच्छं अपावमाणस्स सासायणसम्मत्तं तयंतरालं मि छावलियं ॥

वेदक सम्यक्त्व-अनंतानुबंधीनी चो-
कडी मिथ्यात्व मोहनीय मिश्रमोहनीयने तह·

न क्षय करी सातमा गुणस्थानकमा समकितमोहनीनो छेल्लो ग्रास (भाग) भोगवे छे, उपजे छे तेने वेदकसम्यक्त्व कहे छे.

क्षपकश्रेणिं प्रपन्नस्य चतुरनन्तानुबन्धिषु मिथ्यात्वमिश्रपुञ्जद्वये च क्षपितेषु सत्सु क्षप्यमाणे सम्यक्त्वपुञ्जे तत्सम्यक्त्वचरमक्षपणोद्यतस्य तच्चरमपुद्गलवेदन रूपम् ॥

क्षपकश्रेणि अंगीकार करेलाने अनन्तानुबंधी चार कषाय मिथ्यात्व अने मिश्र ए छ प्रकृति क्षय करे छते अने सम्यक्त्व मोहनीय पुंज क्षप्यमाण करे छते सम्यक्त्व

मोहनीयना चरम पुद्गल वेदनरूप एक साम-
यिक वेदक सम्यक्त्व जाणवुं.

क्षायिकसम्यक्त्व—अनंतानुबंधीनी चोकडी—मिथ्यात्वमोहनीय, मिश्रमोहनीय अने समकितमोहनीय ए सात प्रकृतिनो बंध-उदय, उदीरणा अने सत्तानो सर्वथा जेमां क्षय थाय छे तेने क्षायिक सम्यक्त्व कहे छे.

पञ्चसम्यक्त्वानां कालनियममाह

ननु सप्तकक्षये क्षायिकमित्युक्तत्वात् सति क्षायिके श्रीकृष्णवासुदेवः कथं तृतीयनरकावनीं जगाम श्रेणिकश्च प्रथमामिति । उच्यते—क्षायिकं द्वेधा शुद्धमशुद्धं

चेति तत्र श्रीकृष्णश्रेणिकयोरशुद्धं क्षायिकं तस्य सादिसपर्यवसितत्वादिति न विरोधः। यदुक्तं श्रीनवपद प्रकरणवृत्तौ तथाहि क्षायिकस्य शुद्धाशुद्धभेदेन द्विभेदत्वात् तत्रापायसद्द्रव्यविकला भवस्थकेवलिनां मुक्तानां च या सम्यग्दृष्टिस्तच्छुद्धं क्षायिकं तस्य च साद्यपर्यवसानत्वान्नास्त्येव भंगो यदाह 'गंधहस्ती' भवस्थकेवलिनो द्विविधस्य सयोगायोगभेदस्य सिद्धस्य वा दर्शनमोहनीयसप्तकक्षयाविर्भूता सम्यग्दृ-

ष्टिः सादिपर्यवसानेति या त्वपायस-
हचारिणी श्रेणिकादेरिव सम्यग्दृ-
ष्टिः तदशुद्धं क्षायिकं तस्य च सा-
दिसपर्यवसानत्वादस्ति प्रतिपातो य-
दुक्तं गंधहस्तिना तत्र या च अपाय
सद्रव्यवर्तिनी अपायो मतिज्ञानांशः
सद्रव्याणि शुद्धसम्यक्त्वदालिका-
नि तद्वर्तिनी श्रेणिकादीनां च सद्र-
व्यापगमे भवत्यपायसहचारिणी
सा सादिः सपर्यवसाना चेति केवल-
ज्ञानोत्पत्तौ अपायक्षये अपायः म-
तिज्ञानांशः तत्क्षयेऽसौ भवति न

प्रथमकषायोदये तत्काले तदुदया-
भावात् तत्क्षये एव तस्योपपत्तिरि-
त्यलं प्रसङ्गेन इति शुद्धाशुद्धं क्षा-
यिकं द्विभेदं.

श्रीकृष्ण श्रेणिक वगेरेने क्षायिक सम्यक्त्व हतुं. तेमने चारित्रनी क्रियाओपर अत्यंत राग होवाथी रोचक समकित पण कहेवाय छे.

खीणे दंसणमोहे-तिविहंमि विभव-
निआणभूअंमि ।
निपच्चवायमउलं-सम्मत्तं खाइयं
होइ ॥१॥

कारक सम्यक्त्व—तत्रकारकं सू-

त्राज्ञा शुद्धा क्रियैव, तस्या एव प-
रगतसम्यक्त्वोत्पादकत्वेन सम्य-
क्त्वरूपत्वात् तदवच्छिन्नं वा सम्य-
क्त्वं कारकसम्यक्त्वं। एतच्च विशु-
द्धचारित्रिणामेव ॥१॥

सूत्राज्ञा शुद्धक्रिया तेज कारक स-
म्यक्त्व छे ते क्रियानेज परगत सम्यक्त्वो-
त्पादकपणावडे सम्यक्रूपत्व छे, ए हेतु
थकी तदवच्छिन्नसम्यक्त्वने कारकसम्य-
क्त्व कहे छे. विशुद्ध चारित्रवंतोने कारकस-
म्यक्त्व होय छे.

रोचक सम्यक्त्व—रोचयति स-

म्यगनुष्ठानप्रवृत्तिं, नतु कारयतीति रोचकम्, अविरतसम्यग्दृशां कृष्णश्रेणिकादीनां ॥१॥

सम्यक् अनुष्ठाननी प्रवृत्तिनी रुचि करावे पण चारित्रनी प्रवृत्ति करावी शके नहि तेने रोचक सम्यक्त्व कहे छे देशविरत्यादि धर्मनी क्रियाओ रुचे पण ते करी शकाय नहि कृष्ण श्रेणिकादिकनी पेठे.

दीपक सम्यक्त्व—दीपकं व्यञ्जकमित्यनर्थान्तरम्, एतच्च यः स्वयं मिथ्यादृष्टिरपि परेभ्यो जीवाजीवादिपदार्थान् यथावस्थितान् व्यनक्ति, तस्याङ्गारमर्दकादेर्द्रष्टव्यम् ॥१॥

दीपकने व्यंजक सम्यक्त्व कहे छे पोते स्वयं जे मिथ्यादृष्टि जीव होय अने अन्योने यथावस्थित जीवाजीवादि पदार्थ समजावे छे तेने अंगारमर्दकनी पेठे दीपक सम्यक्त्व होय छे.

द्रव्यसम्यक्त्व—तत्र जिनोक्तत-त्वेषु सामान्येन रुचिर्द्रव्यसम्यक्-त्वम्—त्यां जिनोक्ततत्त्वोमां सामान्यथी जे रुचि थाय छे तेने द्रव्यसम्यक्त्व कहे छे—**द्रव्यसम्यक्त्व ते भावसम्यक्त्वनुं** कारण छे. कारण विना कार्यनी उत्पत्ति थती नथी. द्रव्यसम्यक्त्व विना भावसम्यक्त्वनी प्राप्ति थती नथी. **नामसम्यक्त्व, स्था-** पनासम्यक्त्व, द्रव्यसम्यक्त्व अने

भावसम्यक्त्व ए चार निक्षेपथी सम्यक्त्व अवबोधवु-द्रव्यसम्यक्त्वनी प्राप्ति बाद भावसम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे, माटे द्रव्यसम्यक्त्वना जे जे हेतुओ होय तेओनु अवलंबन करतां सर्व जीवोने सामान्य आपवी. तथा सामान्यतः जेने सव्वाइं जिणे सरभासिआइं, वयणाइं नन्नहा हुंति इय बुद्धि जस्स मणे—सम्मत्तं निच्चलं तस्स ॥ एवी श्रद्धा होय तेने द्रव्यसम्यक्त्व जाणवुं.

भावसम्यक्त्व—नयनिक्षेपप्रमाणादिभिरधिगमोपायो जीवाजीवादिसकलतत्त्वपरिशोधनरूपज्ञानात्म-

कं भावसम्यकत्वम्—परीक्षाजन्य-
मतिज्ञानतृतीयांशस्वरूपस्यैव तस्य-
शास्त्रे व्यवस्थापितत्वात्। तदाहुः सि-
द्धसेनदिवाकरपादाः एवं जिणपन्न-
त्ते, सद्दहमाणस्स भावओ भावे।
पुरिसस्साभिणिबोहे—दंसणसद्दो ह-
वइ वच्चो ॥

नयनिक्षेपप्रमाणोवडे सर्वज्ञतत्त्वोनो अं-
पायरुप जे बोध थाय छे. जीवाजीवा
दिसकलतत्त्व परिशोधनरूप जे ज्ञान तेने
भावसम्यक्त्व कथे छे. परीक्षाजन्य मति-
ज्ञाननो त्रीजो अपायरुप जे भेद तेने भाव-
सम्यक्त्व रूपे व्यवस्थापवामां आव्यो छे.

नयनिक्षेप प्रमाणोवडे पदार्थोना ज्ञान पूर्वक भावथी जिनेश्वरतत्त्वोनी जे श्रद्धा थाय छे तेने **भावसम्यक्त्व** कहे छे.

श्री हरिभद्रसूरि नीचे प्रमाणे कहे छे.

जीवाइ नव पयत्थे, जो जाणइ तस्स होइ सम्मत्तं, भावेण सद्दहंते अयाणमाणेवि सम्मत्तं ॥ १ ॥ अरिहं देवो-गुरुणो, सुसाहुणो जिणमयं पमाणंच इच्चाइ सुहो भावो, सम्मत्तं विंति जग-गुरुणो । जिणवयणमेव तत्तं इत्थ रुई होइ दव्वसम्मत्तं । जह भावणाण सद्धा, परिसुद्धं भावसम्मत्तं ॥

जिनवचन तेज तत्त्व छे. सच्चमेव-

जिणेहिं पण्णत्तं जिनेश्वरे जे प्ररूप्युं छे तेज सत्य छे. एवी सामान्यरुचिने द्रव्यसम्यक्त्व कहे छे. नयनिक्षेप प्रमाण परिष्कृत विस्तार रुचिनुं भावसम्यक्त्व रूपे स्फुटपणुं छे. भावज्ञान श्रद्धा परिशुद्धने भावसम्यक्त्व जाणवुं. जे ज्ञानी नवतत्त्वोने नयनिक्षेप प्रमाण पूर्वक समजी शके छे तेने **भावसम्यक्त्व** प्रकटे छे. सातनय चार निक्षेप अने चार प्रमाणोथी षड्द्रव्य–नवतत्त्व आदिनुं विस्तार पूर्वक स्वरूप अववोधी जे तत्त्वोनो निश्चय करवो तेने **भावसम्यक्त्व** कथे छे.

व्यवहारसम्यक्त्व—ज्ञानश्रद्धानचरणैः सप्तषष्ठिभेदशीलनं च व्यवहारसम्यक्त्वम्

ज्ञान श्रद्धा अने चरणथी सम्यक्त्वना सडसठ भेदनुं जे शीलन करवुं तेने व्यवहार सम्यक्त्व कथे छे. सम्यक्त्वना सडसठ बोलनी सज्झायथी तेनुं विशेष स्वरूप अवलोकवुं. शुद्ध देवगुरु धर्मनी आराधना करवी, सिद्धान्तोनुं श्रवण करवु, अने देवगुरुनु पूजन करवुं वगेरे व्यवहारनो व्यवहारसम्यक्त्वमा समावेश थाय छे. जैन थवाना जे जे व्यवहार वडे कारणो छे तेओनी प्रवृत्ति वडे प्रवृत्त थवुं तेने व्यवहारसम्यक्त्व कथवामां आवे छे. देवगुरु धर्मनी श्रद्धाने व्यवहारथी जे धारण करवी तेने व्यवहार सम्यक्त्व कहेवामां आवे छे-व्यवहारसम्यक्त्वथी जैन शासननी सेवा कराय छे. व्यवहारसम्यक्त्वनुं शीलन करतां निश्चयस-

म्यक्त्व प्राप्त थाय छे माटे व्यवहार सम्यक्त्व प्रवृत्तिनो आदर करवो. निश्चयसम्यक्त्वना जे जे व्यवहारहेतुओ छे तेनी रुचि प्रवृत्तिने व्यवहारसम्यक्त्व कहे छे.

निश्चयसम्यक्त्व—

निच्छयओ सम्मत्तं, नाणाइ मयप्पशुद्धपरिणामो, इअरं पुण तुह समए, भणिअं सम्मत्तहेउहिं ॥

निश्चयतो ज्ञानादिमयात्मशुद्धपरिणामः निश्चयसम्यक्त्वम् ॥

निश्चयथी ज्ञानदर्शन चारित्रमय आत्म शुद्धपरिणामने निश्चयसम्यक्त्व कहे छे. ज्ञानदर्शन अने चारित्रसंलुलितपरिणामने

निश्चयसम्यक्त्व कहे छे तथा एने भावचारित्र कहे छे. भावचारित्रने निश्चयसम्यक्त्व केवी रीते कहेवाय ? तेना उत्तरमां जणाववामा आवे छे के **भावचारित्रस्यैव निश्चयसम्यक्त्वरूपत्वात्** भावचारित्रने निश्चयसम्यक्त्वरूपत्व छे. अतएव मिथ्याचारानिवृत्तिरूप कार्यनो तेथी सद्भाव छे. जो आ प्रमाणे निश्चयसम्यक्त्वनुं स्वरूप कहेतां श्रेणिक कृष्ण वगेरेने निश्चयसम्यक्त्व घटी शके नहि ? उत्तरमां कहेवानुं के श्रेणिककृष्णादिकने निश्चयसम्यक्त्व नथी. **अप्रमत्तसंयतानामेव तद्व्यवस्थितेः** सातमा गुणस्थानकवर्ति अप्रमत्त साधुओने निश्चयसम्यक्त्व होय छे. कारण के सातमा गुणस्थानकवर्ति अप्रमत साधुओने शुद्धात्म

ज्ञानदर्शन चारित्र परिणति होय छे. आचारांगसूत्रमां अप्रमत्त साधुओने निश्चयसम्यक्त्व कथ्युं छे. तत्पाठः—

जं सम्मंति पासह, तं मोणंति पासह, जं मोणंति पासह, तं सम्मंति पासह ॥१॥ ण इमं सक्कं सिढिलेहिं अदिज्जमाणेहिं गुणासाएहिं वंकसमायारेहिं पमत्तेहिं गारमावसंतेहिं मुणी मोणं समादाय, धुणे कम्मसरीरगं, पंतलूहं च सेवंति धीरा सम्मत्त दंसिणोत्ति ॥ १ ॥

जे सम्यक्त्व छे ते चारित्र छे, अने जे चारित्र छे ते सम्यक्त्व छे. आ सू-

त्रनी टीका श्रीशीलांगाचार्ये करी छे तेमां अप्रमत्त साधुने निश्चयसम्यक्त्व कथ्युं छे. जे निश्चयसम्यक्त्व छे तेने भावचारित्र कथ्युं छे अने ते सातमा गुणस्थानकवर्ति साधुओने होय छे. ज्ञानी ध्यानी समाधिवत साधुने निश्चयसम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे.

विशुद्धचारित्रीयोने कारकसम्यक्त्व कथ्युं छे पण ते बाह्य चारित्र क्रियारूप छे अने निश्चयसम्यक्त्व तो आत्मानी शुद्ध ज्ञान दर्शन चारित्र परिणति रूप छे माटे कारकसम्यक्त्व अने निश्चयसम्यक्त्वमां ए प्रमाणे भेद जाणवो. निश्चयसम्यक्त्वने आश्रयी सिद्धान्तोमां प्रशमादिनु लक्षणपणुं कथ्युं छे. अप्रमत्त साधुओने जेजु अत्यंत ज्ञानादि शुद्धात्मपरिणाम वडे निश्चय सम्य-

क्त्व प्राप्त थाय छे तेवुं कृष्ण अने श्रेणिक वगेरेने निश्चयसम्यक्त्व घटतुं नथी. कारणके तेओमां निश्चयसम्यक्त्व लक्षणोनी उत्पत्तिनो अभाव छे. चोथागुणस्थानकमां क्षायिकसम्यक्त्व प्राप्त थइ शके छे परंतु भाव चारित्ररुप निश्चय सम्यक्त्व के जे भावचारित्र स्वरूप छे तेज चोथा गुणस्थानकमां प्राप्त थइ शकतुं नथी. दीक्षा-चारित्र लेवानो जे हृदयमां भाव थाय छे तेने **भावचारित्र** कहेवामां आवतुं नथी, परंतु आत्मा ज्यारे दीक्षा अंगीकार करी साधुनां व्रतो पाळतो छतो सातमा अप्रमत्त गुणठाणाना विशुद्ध ज्ञान दर्शन चारित्रपरिणाम वडे परिणमे छे त्यारे तेने **भावचारित्रनी** प्राप्ति कथवामां आवे छे अने ते **भावचारित्र** रूप मौनने निश्चय सम्यक्त्व कथवामां आवे छे.

श्री हरिभद्रसूरिए एज प्रमाणे कह्युं छे.

निच्छयसम्मत्तं वाहिगिच्च सुत्तभ-
णिअनिउणरूवं तु । एवं विहो णि-
ओगो--होइ इमो हंत वण्णुत्ति ॥

ज्ञानादिमय इत्यस्यायमर्थः ज्ञाननये ज्ञानस्य दशाविशेष एव सम्यक्त्वं क्रियानये च चारित्ररूपं, दर्शननये तु स्वतन्त्रं व्यवस्थितमेव. इति ॥ शुद्धात्मपरिणामग्राहिनिश्चयनये तु

आत्मैव दर्शनज्ञानचारित्राण्यथवा यतेः यत्तदात्मक एवैष–शरीर-

मधितिष्ठति ॥

आ प्रमाणे निश्चयनय सम्यक्त्वनुं स्वरूप अवबोधवुं. शुद्ध ज्ञान दर्शन चारित्र परिणति रूप आत्मा तेज निश्चय सम्यक्त्व छे. बाह्य रागादि संकल्प विकल्प रहित निरुपाधिमय शुद्धात्म बोध स्थिरता, लीनता तन्मय परिणति तेज निश्चय सम्यक्त्व अवबोधवुं.

आगमसारकर्ता देव–गुरु अने धर्मनी श्रद्धाने व्यवहारसम्यक्त्व कहे छे अने आत्मा तेज देव, आत्मा तेज गुरु अने आत्मा तेज धर्म एवी श्रद्धाने निश्चयनय सम्यक्त्व कथे छे. प्रश्नोत्तररत्नचिंतामणिमां शेठ अनुपचंद मलुकचंद जणावे छे के उपशम सम्यक्त्व–क्षयोपशम सम्यक्त्व अने क्षायिक सम्यक्त्व तेज निश्चय सम्यक्त्व छे. आ प्र-

माणे तेओ निश्चयसम्यक्त्वनी व्याख्या करे छे पण तेनो प्रवचनसारोद्धारवृत्ति-नवपद प्रकरणवृत्ति-धर्मसंग्रहवृत्ति-आचारागसूत्र टीका वगेरेमां कथेला निश्चय सम्यक्त्वनी साथे मतभेद देखाय छे. नवपदप्रकरणवृत्ति, धर्मसंग्रह वगेरेमां क्षायिक समकितने निश्चय समकितथी भिन्न गण्युं छे अने श्रेणिकने क्षायिक सम्यक्त्व छतां निश्चय सम्यक्त्व नथी एम स्पष्ट कथ्युं छे. आगमसारना कर्त्ताने जे निश्चय सम्यक्त्वनी व्याख्या करी छे ते पण उपरनी व्याख्याथी भिन्न पडे छे तो पण अनुभवनी अपेक्षाए अप्रमत्त साधुओने जे निश्चय सम्यक्त्व कथ्युं छे तेनी साथे संबंध कथंचित् बंधबेसतो आवे छे. अप्रमत्त साधुओ, निश्चयनयनी अपेक्षाए पोताना आ-

त्माने देव–गुरु मानीने अने तेने शुद्ध धर्म-
रूप मानीने ते सत्ताए तेनुं ध्यान करे छे
तेथी तेओने शुद्धात्मज्ञानपरिणतियोगे निश्चय
सम्यक्त्व होय छे. मारो आत्मा तेज देव गुरु
धर्मरूप छे एवुं वर्तनमां मूकीने तेनो वास्तवि-
क शुद्धात्म अनुभव निश्चय करवो ते अप्रमत्त
दशा विना अन्य के जे नीचेना गुणस्थानकोमां
रहेला जीवो छे तेओने आवी शके नहि एम
अनुभवनिश्चय शुद्धात्मा परिणतिए तेनो
भावार्थ समजी निश्चय सम्यक्त्वमां ते व्या-
ख्या समावेश करी मतभेद दूर करी शकाय
छे. श्रीमद् देवचंद्रजीए जे दृष्टिथी निश्चयनय
सम्यक्त्वनुं लक्षण कथ्युं छे तेनो सत्य भा-
वार्थ तो तेओ जाणे. परंतु सापेक्ष दृष्टिए
सिद्धान्त शैलीए ए प्रमाणे घटावतां तेमना
कथनमां विरोध जणातो नथी. देव गुरु अने

धर्मरूप जेनो आत्मा परिणम्यो छे अने तेनो शुद्धानुभव करीने आत्मानी शुद्ध ज्ञानादि परिणतिने सेवे छे तेने निश्चय सम्यक्त्व प्रगटे छे एवो वास्तविक अनुभवार्थ ग्रहतां सापेक्षत्व व्याख्याए निश्चय सम्यक्त्व ग्रहाय छे.

सम्यक्त्व.

संख्यात वर्षायुष्क संज्ञि पचेन्द्रिय तिर्यंचो तथा स्त्रीओ तथा भवनपति व्यंतर ज्योतिषोने क्षायिक समकित नथी. तेओने ते भवमां क्षायिक सम्यक्त्व उत्पन्न थतु नथी. सख्याता वर्षायुष्कवाळा मनुष्यने क्षायिक सम्यक्त्वनो आरंभ थाय छे माटे संख्याता वर्षायुष्कवाळा संज्ञिपचे-

न्द्रिय तिर्यंच स्त्रीओ अने उपर्युक्त त्रण प्रकारना देवताओने पारभविक क्षायिक सम्यक्त्व पण होतुं नथी. कारणके क्षायिक सम्यक्दृष्टिनो तेओमां उत्पाद थतो नथी. उपर्युक्त संख्याताय़ुष्कसंज्ञिपंचेन्द्रिय तिर्यंच स्त्रीओ तथा त्रण प्रकारना देवताओने उपशम अने क्षयोपशम सम्यक्त्व थाय छे. एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय अने असंज्ञिपञ्चेन्द्रिय जीवोने ते भव वा परभवनी अपेक्षाए त्रण सम्यक्त्वमांथी एक पण सम्यक्त्व होतुं नथी. वादर, पृथ्वी, जल, वनस्पति, द्वित्रिचतुरिन्द्रिय जीवो अने असंज्ञिपंचेन्द्रियोमां पर्याप्तावस्थामां पारभाविक सास्वादन सम्यक्त्व अने पर्याप्त संज्ञी पंचेन्द्रियमां तादूभविक पमाय

छे. सूक्ष्म एकेन्द्रिय बादर तेज वायुमां सम्यक्त्वलेश्यावंतोना उत्पादनो अभाव छे माटे सास्वादन तेओमां नथी ए कार्मग्रन्थिक अभिप्राय छे. सूत्राभिप्रायवडे तो पृथिवी आदि एकेन्द्रियोने सास्वादन सम्यक्त्व नथी. यदुक्तं प्रज्ञापनायाम्, पुढविकाइयाणं पुच्छा गोयमा पुढविकाइया नो सम्मदिट्ठी नो सम्मामिच्छदिट्ठी एवं जावणप्फइकाइया—॥ इति प्रवचनसारोद्धारे १४९ द्वारे॥ पञ्च सम्यक्त्वानां कालनियममाह—

अंतमुहूत्तोवसमो, छावलिसासाणवेयगोसमओ, साहियतित्तीसायरखइयो दुगुणो खओवसमे ॥

उपशमनो अन्तर्मुहूर्त काल छे सास्वादन-नो उत्कृष्ट छ आवलिका मात्र, समय मात्र वेदक क्षायिकनो तेत्रीस सागरोपम अने क्षयोप-शमनो सासठ सागरोपमनो काल जाणवो. सर्वार्थसिद्धादिनी अपेक्षाए क्षायिक सम्य-क्त्वनी तेत्रीस सागरोपमनी स्थिति जाणवी. बावीस सागरोपम स्थितिवाळा देवपणे त्रण वार उत्पन्न थवाथी क्षयोपशम सम्यक्त्वनो छासठ सागरोपमनो काळ सिद्ध थाय छे अने तेमां नरभवनुं आयुष्य अधिक जाणवुं.

उक्कोसं सासायण–उवसमिया हुंति पंचवाराओ, वेयग खयगा इ-क्कसि–असंखवारा खओवसमो ॥

आखा भवचक्रमां जीवने सास्वादन

अने उपशम सम्यक्त्व पाच वार उत्पन्न थाय छे. वेदक अने क्षायिक सम्यक्त्व एकवार उत्पन्न थाय छे अने क्षयोपशम सम्यक्त्व असंख्यवार उत्पन्न थाय छे.

वीयगुणे सासाणो–तुरियाइसु-
अट्ठिगार चउचउसु, उवसमगखय-
गवेयग–खाओवसमा कमा हुंति ॥

बीजा गुणस्थानकमा सास्वादन सम्यक्त्व छे. चोथाथी अगियारमा सुधी उपशम सम्यक्त्व छे. चोथाथी सातमा सुधी वेदक अने क्षयोपशम सम्यक्त्व छे तथा चोथाथी अयोगी पर्यंत क्षायिक सम्यक्त्व छे.

वेदकं चैव सम्यक्त्वं क्षायोपश-
मिकं तथा, इति पौद्गलिकान्याहुः

पीडानुग्रहशक्तितः ॥

वेदक अने क्षायोपशमिक सम्यक्त्वने पौद्गलिक कहेवामां आवे छे अने उपशम अने क्षायिकने अपौद्गलिक कहेवामां आवे छे. **उपशमक्षायिकसम्यक्त्वयोः पुद्गलवेदनस्य सर्वथैवाभावात्.**

चार गतिमां संज्ञिपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवने प्रथम सम्यक्त्वनो लाभ थाय छे.

उपशम सम्यक्त्वथी च्युत जीव क्षयोपशम दृष्टि—मिश्रदृष्टि वा मिथ्यादृष्टि थाय छे. सिद्धांतना मत प्रमाणे अनादि मिथ्यादृष्टि जीव, तथाविधसामग्री सद्भावे अपूर्व करण वडे त्रण पुंज करीने शुद्ध पुद्गलोने वेदतो छतो उपशम सम्यक्त्व पाम्या विनाज

क्षायोपशमसम्यग्दृष्टि थाय छे. ते प्रथम क्षयोपशम सम्यक्त्वने पामे छे. अन्य तो एम कहे छे के—" अन्यस्तु यथाप्रवृत्ति करणत्रयक्रमेणान्तरकरणे उपशम-सम्यक्त्वं लभते पुञ्जत्रयं त्वसौ न करोत्येव ततश्चौपशमिकसम्यक्त्वाच्च्युतोऽवश्यं मिथ्यात्वमेव याति यथाप्रवृत्तिकरणादि त्रणना अनुक्रमे अन्तरकरणमा उपशम सम्यक्त्व पामे छे अने जीव, त्रण पुंजने नथी करतो ततः पश्चात् -उपशम सम्यक्त्वथी चवेलो अवश्य मिथ्यात्वने पामे छे.

प्रथम सम्यक्त्व पामे छे तो कोइ जीव सम्यक्त्वनी साथे देशविरति वा सर्वविरति-पणु पामे छे. सास्वादन सम्यक्त्वी कइ पण

पामतो नथी.

उक्तं च शतकबृहच्चूर्णौ—

उवसमसम्मदिट्ठी—अंतरकरण-ठिओ कोइ देसविरयंपि लंभइ कोइ पमत्तभावंपि ॥ सासाइणो न किंपि लहे इति ॥

पुंजत्रयसंक्रमश्च कल्पभाष्ये एवमुक्तः मिथ्यात्वदालिकान् पुद्गलानाकृष्य सम्यग्दृष्टिः प्रवर्धमानपरिणामः सम्यक्त्वे मिश्रे च संक्रमयति। मिश्रपुद्गलांश्च सम्यग्दृष्टिः सम्यक्त्वे मिथ्यादृष्टिश्च मिथ्यात्वे सम्यक्-

स्वपुद्गलांस्तु मिथ्यात्वे संक्रमयति न तु मिश्रे ॥

प्रवर्धमानपरिणामी सम्यग्दृष्टिजीव, मिथ्यात्व पुद्गलोने आकर्षी सम्यक्त्वमां अने मिथ्यात्वमां संक्रमावे छे. सम्यग्दृष्टि जीव, मिश्र पुद्गलोने सम्यक्त्वमा संक्रमावे छे अने मिथ्यादृष्टि जीव मिथ्यात्वमां संक्रमावे छे तथा मिथ्यादृष्टि, सम्यक्त्व पुद्गलोने मिथ्यात्वमा संक्रमावे छे पण मिश्रमां नही.

मिच्छत्तंमि अखीणे–तिपुंजा सम्मदिट्ठिणो नियमा खीणंमि उ मिच्छत्ते–दुएगपुंजी व खवगोवा ॥

मिथ्यात्व अक्षीण थये छते सम्यग् द-

छ्हिसे, नियमा त्रिपुंजवाळा होय छे. मिथ्यात्व क्षीण थये छते वे पुंजी होय छे अने मिश्र क्षीण थये छते एक पुंजी होय छे अने सम्यक्त्व मोहनीय क्षीण थये छते क्षायिक सम्यक्त्ववंत थाय छे.

सम्यक्त्वपुद्गला अशोधितमदनकोद्रवस्थानीया विरुद्धतैलादिद्रव्यकल्पेन कुतीर्थिकसंसर्गकुशास्त्रश्रवणादिमिथ्यात्वेन मिश्रिताः सन्तः तत्क्षण एव मिथ्यात्वं स्युः यदापि प्रपतित सम्यक्त्वः पुनः सम्यक्त्वं लभते तदापि अपूर्वकरणेन पुञ्जत्रयं कृत्वा अनिवृत्तिकरणेन सम्यक्त्वं पुञ्ज एव

गमना द्रष्टव्यं । न तु तदा अपूर्व-
करणस्य पूर्वलब्धस्यैव लाभात् कथं
अपूर्वतेति चेदुच्यते अपूर्वमिवाऽपूर्वं
स्तोकवारमेव लाभादिति वृद्धाःसैद्धा-
न्तिकमतं चैतत्—सम्यक्त्वप्राप्ताविव
देशविरतिसर्वविरत्योः प्राप्तावपि
यथाप्रवृत्तापूर्वकरणे भवतो नत्वनि-
वृत्तिकरणं,अपूर्वकरणाद्धासमाप्तावन-
न्तरसमये एव तयोर्भावात् । देशस
र्वविरत्योः प्रतिपत्तेरनन्तरमन्तर्मुहूर्त्तं
यावदवश्यं जीवः प्रवर्धमानपरिणा-
मस्तत ऊर्ध्वं त्वनियमः कोऽपि प्रव-

र्धमानपरिणाम एव कोऽपि स्वभाव-
स्थः कोऽपि हीनपरिणामः ये चाभो-
गं विनैव कथंचित् परिणामह्रासादे-
शविरतेः सर्वविरतेर्वा प्रतिपतति ता-
स्ते अकृतकरणा एव पुनस्तां लभन्ते।
ये त्वाभोगतः प्रतिपतिता आभोगे-
नैव मिथ्यात्वं गतास्ते जघन्यतोऽन्त-
र्मुहूर्तेनोत्कर्षतः प्रभूतकाले यथोक्त-
करणपूर्वकमेव पुनस्तां ते लभन्ते
इत्युक्तं कर्मप्रकृतिवृत्तौ— ॥

सैद्धान्तिक मत प्रमाणे विराधित सम्य-
क्त्ववाळो जीव ग्रहण करेल सम्यक्त्वने

ाथे छठी नरक सुधी कोइ उत्पन्न थाय छे अने कार्मग्रन्थिक मतमां तो वैमानिकथकी अन्यत्र उत्पन्न थतो नथी. तेन गृहीतेने-त्युक्तम्॥

प्रवचनसारोद्धारमां प्राप्त समकीति जीव तेना त्यागथी कर्मग्रन्थ मत प्रमाणे उत्कृष्ट स्थितिवाळी कर्मप्रकृतियोने बांधे छे अने सैद्धान्तिकमताभिप्रायथी भिन्न ग्रन्थीने उत्कृष्ट स्थितिबंध थतो नथी.

ग्रन्थि भेद करनारने अने उपशम श्रेणेना प्रारंभकने उपशम सम्यक्त्व थाय छे.

क्षायिकसम्यक्त्वदृष्टि तृतीयभवमां चतुर्थ भवमां वा ते भवमां सिद्ध थाय छे. पूर्वे भवनुं आयुष्य बांधीने जे क्षायिक स-

म्यक्त्वी थयो छे ते देवगति वा नरकगतिमां जाय छे तो त्यारे ते जीव तद्भवांतरित त्रीजा भवमां सिद्ध थाय छे अने पूर्व बद्धायुष्क क्षायिक सम्यक्त्वी तिर्यंच वा नरकगतिमां जाय छे तो ते **अवश्याऽसंख्यवर्षायुष्केष्वेव नतु संख्येयवर्षायुष्केषु तद्भवानन्तरं च देवभवे ततो नृभवे सिद्ध्यतीति चतुर्थभवे मोक्षः** अवश्य असंख्याता वर्षायुष्कोमां उपजे छे पण असंख्याता वर्षायुष्कवाळाओमां नहि. ते भव पश्चात् देवभवे अने त्यांथी मनुष्य भवमां सिद्ध थाय छे. जेणे पूर्व भवनुं आयुष्य बांध्युं नथी, एवो कोइ मनुष्य क्षायिकसम्यक्त्व पामे छे तो ते तद्भवमां क्षपकश्रेणि

आरोही सिद्ध थाय छे.

एक जीव अने नाना जीवनी अपेक्षाए सम्यक्त्वनो उपयोग जघन्यथी अने उत्कृष्टथी अन्तर्मुहूर्तनो जाणवो अने क्षायोपशम रूप तेनी लब्धिता एक जीवने जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्टतो नृभव अधिक छासठ सागरोपमनी होय छे. तेना उपर सम्यक्त्वथी अप्रच्युत जीव सिद्ध थाय छे. नाना जीवोने आश्रयी तो सर्वकाल जाणवो.

कोइ सम्यक्त्वनो त्याग करे छते पुनः तेना आवरणना क्षयोपशमथी अन्तर्मुहूर्त्त मात्रमां पुनः सम्यक्त्वने पामे छे माटे सम्यक्त्वनुं अन्तर् जघन्यथीतो अन्तर्मुहूर्त छे अने आशातनाप्रचुर जीवनी अपेक्षाए तो उ-

त्कृष्टथी अपार्ध पुद्गलपरावर्त जाणवुं. कह्युं छे के—

तित्थयरपवयणे सुअं
आयरिअं गणहरं महड्ढीअं
आसायंतो बहुसो—
अणंतसंसारिओ होइ ॥

नाना जीवोनी अपेक्षाए तो सम्यक्त्वना आंतरानो अभाव छे.

परिपूर्ण चतुर्दश पूर्व वा दशपूर्वनुं परिपूर्ण जेने ज्ञान छे तेने नियमाए सम्यक्त्व होय छे. बाकीना के जे किञ्चिन्न्यून दश पूर्वधरो होय छे तेओने सम्यक्त्वनी भजना जाणवी. तेओने सम्यक्त्व होय वा मि-

थ्यात्व पण होय. यदुक्तम्

चोद्दसदसयअभिन्ने
नियमासम्मं तु सेसए भयणा
मतिओहीविवच्चासोवि
होंति सिच्छे नउणसेसे ॥

अभिन्नदशपूर्वी अने अभिन्न चतुर्दश पूर्वीने नियमाए सम्यक्त्व कह्युं छे, पण कयुं सम्यक्त्व ते स्पष्ट जणाव्युं नथी. अन्य ते थकी न्यूनपूर्वीओने भजना जाणवी. अभव्य दशपूर्व भिन्न द्रव्यश्रुतनो चारित्र अंगीकार करी अभ्यास करे छे, पण तेने सम्यक्त्वनी प्राप्ति थती नथी. बाह्यचारित्र क्रियावळे अभव्यजीव नव ग्रैवेयक सुधी

जाय छे—

आ काळमां सम्यक्त्वनी प्राप्ति जेने थाय छे, तेने उत्तम भव्य जीव जाणवो. ॥

संमत्तंमि उ लद्धे, पलिअपुहुत्तेण सावओ हुज्जा । चरणोवसमखयाणं, सागरसंखंतरा हुंति ॥ सम्यक्त्व प्राप्त थया बाद उत्तर देशविरत्यादि गुणोनी प्राप्ति थाय छे. गुरुनी विनय भक्तिवडे जे आराधना करे छे, तेने सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे. क्षयोपशमादि सम्यक्त्व योगे तीर्थंकर नाम बांधी शकाय छे. वीश स्थानकनी आराधना करनार जीव तीर्थंकर नाम कर्म बांधे छे. सम्यक्त्व प्राप्त थया पश्चात् धर्मक्रियानी सफळता थाय छे.देव,गुरु,

धर्मनो रागी अने मध्यस्थ मन्दकपायी जीव सम्यक्त्वनी प्राप्तिनो अधिकारी बने छे. मार्गानुसारी जीव सम्यक्त्वनी प्राप्ति करवाने अधिकारी बने छे. जेना मनमां सम्यक्त्वनी प्राप्ति माटे अत्यंत तीव्र जिज्ञासा होय, तेणे मार्गानुसारी प्रथम थवुं जोइए. मार्गानुसारीपणुं आव्या बाद सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे. आत्मज्ञानी आत्माना स्वरूपने अवबोधी आत्मानी शुद्ध गुण पर्यायमां रमणता करी समाधिवंत बनी अत्यंत अतीन्द्रिय आनन्दना अनुभवे सम्यक्त्वनी प्राप्ति करे छे. आत्माना सहजानन्दनो ओघ ज्यां छे त्यां सम्यक्त्व छे. देशविरति अने सर्वविरतिगुण प्राप्त करवाने माटे जेने खास काळजी होय, तेणे प्रथम सम्यक्त्वनी प्राप्ति कर-

वी. गीतार्थ आत्मज्ञानी ध्यानी सद्गुरुनां चरणकमल सेववाथी सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे.

उपर प्रमाणे सम्यक्त्वना जे जे भेदो कह्या छे, तेनी प्राप्ति माटे प्रयत्न करवो एज उत्तम पुरुषोनुं कर्तव्य छे. आगमोनो नय निक्षेप प्रमाणोथी अनुभव करीने राग द्वेष रहित आत्माना समभाव स्वरूपमां परिणमवुं एज परमसाध्य कर्तव्य छे. समभावे परिणमतां आत्मा केवल ज्ञान प्राप्त करी मोक्ष पामे छे.

सेयंवरो वा आसंवरो वा.
बुद्धो वा अहव अन्नो वा
समभावभावी अप्पा—
लहइ मुक्खं न संदेहो ॥

श्वेतांबर वा दिगंबर, बुद्ध अथवा अथवा वेदांती, वैदिक धर्मी, मुसलमान, ख्रीस्ति वगेरे गमे ते होय; परतु समभावे आत्माने भावी समभावे निश्चयतः परिणमी समभावी थाय छे ते मोक्ष पामे छे. ते कर्मावरणनो क्षय करी सम्यक्त्वादिने प्राप्त करी परिपूर्ण गुणमयी बनी सिद्ध बुद्ध परमात्मा थाय छे. सर्व सिद्धांतनो सार ए छे के सम्यक्त्वादिनी प्राप्ति करी आत्माने समभावे भाववो. समभावे परिणमतां कषायनी मन्दताए अने क्षीणताए निसर्ग सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे अने सकल कर्मने निवारी परिपूर्ण शुद्ध बुद्ध बने छे. समभावे परिणमतां सहजानन्दयोगे सम्यक्त्वनी प्राप्तिनो अनुभव करी शकाय छे.

आगमसार, नयचक्र आदि ग्रंथोनी सहायताथी ते ग्रंथोना अनुसारे भव्यजीवोना उपकारार्थ षड्द्रव्यविचारग्रन्थ बनाव्यो छे. तेमां कांइ वीतरागनी आज्ञा विरुद्ध भाषण थयुं होय, लख्युं होय, ते त्रिविधे करी मिच्छामि दुक्कडं दउं छुं. आ ग्रंथमां विभ्रम चित्तथी कोइ दोष थयो होय तो ते सुधारवा पंडितपुरुषोए कृपा करवी.
शुभे यथाशक्ति यतनीयं ए न्यायने अनुसरी में उद्यम कर्यो छे, तेथी हुं मारी महेनत परोपकार थये छते, सफल मानुं छुं,
आ ग्रंथ पंडित पुरुषोने योग्य छे.
आ ग्रंथ वांची व्यवहार मार्गे चाली हृदयमां निश्चय दृष्टि राखशे ते आत्मसुख पामशे.

दुहा.

अध्यातमरस झीलवा, ए षड् द्रव्य विचार;
जे भवी प्राणी धारशे, ते लहेशे सुखसार. १
जन्म मरणथी आतमा, रझळ्यो काळ अनंत;
जिनवाणी षड् द्रव्यनी, सुणतां होवे संत. २
सात नयोथी आतमा, सप्तभंगीए धार;
आत्मस्वरूप विचारशे, ते लहेशे भवपार. ३
ओगणीश अठ्ठावननी, विक्रम साल रसाल;
फागुण मासनी पंचमी, रुडो शुक्रवार. ४
पादरा नगरे शोभता, शांतिनाथ भगवंत;
पादपद्म तेना नमी, ग्रंथ कर्यो गुणवंत. ५
विनयवंत विवेकवन. श्रावक मोहनभाइ;
हीमचंद सुत कारणे, ग्रंथ कर्यो सुखदायी. ६
तपगच्छ गगन दिवाकरु, हीरविजय सूरिराय;
सहेजसागर तासशिष्य, पदवी उपाध्याय. ७

पाट परंपर तेहनी, रविसागर गुरुराय;
सुखसागर शिष्य तेहना, विनयवंत कहाय.८
तास चरणने सेवतो, बुद्धि कहे छे एम;
भणेगणे जे धारशे, ते पामे सुखक्षेम. ९
ज्यां लगे शशी भानु रहे, जगमां करे प्रकाश;
तावत् भविजन भानुसम, थइने करो सुवास.१०
ए षड्द्रव्य विचार ग्रन्थ, जिनवाणीथी रसाल;
भणशे गणशे ते भवी, लहेशे मङ्गलमाल.॥११॥

संपूर्णम्.

ॐ शान्तिः ३

॥ श्रीसच्चिदानंदाय नमः ॥

अथ श्रीचिदानंदजी अपर नाम श्रीकपूरचंदजी महाराज कृत

॥ स्वरोदयज्ञान प्रारंभः ॥

॥ छप्पय छंद ॥

॥ नमो आदि अरिहंत, देव
देवनपति राया ॥ जास चरण अ-
वलंब, गणाधिप गुण निज पाया ॥
धनुष पंचशत मान, सप्त कर परि-

मित काया ॥ वृषभ आदि अरु अंत,
मृगाधिप चरण सुहाया ॥ आदि,
अंत युत मध्य, जिन चोवीश इम
ध्याइये ॥ चिदानंद तस ध्यानथी,
अविचल लीला पाइये ॥ १ ॥ इक
कर वीणा धरत, इक कर पुस्तक छा-
जे ॥ चंदवदन सुकुमाल, भाल जस
तिलक विराजे ॥ हार मुकुट केयूर,
चरण नूपुरधुनि वाजे ॥ अद्भुत रूप
सरूप, निरख मन रंभा लाजे ॥ ली-
लायमान गजगमनी नित, ब्रह्मसुता
चित्त ध्याइये ॥ चिदानंद तस ध्या-
नथी अविचल लीला पाइये ॥२॥

॥ दोहा ॥

॥ उदधिसुता सुत तास रिपु, वाहन संस्थित बाल ॥ वाल जाणी निज दीजीए, वचन विलास रसाल ॥ ॥ ३ ॥ अज अविनाशी अकल जे, निरंकार निरधार ॥ निर्मम निर्भय जे सदा, तास भक्ति चित्त धार॥४॥ जन्म जरा जाकुं नहीं, नहीं सोग संताप ॥ सादि अनंती थिति करी, थिति बंधन रुचि काप ॥५॥ तीजे अंशरहित शुचि, चरम पिंड अवगाह ॥ एक समे समश्रेणिए. अचल थयो शिवनाह॥६॥ सम अरु विषम-

पणे करी, गुण पर्याय अनंत ॥ एक एक परदेशमें, शक्ति सुजग महंत ॥७॥ रूपातीत व्यतीतमल, पूर्णानंदी ईस ॥ चिदानंद ताकुं नमत, विनय सहित निज सीस ॥ ८ ॥ काल- ज्ञानादिक थकी, लही आगम अ- नुमान ॥ गुरु किरपा करी कहत हूं, शुचि स्वरोदयज्ञान ॥ ९ ॥ स्वरका उदय पिछाणीए, अतिही थिर चि- त धार ॥ ताथी शुभाशुभ कीजीए, भावी वस्तु विचार ॥ १० ॥ नाडी तो तनमें घणी, पण चौवीश प्रधान॥ तिनमें नव फुनि ताहुमें, तीन अ-

धिक कर जान ॥ ११ ॥ इंगला पिंगला सुखमना, ये तीनूंके नाम ॥ भिन्न भिन्न अब कहत हूं, ताके गुण अरु धाम ॥ १२ ॥ भृकुटी चक्रशुं होत है, स्वासाको परकास ॥ वंकनालके ढिग यह, नाडी करत निवास ॥ १३ ॥ नाडीतें फुनि संचरत, इंगला पिंगला धाम ॥ दक्षण दिश हें पिंगला, इंगला नाडी वाम ॥१४॥ इण दोउंके मध्यमें, सुखमन नाडी जोय ॥ सुखमनके परकासमें, स्वर फुनि चालत दोय ॥ १५ ॥ डावा स्वर जब चलत हें, चंद उदय तब

जान ॥ जब स्वर चालत जीमणो, उदय होत तब जान ॥ १६ ॥ सौम्य, काजकूं शुन्न शशि, क्रूर कामकूं सूर ॥ इणिविधि लख कारज करत, पामे सुख जरपूर ॥ १७ ॥ दोउं स्वर सम संचरे, तब सुखमन पहिचांन ॥ तामें कोउं कारज करत, अवस होय कछू हांन ॥ १८ ॥ चंद्र चलत कीजे सदा, थिर कारज स्वर जाल ॥ चर कारज सूरज चलत, सिद्ध होय ततकाल ॥ १९ ॥ कृष्णपक्ष स्वामी रवि, शुक्लपक्ष पति चंद ॥ तिथि-जाग इनका लही, कारज करत

आनंद ॥ २० ॥ कृष्णपक्षकी तीन तिथि, प्रथम रविकी जांन ॥ तीन शशिकी फुनि रवि, इण अनुक्रम पहिचांन ॥ २१ ॥ शुक्लपक्षकी तीन तिथि, चंद तणी कही मीत ॥ फुन रवि फुन शशि फुन रवि, शशि गिणवाकी रीत ॥ २२ ॥

॥ छप्पय छंद ॥

॥ मंगल शनि आदित्य, वार स्वामी रवि जाणो ॥ सुरगुरु बुध अरु सोम, शुक्र पति चंद वखाणो ॥ इणविधि स्वर तिथि वार. भिन्न कर नक्षत्र पिछाणो॥ शुभ कारिजकूं योग्य,

सकल इणविधि मन आणो ॥ निरगम सुरगम विध, जाव इणविधकें लखो ॥ तत्त्व तणो परकाश, सुधारस इम चखो ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कृष्णपक्ष एकम दिने, प्रातः सूर जो होय ॥ तौ ते पक्ष प्रवीण नर, आनंदकारी जोय ॥ २४ ॥ शुक्लपक्षके आदि दिन, जो शशि स्वर उद्योत ॥ तो ते पक्ष विचारीए, सुखदायक अति होत ॥ २५ ॥ चंद्रतिथिमें चंद्र स्वर, सूरतिथि वहे सूर ॥ कायामें पुष्टि करे, सुख आ-

पत जरपूर ॥२६॥ चंद्रतिथिमें आय जो, जानु करत प्रकाश ॥ तो क्लेश पीमा हुवे, किंचित वित्त विनाश ॥ २७ ॥ सूरजतिथि पमिवा दिने, चले चंद्र स्वर जोर ॥पीम कलह नृप जय करे, चित्त चंचल चिहुं ओर॥२८॥ दोउं पक्ष पमिवा दिने, सुखमन स्वर जो होय ॥ लाभ हाण सामान्यथी, ते निहचे करी जोय ॥२९॥ वृश्चिक सिंह वृष कुंभ पुन, शशि स्वरनी ए राश ॥ चंद्रोजोग इणके मिलत, शुभ कारज परकाश ॥ ३० ॥ कर्क मकर तुल मेष पुन, चर राशि ए,

चार ॥ रवि संग ए संचरत, चर काजे सुखकार ॥ ३१ ॥ मीन मिथुन धन, कन्यका, द्विस्वभाव ए जान ॥ सुख-मन स्वरसुं मिलत है, काज करत होय हान ॥ ३२ ॥ ससि सूरजके मास इम, भिन्न भिन्न करीए जाण ॥ राशि वर्णित दिन थकी, अधिक भेद मन आण ॥३३॥ प्रश्न करणकूं कोउ नर, आवत हिरदे धार ॥ पृछक नरनी दिशि तणो, निर्णय कहुं वि-चार ॥ ३४ ॥ सनमुख डाबी ऊर्ध्व दिशि, रही प्रश्न करे कोय ॥ चंद्र-जोग हे ता समे, तो कारिज सिद्धि

होय ॥ ३५ ॥ नीचे पीठे जीमणो, जो कोइ पूछे आय ॥ जानुजोग स्वर होय तो,तस कारज हो जाय॥३६॥ पूछे दक्षिण भुज रही, सूरज स्वरमें वात ॥ लगन वार तिथि जोग मिली, सिद्ध कार्य अवदात ॥ ३७ ॥ वाम भाग रही जो कहे,प्रश्न तणो परसंग ॥ शशि स्वर जो पूरण हुवे, तो तस काज अभंग ॥ ३८ ॥ पूछे दक्षण कर रही, शशि स्वरमें जो कोय ॥ रवि तत्त्व तिथ वार विन, तस कारज नवि होय ॥ ३९ ॥ अधो पृष्ट पाछल रही, पृच्छकनो प-

रिमाण ॥ चंद चलत फल तेहनुं, पूर्व कथित पहिछाण ॥ ४० ॥ चलत सूर स्वर जीमणो, (रही) पूछे आवी जेर ॥ चंद्रजोग विन तेहनो, नवि कारिज विधि कोर ॥ ४१ ॥ सनमुख ऊर्ध्व दिशा रही, पूछे जो रवि मांहि ॥ चंद्रजोग विन तेहनुं, कारज सीजे नांहि ॥ ४२ ॥ लग्न वार तिथि तत्त्व पुन, रास जोग दिसि सोध ॥ कारजके अक्षर गिणे, होवे साचो बोध ॥ ४३ ॥ सम अक्षर ससिकूं भलो, विषम भानु परधान ॥ तिनकी संख्या करनकूं, कहुं एस अनु-

मान ॥ ४४ ॥ चार आठ द्वादश युगल, षट दश चवदे जाण ॥ पोरूशथी ससि योग ए, महा शुरू पहिछाण ॥ ४५ ॥ एक तीन सर सात नव, एकादश अरु तेर ॥ तिथि संयम पचवीस पुन, रविजोग इम हेर ॥ ४६ ॥ लोककाज सहु परिहरे, धरे सुनिश्चल ध्यान ॥ श्रवण मनन चिंतन करत, लहत स्वरोदय-ज्ञान ॥ ४७ ॥ अथवा प्राणायाम जे, साधे चित्त लगाय ॥ ताकूं पहेली भूमिका, सिद्ध स्वरोदय थाय॥४८॥ प्राणायाम विचार तो. है अति अ-

गम अपार ॥ नेद दोय तस जाणीये, निश्चे अरु व्यवहार ॥ ४ए ॥ निह-चेथी निज रूपमें, निज परिणति होय लीन ॥ श्रेणीगत ज्यों संचरे, तों जोगी परवीण ॥ ५० ॥ उपसम क्षपक कही जुगल, श्रेणी प्रवचन मांहि ॥ तिणको काल स्वनाव वस, साधन हिवणा नांहि ॥ ५१ ॥ अ-हनिसि ध्यान अन्यासथी, मन-थिरता जो होय ॥ तो अनुनव लव आज फुन, पावे विरला कोय ॥५२॥ निज अनुनव लवलेशथी, कठिण कर्म होय नाश ॥ अल्प नवे नवि ते

लहे, अविचलपुरको वास ॥५३॥ व्यवहारे ये ध्यानको, न्नेद नवि कहीवाय ॥ जिन्न जिन्न कहीतां थका, ग्रंथ अधिक हो जाय ॥ ५४ ॥ नाम मात्र अब कहत हूं, याको किंचित जाव ॥ अधिक जवि तुम जाणजो, गुरुगम तास लखाव ॥५५ अष्ट न्नेद हे जोगके, पंचम प्राणायाम ॥ ताके सप्त प्रकार हे, सकल सिद्धके धाम ॥ ५६ ॥ रेचक पूरक तीसरो, कुंजक न्नेद पिठाण ॥ शांतिक समता एकता, लीन जाव चित्त आण ॥ ५७ ॥ पूरक पवन गहत

सुधी, कुंनक थिरता तास ॥ रेचक बाहिर संचरे, शांतिक ज्योति प्रकाश ॥५७॥ समता ध्येय स्वरूपमें, तिहां सूक्ष्म उपयोग ॥ गहे एकता गुण विषे, लीन नाव निज जोग ॥ ५९ ॥ लीन दशा व्यवहारथी, होत समाधि रूप ॥ निहचेथी चेतन ए, होवे शिवपुर नूप ॥ ६० ॥ स्वासाकूं अति थिर करे, ताणे नहीं लिगार ॥ मूल बंध दृढ लायके, करे बीज संचार ॥ ६१ ॥ वायु पांच शरीरमें, प्राण समान अपान ॥ उदान वायु चोथो कह्यो, पांचम अ-

निल अव्यान ॥६२॥ प्राण हिये पुन सर्वगत, तनमें रहत समान ॥ आधार चक्रगति जाणीये, तीजो वायु अपान ॥ ६३ ॥ उदान वासह कंठमें, संधिगति ए अव्यान ॥ पंच वायके बीज पुन, पंच हिये इम आन ॥६४॥ ऐं पैं रौं व्लौं क्रौं सुधी, पंच बीज परधान ॥ इनके गर्भित भेद-को, कहत न आवे मान ॥ ६५ ॥ पंच बीज संचारथी, अनहद धुन जे होय ॥ निर्गम भेद धुनि तणो, जोगीश्वर लहे कोय ॥ ६६ ॥ वरण मात्र इण बीजके,कमल कमल थित

जाण ॥ भिन्न भिन्न गुण तेहनो,
शास्त्र थकी मन आण ॥ ६७॥ स-
कल सिद्धि इणमें वसे, सर्व लब्धि
इण मांहि ॥ केतिक आज हूं संपजे,
केतिक तो अब नांहि ॥ ६८ ॥
वरण नाभीमें संचरे, सोहं शब्द
उद्योत ॥ अजपजाप ते जाणीये,
अनुभव भाव उद्योत ॥ ६९ ॥
नाभीथी हिये संचरे, तिहां रंकार
प्रकाश ॥ मनथिरता तामे हुवे, अ-
शुभ संकल्प होय नाश ॥ ७० ॥
सुरतओर लावे गगन, तिरवेणी कर
वास ॥ तिहां अनहद धुनि उप-

जे, थिर योति परकास ॥ ३१ ॥

॥ चोपाइ छंद ॥

॥ अनहद अधिष्टाय जे देव, थिर चेत्त देख करे तसु सेव ॥ ऋद्धि अनेक प्रकार देखावे, अद्भुत रूप दृष्ट तस आवे ॥ ३२ ॥ ऋद्धि देख नवि चित्त चलावे, ज्ञान समाधि ते नर पावे ॥ वेदभेद समाधि कहीये, गुरुगम लक्ष तेहनो लहीये ॥ ३३ ॥ नाभी पास हे कुंडलि नाभी, वंकनाल हे तास पिठारी ॥ दशम द्वारका मारग सोइ, उलट वाट पावे नहीं कोइ ॥ ३४ ॥ मुद्रा पंच वंध त्रिय

जाणो, आसण चोरासी पहिचा-
णो ॥ तामे आसण युगपरधान,
मूलासण पद्मासण जाण ॥ ७५ ॥
अस्तविस्त वायु संचरे, कारण वि-
शेषे षट कर्म करे ॥ नेती धोती न-
वली कही, भेद चतुर्थ त्राटक फुनि
लही ॥ ७६ ॥ वस्ती पंचम भेद पि-
छानो, रस कपाल भाती मन आनो॥
किंचित आरंभ लख इण मांहि, जै-
नधरममें करीये नांहि ॥ ७७ ॥ त्रा-
टक नव लीये दोय भेद, करत मिटे
सहु तनका खेद ॥ रोग नवि होवे
तन मांहि, आलस ऊंघ अधिक

होये नांहि ॥ ७७ ॥ दृष्टि अष्ट योगनी कही, ध्यान करत ते अंतर लही॥ कीजे ए सालंबन ध्यान, निरालंबता प्रगटत ज्ञान ॥ ७ए ॥ मित्रा तारा डूजी जाण, बला चतुर्थी दीप्रा मन आण ॥ थिरा दृष्टि कांता फुनि लहीये, प्रज्ञा परा अष्टम दृग कहीये ॥ ७० ॥ सघन अवन दिन रयणी कही, ताका अनुनव यासें लही ॥ निरुपाधि एकांते स्यान, तिहां होय ए आतम ध्यान ॥ ७१ ॥ अल्प आहार निद्रा वश करे, हित सनेह जगथी परिहरे ॥ लोकलाज

नवि करे विगार, एक प्रीत प्रभुथी चित्त धार ॥ ७२ ॥ आशा एक मोक्षकी होय, बीजी दुविधा नवि चित्त कोय ॥ ध्यान जोग्य जाणो ते जीव, जे भवदुःखथी डरत सदीव ॥ ७३ ॥ परनिंदा मुखथी नवि करे, स्वनिंदा सुणी शमता धरे ॥ करे सहु विकथा परिहार, रोके कर्म आगमन धार ॥ ७४ ॥ हरख शोक हिरिदे नवि आने, शत्रु मित्र बराबर जाने ॥ परआशा तजी रहे निराश, तेहथी होय ध्यान अभ्यास ॥ ७५ ॥ ध्यान अभ्यासी जो नर होय, ताकूं दुःख

उपजे नवि कोय ॥ इंद्रादिक पूजे तस पाय, ऋद्धि सिद्धि प्रगटे घट आय ॥ ७६ ॥ पुष्पमाल सम विषधर तास, मृगपति मृग सम होवे जास ॥ पावक होय पाणी ततकाल, सुरभिसुत सदृश जस व्याल ॥ ७७ ॥ सायर गोपदनी परे होय, अटवी विकट नगर तस जोय ॥ रिपु लहे मित्राइ भाव, शस्त्र तणो नवि लागे घाव ॥ ७८ ॥ कमलपत्र करवाल वखानो, हालाहल अमृत करी जानो ॥ दुष्ट जीव आवे नहीं पास, जो आवे तो लहे सुवास

॥ ८९ ॥ जो विवहार ध्यान इम ध्यावे, इंद्रादिक पदवी ते पावे ॥ निहचे ध्यान लहे जब कोय, ताकुं अवश्य सिद्धपद होय ॥ ९० ॥ सुख अनंत विलसे तिहुं काल, तोडी अष्ट कर्मकी जाल ॥ एसा ध्यान धरो नितमेव, चिदानंद लही गुरुगम भेव ॥९१॥ ध्यान चार भगवंत बताये, ते मेरे मन अधिके भाये ॥ रूपस्थ पदस्थ पिंडस्थ कहीजे, रूपातीत साध शिव लीजे ॥ ९२ ॥ रहत विकार स्वरूप निहारी, ताकी संगत मनसा धारी ॥ निज गुण

अंस लहे जव कोय, प्रथम भेद तिण अवसर होय ॥ ए३ ॥ तीर्थंकर पदवी परधान, गुण अनंतको जाणी थान ॥ गुण विचार निज गुण जे लहे, ध्यान पदस्थ सुगुरु इम कहे ॥ ए४ ॥ भेदज्ञान अंतरगत धारे, स्वपरपरिणति भिन्न विचारे ॥ सकति विचारी शांतता पावे, ते पिंमस्थ ध्यान कहीवावे ॥ एए ॥ रूप रेख जामे नवि कोइ, अष्टगुणां करी शिवपद सोइ ॥ ताकूं ध्यावत तिहां समावे. रूपातीत ध्यान सो पावे ॥ ए६ ॥ प्रा-

णायाम ध्यान जे कहीये, ते पिंमस्थ भेद नवि लहीये ॥ए७॥ मन अरु पवन समागम जानो, पवन साध मन निज घर आनो ॥ अहनिसि अधिका प्रेम लगावे, जोगानल घट मांहि जगावे ॥ अल्प आहार आसन दृढ करे, नयण थकी निद्रा परिहरे ॥ ए८ ॥ काया जीव भिन्न करी जाणे, कनक उपलनी पर पहिचाणे ॥ भेद दृष्टि राखे घट मांहि, मन शंका आणे कबु नांहि ॥ एए ॥ कारज रूप कथे सुखवाणी, अधिक नांहि बोले हित जाणी ॥

स्वपन रूप जाणे संसार, तन धन जोवन लखे असार ॥ १०० ॥ श्री-जिनवाणी हिये दृढ राखे, शुक्ल ध्यान अनुत्तवरस चाखे ॥ विरला ते जोगी जग मांहि, ताकूं रोग सोग भय नांहि ॥ १०१ ॥ तेजक्रांति तनमें अति वाधे, जे निश्चल चित्त ध्यान आराधे ॥ अल्प आहार तन होय निरोग, दिनदिन वधे अधिक उपयोग ॥ १०२ ॥ नासा अग्रभाग दृग धरी, अथवा दोउ संपुट करी ॥ हिये कमल नवपद जे ध्यावे, ताकुं सहज ध्यानगति आवे ॥ १०३ ॥

माया बीज प्रणव धरी आद, वरण बीज गुण जाणे नाद ॥ चढता वरण करे थिर स्वास, लख धुर नाद तणो परकास ॥ १०४ ॥ प्राणायाम ध्यान विस्तार, कहेतां सुरगुरु न लहे पार ॥ तातें नाम मात्र ए कह्यां, गुरु मुख जाण अधिक जे रह्या ॥ १०५ ॥ प्राणायाम भूमि दश जाणो, प्रथम स्वरोदय तिहां पिछाणो ॥ स्वर परकाश प्रथम जे जाणे, पंच तत्त्व फुनि तिहां पिछाणे ॥ १०६ ॥ कहूं अधिक अब तास विचार, सुणो अधिक चित्त-

थिरता धार ॥ स्वरमें तत्त्व लखे ज-
व कोइ, ताकूं सिद्ध स्वरोदय होइ १०७

॥ अडिल छंद ॥

॥ दोय स्वरोमें पांच तत्त्व पहि-
चाणीये, वर्ण मान आकार काल
फल जाणीये॥इण विध तत्त्व लखाव
साधता जे लहे, साची विसवावीस
बात नर ते कहे ॥ १०८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पृथ्वी जल पावक अनिल,
पंचम तत नभ जान ॥ पृथ्वी जल
स्वामी शशि, अपर तीनको भान ॥
॥ १०९ ॥ पीत श्वेत रातो वरण,

हरित श्याम पुन जान ॥ पंच वर्ण ये पांचके, अनुक्रमथी पहिछान ॥ ११० ॥ पृथिवी सनमुख संचरै, करपल्लव षट दोय ॥ समचतुरंस आकार तस, स्वर संगममें होय ॥ ॥१११॥ अधोभाग जल चलत है, षोडश आंगुल मान ॥ वर्तुल है आकार तस, चंद्र सरीखो जान ॥ ॥ ११२ ॥ चारांगुल पावक चलै, ऊर्ध्व दिशा स्वर मांह ॥ त्रिकोण आकार तस, बाल रवि सम आह ॥ ११३ ॥ वायु तिर्छा चलत है, अष्टांगुल नितमेव ॥ ध्वजा रूप आ-

कार तस, जाणो इणविध जेव ॥ ११४॥ नासासंपुटमें चले, वाहिर नेवि परकास ॥ सुन्न अहे आकार तस, स्वर युग चलत आकाश॥११५॥ प्रथम पच्चास पल दूसरो, चालीश त्रीजो त्रीश॥ वीशरु दश पल चलत है, तत स्वरमें निशदीश ॥११६॥ घरी अढाइ पांच तत, एक एक स्वर मांहि ॥ अहनिशि इणविध चलत है, यामें संशय नांहि ॥११७॥ पंच तत्त्व स्वरमें लखे, भिन्न भिन्न जव कोय ॥ कालसमयका ज्ञान तस, वरस दिवसका होय ॥११८॥

प्रथम मेष संक्रांतिको, व्है प्रवेश जब आय॥ तबही तत्व विचारीये, स्वासा थिर ठहराय॥११९॥ कोबा स्वरमें होय ज्यो, मही तणो परकास॥ उत्तम जोग वखाणीये, नीको फल है तास॥१२०॥ परजाकुं सुख व्हे घणो, समो होय श्रीकार॥ धान होय महीयल घणो, चोपदकुं अति चार॥१२१॥ ईत भीत उपजे नहीं, जनवृद्धि पण थाय॥ इत्यादिक बहु श्रेष्ठ फल सुख, पामे अति राय॥१२२॥ चलत तत्व जल तिण समे, शशि

स्वरमें जो आय ॥ ताको फल अंब फिर हूं, सुणजो चित्त लगाय ॥ १२३ ॥ मेघवृष्टि होवे घणी, उपजे अन्न अपार॥ सुखी होय परजा सहु, चिदानंद चित्त धार ॥ १२४ ॥ धर्मबुद्धि सहुकूं रहे, पुण्य दानथी प्रीत॥ आनंद मंगल उपजे, नृप चाले शुभ नीत ॥ १२५ ॥ शशि स्वरमें ये जाणीये, तत्वयुगल सुखकार॥ तत्त्व तीन आगल रहे, तिनको कहूं विचार ॥१२६ ॥ लगे मेष संक्रांत तब, प्रथम घडी स्वर जोय ॥ जैसो स्वरमें तत्त्व व्है, तैसोही फल

होय ॥ १२७ ॥ जो स्वरमें पावक
चले, अल्प वृष्टि तो होय ॥ रो
दोख होवे सही, काल कहे सहु
कोय ॥१२८॥ देशभंग परजा दुःखी,
अग्नि तत्त्व परकाश ॥ दोउं स्वरमें
होय तो, अशुभ अहे फल तास
॥ १२९ ॥ वायु तत्त्व स्वरमें चलत,
नृप विग्रह कछु थाय ॥ अल्प मेघ
वरसे मही, मध्यम वर्ष कहाय
॥ १३० ॥ अर्द्धासा अन्न नीपजे,
खड थोडासा होय ॥ अनिल त
त्वका इणी परे, मन मांहि फल जोय
॥ १३१ ॥ स्वर मांहि जो प्रथमही;

वहे तत्त्व आकाश ॥ तो ते काल पिछाणीये, होय न पूरा घास ॥ १३२॥ इण विधथी ए जाणीये, तत्त्व स्वरनके मांहि ॥ फल मनमें पण धारीये, यामें संशय नांहि ॥ १३३ ॥ मधु मास सित प्रतिपदा, कर तस लगन विचार ॥ चलत तत्त्व स्वर तिण समे, ताको वर्ण निहार ॥१३४॥ प्रातसमे ससि स्वर विषे, मही तत्त्व जो होय ॥ ता ते सर्व विचारीये, सुखदायक अति होय ॥१३५॥ घनवृष्टि होवे घणी, समो होय श्रीकार ॥ राजा परजाके हिये, हर्ष

संतोष विचार ॥ १३६ ॥ ईत भीत उपजे नहीं, महोटा भय नवि कोय ॥ चिदानंद इम चंदमें, क्षिति तत्व फल जोय ॥ १३७ ॥ चिदानंद जो चंदमें, प्रात उदक परवेश ॥ तो ते समो सुभिक्ष अति, वर्षा देश वि-देश ॥१३८॥ शांति पुष्टि होवे घणी, धर्म तणो अति राग ॥ भविक हिये अति उपजे, दान अर्थ धन त्याग ॥१३९॥ जल धरणी दोउं वहे, दि-वसपति घर आय ॥ प्रातकाल तो ते वरस, मध्यम समो कहेवाय ॥ १४० ॥ तीन तत्व अब शेष जे, स्वरमें

तास विचार ॥ मध्यम निज कह्यो तिको, पूर्वकथित चित्त धार ॥१४१॥ राजभंग परजा दुःखी, जो नभ वहे स्वर मांहि ॥ पडे काल बहु देशमें, यामें संशय नांहि ॥ १४२ ॥ स्वर सूरजमें अग्निको, होय प्राण परवेश ॥ रोग सोगथी जन बहु, पावे अधिक कलेश ॥ १४३ ॥ काल पडे महीयल विषे, राजा चित्त नवि चैन ॥ सूरजमें पावक चलत, एम ॥ १४४ ॥ नृप वि कहु ंल्प वृष्टि पुन , चिदानंद

जोय ॥ १४५ ॥ सुखमन स्वर जो ता दिवस, प्रातसमय जो होय ॥ जो- वणहार मरे सही, छत्र भंग पुन जोय ॥ १४६ ॥ कहूक थोडो उपजे, कहूक तेहुं नांहि ॥ सुखमन स्वरको इन परे, फल जाणो मन मांहि ॥ ॥ १४७ ॥ दुविध रीत जोवण तणी, कही वरषनी एम ॥ त्रीजी आगल जाणजो, धरी हियके अति प्रेम ॥ १४८ ॥ माघ मास सित सप्तमी, फुनि वैशाखी त्रीज ॥ प्रातसमयको जोइये, वरष दिवसको बीज ॥१४९॥ निशापतिके गेहमें, जल धरणी

परवेश ॥ करे आय जो तिण समे, तो सुख देश विदेश ॥ १५० ॥ अपर तत्त्व निज नाथ घर, वहे अधम फल जाण ॥ उदक मही जो जानु घर, तो मध्यम चित्त आण ॥ ॥ १५१ ॥ एक अशुभ फुन एक शुभ, तीनुंमें जो होय॥ सिद्ध होय फल तेहनुं, मध्यम निहचे जोय ॥ १५२ ॥ सहु परीक्षा जावमें, मेष जाव वलवान ॥ ता दिन तत्त्व निहारिके, फल हिरदे दृढ आन ॥१५३॥ अव जे जोवणहार नर, तेहनो कहूं विचार ॥ आप लखी अपणे हिये,

अपणो करहुं विचार ॥ १५४ ॥ चैत्र सुदि एकम दिने, शशि स्वर जो नवि होय ॥ तो तेहने तिहुं मासमें, अति उद्वेगसुं जोय ॥ १५५ ॥ मधु मास सित बीज दिन, चले न जो स्वर चंद ॥ गमन होय परदेशमें, तिहां उपजे दुःखदंद ॥ १५६ ॥ चैत्र मास सित त्रीजकूं, चंद चले नहि आय ॥ तो ताके तनमें सही, पित्तज्वरादिक थाय ॥ १५७ ॥ मरण होय नव मासमें, जो स्वर जाणे तास ॥ मधु मास सित चोथकूं, जो नवि चंद्र प्रकाश ॥१५८॥ निशापति

स्वर चैत सुदि, पांचमको नवि होय ॥ राजदंरू महोटा हूवे, संशय इहां न कोय ॥ १५ए ॥ चैत्र सुदि ठठके दिवस, चंद्र चले नहि जास॥ वरष दिवस भीतर सही, विणसे बंधव तास ॥ १६० ॥ चले न चंदा चैत सित, सतम दिन लवलेश ॥ तस नर केरी गेहिनी, जावे जमके देश ॥ १६१ ॥ तिथि अष्टमी चैत्र सुदि, चंद विना जो जाय ॥ तो पीमा अति उपजे, भाग्य योग सुख थाय ॥ १६२ ॥ तिथि अष्टमनो चैत सित, दीनौ

ससि शुभ तत्त्वमें, तो उलटुं मन जाय ॥ १६३ ॥ तत्त्व वाणमें कहत हूं, प्रश्न तणो परसंग ॥ इणविध हिये विचारके, कथीये वचन अभंग ॥ १६४ ॥ जल धरणीके जोगमें, प्रश्न करे जे कोय ॥ निशानाथ पूरण वहत, तस कारज सिद्ध होय ॥ १६५ ॥ अनिल अगन आकाशको, जोग ससि स्वर मांहि ॥ होय प्रश्न करता थकां, तो कारज सिद्ध नांहि ॥ १६६ ॥ क्षिति उदक थिर काजकूं उडुगणपति स्वर मांहि ॥ तत्त्वयुगल ए जाणीये, चर कारजकूं नांहि ॥

१६७ ॥ वायु अगनि नज्ञ तीन ए, चर काजे परधान ॥ तत्त्व हियेमें जानीये, उदय होत स्वर ज्ञान ॥ १६८ ॥ रोगी केरो प्रश्न नर, जो कोउ पूछे आय ॥ ताकूं स्वास विचारके, इम उत्तर कहेवाय ॥ १६९ ॥ ससि स्वरमें धरणी चलत, पूछे तस दिस मांहि ॥ तासे निहचे करी कहो, रोगी विणसे नांहि ॥ १७० ॥ चंद्र वंध सूरज चलत, पूछे सावी ठेर ॥ रोगीको परसंग तो, जीवे नहीं विधि कोर ॥ १७१ ॥ पूरण स्वरथुं आयके, पूछे खाली मांहि ॥ तो

रोगीकूं जाणजो, साता होवे नांहि ॥ १७२ ॥ खाली स्वरसु आयके, वहते स्वरमें वात ॥जो कोउ रोगीनी कहैं, तो तस नाहिंज घात ॥ १७३ ॥ वाय पित्त कफ तीन ये, जयो पिंडत्रय जोग ॥ समथी सुख होय देहमें, विषम हूआ होय रोग ॥ १७४ ॥ वाय चोराशी पिंडमें, पित्त पचीश प्रकार ॥ कफ त्रिय जेद वखाणीये, द्वादश सत चित्त धार ॥ १७५ ॥ वायु निवास उदर विषे, स्वामी है तस सूर ॥ फुनि शत धमणी मांहि ते, रहत सदा जरपूर ॥१७६॥ खंध

मांहि पुन जाणजो, पित्त तणो नित वास ॥ जठरागनिमें संचरत, दिवानाथ पति तास ॥ १७७ ॥ नाभिकमलथी वाम दिस, करपल्लव त्रय जाण ॥ नाकि युगल हे कफ तणी, रही हैयेमें आण ॥ १७८ ॥ ससि स्वामि तस जाणजो, ये विवहारी वात ॥ निश्चेथी लख एकमें, तीनुं आय समात ॥ १७९ ॥ अपणी अपणी रुत विषे, वाय पित्त कफ तीन ॥ जोर जणावत देहमें, तस उपचार प्रवीन ॥ १८० ॥ वैद्यकग्रंथनथी लख्यो, तिणका अधिक प्र-

कार ॥ मूल तीनसुं होत है, रोग अने-
क प्रकार ॥ १८१ ॥ अपणे अमल
विसारके, वीजाने घर जाय ॥
रोग कफादिथी जुइमे, सन्निपात
कहीवाय ॥ १८२ ॥ रोमरोममां
जगत गुरु, पोणा बे बे रोग ॥ नाख्या
प्रवचन मांहि ते, अशुन्न उदय तस
नोग ॥ १८३ ॥ प्रश्न करे रोगी तणो,
जैसा स्वरमें आय ॥ स्वर फुनि तत्त्व
विचारके, तैसा रोग कहाय ॥१८४॥
अपणे स्वरमें आपणा, तत्त्व चले
तिण वार ॥ तो रोगीना पिंममां,
रोग एक थिर धार ॥ १८५ ॥ स्वरमें

दूजा स्वर तणो, प्रश्न करत तत होय ॥ मिश्रतावथी रोगनी, उत्पत्ति तस जोय ॥ १७६ ॥ पूरण स्वरथी आयके, पूछे पूरण मांहि ॥ सकल काज संसारके, पूरण संशय नांहि ॥ १७७ ॥ खाली स्वरमें आयके, पूछे खाली मांहि ॥ जे जे काज दुजी तणो, ते ते होवे नांहि ॥१७८॥ खाली स्वरमें आयके, पूछे वहते मांहि ॥ सिद्ध काज कहो तेहनो, यामें दुविधा नांहि ॥ १७९ ॥ पूछे पूरण स्वर तजी, खाली स्वरकी ओर ॥ प्रश्न तास निफल हौ, सफल नहीं

विधि कोय ॥ १ए० ॥ गुरुवार वायु भलो, शनि दिवस आकाश ॥ चलत तत्त्व इम कायमें, पूरव रोगें विनाश ॥ १ए१ ॥ प्रातसमय बुध-वारकूं, क्षिति तत्त्व शुभ जाण ॥ सोमवार जल शुक्रकूं, तेज हियेमें आण ॥ १ए२ ॥ ससि सूर स्वरमां अबै, करण जोग जे काम ॥ तस विचार शुभ कहत हुं, सुखदायक अभिराम ॥ १ए३ ॥ देवल श्रीजि-नराजनो, नवो निपावे कोय ॥ खात महूरत अवसरे, चंद्रजोग तिहां जोय ॥ १ए४ ॥ अमी स्रवत

ससि जोगमें, अरुणद्युति थिर होय ॥ करत प्रतिष्ठा बिंबनी, अति प्र-नाव तस जोय ॥१ए५॥ तखत मूल-नायक प्रजु, बैठावे तिण वार ॥ जिनघर कलश चढावतां, चंद्रजोग सुखकार ॥ १ए६ ॥ पोषधशाल नि-पावतां, दानशाल घर हाट ॥ महेल दूर्ग गढ कोटनो, रचित सुघट धु-रघाट ॥ १ए७ ॥ संघमाल आरो-पतां, करतां तीरथ दान ॥ दीक्षा मंत्र बतावतां, चंद्रजोग परधान ॥१ए८॥ घर नवीन पुर नगरमें,करता प्रथम प्रवेश ॥ वस्त्र आजूषण संग्र-

हत, लेत हजारे देश॥ १ए९ ॥ जोगाभ्यास करत शुद्धि, औषध भैषज मीत ॥ खेती बाग लगावता, करता नृपथी प्रीत ॥२००॥ राजतिलक आरोपता, करता गढ परवेश ॥ चंदजोगमें नृपति, विलसे सुख सुदेश ॥२०१॥ राज्य सिंघासन पग धरत, करत और थिर काज ॥ चंद्रयोग शुभ जाणजो, चिदानंद महाराज ॥ २०२ ॥

॥ चोपाइ ॥

॥ मठ देवल अरु गुफा बनावे, रतन धातुना घाट घमावे ॥ इत्या-

दिक सहु जगमें काम, चंद्योगमें अति अभिराम ॥ २०३ ॥ चंद्रजोग थिर काज प्रधान, कह्यो तास किंचित अनुमान ॥ स्वर सूरजमें करीये जेह, सुणो श्रवण दे कारज तेह ॥ २०४ ॥ विद्या पढे ध्यान जो साधे, मंत्र साध अरु देव आराधे ॥ अरजी हाकमके कर देवे, अरिविजयका वीडा लेवे ॥ २०५ ॥ विष अरु भूत उतारण जावे, रोगीकूं जो दवा खिलावे ॥ विघन हरण शांतिजल नाखे, जो उपाय कष्टीकूं चाखे ॥२०६ गज वाजी वाहन हथियार, लेवे

रिपु विजय चित्त धार ॥ खान पान कीजे असनान, दीजे नारीकूं ऋतु-दान ॥२०७॥ नया चोपड़ा लिखै लिखावे, वणिज करत कछु वृद्धि थावे ॥ ज्ञानजोगमें ए सहु काज, करत लहे सुखचेन समाज॥२०८॥ भूपति दक्षण स्वरमें कोइ, युद्ध करण जावे सुण सोइ ॥ रणसंग्राम मांहि जस पावे, जीत अरि पाछो घर आवे ॥ २०९ ॥ सायरमें जे पोत चलावे, वंछित द्वीप वेग ते पावे ॥वेरी भवन गवन पग दीजे, ज्ञानजोगमें तो जस लीजे ॥२१०॥

ऊंट महीप गो संग्रह करतां, साट वदत सरिता जल तरतां ॥ करज-द्रव्य कांहूकुं देतां, ज्ञानजोग शुन अथवा लेतां ॥ २११ ॥ इत्यादिक चर कारज जे ते, ज्ञानजोगमें क-रीये ते ते ॥ लाभालाभ विचारी कहीये, नहिंतर मनमें जाणी रहीये ॥ २१२ ॥ विवाहदान इत्यादिक काज, सौम्य चंद्रजोगे सुखसाज ॥ क्रूर काममें सूर प्रधान, पूर्वक-थित मनमें ते जान ॥ २१३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चंद्रजोग थिर काजकूं, उत्तम

महा वखाण ॥ जानजोग चर काजमें, श्रेष्ठ अधिक मन आण ॥ १४ ॥ सुखमन चलत न कीजीये, चर थिर कारज कोय ॥ करत काम सुखमन विषे, अवस हाणि कछु होय ॥ ॥१५॥ जवनप्रतिष्ठादिक सहू, वरजित सुखमन मांहि॥ गामांतर जावा जणी, पगला जरीये नांहि ॥ १६ ॥ दुःख दोहग पीका लहे, चित्तमें रहे कलेश ॥ चिदानंद सुखमन चलत, जो कोइ जाय विदेश ॥ १७ ॥ कारजकी हानि हुवे, अथवा लागे वार ॥ अथवा मित्र मिले

नहीं, सुखमन नाव विचार ॥ १८ ॥
श्वास शीघ्र अति पालटे, हीन चंद्र
हीन सूर ॥ ते सुखमन स्वर जा-
णजो, नाज अनिल नरपूर ॥ १९ ॥
सुखमन स्वर संचारमें, कीजे आतम
ध्यान ॥ हिरदगति अहिनक्की,
लहीये अनुजवज्ञान ॥ २० ॥ आ-
तमतत्त्व विचारणा, उदासीनता
नाव ॥ नावत स्वर सुखमन विषे,
होवे ध्यान जमाव ॥२१॥ चर थिर
तीजीए कही, हिलनावकी वात ॥
इण अनुक्रमथी औरजी, कारज
सकल कहात ॥ २२ ॥ तत्त्वस्वरूप

नीहारवा,कहूं उपाय विचार॥नाव शुनाशुन तेहने, अधिक हियामें धार ॥ २३ ॥ श्रवण अंगुठ मध्यमां, नासापुट पर थाप ॥ नयण तर्जनीथी ढकी,भृकुटीमां लख आप ॥ २४ ॥ पडे बिंदु भृकुटी विषे, पीत श्वेत अरु लाल ॥ नील श्याम जैसी हुवे, तैसी तिहां निहाल ॥ २५ ॥ जैसा वर्ण नीहारीये, तैसा तत्त्वविचार ॥ श्वास गति स्वरमें लखो, इच्छा फुन आकार ॥ २६ ॥ प्रथम वायु स्वरमें वहे, दुतीय अगनि वखाण ॥ त्रीजी भू चोथुं

सलिल, नभ पंचम मन आण ॥ २७॥ वाम दिशाथी स्वर उठी, वहे पिंगला मांहि ॥ ताकूं संक्रम कहत है, यामें संशय नांहि ॥ २८ ॥ तत्त्व उदक भू शुभ कहे, तेज मध्य फलदाय ॥ हाण मृत्यु दायक सदा, मारुत व्योम कहाय ॥ २९॥ ऊर्ध्व अधो अरु मध्य पुट, तीर्छा संक्रमरूप ॥ पंच तत्त्व यह वहत है, जाणो भेद अनूप ॥ ३० ॥ ऊर्ध्व मृत्यु शांति अधो, उच्चाटण तिरिछाय ॥ मध्य स्तंभन नभ विषे, वरजित सकल उपाय ॥ ३१ ॥ जंघ

मही नाभी अनिल, तेज खंध जल पाय ॥ मस्तकमें नभ जाणजो, दिने थान बताय ॥ ३२ ॥ थिर काजे परधान भू, चरमें सलिल विचार ॥ पावक सम कारज विषे, वायु उच्चाटण धार ॥ ३३ ॥ व्योम चलत कारज सहू, करीये नांहि मीत ॥ ध्यान जोग अभ्यासकी, धारो यामें रीत ॥ ३४ ॥ पश्चिम दक्षिण जल मही, उत्तर तेज प्रधान ॥ पूरव वायु वखाणजो, नभ कहीये थिर थान ॥ ३५ ॥ सिद्धि पृथ्वी जल विषे, मृत्यु अगन

विचार ॥ क्षयकारी वायु सिद्धि, दुःज निष्फल चित्त धार ॥ ३६ ॥ धीरजथी पृथ्वी विषे, जल सिद्धि ततकाल ॥ हाण अगनि वायु थकी, काज निःफल नत्त जाल ॥ ३७ ॥ संग्रामादि कृत्यमें, प्रबल हूतासन होय, चंद्र सूर संग्रह विषे, फलदायक अति जोय ॥ ३८ ॥ जीवित जय धन लात्त फुन, मित्र अर्थ शुभ रूप ॥ गमनागमन विचारमें, जानो मही अनूप ॥ ३९ ॥ कलह शोक दुःख नय तथा, मरण कहू उतपात ॥ संक्रमनात्त समीरमें,

फलदृष्टि विख्यात ॥ ४० ॥ राजनाश
पावक चलत, पृछक नरनी हाण
दुर्भिक्ष होय महीयल विषे, रोगा-
दिक फुनि जाण ॥ ४१ ॥ दुर्भिक्ष
घोर विग्रह सुधी, देशभंग भय जा-
ण ॥ चलत वायु आकाश तत, चौ-
पद हानि वखाण ॥ ४२ ॥ महेंद्र
वरुण जुग जोगमें, घनवृष्टि अति
होय ॥ राजवृद्धि परजा सुखी, समो
श्रेष्ठ अति होइ ॥ ४३ ॥ मही उद-
क दोउं विषे, चंद्रथान थिति रूप ॥
चिदानंद फल तेहनुं, जाणो परम
अनूप ॥ ४४ ॥ मही मूल चिंता

लखो, जीव वाय जल धार ॥ तेज तु चिंता लखो, शुन्न आकाश विचार ॥ ४५ ॥ वहु पाद पृथ्वी विषे, जुगपद जल अरु वाय॥ अग्नि चतुःपद नन्न उदे, विगत चरण कहेवाय ॥ ४६ ॥ रवि राहु कुज तीसरो, शनि चतुर्थ वखाण ॥ पंच तत्त्वके न्नान घर, स्वामी अनुक्रम जाण ॥ ४७ ॥ बुध पृथ्वी जलको ससि, शुक्र अगनि पति मीत ॥ वायु गुरु सुर चंदमें, तत्त्व स्वास इण रीत ॥ ४७ ॥ स्वामी अपणो आपणो, अपणे घरके मांहि॥शुन्न ... ८।'

जाणजो, यामें संशय नांहि ॥ ४९ ॥ जय तुष्टि पुष्टि रति, क्रीडा हास्य कहाय ॥ एम अवस्था चंदनी, षट जल ऋमें थाय ॥ ५० ॥ ज्वर निद्रा परियास पुन, कंप चतुर्थी पिछा-ण ॥ वेद अवस्था चंदनी, वायु अग-निमें जाण ॥ ५१ ॥ प्रथम गतायु दू-सरी, मृत्यु नत्रके संग ॥ कही अवस्था चंदनी, द्वादश एम अ-नंग ॥ ५२ ॥ मधुर कषायल तिक्त पुन, खाटा रस कहवाय ॥ नत्र अव्यक्त रस पंचके, अनुक्रम दीये बताय ॥ ५३ ॥ जैसा रस आस्वाद-

नी, होय प्रीत मन मांहि ॥ तैसा तत्त्व पिछाणजो, शंका करजो नांहि ॥ ५४ ॥ श्रवण धनिष्ठा रोहिणी, उत्राषाढ अभीच ॥ ज्येष्ठा अनुराधा सपत, श्रेष्ठ मह्वीके वीच ॥ ५५ ॥ मूल उत्तरा भाद्रपद, रेवती आर्द्रा जाण ॥ पूर्वाषाढ अरु शतभिषा, आश्लेषा जल वाण ॥५६॥ मघा पूरवा फाल्गुनी, पूर्वभाद्रपद स्वात ॥ कृत्तिका भरणी पुष्य ए, सस अग्नि विख्यात ॥५७॥ हस्त विशाखा मृगसिरा, पूनर्वसु चित्राय ॥ उत्राफाल्गुण अश्विनी, अनिलधाम सु-

खदाय ॥ ५८ ॥ नत्नथी पव-यत्न
थकी, पावक तत परकास ॥ पाव-
कथी पाणी लखो, मही लखो इनि
तास ॥ ५९ ॥ क्रोधादिक अगनि
उदे; इच्छा वायु मझार ॥ क्षांत्या-
दिक गुण मन विषे, जल तू मांहि
विचार ॥ ६० ॥ गुदाधार धरणी त-
णो, लिंग उदकनो जाण ॥ तेज धार
चक्षु सुधी, वायु घ्राण वखाण ॥ ६१ ॥
श्रवण द्वार नत्नना कह्या, शब्दा-
दिक आहार ॥ चिदानंद इण पांच-
का, जाणो उर निहार ॥ ६२ ॥ चंद
चलत नवि चालीये, शुक्र करणकुं

मीत ॥ चलत चंदमें तेहना, शत्रुनी होय जीत ॥ ६३ ॥ दिवसपति स्वर मांहि जे, युद्ध करणकूं जाय ॥ विजय लहे संग्राममें, शत्रुसेन पलाय ॥ ६४ ॥ अपना स्वर दक्षण चले, शत्रुना पण तेह ॥ जीत लहे संग्राममें, प्रथम चढे नर जेह ॥ ६५ ॥ ससि चलत कौ नृपति, मत जावो रण मांहि ॥ खेतजीत अरियण लहे, यामें संशय नांहि ॥ ६६ ॥ सुखमन स्वर संग्राममें, भला कहे नवि कोय ॥ जावे सुखमन स्वर विषे, शीस कटावे सोय ॥ ६७ ॥ दूर देश संग्राममें,

जाता शशि परधान ॥ निकट युद्धमें जाणजो, जयकारी स्वर जान ॥ ६७ ॥ सनमुख ऊर्ध्व दिशा रही, युद्ध प्रश्न करे कोय ॥ सम अक्षर ससि स्वर हूआ, जीत तेहनी होय ॥ ६९ ॥ पूछे दक्षण मध्यथी, दूत प्रश्न करे जेह ॥ विषमाक्षर जानु हुआ, खेत विजय लहे तेह ॥७०॥ युद्धयुगलनी पूर्ण दिशि, रही प्रश्न करे कोय ॥ प्रथम नाम जस उच्चरे, जीत लहे नर सोय ॥ ७१ ॥ रिक्त पक्षमें आयके, मिथुन युद्ध परसंग ॥ पूछत पहेला हारीये, दूजा रहत

अचंग ॥ ७२ ॥ करत युरू परियाण वा, रिक्त मांहे लहे हार ॥ अल्पबली नृपति थकी, महाबली चित्त धार ॥ ७३ ॥ महा कटक सनमुख चले, थोमासा दल जोम ॥ पूरण तत्त्र प्रकाशमे, जीत लहे विधि कोम ॥ ७४ ॥ मही तत्त्वमें युरू वा, करे प्रश्न परियाण ॥ दोउं दल सम उतरे, इम निहचे करी जाण ॥ ७५ ॥ करे प्रश्न परियाण वा, वरुण तत्त्वके मांहि ॥ होय मेल तिहां परस्परी, युरू जाणजो नांहि ॥ ७६ ॥ मही उदक होय एककूं,

दूजाकूं जो नांहि॥ मही वरुण तिहां जीतीये, यामें संशय नांहि ॥ ७७॥ प्रश्न करे अथवा लडे, अथवा करे प्रयाण ॥ वहत हुताशन तेहनी, रणमें होवे हाण ॥ ७८ ॥ प्रश्न प्रयाण युद्ध जे करे, अनिल तत्त्वमें कोय ॥ निश्चेथी संग्राममें, भागे पहेला सोय ॥ ७९ ॥ व्योम वहत कोउ नृपति, करे प्रश्न परियाण ॥ अथवा युद्ध तिण अवसरे, करतो मरण तस जाण ॥८०॥ चंद्र चलत नृपति मरण, सम जोधा रवि

मांहि ॥ वायु वहत जंजे कटक, संशय करजो नांहि ॥ ७१ ॥ नामधेय सदृश कही, पूछे पूरण मांहि॥ प्रथम नाम जस उच्चरे, तस जय संशय नांहि ॥ ७२ ॥ रणमें जे घायल हूवे, तेहनी पूछे वात ॥ चिदानंद ते पुरुपकुं, उत्तर एम कहात ॥ ७३ ॥ आपणी दिशथी आयके, पूछे पूरण मांहि ॥ जास नाम कहे तास सुण, घाव जाणजो नांहि ॥ ७४ ॥ पूछे खाली स्वर विपे, घायलका परसंग ॥ जस पूछे तस रण विपे, घाव कहीजे अंग ॥ ७५ ॥

पृथ्वी उदर बताइये, जल चलता पग जाण ॥ पावक उर हिरदै विषे, वायु जंघा वखाण ॥ ८६ ॥ घाव शीसमें जाणजो, चलत तत्त्व आकाश ॥ स्वरमें तत्त्व विचारके, पृछककूं इम भाष ॥ ८७ ॥ पूरण प्राण प्रवाहमें, निज तत घर स्वर होय ॥ प्रबल जोग आवी मल्या, सुखे विजय लहे सोय ॥ ८८ ॥ आपणे स्वर जल तत्त्व है, शत्रुकूं नहि होय ॥ रिपु मरण निज हाथथी, जीत आपणी होय ॥ ८९ ॥ गर्भ तणा परसंग अब, सुणजो चित्त

लगाय ॥ स्वर विचार तासुं कहो, जो कोइ पूछे आय ॥ ८० ॥ क्लीव कन्यका सुत जनम, गर्भ पतन वा धार ॥ दीर्घ अल्प आयु तणा, जाणो एम विचार ॥ ८१ ॥ चंद्र चलत पूछे कोउ, पूरण दिशिमें आय ॥ गर्भवतीना गर्भमें, तो कन्या कहीवाय ॥ ८२ ॥ दिवसपति पूरण चलत, पूछे पूरण मांहि ॥ पुत्र पेटमें जाणजो, यामें संशय नांहि ॥ ८३ ॥ स्वर सुखमनमें आयके, पूछे गर्भ विचार ॥ नारी केरी कूखमें, गर्भ सक धार ॥ ८४ ॥ जान चल

कोत, वाकुं चंदा होय ॥ पुत्र जनम तो जाणजो, पण जीवे नहि सोय ॥ ९५ ॥ दिवसपति संचारमें, करें प्रश्न कोइ आय ॥ स्वर सूरज वाकुं हुआ, सुखदायक सुत थाय ॥ ९६ ॥ करे प्रश्न ससि स्वर विषे, वाकुं जो रवि होय ॥ होय सुता जीवे नहीं, कहो एम तस जोय ॥ ९७ ॥ चंद चलत आवी कहे, वाकुं चंद उद्योत ॥ कन्या निश्चे तेहने, दीर्घ स्थिति धर होत ॥ ९८ ॥ चलत मही सुत जाणजो, प्रश्न करत तिण वार ॥ राजमान सुखीया घणा, रूपे देवकुमार

॥ ॥ उदक तत्त्वमें आयके, करे प्रश्न जो कोय ॥ सुत सुखीया धनवंत तस, षटरस भोगी होय ॥ ३००॥ तत्त्व युगल जे जान घर, चलत पुत्र पहिठाण ॥ निसानाथ पर होय तो, कन्या हिरिदे आण ॥ ३०१ ॥ पूछत पावक तत्त्वमें, गर्भ-पतन तस होय ॥ जनमे तो जीवे नहीं, विगत पुण्य नर सोय ॥ ३०२ ॥ प्रश्न प्रभंजन तत्त्वमें, करतां छाया होय ॥ अथवा । वज्ञ विचारजो, गले गर्भमें सोय ॥ ३०३ ॥ पूछत नभ परकासमें, गर्भ नपुंसक जाण॥

चलत चंद कन्या कहो, वांझ नाव चित्त आण ॥३०४॥ शून्य युगल स्वर मांहि जो, गर्भ प्रश्न करे कोय॥ ताथी निश्चय करी कहो, कन्या उपजे दोय ॥ ३०५ ॥ चंद सूर दोउं चलत, चंद होय बलवान ॥ गर्भवतीना गर्भमें, सुता युगल पहिचान ॥ ३०६ ॥ चंद सूर दोउं चलत, रवि होय बलवान ॥ गर्भ-वतीना गर्भमें, पुत्र युगल पहिचान ॥ ३०७ ॥ जोण तत्त्वमें नारीकूं, रहे गर्भउधान ॥ अथवा जनमे तेहनो, फल अनुक्रम पहिचान

॥ ८ ॥ राज्यमान सुखीया महा, अथवा आपहू भूप ॥ रहे गर्भ धरणी चलत, होवे काम सरूप ॥९॥ धनवंता जोगी भ्रमर, चतुर विचक्षण तेह ॥ नीतवंत नारी गरभ, जल चलतां रहे जेह ॥ १० ॥ रहे गर्भ पावक चलत, अल्प उमर ते जाण ॥ जीवे तो दुःखीया हुवे, जन्मत माता हाण ॥ ११ ॥ दुःखी देश भ्रमण करे, विकल चित्त बुद्धिहीण ॥ रहे गर्भ जो वायुमें, इम जाणो परवीण ॥ १२ ॥ रहे गर्भ नभ चालतां, गर्भ तणी होय हाण

॥ जन्म तणो फल तत्त्वमें, इणहि अनुक्रम जाण ॥ १३ ॥ सुत पृथ्वी जलमें सुता,चलत प्रभंजन जाण॥ गर्भपतन पावक विषे, क्लीब गगन मन आण ॥ १४ ॥ अपना अपना स्वर विषे, है परधान विचार ॥ तत्त्व पक्ष अविलोकतां,ये बीजा निरधार ॥ १५ ॥ संक्रम अवसर आयके, प्रश्न करे जो कोय ॥ अथवा गर्भ रहे तदा, नाश अवश्य तस जोय ॥ १६ ॥ कह्या एम संक्षेपथी, गर्भ तणा अधिकार ॥ करत गमन परदेशमें, ताका कहुं विचार ॥१७॥

दक्षण पश्चिम दिशि विषे, चंद्रजोगमें जाय ॥ गमन रहे परदेशमें, सुख विलसे घर आय ॥ १८ ॥ पूरव उत्तर दिश विषे, भानुयोग बलवंत ॥ वंछितदायक कहत है, जे स्वर वेदी संत ॥ १९ ॥ विदिशि आपणी आपणी, अपणा घरमें लीन ॥ शुभ अरु इतर उभय विषे, समज लेहु परवीन ॥ २० ॥ चलत चंद नवि जाइये, पूरव उत्तर देश । गया न पाठा वाहुडे, अथवा लहे कलेश ॥२१॥ दक्षिण पश्चिम मत चलो, भानजोगमें कोय ॥

मरे न तोहु मरण सम, कष्ट अवस तस होय ॥ २२ ॥ दूर गमनमें सर्वदा, प्रबल जोग चित्त धार ॥ निकट पंथमे मध्यहु, जाणीजे सुखकार ॥२३॥ तत्त्व युगल शुन्न हे सुधी, करत प्रश्न परियान ॥ नाम तेहनुं चित्तमें, मही उदक मन आण ॥२४॥ ऊर्द्धं दिशापति चंद है, अधो दिशापति भान॥ क्रूर सोम्य कारज लखी, गमन भाव पहिचान ॥ २५ ॥ सुख मन चलत न कीजीये, शुद्धि प्रदेश प्रयाण ॥ जावे तो जीवे नहीं, कारज हानि पिछाण ॥ २६ ॥ तत्त्व

पंचके गमनमें, होत नंग पचवीश ॥ देशिक ग्रंथ करी सदा, वीतत जाए जोतीष ॥ २७ ॥ जे नर वसत विदेशमें, ताकी पूछे वात ॥ सुखी आहे अथवा दुःखी, ताथी ग्रम कहात ॥ २८ ॥ उदक तत्त्व जो होय तो, कहो तास धरी नेह ॥ सुखे सिऊ कारज करी, वेगो आवे तेह ॥ २ए॥ होय मही स्वरमें उदे, पूछे प्रश्न तिवार ॥ तो थिर थानिक भाखीये, दुःख नहि तास लगार ॥ ३० ॥ परवासी निज थान तजी, गया दूसरे धाम ॥ कछु चिंता चित्त

तेहने, चलत वायु कह्यो आम ॥३१॥
रोग पीड तनमें मह्या, पावक चल-
त वखाण ॥ नभ परकाश विदेशमें,
मरण अवश तस जाण ॥ ३२ ॥
सूर विषम ससि मांहि सम, पगलां
भरतां मीत ॥ वार तिथि इण विध
करत, होवे सुण तस रीत ॥ ३३॥
चंद चलत आगल धरी, डावा पग-
लां चार ॥ गमन करत तिण अव-
सरे, होय उदधिसुतवार ॥ ३४ ॥
स्वर सूरजमें जीमणा, पग आगल
धरे तीन ॥ चलत गमनमें होत है,
दिनकर वार प्रवीन ॥ ३५ ॥ स्वर

विचार कारज करत, सफल होय ततकाल ॥ तत्त्वज्ञान एहनां कह्यां, चमत्कार चित्त चाल ॥ ३६ ॥ तिथि वार नक्षत्र फुनि, करणयोग दिगशूल ॥ लक्षणपात होरा लीये, दग्धतिथि अरु मूल ॥ ३७ ॥ वृष्टिकाल कुलिका लगन, व्यतिपात स्वर जान॥ शुक्र अस्त अरु योगणी, यमघंटादिक जान ॥ ३८ ॥ इत्यादिक अपयोगको, यामें नहीं विचार ॥ ऐसो ए स्वरज्ञान नित, गुरुगमथी चित्त धार ॥ ३९ ॥ विगत उटक सर हंस विण, काया तरु विन पात ॥

देव रहित देवल यथा, चंद्र विना जिम रात ॥ ४० ॥ शोभित नवि तप विण मुनि, जिम तप सुमता टार ॥ तिम स्वरज्ञान विना गणक, शोभत नहिय लगार ॥ ४१ ॥ साधन विन स्वरज्ञानको, लहे न पूरण भेद ॥ चिदानंद गुरुगम विना, साधनहु तस खेद ॥ ४२ ॥ दक्षण स्वर भोजन करे, खावे पीये नीर ॥ खावी कर खट सूवतां, होय निरोग शरीर ॥ ४३ ॥ चलत चंद भोजन करत, अथवा नारी भोग ॥ जल पीवे सूरज विषे, तो तन नावे रोग ॥

४४ ॥ होय अपच भोजन करत, भोग करत बलहीण ॥ जल पीवत विपरीत इम, नेत्रादिक बल छीण ॥ ४५ ॥ पांच सात दिन इणी परे, चले रीत विपरीत ॥ होय पीरू तनमें कछु, जाणो धरी परतीत ॥४६॥ बहिरभूमि इंगला चिलत, पिंगलामें लघुनीत ॥ सयनदिसा सूरज विषे, करीये निसदिन मीत ॥४७॥ दिवस चंद स्वर संचरे, निशा चलावे सूर ॥ स्वर अभ्यास एसो करत, होय उमर भरपूर ॥ ४८ ॥ कथित भाव विपरीत जो, स्वर चाले

तन मांहि ॥ मरण निकट तस जाणजो, यामें संशय नांहि ॥ ४९ ॥ साढ़ युगल घटिका चले, चंद सूर स्वर वाय ॥ स्वास त्रयोदश सुखमना, जाणो चित्त लगाय ॥ ५० ॥ अष्ट पहर जो ज्ञानघर, चले निरंतर वाय ॥ तीन वरसका जीवणा, अधिक रहे न काय ॥ पाठांतरे ॥ यामें संशय नांहि ॥ ५१ ॥ चले निरंतर पिंगला, षोडश प्रहर प्रमान ॥ दोय वरस काया रहे, पीछे जावे प्रान ॥ ५२ ॥ ज्ञान निरंतर जो चले, रात दिवस दिन तीन ॥

वरस एक रही होय फुनि, दीरघ निद्रा लीन ॥ ५३ ॥ सोलस दिन जो जानघर, चले रात दिन स्वास ॥ चिदानंद निश्चल करी, जीवे ते इक मास ॥ ५४ ॥ मास एक अहनिसि वहे, सूरज स्वर तन मांहि ॥ दोय दिनाका जीवणा, यामें संशय नांहि ॥ ५५ ॥ चले निरंतर सुखमना, पांच घरी स्वर जाल ॥ पांच घरी सुखमन चलत, मरन होय ततकाल ॥ ५६ ॥ नहीं चंद सूरज नहीं, सुखमनभी नहीं होय ॥ मुखसेंती स्वासा चलत, चार

घडी थिति जोय ॥ ५७ ॥ दिनमें तोससि स्वर चले, निशा भान परकाश ॥ चिदानंद निश्चे अति, दीरघ आयु तास ॥ ५८ ॥ दिवा-नाथ होय दिवसमें, निसा निसा-कर स्वास ॥ चिदानंद षटमास तस, जीवितव्यनी आश ॥ ५९ ॥ चार आठ द्वादश दिवस, षोडश वीश विचार ॥ चलत चंद नितमेव इम, आयु दीरघ धार ॥ ६० ॥ रात दिवस जो तीन दिन, चले तत्त्व आकाश ॥ वरस दिवस काया-थिति, तिस उपरांत विनाश ॥६१॥

अहोराति दिन चार जो, चले तत्त्व आकाश ॥ थिरता तनकी जाण-जो, उत्कृष्टी षटमास ॥ ६२ ॥
अरुणधृती ध्रुववालिका, मातृमंडले जोय ॥ ए चारुं नवि लखी शके, आयु हीन नर कोय ॥ ६३ ॥
जिहां नासा अग्रे फुनि, भ्रूको मध्य विचार ॥ स्वर जोयण कीकी कही, अनुक्रमथी चित्त धार ॥६४॥
रसना ससि दिवस थिति, घ्राण हुतासन जान ॥ सतवालिका तारका, कालमान पहिचान ॥ ६५ ॥
लघुनीति वडिनीत पुन, वायुश्रव

सम काल ॥ होय दिवस दस तहन॥,
कायथिति बुध जाल ॥ ६६ ॥ गाज,
वीज दोउं नहीं, मेघ न खंचे धार॥
कागवास आवास तस, हंसागमन
विचार ॥६७॥ अधिक चंद्रसुख जा-
ल जस, चलत कायमें जान ॥
चंद सूर दोउं गया, मरन समो
पहिचान ॥ ६८ ॥ एक पक्ष विप-
रीत स्वर, चलत रोग तन थाय ॥
दोउं पक्ष सजान अरि, त्रीजे
मरण कहाय ॥ ६९ ॥ अग्निबाण
विंदू लखण, इत्यादिक बहु रीत ॥
काल परीक्षाकी सहु, जाणो गुरुगम

मीत ॥ ७० ॥ अवसर निकट मरण तणो, जब जाणे बुधलोय ॥ तब विशेष साधन करे, सावधान अति होय ॥ ७१ ॥ धर्म अर्थरु काम शिव, साधन जगमें चार ॥ व्यवहारे व्यवहार लख, निहचे निज गुण धार ॥७२॥ मूरख कुल आचारकूं, जाणत धरम सदीव ॥ वस्तुस्वभाव धरम सुधी, कहत अनुभवी जीव ॥ ७३ ॥ खेह खजानाकूं अरथ, कहत अज्ञानी जीह ॥ कहत द्रव्य दरसावकूं, अर्थ सुज्ञानी जीह ॥ ७४ ॥ दंपतिरति क्रीडा प्रत्ये,

कहत कुमति काम ॥ कामचित्त अभिलाखकूं, कहत सुमति गुण-धाम ॥ ७५ ॥ इंद्रलोककूं कहत शिव, जे आगमदृग हीण ॥ बंध-अभाव अचलगति, भाखत नित परवीन ॥ ७६ ॥ इम अध्यातमपद लखी, करत साधन जेह ॥ चिदानंद निज धर्मनो, अनुभव पावे तेह ॥ ७७ ॥ समयमात्र परमाद नित, धर्म-साधना मांहि ॥ अथिररूप संसार लिख, रे नर करीये नांहि ॥ ७८ ॥ छीजत छिन छिन आउखो, अंज-लि जल जिम मीत ॥ कालचक्र

माथे जमत, सोवत कहा अजीत ॥ ७७ ॥ तन धन जोवन कारिमा, संध्या राग समान ॥ सकल पदारथ जगतमें, सुपन रूप चित्त जान ॥ ८० ॥ मेरा मेरा मत करे, तेरा है नहीं कोय ॥ चिदानंद परिवारका, मेला है दिन दोय ॥८१॥ ऐसा जाव निहारी नित, कीजे ज्ञान विचार ॥ मिटे न ज्ञान विचार विन, अंतरजाव विकार ॥८२॥ ज्ञानरवि वैराग जस, हीरिदे चंद समान ॥ तास निकट कहो किम रहे, मिथ्या तम दुःखखान ॥ ८३ ॥

आप आपणे रूपमें, मगन ममत म-
लखोय ॥ रहे निरंतर समरसी,
तास बंध नवि कोय ॥ ७४ ॥ परप-
रणित परसंगशुं, उपजत विणसत
जीव ॥ मिथ्यो मोह परभावके, अ-
चल अबाधित शिव ॥ ७५ ॥ जैसे
कंचुक त्यागथी, विणसत नहीं भुयं-
ग ॥ देहत्यागथी जीव पण, तैसे
रहत अभंग ॥७६॥ जो उपजे सो तुं
नहीं, विणसत ते पण नांहि ॥ छोटा
महोटा तुं नहीं, समज देख दि-
ल मांहि ॥ ७७ ॥ वरणभांति तोमें
नहीं, जात पात कुल रेख ॥ राव

रंक तुं है नहीं,नहीं नहीं बाबा नहीं
?श॥ ७७॥ तुं सहुमें सहुथी सदा,
न्यारा अलख सरूप॥ अकथ कथा
तेरी महा, चिदानंद चिद्रूप ॥७ए॥
जनम मरण जिहां हैं नहीं, ईत
भीत लवलेश ॥ नहीं शिर आण
नरिंदकी, सोही अपणा देश ॥ए०॥
विनाशिक पुदगलदिशा, अविना-
शी तुं आप॥ आपा आप विचारतां,
मिटे पुण्य अरु पाप ॥ ए१ ॥ वेडी
लोह कनकमयी, पाप पुण्य युग
जाण ॥ दोउंथी न्यारा सदा,निज
सरूप पहिछाण ॥ ए२ ॥ जुगल

गति शुभ पुण्यथी, इतर पापथी जोय ॥ चारुं गति निवारीये, तो पंचमगति होय ॥ ८३ ॥ पंचमगति विण जीवकूं, सुख तिहुं लोक मजार ॥ चिदानंद नवि जाणजो, ए महोटो निरधार ॥ ८४ ॥ इम विचार हीरिदे करत, ज्ञान ध्यान रस लीन ॥ निरविकल्प रस अनुभवी, विकल्पता होय छिन ॥ ८५ ॥ निरविकल्प उपयोगमें, होय समाधि रूप ॥ अचलज्योति जलके तिहां, दरस अनूप ॥ ८६ ॥ देख दरस अद्भुत महा, काल त्रास मिट जाय ॥

ज्ञानयोग उत्तम दिशा, सद्गुरु दीये बतायं ॥ ३९७ ॥ ज्ञानालंबन दृढ ग्रही, निरालंबता जाव ॥ चिदानंद नित आदरो, एहिज मोक्ष उपाव ॥ ३९८ ॥ थोडासामें जाणजो, कारज रूप विचार ॥ कहत सुणत श्रुतज्ञानका, कबहुं न आवे पार॥३९९॥ मैं मेरा ए जीवकूं, बंधन महोटा जान ॥ मैं मेरा जाकुं नहीं, सोही मोक्ष पीछान ॥ ४०० ॥ मैं मेरा ए जावथी, वधे राग अरु रोष ॥ राग रोष जों लों हिये, तो लों मिटे न दोष ॥४०१॥ राग रूप जाकूं नहीं, ताकुं काल न

खाय ॥ काल जीत जगमें रहे, महो-
टा बिरुद धराय ॥ ४०२ ॥ चिदानंद
नित कीजीये, समरण श्वासोश्वास
॥ वृथा अमूलक जात है, श्वास ख-
बर नहीं तास ॥ ४०३ ॥ एक महू-
रत मांहि नर, स्वरमें श्वास विचार।
तिहुंतर अधिका सातसो, चाल
तीन हजार ॥ ४०४ ॥ एक दिवस
एक लख, सहस त्रयोदश धार ॥ ए
कशत नेवुं जात है, श्वासोश्वा
विचार ॥ ४०५ ॥ फुनि शत सह
पंचाणवे, लाखे तेत्रीश लाख ॥ ए
मासमें श्वास इम, एहवी प्रवच

शाख ॥ ४०६ ॥ चउसत अरुताली सहस, सत्त लक्ष स्वर मांहि ॥ चार कोड इक वरसमां, चालत शंसय नांहि ॥ ४०७ ॥ चार अवज कोडी सपत, पुनः अरुतालीस लाख ॥ बास सहस चालीस सुधी, सो वरसांमें राख ॥ ४०८ ॥ वर्त्तमान ए कालमें, उत्कृष्टी थिति जोय ॥ एक शत सोले वर्षनी, अधिक न जीवे कोय ॥ सोपक्रम आयु कह्यो ... मजार ॥ सोपक्रम ... घात अनेक विचार ॥ ... स्वरमें

चलत, अल्प उमर होय खीण ॥ अधिक स्वास चालत अधिक, हीण होत परवीण ॥ ४११ ॥ चार समाधि लीन नर, षट शुक्लध्यान मजार ॥ तुष्णा भाव बेठा जु दस, बोलत द्वादश धार ॥ ४१२ ॥ चालत सोलस सोवतां, चलत स्वास बावीश ॥ नारी भोगवतां जाण-जो, घटत स्वास छत्रीश ॥ ४१३ ॥ थोड़ी वेला मांहे जस, बहत अधिक स्वर श्वास ॥ आयु छीजे वस्तु घटे, रोग होय तन तास ॥ ४१४ ॥ अधिका नांहि बोलीये, नहीं रहीये

पक्क सोय॥ अति शीघ्र नव्हि चालीये, जो विवेक मन होय ॥ ४१५ ॥ जाण गति मन पवनकी, करे स्वास थिर रूप ॥ सोही प्राणायामको, पावे भेद अनूप ॥ ४१६ ॥ मेरु रुचक प्रदेशथी, सूरतडोरकु पोय ॥ कमलबंध छोड्या थकां, अजपा समरण होय ॥ ४१७ ॥ भमर गुफामें जायके, करे अनिलकूं पान ॥ पढे हुताशन ते हने, मिले द्रसम अ-थान ॥ ४१८ ॥ मारगमें जातां थकां, जे जे अचरिज थाय ॥ शांत दशामें वर्त्तता, मुखथी कही न जाय

॥ ४१९ ॥ वधे भावना चित्तमें, तन मन वचन अतीत ॥ तिम तिम सुखसायर तणी, उठे लहेर सुण मीत ॥ ४२० ॥ इन्द्र तणां सुख भोगतां, जे तृप्ति नवि थाय ॥ ते सुख सुण छिन एकमें, मिले ध्यानमें आय ॥ ४२१ ॥ ध्यान विना नवि लखी शके, मन कल्लोल स्वरूप ॥ लख्या विना किम उपशमे, येहू भेद अनूप ॥ ४२२ ॥ आसण पद्म लगायके, मूलबंध दृढ लाय ॥ मेरुदंड सीधा करे, भेद द्वारकों पाय ॥ ४२३ ॥ करे स्वास संचार तव,

विकलप भाव निवार ॥ जिम जिम थिरता ऊपजे, तिम तिम प्रेम वधार ॥ ४२४ ॥ प्रेम विना नवि पाइये, करता जतन अपार ॥ प्रेम प्रतीतें है निकट, चिदानंद चित्त धार ॥ ४२५ ॥ जो रचना तिहुं लोकमें, सो नर तनमें जान ॥ अनुभव विण होवे नहीं, अंतर तास पीछान ॥ ४२६ ॥ अंतरभाव विचारतां, मनवायु थिर थाय ॥ तिम तिम नाभी-कमलमें, पूरक थइ समाय ॥ ४४७

न समायके, ऊर्द्ध

१प जाप तिहां

विरला जाणे कोय ॥ ४२७ ॥ हंकारेस्वर उठत है, यह संकार समाय ॥ अजप जाप तिहां होत है, दीनो भेद बताय ॥ ४२ए ॥ जोगार्णवथी जाणजो, अधिक भाव चित्त लाय ॥ थाय ग्रंथ गोरव घणो, तातें कह्या न जाय ॥ ४३० ॥ देहि मध्य नाभी तणो, बहु रूप विस्तार ॥ पिंम स्वरूप निहारवा, जाणो तास विचार ॥ ४३१ ॥ वटशाखा जिम विस्तरी, नाभी कंदथी जेह ॥ भेद हुतासन जाणजो, पान निसा तिम तेह ॥ ४३२ ॥ अह भुजंगाकार

ते, वलय अढाइ तास ॥ जाण कुं-
रुलि नारुीतें, नाभी मांहे निवास
॥ ४३३ ॥ ऊर्ध्वगामिनी तेहथी,
नाड़ी दश तन मांहि ॥ अधोगामि-
नी दश सुगुण, लघु गणित कहु
नांहि ॥ ४३४ ॥ दो दो तिरछी
सहु मली, चतुर्विंशति जाण ॥ दश
वायु परवाहिका, दश प्रधान मन
आण ॥ ४३५ ॥ इंगला पिंगला
सुखमना, गांधारी कहीवाय ॥ हस्त
जीह पंचम सुधी, पुष्या देइ वताय
॥ ४३६ ॥ सप्तम जाण यशस्विनी,
अलंबुखा चित्त धार ॥ कहु संखणी

नाड़ीए, दशके नाम विचार ॥४३७॥ वामभाग है इंगला, पिंगला दक्ष-ण धार ॥ नासा पुटमें संचरत, सुख-मन मध्य निहार ॥ ४३८ ॥ वामचक्षु गंधारिका, दक्षिण नयन मजार ॥ हस्त जीह पुष्या सुधी, दक्षण कान प्रचार ॥ ४३९ ॥ वामे कान यशस्वि-नी, अलंबुखा मुखथान ॥ कहु लिंग अस्थान है, गुदा संखणी जाण ॥ ४४० ॥ दिग धमणी ये कायमें, प्राणाश्रित नित जाण ॥ वायु आश्रित जे रही, ते दश कहुं व-खाण ॥ ४४१ ॥ प्राणापान समान

जे, उध्यान अव्हान विचार ॥ ये प्रधान वायु धमण, पंच अनुक्रम धार ॥ ४४२ ॥ नाग कूर्म अरु किरकरा, देवदत्त कहीवाय ॥ नाभी धनंजय पांचमी, गवणि दीन बताय ॥ ४४३ ॥ हिया गुदा नाभी गला, तन संधि चित्त धार ॥ प्राणादिकनी इण परे, अनुक्रम वास विचार ॥ ४४४ ॥ नागवायु परकाशथी, प्रगट होय उद्गार ॥ कूर्मवायु नाभी उदे, उन्मीलन चित्त धार ॥ ४४५ ॥ छींक किरकराथी हुवे, देवदत्त परकाश ॥ जंभाये

आवे सुथिर, जाण धनंजय वास ॥ ४४६ ॥ इत्यादिक नाकी तणो, कह्यो अल्प विस्तार ॥ अधिक हियामें धारजो, गुरुगम तास विचार ॥ ४४७ ॥ जब स्वर बाहिरकूं चले, तब कोइ पूछे आय ॥ कोटी यतनथी तेहनो, कारज सिद्ध न थाय ॥ ४४८ ॥ स्वर भीतरकों चालतां, आवी पूछे कोय ॥ कोटी भांति करी तेहनां, कारज सिद्ध न थाय ॥ ४४९ ॥ पंच तत्त्व जो ये कहे, ते तो संज्ञारूप ॥ इन उपर जे मन ग्रह्यो, ते तो मिथ्या कूप ॥

४५० ॥ आमनायये हे सुधी, स्वर विचारके काज ॥ सम्यग् दृगथी जो ग्रहे, सोल हे सुख समाज ॥ ४५१ ॥ कह्यो एह संक्षेपथी, ग्रंथ स्वरोदय सार ॥ नणे गुणे ते जीवकुं, चिदानंद सुखकार ॥ ४५२ ॥ कृष्णासाढी दसमी दिन, शुक्रवार सुखकार ॥ निधि इंदु सर पूरणता, चिदानंद चित्त धार ॥ पाठांतर ॥ संवत्सर मुनि पूर्णता, नंद चंद चित्त धार ॥ १९०७ ॥ ४५३ ॥ इति श्रीकपूरचंदजी महाराजकृत स्वरोदयज्ञान संपूर्णम् ॥

श्रीसद्गुरुपरमात्मने नमः

अथ गद्यबद्ध स्वरोदयज्ञान प्रारंभः



विचार करवाथी जणाय छे के स्वरोदयनी विद्या एक मोटी पवित्र तथा आत्माना कल्याणनी करवावाली विद्या छे, केमके एनो अभ्यास करीने पूर्व कालना महानुभाव पोताना आत्मानुं कल्याण करी अविनाशी पदने प्राप्त करी चुक्या छे. जुवो, श्रीजिनेंद्रदेव अने श्रीगणधर महाराज ए विद्याना पूरा ज्ञाता हता

अर्थात् तेउ ए विद्यानां प्राणायाम आदि सर्व अंग अने उपांगने सारी रीते जाणता हता.जुवो के जैनागममां लख्युं छे के "श्रीमहावीर अरिहंत पछी चौद पूर्वधारी श्रीभद्रबाहु स्वामी ज्यारे थया हता तथा तेउ श्रीए सूक्ष्म प्राणायामना ध्याननुं परावर्तन कर्युं हतुं ते वखते समस्त संघे मलीने तेओने विज्ञप्ति करी हती" इत्यादि.

इतिहासनुं अवलोकन करवाथी जणाय छे के जैनाचार्य श्री हेमचंद्रसूरि तथा दादासाहेब श्री

जिनदत्तसूरि आदि अनेक जैनाचार्य ए विद्याना पूरेपूरा अभ्यासी हता. एथी त्यारा थोडा सैका पूर्वे आनंदघनजी महाराज, चिदानंदजी महाराज (कपूरचंदजी) तथा ज्ञानसारजी (नारायणजी) महाराज आदि मोटा मोटा आध्यात्मिक पुरुषो थइ गया छे के जेना करेला ग्रंथ परथी जणाय छे के आत्माना कल्याणने वास्ते पूर्वकालमां साधुलोको योगाभ्यासनी घणी सारी रीते क्रिया करता हता; परंतु हालमां कोइ कारणोथी ते व्यवहार

देखवामां आवतो नथी, केमके प्रथम तो अनेक कारणो वडे शरीरनी शक्ति घटी गइ छे, बीजुं धर्म तथा श्रद्धा पण घटवा लाग्यां छे, त्रीजुं साधुलोको पुस्तकादि परिग्रहने एकठा करवामां अने पोताना मान महिमामां साधुत्व (साधुपणुं) समजवा लाग्या छे, चोथुं लोभे पण कांइक कांइक पोतानो पंजो तेमना पर फेलाव्यो छे. कहो, हवे स्वरोदयज्ञाननो झगमो शीरीते सारो लागे! केमके आ काम तो निर्लोभीपणानुं तथा आत्मज्ञानीओनुं छे. वली आ

पण कही देवामां अतिशयोक्ति नहीं लागे के मुनिओना आत्मकल्याणनो मुख्य मार्ग आ छे. हवे बीजी वात ए छे के ते मुनिओ पोताना आत्मकल्याणनो मार्ग छोडीने अज्ञान संसारी जनो पर पोताना ढोंग द्वाराए पोतानुं साधुत्व प्रगट करे.

प्राणायाम योगनी दश भूमि छे, जेमां पहेलीज भूमि स्वरोदयज्ञानज छे. आ ज्ञानना अभ्यास द्वाराए मोटा मोटा गुप्त भेदोने मनुष्य सुगमतापूर्वक जाणी शके छे तथा घणा रोगोनी ओषधि पण करी शके छे. स्वरो-

दय पदनो शब्दार्थ श्वासनुं नीकालवुं थाय छे, एटला माटे आमां मात्र श्वासनीज ओलखाण करवामां आवे छे अने नाक पर हाथने राखतांज गुप्त वातोनुं रहस्य चित्रनी माफक सामुं आवे छे,अने अनेक सिद्धिओ उत्पन्न थाय छे; परंतु आ वात नक्की छे के आ विद्यानो अभ्यास सारी रीते गृहस्थोथी थइ शकतो नथी, केमके प्रथम तो आ विषय घणो कठिन छे अर्थात् आमां अनेक साधननी आवश्यकता होय छे. बीजुं आ विद्यानो जे ग्रंथ छे तेमां आ वि-

षयनुं अति कठिनतानी साथ घणा संक्षेपथी वर्णन करेलुं छे,जे सर्व साधारण मनुष्योथी समजवामां आवी शकतुं नथी. त्रीजुं आ विद्याना सारी रीते जाणवावाला तथा बीजाने सुगमतापूर्वक अभ्यास करावी शके एवा पुरुषो पण विरला स्थले जोवामां आवे छे.मात्र एज कारण छे के वर्तमान काले आ विद्याना अभ्यास करवानी इछावाला पुरुषो आमां प्रवृत्त थइने लाभने बदले अनेक हानिउं करी बेसे छे, अस्तु.

आ सर्वे वातोनो विचार करी तथा गृहस्थोने पण आ विद्याना कांइक अभ्यासनी आवश्यकता समजीने ते गृहस्थोथी सिद्ध थइ शकवा योग्य आ विद्यानुं कांइक विज्ञान अत्र लखवामां आवे छेः-आशा छे के गृहस्थो आ पुस्तकना आधारथी आ विद्याना अभ्यास द्वारा लाभ पामशे,केमके आ विद्यानो अभ्यास आभव अने परभव निःसंदेहपणे सुखनी प्राप्ति करावी शके छे.

स्वरोदयनुं स्वरूप तथा आवश्यक नियम.

नासिकानी अंदरथी जे श्वास नीकळे छे तेनुं नाम स्वर छे. तेने स्थिर चित्ते करी ओळखाण करी शुभाशुभ कार्यनो विचार करवो.

स्वरनो संबंध नाडीओथी छे. जो के शरीरमां नाडीओ घणी छे, परंतु तेमां २४ प्रधान छे. तेमां पण नव अति प्रधान छे. तेमां पण ३ ने घणीज प्रधान मानेली छे. तेनां नाम इंगला, पिंगला अने सुषुम्ना (सु-

खमना) छे. तेओनुं वर्णन आगल करवामां आवशे.

यादीमां राखवुं जोइए के ज्ञुनी वचमां जे चक्र छे त्यांथी श्वासनो प्रकाश थाय छे अने पाछली वंक्रनालमां थइने नाडीमां जइ स्थिर थाय छे.

दक्षिण अर्थात् जमणी वाजु जे श्वास नाक द्वाराए नीकले छे तेने इंगला नाडी के सूर्यस्वर कहे छे. वाम अर्थात् डावी वाजु जे श्वास नाक द्वाराए नीकले छे तेने पिंगला नाडी के चंद्रस्वर कहे छे.

अने बंने तरफ अर्थात् नासिकानी जमणी अने डावी एम बंने बाजु जे श्वास नीकळे तेने सुखमना नाडी कहे छे. आमां ज्यारे डाबी बाजु स्वर चाले त्यारे चंद्रनो उदय जाणवो अने ज्यारे जमणी बाजु स्वर चाले त्यारे सूर्यनो उदय जाणवो.

शीतल अने स्थिर कार्यों चंद्रस्वरमां करवां. जेवां केः— नवा मंदिरनुं बनाववुं, नवा मंदिरना पायानुं खोदाववुं, मूर्त्तिनी प्रतिष्ठा करवी, मूळ नायकनी मूर्त्तिने स्थापित करवी, मंदिर पर दंड तथा कलशनुं चडाववुं,

उपाश्रय, धर्मशाला, दानशाला, विद्याशाला, पुस्तकालय, घर, हाट, महेल अने गढनुं बनाववुं, संघनी मालानुं पहेराववुं, दान देवुं, दीक्षा देवी, यज्ञोपवित देवुं, नगरमां प्रवेश करवो, नवा मकानमां प्रवेश करवो, लुगडां अने घरेणांनुं कराववुं अथवा मौल्य (किमत) लेवुं, नवां घरेणां तथा लुगडांनुं पहेरवुं, पृथ्वी लेवी, औषधि बनाववी, खेती करवी, बाग बगीचा बनाववा, राजा विगेरे मोटा पुरुषोनी साथे मित्रता करवी, राज्यसिंहासन पर

बेसवुं, योगाभ्यास करवो इत्यादि. तात्पर्य ए छे के आ सर्व कार्यो चंद्रस्वरमां करवां जोइए, केमके चंद्रस्वरमां उपरनां कार्यो करवाथी सुखकारी थाय छे.

क्रूर अने चर कार्योने सूर्यस्वरमां करवां जोइए. जेवां केः—विद्या शिखवानो प्रारंभ करवो, ध्यानसाधवुं, मंत्र तथा देवनी आराधना करवी, राजा के हाकेमने अरज करवी, वकीलात अथवा मुखत्यारी लेवी, वैरीनी साथे मलतापणुं करवुं, सर्पनुं विष तथा भूतनुं उतारवुं, रोगीने दवा

देवी, विघ्ननी शांति करवी, कष्टवाली स्त्रीनो उपाय करवो, हाथी घोमा रथ विगेरे लेवां, भोजन करवुं, स्नान करवुं, स्त्रीने ऋतुदान देवुं, नवी वही लखवी, व्यापार करवो, राजाना शत्रुनी साथे लमाइ करवा जवुं, वहाण के आगबोटने समुद्रमां चलाववी, वैरीना मकानमां पग मूकवो, नदी विगेरेमां तरवुं, कोइने रुपीआ उधार देवा अथवा कोइनी पासेथी उधार लेवा इत्यादि. तात्पर्य ए छे के आ सर्व कार्यो सूर्य-

स्वरमां करवां, केमके तेम करवाथी सर्व कार्यो सिद्ध थाय छे.

जे समये चालता चालता एक स्वर बंध थइने बीजो स्वर थाय छे अर्थात् ज्यारे चंद्रस्वर बदलीने सूर्यस्वर थाय के सूर्यस्वर बदलीने चंद्रस्वर थाय ते वखते पांच सात मिनिट सुधी बंने स्वर चालवा लागे छे तेने सुखमना स्वर कहे छे. आ स्वरमां कोइ पण काम न करवुं, केमके आ स्वरमां कोइ पण काम करवाथी ते निष्फल निवडे छे, तथा तेथी क्लेश पण उत्पन्न थाय छे.

कृष्ण (वदि)पक्षनो स्वामी सूर्य छे अने शुक्ल(सुदि)पक्षनो स्वामी चंद्र छे.

कृष्णपक्षना पडवाना प्रातःकाले जो सूर्यस्वर चाले तो ते पण घणा आनंदनी साथे वीते.

शुक्लपक्षना पडवाना प्रातःकाले जो चंद्रस्वर चाले तो ते पक्ष पण सुख ने आनंदनी साथे वीते.

जो चंद्रनी तिथिमां(शुक्लपक्षना पडवाना प्रातःकाले) सूर्यस्वर चाले तो क्लेश अने पीडा थाय छे तथा कांइक द्रव्यनी पण हानि थाय छे.

सूर्यनी तिथिमां (कृष्णपक्षना पक्षवाना प्रातःकाळे)जो चंद्रस्वर चा- ले तो पीडा, क्लेश तथा राज तरफथी कोइ पण प्रकारनो भय थाय छे अने चित्तमां चंचलता उत्पन्न थाय छे.

जो कदाच्चित् बंने पक्षना(सुदि ने वदिमां) पडवाना सवारमां सुख- मना चाले तो ते महीनामां लाभ हानि समान थाय छे.

कृष्णपक्षनी १५ तिथिमां क्रमथी त्रण त्रण तिथिउ सूर्य अने चंद्रनी थाय छे. जेमके पक्वो,बीज, त्रीज ए त्रण तिथि सूर्यनी छे तथा चोथ, पां-

चम अने छठ ए ३ चंद्रनी तिथि छे. ए रीते अमावास्या सुधी बाकीनी तिथिउ विषे पण समजवुं. आमां ज्यारे पोतपोतानी तिथिए बंने स्वर (चंद्र अने सूर्य) चाले छे त्यारे ते कल्याणकारी थाय छे.

शुक्लपक्षनी १५ तिथिउमां क्रमथी त्रण त्रण तिथिउ चंद्र अने सूर्यनी थाय छे अर्थात् पडवो, बीज अने त्रीज ए त्रण तिथि चंद्रनी छे तथा चोथ, पांचम अने छठ ए त्रण तिथि सूर्यनी छे. ए रीते पूर्णिमा सुधी बाकीनी तिथिउ विषे पण समजवुं.

आमां पण आ बंने स्वर (चंद्र अने सूर्य) पोतपोतानी तिथिए प्रातःकाले चाले तो शुनकारी थाय ठे.

वृश्चिक, सिंह, वृष अने कुंन ए चार राशि चंद्रस्वरनी ठे, तथा ए राशिउ स्थिर कार्यमां श्रेष्ठ ठे.

कर्क, मकर, तुल अने मेष ए चार राशि सूर्यस्वरनी ठे अने चर कार्यमां श्रेष्ठ ठे.

मीन, मिथुन, धन अने कन्या ए चार राशि सुखमनानी बंने स्वना-ववाली ठे. आमां कार्यो करवाथी हानि थाय ठे.

उपरनी बारे राशिउथी बारे महीनाउ पण जाणी लेवा अर्थात् उपर लखेल जे संक्रांति लागे तेज चंद्र, सूर्य अने सुखमनाना महीना समजी लेवा.

जो कोइ पण मनुष्य पोताना कोइ पण कामने माटे प्रश्न पूछवा आवे अने आपणा सामो तथा डावी बाजु अथवा तो उंचे बेसीने प्रश्न करे अने ते समये जो आपणो चंद्रस्वर चालतो होय तो कहेवुं के तारुं कार्य सिद्ध थशे.

जो कोइ पण माणस आपणी नीचे,

पाछल के जमणी बाजु ऊभो रहीने प्रश्न करे अने ते समये आपणो सूर्यस्वर चालतो होय तो कहेवुं के तारुं काम सिद्ध थशे.

जो कोइ माणस जमणी बाजु ऊभो रहीने प्रश्न करे अने ते समये आपणो सूर्यस्वर चालतो होय तथा लग्न, वार* अने तिथिना सघला योग जो मली जाय तो कहेवुं के तारुं काम नक्की सिद्ध थशे.

---

* मंगल, शनि अने रवि ए त्रण वार सूर्यना छे तथा सोम, बुध, गुरु अने शुक्र ए चार वार चंद्रना छे.

जो कोइ प्रश्न करवावालो डेणी बाजु ऊभो रहीने के बेसीने प्रश्न करे अने ते समये आपणो चंद्रस्वर चालतो होय तो सूर्यनी तिथि अने वार विना ते शून्य दिशानो प्रश्न सिद्ध थइ शकतो नथी.

जो कोइ पाछल ऊभो रहीने प्रश्न करे अने ते समये आपणो चंद्रस्वर चालतो होय तो कही देवुं के कार्य सिद्ध नहीं थाय.

जो कोइ डावी बाजु ऊभो रहीने प्रश्न करे तथा ते समये आपणो सूर्यस्वर चालतो होय तो चंद्रयोग

स्वर विना ते कार्य सिद्ध नहीं थाय.

ए रीते जो कोइ आपणा सामे अथवा आपणाथी उंचो रहीने प्रश्न करे तथा ते समये आपणो सूर्यस्वर चालतो होय तो चंद्रस्वरना सर्व योगो मळ्या विना ते कार्य कदि सिद्ध नहीं थाय.

स्वरोमां पांचे तत्त्वोनी ओळखाण.

उपर कहेल चंद्र अने सूर्य ए बंने स्वरोमां पांच तत्व चाले छे अने ते तत्त्वोनां रंग, परिमाण, आकार

ने माप पण होय छे. ए वास्ते स्व-
दयविषयमां ए विषय पण जाणी
लेवो आवश्यक छे, केमके जे पुरुष
आ वातना विज्ञानने बरोबर जाणे
छे तेनी कहेली हकीकत अवश्य
मले छे. ए वास्ते आ विषयनुं
वर्णन जरूरनुं छे

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु अने
आकाश ए पांच तत्त्व छे. तेमां
पृथ्वी अने जलनो स्वामी चंद्र छे
अने अग्नि, वायु अने आकाश ए
त्रणनो स्वामी सूर्य छे.

पृथ्वीनो रंग पीलो, जलनो

रंग सफेद, अग्निनो रंग लाल, वायुनो रंग लीलो अने आकाशनो रंग कालो छे.

पृथ्वी तत्त्व सामुं चाले छे तथा नाकथी बार आंगल सुधी दूर जाय छे, अने तेना स्वरनी साथे समचोरस आकार थाय छे.

जल तत्त्व नीचे चाले छे तथा नाकथी सोल आंगल सुधी दूर जाय छे अने तेनो आकार चंद्रमा जेवो गोल छे.

अग्नि तत्त्व उपर चाले छे तथा

नाकथी चार आंगल सुधी दूर जाय छे अने तेनो त्रिकोण आकार छे.

वायु तत्त्व तीरछुं चाले छे तथा नाकथी आठ आंगल सुधी दूर जाय छे अने तेनो आकार ध्वजा जेवो छे.

आकाश तत्त्व नाकनी अंदरज चाले छे अर्थात् बंने स्वरोमां (सुखमना स्वरमां) चाले छे तथा एनो आकार कांइ नथी.

एक एक स्वर अढी घडी एटले एकेक कलाक चाले छे अने एमां आ पांचे तत्त्व रात दिवस आ रीते चाले छे. पृथ्वी ८ [illegible] र पल,

जल तत्त्व चालीश पल, अग्नि तत्त्व त्रीश पल, वायु तत्त्व वीश पल अने आकाश तत्त्व दश पल ए रीते त्रणे नाडीउं उपर कहेलां पांचे तत्त्वोनी साथे रात्रि दिवस प्रकाशित रहे छे.

पांचे तत्त्वोना ज्ञाननी रीति.

पांच रंगनी पांच गोली अने विचित्र रंगनी एक गोली बनावी ए छ गोलीउंने आपणी पासे राखवी अने ज्यारे मनमां इछा थाय के हाल कयुं तत्त्व छे त्यारे

आंख वींचीने एक गोली लइ लेवी. ते मनमां धारेल तथा गोलीनो रंग एकज जातनो नीकळे तो ते तत्त्व छे एम जाणवुं.

अथवा बीजा कोइ पुरुषने कह्यो के तमे कोइ रंग धारो. ज्यारे ते पोताना मनमां रंग धारे त्यारे आपणा नाकना स्वरमां तत्त्व जोइ लेवुं तथा आपणा तत्त्वनो विचार करीने ते पुरुषनो धारेल रंग बताववो के तमे अमुक रंग धारेल छे. जो तेणे धारेल रंग बरोबर मळी जाय तो जाणवुं के तत्त्व बरोबर मळे छे.

अथवा अरीसाने आपणा हो-ठनी पासे लगाडीने तेनी उपर बलपूर्वक नाकनो श्वास छोडवो. ए प्रमाणे करवाथी ते अरीसा पर जे आकारनुं चिह्न पडे ते आकार प्रथम लखेल तत्त्वोना आकार साथे मेलवो जोइए, अने जे तत्त्वना आकार साथे आ आकार मले ते तत्त्व ते वखते छे एम जाणवुं.

अथवा बे अंगुठाथी बे कान-ने, बंने तर्जनीथी बे आंखोने, बंने मध्यम आंगलीथी बे नाक-नां छिद्रो बंध करीने अने बंने

अनामिका तथा कनिष्ठिका आंगलीथी एटले चार आंगलीथी होठनी उपर नीचेथी खुब दबावीने गुरुनी बतावेली रीतिथी मनने त्रकुटीमां लइ जवुं. पछी ते जगोए जेवुं अने जे रंगनुं बिंदु मालूम पडे ते तत्त्व छे एम जाणवुं.

उपर कहेल रीतिथी थोडा दिवस सुधी साधन करवुं जोइए, केमके अभ्यासथी मनुष्यने तत्त्वोनुं ज्ञान थवा लागे छे अने तत्त्वोनुं ज्ञान थयाथी ते पुरुष शुभाशुभ कार्यो शीघ्रताथी जाणी शके छे.

स्वरमां प्रगट थयेल तत्त्वो द्वारा वर्षफल जाणवानी रीति.

हमणां कह्युं के पांचे तत्त्वोनुं ज्ञान थयाथी मनुष्य थवावालां शुभाशुभ कार्यों जाणी शके छे. ए नियमने अनुसारे पांचे तत्त्वो द्वारा वर्षमां थवावालुं शुभाशुभ फल पण जाणी शके छे. ते जाणवानी रीति नीचे मुजब छे.

जे वखते मेषनी संक्रांति लागे ते वखते श्वासने रोकीने स्वरमां कयुं तत्त्व चाले छे ते जोवुं जोइए. जो

चंद्रस्वरमां पृथ्वी तत्त्व चालतुं होय तो जाणी लेवुं के जमानो बहुज श्रेष्ठ थशे अर्थात् राजा अने प्रजा सुखी रहेशे, पशुओने माटे घास विगेरे घणुं थशे तथा रोग अने भय विगेरेनी शांति रहेशे इत्यादि.

जो ते वखते चंद्रस्वरमां जल तत्त्व चालतुं होय तो जाणवुं के वरसाद बहु थशे, पृथ्वी उपर अन्न घणुं थशे, प्रजा सुखी रहेशे, राजा अने प्रजा धर्मना मार्गे चालशे, पुण्य दान धर्मनी वृद्धि थशे, सर्व प्रकारे सुखसंपत्ति वधशे इत्यादि.

जो ते वखते सूर्यस्वरमां पृथ्वी अने जल तत्त्व चालतां होय तो जाणी लेवुं के कांइक ठीक फल थशे.

जो ते वखते बंने स्वरोमांथी गमे ते स्वरमां अग्नि तत्त्व चालतुं होय तो जाणवुं के वरसाद कमती थशे, रोग पीडा अधिक थशे, दुर्भिक्ष थशे, देश उजड थशे तथा प्रजा दुःखी थशे इत्यादि.

जो ते वखते गमे ते स्वरमां वायु तत्त्व चालतुं होय तो जाणवुं के राज्यमां कांइक विग्रह थशे, वरसाद थोडो थशे, जमानो साधारण

थशे तथा पशुओने माटे घासचारो पण थोडो थशे इत्यादि.

जो ते वखते आकाश तत्त्व चालतुं होय तो जाणी लेवुं के बहु भारी दुर्भिक्ष थशे तथा पशुओ माटे घास आदि कांइ पण नहीं थाय इत्यादि.

वर्षफलने जाणवानी बीजी रीति.

जो चैत्र सुदि परुवाने दिवसे प्रातःकाले चंद्रस्वरमां पृथ्वी तत्त्व चालतुं होय तो ए फल जाणवुं के वरसाद बहु थशे, जमानो श्रेष्ठ थशे, राजा अने प्रजामां सुखसंचार थशे

तथा कोइ प्रकारनो भय के उत्पात आ वर्षमां नहीं थाय इत्यादि.

जो ते दिवसे प्रातःकाले चंद्र-स्वरमां जल तत्त्व चालतुं होय तो ए फल जाणवुं के आ वर्ष अति श्रेष्ठ छे अर्थात् आ वर्षमां वरसाद, अन्न अने धर्मनी अतिशय वृद्धि थशे तथा सर्व प्रकारे आनंद रहेशे इत्यादि.

जो ते दिवसे प्रातःकाले सूर्य-स्वरमां पृथ्वी के जल तत्त्व चालतुं होय तो मध्यम फल जाणवुं.

जो ते दिवसे प्रातःकाले चंद्रस्वरमां के सूर्यस्वरमां अग्नि, वायु अने आकाश ए त्रण तत्त्व चालतां होय तो तेनुं फल आ प्रमाणे समजी लेवुं के पूर्वे मेष संक्रांतिना विषयमां लखाइ गयेलुं छे ते प्रमाणे जो सूर्यस्वरमां अग्नि तत्त्व चालतुं होय तो जाणवुं के प्रजामां रोग अने शोक थशे, दुर्भिक्ष पडशे तथा राजाना चित्तने आनंद नहीं रहे इत्यादि. जो सूर्यस्वरमां वायु तत्त्व चालतुं होय तो समजवुं के राज्यमां कांइक विग्रह थशे अने वृष्टि थोडी

थशे तथा जो सूर्यस्वरमां सुख-
मना चाले तो जाणवुं के पोतानुं मृ-
त्यु थशे अने छत्रभंग थशे तथा
कोइ कोइ ठेकाणे थोडुं अन्न अने
घास थशे अने काइ कोइ ठेका-
णे बिलकुल नहीं थाय इत्यादि.

वर्षफल जाणवानी त्रीजी रीति.

जो माघ सुदि सातम अथवा
अक्षय तृतीयाना प्रातःकाले चंद्र-
स्वरमां पृथ्वी के जल तत्त्व चाल-
तुं होय तो अगाउ कह्या मुजब
श्रेष्ठ फल छे एम जाणी लेवुं.

जो ते दिने प्रातःकाले अग्नि आदि त्रण तत्त्व चालतां होय तो पूर्वे कह्या मुजब निकृष्ट फल छे एम जाणी लेवुं.

जो ते दिने प्रातःकाले सूर्यस्वरमां पृथ्वी के जल तत्त्व चालतुं होय तो साधारण फल जाणी लेवुं.

जो ते दिने प्रातःकाले शेष त्रेण तत्त्व (अग्नि, वायु अने आकाश) चालतां होय तो तेनुं फल पण पूर्वे कह्या मुजब समजी लेवुं.

पांच तत्त्वोमां प्रश्ननो विचार.

जो चंद्रस्वरमां पृथ्वी तत्त्व के जल तत्त्व चालतुं होय अने ते समये जो कोइ कांइ पण कार्यने माटे प्रश्न करे तो कहेवुं के अवश्य कार्य सिद्ध थशे.

जो चंद्रस्वरमां अग्नि, वायु के आकाश तत्त्व चालतुं होय अने ते वखते कोइ पण माणस कांइ कार्यने लीधे प्रश्न करे तो कहेवुं के कार्य कोइ पण प्रकारे सिद्ध नहीं थाय.

याद राखवानुं एटलुं छे के चंद्रस्वरमां जल तत्त्व अने पृथ्वी तत्त्व स्थिर कार्यने माटे सारां छे, परंतु चर कार्यने माटे सारां नथी. तथा वायु, अग्नि अने आकाश ए त्रण तत्त्व चर कार्यने माटे सारां छे, परंतु ते पण सूर्यस्वरमां सारां छे, पण चंद्रस्वरमां सारां नथी.

जो कोइ पुरुष आवीने रोगीने विषे प्रश्न करे तथा ते समये चंद्रस्वरमां पृथ्वी तत्त्व के जल तत्त्व चालतुं होय अने प्रश्न पूछवावालो पण

चंद्रस्वरनी (डाबी) बाजुए बेठेल होय तो कहेवुं के रोगी नहीं मरे.

जो चंद्रस्वर बंध होय एटले सूर्यस्वर चालतो होय अने प्रश्न करवावालो डाबी बाजु बेठो होय तो कहेवुं के कोइ पण प्रकारे रोगी नहीं जीवे.

जो कोइ पुरुष खाली दिशामां (जे दिशानो स्वर चालतो होय ते दिशा छोडीने बीजी कोइ दिशामां) आवीने प्रश्न करे तो कहेवुं के रोगी नहीं बचे, पण जो खाली दिशाथी आवीने भरी दि-

शामां(जे दिशानो स्वर चालतो होय ते दिशामां) बेसीने प्रश्न करे तो कहेवुं के रोगीने सारुं थइ जशे.

जो प्रश्न करती वखते चंद्रस्वरमां पृथ्वी के जल तत्त्व चालतुं होय तो जाणवुं के रोगीना शरीरमां एक रोग छे. तथा जो प्रश्न करवाना वखते चंद्रस्वरमां अग्नि तत्त्व आदि कोइ तत्त्व चालतुं होय तो कहेवुं के रोगीना शरीरमां केटलाक रोग मिश्रित छे.

जो प्रश्न करती वखते सूर्यस्वरमां अग्नि, वायु के आकाश तत्त्व चालतुं होय तो जाणवुं के रोगीना शरीरमां

एक रोग छे, पण जो प्रश्न करती वखते सूर्यस्वरमां पृथ्वी के जल तत्त्व चालतुं होय तो जाणवुं के रोगीना शरीरमां केटलाक मिश्रित रोग छे.

याद राखवानुं के वायु अने पित्तनो स्वामी सूर्य छे, कफनो स्वामी चंद्र छे तथा सन्निपातनो स्वामी सुखमना छे.

जो कोइ पुरुष चालता स्वरनी तरफथी आवीने चालता स्वरनी बाजुए उभो रहीने के बेसीने प्रश्न करे तो कहेवुं के तमारुं काम अवश्य सिद्ध थशे.

जो कोइ पुरुष खाली स्वरनी तरफथी आवीने खाली स्वरनी बाजुए उभो रहीने के बेसीने प्रश्न करे तो कहेवुं के तमारुं कोइ पण काम सिद्ध नहीं थाय.

जो कोइ पुरुष खाली स्वरनी तरफथी आवीने चालता स्वरनी बाजुए उभो रहीने के बेसीने प्रश्न करे तो कहेवुं के तमारुं काम निःसंदेह सिद्ध थशे.

जो कोइ पुरुष चालता स्वरनी तरफथी आवीने खाली स्वरनी बाजुए उभो रहीने के बेसीने प्रश्न

करे तो कहेवुं के तमारुं काम सि-
द्ध नहीं थाय.

जो गुरुवारे वायु तत्त्व, शनिवारे आकाश तत्त्व, बुधवारे पृथ्वी तत्त्व, सोमवारे जल तत्त्व तथा शुक्रवारे अग्नि तत्त्व प्रातःकालमां चाले तो जाणी लेवुं के शरीरमां कोइ पहेलांनो रोग छे ते अवश्य मटशे.

आपणुं शरीर, कुटुंब अने धन आदिकना विचारनी रीति.

जो चैत्र सुदि पडवाने दिवसे प्रा-

तःकाले चंद्रस्वर न चालतो होय तो जाणवुं के त्रण महीनामां हृदयमां बहु चिंता अने क्लेश उत्पन्न थशे.

जो चैत्र सुदि बीजने दिवसे प्रातःकाले चंद्रस्वर न चालतो होय तो जाणी लेवुं के परदेशमां जवुं पडशे अने त्यां अधिक दुःख जोगववुं पडशे.

जो चैत्र सुदि त्रीजने दिवसे प्रातःकाले चंद्रस्वर न चालतो होय तो जाणवुं के शरीरमां गरमी, पि-

त्तज्वर तथा रक्तविकार आदि-
कनो रोग थशे.

जो चैत्र सुदि चोथने दिवसे
प्रातःकाले चंद्रस्वर न चालतो हो-
य तो जाणवुं के नव महीनामां मृ-
त्यु थशे.

जो चैत्र सुदि पांचमने दिवसे
प्रातःकाले चंद्रस्वर न चालतो
होय तो जाणी लेवुं के राज्यथी
कोइ प्रकारनी तकलीफ तथा दंडनी
प्राप्ति थशे.

जो चैत्र सुदि छठने दिवसे
प्रातःकाले चंद्रस्वर न चालतो हो-

य तो जाणवुं के आ वर्षमां जाड्नुं मृत्यु थशे.

जो चैत्र सुदि सातमने रोज प्रातःकाले चंद्रस्वर न चालतो होय तो जाणवुं के आ वर्षमां पोतानी स्त्री मरी जशे.

जो चैत्र सुदि आठमने दिवसे प्रातःकाले चंद्रस्वर न चालतो होय तो जाणवुं के आ वर्षमां कष्ट तथा पीरूा अधिक थशे अर्थात् जाग्य-योगेज सुखनी प्राप्ति थाय इत्यादि.

ए सिवाय जो उपर कहेल दि-वसोमां प्रातःकाले चंद्रस्वरमां पृथ्वी

तत्त्व अने जल तत्त्व आदि शुभ तत्त्व चालतां होय तो बीजुं पण श्रेष्ठ फल जाणी लेवुं.

स्वरो द्वारा परदेशगमननो विचार.

जे पुरुष चंद्रस्वरमां दक्षिण अने पश्चिम दिशामां परदेश जाय ते परदेशथी पाछो आवीने पोताना घरमां सुख भोगवे छे.

सूर्यस्वरमां पूर्व अने उत्तर दिशा तरफ परदेश जवुं ते शुभकारी छे.

चंद्रस्वरमां पूर्व अने उत्तर दि-
शा तरफ परदेश जवुं ते ठीक नथी.
सूर्यस्वरमां दक्षिण अने प-
श्चिम दिशा तरफ परदेश जवुं ते
ठीक नथी.

ऊर्ध्व दिशा चंद्रस्वरनी छे, ते
माटे चंद्रस्वरमां पर्वत आदि ऊर्ध्व
दिशामां जवुं सारुं छे.

पृथ्वीनी नीचेना भागनो स्वामी
सूर्य छे, ते माटे सूर्यस्वरमां पृथ्वीनी
नीचेना भागमां जवुं सारुं छे, परंतु
सुखमना स्वरमां त्यां जवुं ठीक नथी.

परदेशमां रहेल मनुष्यना विषयमां प्रश्न–विचार.

प्रश्न करती वखते जो स्वरमां जल तत्त्व चालतुं होय तो प्रश्न करनारने कहेवुं के ते (परदेशमां गयेल माणस) सर्व कार्यो सिद्ध करीने तुरत आवशे.

जो प्रश्न करती वखते स्वरमां पृथ्वी तत्त्व चालतुं होय तो प्रश्न करनारने कहेवुं के ते (परदेशमां गयेल माणस) ठेकाणे बेठेल छे अने तेने कोइ वातनी चिंता नथी.

जो प्रश्न करती वखते वायु तत्त्व चालतुं होय तो प्रश्न करनारने कहेवुं के ते (परदेशमां गयेल माणस) ते स्थलेथी बीजे स्थले गयो छे अने तेना हृदयमां चिंता उत्पन्न थइ रही छे.

जो प्रश्न करती वखते अग्नि तत्त्व चालतुं होय तो प्रश्न करनारने कहेवुं के तेना (परदेश गयेल माणसना) शरीरमां रोग छे.

जो प्रश्न करती वखते स्वरमां आकाश तत्त्व चालतुं होय तो प्रश्न करनारने कहेवुं के ते (परदेश गयेल) पुरुष मरी गयो.

स्वरो द्वारा गर्भ संबंधी प्रश्न-विचार.

जो चंद्रस्वर चालतो होय तथा ते बाजुथी आवीने कोइ प्रश्न करे के गर्भवती स्त्रीने पुत्र थशे के पुत्री थशे तो कहेवुं के पुत्री थशे.

जो सूर्यस्वर चालतो होय ने ते बाजुथी आवीने कोइ प्रश्न करे के गर्भवती स्त्रीने पुत्र थशे के पुत्री थशे तो कहेवुं के पुत्र थशे.

जो सुखमना स्वर चालती वखते कोइ आवीने प्रश्न करे के गर्भवती

स्त्रीने पुत्र थशे के पुत्री थशे तो
हेवुं के नपुंसक जन्मशे.

जो आपणो सूर्यस्वर चालतो
होय तथा ते बाजुथी आवीने कोइ
गर्भ विषे प्रश्न करे अने प्रश्न करना-
रनो चंद्रस्वर चालतो होय तो क-
हेवुं के पुत्र थशे, पण ते जीवशे नहीं.

जो आपणो तथा प्रश्न कर-
नार ए बंनेनो सूर्यस्वर चालतो
होय तो कहेवुं के पुत्र जन्मशे अने
ते चिरंजीवी थशे.

जो आपणो चंद्रस्वर चालतो
होय अने प्रश्न करनारनो सूर्यस्वर

चालतो होय तो कहेवुं के पुत्री थशे, पण ते जीवशे नहीं.

जो बन्नेनो (आपणो अने प्रश्न करनारनो) चंद्रस्वर चालतो होय तो कहेवुं के पुत्री थशे तथा ते दीर्घायुषी थशे.

जो सूर्यस्वरमां पृथ्वी तत्त्वमां तथा ते दिनने माटे कोइ गर्भ संबंधी प्रश्न होय तो कहेवुं के पुत्र थशे तथा ते रूपवान्, राज्यवान् अने सुखी थशे.

जो सूर्यस्वरमां जल तत्त्व चालतुं होय अने तेमां कोइ गर्भ

संबंधी प्रश्न करे तो कहेवुं के पुत्र थशे तथा ते सुखी, धनवान् अने ठ रसनो भोक्ता थशे.

जो गर्भ संबंधी प्रश्न करती वखते चंद्रस्वरमां पृथ्वी तत्त्व अने जल तत्त्व चालतां होय तो कहेवुं के पुत्री थशे तथा ते उपर लख्यां लक्षणोवाली थशे.

जो गर्भ संबंधी प्रश्न करती वखते चंद्रस्वरमां अग्नि तत्त्व चालतुं होय तो कहेवुं के गर्भ पडी जशे तथा जो संतति थशे तो ते जीवशे नहीं.

जो गर्भ संबंधी प्रश्न करती वखते चंद्रस्वरमां वायु तत्त्व चालतुं होय तो कहेवुं के कां तो पिंडाकृति थशे अथवा गर्भ गळी जशे.

जो गर्भ संबंधी प्रश्न करती वखते सूर्यस्वरमां आकाश तत्त्व चालतुं होय तो नपुंसकना तथा चंद्रस्वरमां आकाश तत्त्व चालतुं होय तो वंध्या जेवी पुत्रीनी उत्पत्ति कहेवी.

जो कोइ सुखमना स्वरमां गर्भनो प्रश्न करे तो कहेवुं के बे दीकरी जन्मशे.

जो कोइ वन्ने स्वर चालती वखते गर्भविषयक प्रश्न करे तथा ते समये जो चंद्रस्वर तेज चालतो होय तो कही देवुं के वे कन्या थशे तथा जो सूर्यस्वर तेज चालतो होय तो कही देवुं के वे पुत्र थशे.

बीजा आवश्यक विषयोनो विचार.

कोइ ठेकाणे जवानी वखते अथवा उंघमांथी उठीने बीछानाथी नीचे पग मूकती वखते जो चंद्रस्वर चालतो होय तथा चंद्रमानोज

वार होय तो पहेलां चार पगलां डाबी बाजुथी चालवुं जोइए.

जो सूर्यनो वार होय तथा सूर्यस्वर चालतो होय तो चालती वखते प्रथम त्रण पगलां दक्षिण पगथी चालवुं.

जे मनुष्य तत्त्वनी ओलखाण करी पोतानां सर्व काम करशे तेनां सर्व काम अवश्य सिद्ध थशे.

पश्चिम दिशा जल तत्त्वरूप छे, दक्षिण दिशा पृथ्वी तत्त्वरूप छे, उत्तर दिशा अग्नि तत्त्वरूप छे, पूर्व दिशा वायु तत्त्वरूप छे तथा आकाशनी स्थिर दिशा छे.

जय, तुष्टि, पुष्टि, रति, खेलवुं कुदवुं अने हास्य ए ठ अवस्था चंद्रस्वरनी छे.

ज्वर, निद्रा, परिश्रम अने कंपन ए चार अवस्था ज्यारे चंद्रस्वरमां वायु तत्त्व तथा अग्नि तत्त्व चालतां होय ते समये शरीरमां होय छे.

ज्यारे चंद्रस्वरमां आकाश तत्त्व चाले छे त्यारे आयुष्यनो क्षय तथा मृत्यु थाय छे.

पांचे तत्त्वना मळवाथी चंद्रस्वरनी उपर जणावेली बार अवस्था थाय छे.

जो पृथ्वी तत्त्व चालतुं होय तो जाणवुं के पूछनारना मनमां मूलनी चिंता छे.

जो जल तत्त्व अने वायु तत्त्व चालतां होय तो जाणवुं के पूछनारना मनमां जीव संबंधी चिंता छे. अग्नि तत्त्वमां धातुनी चिंता जाणवी.

आकाश तत्त्वमां शुभ कामनी चिंता जाणवी.

पृथ्वी तत्त्वमां बहु पगवालानी चिंता जाणवी.

जल अने वायु तत्त्वमां बे पगवालानी चिंता जाणवी.

अग्नि तत्त्वमां चार पगवालानी चिंता जाणवी.

आकाश तत्त्वमां पग विनाना पदार्थनी चिंता जाणवी.

रवि, राहु, मंगल अने शनि ए चार सूर्यस्वरनां पांचे तत्त्वना स्वामी छे.

चंद्रस्वरमां पृथ्वी तत्त्वनो स्वामी बुध, जल तत्त्वनो स्वामी चंद्र, अग्नि तत्त्वनो स्वामी शुक्र अने वायु तत्त्वनो स्वामी गुरु छे. ए वास्ते पोत-पोताना तत्त्वमां ए ग्रह अथवा वार शुभ फलदायक थाय छे.

पृथ्वी आदि चारे तत्त्वमां अनु-

क्रमे मीठो, कषायेलो, खारो अने खाटो ए चार रस छे. ए वास्ते जे वखते जे रसनी खावानी इच्छा थाय ते वखते ते तत्त्व चाले छे एम समजवुं.

अग्नि तत्त्वमां क्रोध, वायु तत्त्वमां इच्छा तथा जल अने पृथ्वी तत्त्वमां क्षमा अने नम्रता आदि यतिधर्म-रूप दश गुण उत्पन्न थाय छे.

श्रवण, धनिष्ठा, रोहिणी, उत्तराषाढा, अभिजित, ज्येष्ठा अने अनुराधा ए सात नक्षत्र पृथ्वी तत्त्वनां छे तथा शुभ फलदायी छे.

मूल, उत्तराभाद्रपद, रेवती. आ-

र्डा, पूर्वाषाढा, शतभिषा अने आश्लेषा ए सात नक्षत्र जल तत्त्वनां छे.

ए चौद नक्षत्रो स्थिर कार्यमां पोतपोताना तत्त्वना चालता समयमां जाणवां.

मघा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद, स्वाती, कृतिका, भरणी अने पुष्य ए सात नक्षत्र अग्नि तत्त्वनां छे.

हस्त, विशाखा, मृगशिर, पुनर्वसु, चित्रा, उत्तराफाल्गुनी अने अश्विनी ए सात नक्षत्र वायु तत्त्वनां छे.

प्रथम आकाश, तेनी पाछल वायु, तेनी पाछल अग्नि, तेनी

पाछल पाणी, तेनी पाछल पृथ्वी ए क्रमथी एक एक तत्त्व एकेकनी पाछल चाले छे.

पृथ्वी तत्त्वनो आधार गुदा, जल तत्त्वनो आधार लिंग, अग्नि तत्त्वनो आधार नेत्र, वायु तत्त्वनो आधार नाक तथा आकाश तत्त्वनो आधार कान छे.

जो सूर्यस्वरमां भोजन करे तथा चंद्रस्वरमां जल पीए अने डाबी बाजु सुवे तो रोग कदि न थाय.

जो चंद्रस्वरमां भोजन करे अने

सूर्यस्वरमां जल पीए तो तेना शरीरमां अवश्य रोग थाय.

चंद्रस्वरमां शौचने माटे (दिशाने माटे) जवुं जोइए, सूर्यस्वरमां पेशाव करवो जोइए तथा सुवुं जोइए.

जो कोइ पुरुष स्वरोनो एवो अभ्यास राखे के तेने चंद्रस्वरमां दिवसनो उदय होय तथा सूर्यस्वरमां रात्रिनो उदय होय तो ते पूरी अवस्था जोगवे छे, परंतु जो एथी विपरीत होय तो जाणवुं के मोत नजीक छे.

अढी अढी घडी सुधी बंने (सूर्य अने चंद्र) स्वर चाले छे अने तेर श्वास सुधी सुखमना चाले छे.

जो आठ पहोर सुधी (२४ कलाक सुधी) सूर्यस्वरमां वायु तत्त्वज चालतो रहे तो त्रण वर्षनुं आयुष्य जाणवुं.

जो सोल पहोर सुधी सूर्य स्वरज चालतो रहे (चंद्रस्वर आवेज नहीं) तो बे वर्षमां मृत्यु जाणवुं.

जो त्रण दिवस सुधी एकलो सूर्यस्वरज चालतो रहे तो एक वर्षमां मृत्यु जाणवुं.

जो सोल दिवस सुधी बराबर सूर्यस्वरज चालतो रहे तो एक महीनामां मृत्यु जाणवुं.

जो एक महीना सुधी सूर्यस्वर हमेशां चालतो रहे तो बे दिवसनुं आयुष्य जाणवुं.

जो सूर्य, चंद्र अने सुखमना ए त्रणे स्वर न चाले अर्थात् मोढेथी श्वास लेवो पडे तो चार घडीमां मृत्यु जाणवुं.

जो आखो दिवस चंद्रस्वर चाले अने आखी रात सूर्यस्वर चाले तो मोटुं आयुष्य जाणवुं.

जो आखो दिवस सूर्यस्वर अने आखी रात बराबर चंद्रस्वर चाले तो ७ महीनानुं आयुष्य जाणवुं.

जो चार, आठ, बार, सोल अथवा वीश दिवस रात बराबर चंद्रस्वर चालतो रहे तो मोटुं आयुष्य जाणवुं.

जो त्रण रातदिवस सुधी सुखमना स्वर चालतो रहे तो एक वर्षनुं आयुष्य जाणवुं.

जो चार दिवस सुधी बराबर सुखमना स्वर चालतो रहे तो ७ महीनानुं आयुष्य जाणवुं.

॥ श्री वीरपरमात्मायनमः ॥
सकलपंडित चक्रचक्रवर्त्तिपंडित श्रीक्षमाविजय गणि शिष्यमुख्यपंडित परषदमिनीभाल तिलक पंडितश्रीजिनविजयगणि गुरुभ्यो नमः सिद्धि बुद्धि विधायिने श्रीमत् गौतम स्वामिने नमः

अथ श्री पंडित उत्तमविजयजी कृत

संयमश्रेणीनुं स्तवन.

(अर्थसहित प्रारंभः-)

श्रीवर्द्धमानंजिनंनत्वा । वर्द्धमानगुणास्पदं ॥ स्वोपज्ञसंयमश्रेणी स्तवस्यार्थोवितन्यते ॥ १ ॥

॥ढाल पहेली प्रथम गोवालातणेभवेजी एदेशी ॥

केवल ज्ञान दिवाकरूजी । सिद्ध बुद्ध सुखदाय ॥ आतम संपद भोगवेजी । वर्द्धमान जिनराय ॥ गुणोदधि शासन नायक वीर ॥ मेरू महिधर धीर ॥ गुणो० ॥ शास० ॥१॥ ए आंकणी ॥

અર્થઃ—સમસ્ત કેવલજ્ઞાનાવરણી કર્મના ક્ષયથકી ઉપનું જે કેવલજ્ઞાન તદ્રૂપ સૂર્ય છે, સાધકભાવે સકલગુણ નિષ્પન્ન સિદ્ધ છે, સમસ્ત વસ્તુસ્વભાવનું બુદ્ધકે૦ જાણ છે ઉપકારીપણે સર્વસુખનું દાતાર છે, સ્યાદ્વાદપણે પરિણમિત અનંતગુણ પર્યાયરૂપ આત્મસંપદાને ભોગવે છે, એહવો ચોવીસમો તીર્થંકર સાસા-

ન્ય- કેવલીઓમાં રાજા સરિખો શ્રીવર્દ્ધમાન-સ્વામી ગુણોનોસમુદ્ર ગુણરુપ રત્નની ઉત્પત્તિનુ સ્થાનક વર્ત્તમાન શાસનના અધિપતિ શ્રીવીર પરમેશ્વર છે વલી ઉપસર્ગે -પરિસહ આવિથકે અડિગ રહ્યા માટે મેરુનીપરે ધીર છે ॥ ૧ ॥ એટલે વંદનાત્મક સ્તવનાત્મક અને વસ્તુનિર્દેશાત્મક એ ત્રણ પ્રકારના નમસ્કાર છે, તેમા સ્તવનાત્મક ઈષ્ટમુચિત નમસ્કાર કર્યો ॥ ૧ ॥

अनुक्रमिं संयम फरसतोजी।
पाम्यो क्षायक भाव ॥ संयमश्रेणी
फ्रलडेजी। पूजुं पद निष्पाव ॥गु०॥२॥

અર્થઃ—અનુક્રમેં ઉત્તરોત્તર પ્રધાન સંયમસ્થાનક ફરસતોથકો યદુક્ત દશાશ્રૂત સ્કંધે.—' તસ્સણં ભગવંતસ્સ અનુત્તરેણં નાણેણં અનુત્તરેણં દંસણેણં અનુત્તરેણં ચરિત્તેણં ॥

અનુત્તરેણું આલયેણું અનુત્તરેણું વિહારેણું અનુત્તરેણું વીરિયેણું અનુત્તરેણું અજ્જવેણું અનુત્તરેણું સદ્દવેણું ઇત્યાદિક મોહનીય કર્મનો ક્ષય કરી ઉત્કૃષ્ટ સંયમસ્થાનરુપ ક્ષીણ મોહ ગુણસ્થાનક પામ્યો એહવો શ્રી વર્દ્ધમાન સ્વામી તેના પાપરહિત ચરણકમલને સંયમ શ્રેણીરુપ ભાવફૂલે કરીને પૂજું કે૦ અર્ચું છું એ વંદનાત્મક નમસ્કાર કર્યો ॥ ૨ ॥

वाचक जशविजयें रच्योजी । संखेपें सज्झाय ॥ विस्तरि जिन गुण गावतांजी । जीहा पावन थाय॥गु० ॥ ३ ॥

અર્થઃ—પ્રથમ સંયમશ્રેણીનું સજ્ઝાય તિક્ષ્ણબુદ્ધિવાલાને ગમ્ય થાય એવું ન્યાયે વાદિઓને વિષે મુકુટમણિ સમાન ઉપાધ્યાય શ્રી જશોવિજય ગણિયે રચ્યું છે, પણ તેની રચના સંક્ષેપે કરી છે માટે વિસ્તારરુચીને

અર્થે વિસ્તારેં સંયમસ્થાનક ગર્ભિત જિનેશ્વરના ગુણ ગાવતા, જીભ તથા જન્મ પવિત્ર થાય, ઉત્તમ જીવને એવોજ મનોર્થ હોય છે યદુક્તં. ચિરમચિય પાવપણાસણીએ, ભવસયસહસ્સમહણીએ; ચોવીસ જિનવિણિ ગાયકહા વોલંતુમેદીહા એટલે મંગલ અભિધ્યાદિક કહ્યા ॥ ૩ ॥

वार कषाय खय उपशमेजी । सरव विरति गुण ठाण ॥ तेना आदिम ठाणमांजी । पर्यवनुं परिमाण ॥गु०॥४

અર્થ — હવે આધના બારકષાયને ક્ષયોપશમે એટલે જે દલિક ઉદય આવ્યા તેનું ક્ષય કરે અને જે ઉદય નથી આવ્યા તેને ઉપશમાવે અને પ્રદેશેં ઉદય આવ્યાને વેદે એહવી અવસ્થાયેં વર્ત્તતાથકા અવિરતિ દેશવિરતિ પ્રમુખ બાર કષાવને અભાવેં ઉપનું જે

સર્વ વિરતિરુપ છઠ્ઠો ગુણસ્થાનક તેહુના સર્વ જઘન્યમાં જઘન્ય સ્થાનકમાં એટલે આદિમ જે પ્રથમ સ્થાનક તેમાં નિર્વિભાગ ભાગ એટલે જેના કેવલીની બુદ્ધિયે પણ એક ખંડના બે અંસન થાય એવા જે ચારિત્રના પર્યાય અથવા અંસ તેનું પ્રમાણ જે સંખ્યા તે કહે છે ॥ ૪ ॥

सरवाकाश प्रदेशार्थाजी । अनंत गुणा अविभाग ॥ बृहतकल्पना भाष्यमांजी । भाषे तुं महा भाग ॥ गु०॥५॥

અર્થઃ—લોકાલોકના આકાશપ્રદેશ જેટલામાં અનંતે છે એટલે અનંતાની ગણના અનંત પ્રકારની છે તેમાં લોકાલોકના આકાશ પ્રદેશની ગણનાનું જે અનંતું છે તેને અનંતગુણા કરિયે એટલા અવિભાગ છઠ્ઠાગુણ સ્થાનકના સર્વથી જઘન્યમાં જઘન્ય સ્થાનક

જે પહેલું સ્થાનક તેમાં છે એ રીતે બૃહ-
ત્કલ્પના ભાષ્યમાં હે મહાભાગ્ય મેહાપૂજ્ય
તું કહે છે. યદુક્તં, તેકત્તિયાપએસા સંવાગા-
સેસ્સમગ્ગણુ હોઈ, તે તત્તિયાપએસા અવિ-
ભાગતઓ અંનતગુણા. ॥ ૧ ॥ ઇતિ ॥

એ રીતે સર્વવિરતિ ગુણસ્થાનના સ-
ર્વથી જઘન્યમા જઘન્ય પહેલા સંયમસ્થા-
નમા એટલા નિર્વિભાગ હોય, એ નિર્વિભાગ
સર્વોત્કૃષ્ટ વિશુદ્ધ દેશવિરતિ ગુણસ્થાનકના
નિર્વિભાગથી સમસ્ત જીવ જેટલે અનતે છે
તેટલે અનંતે ગુણતા જેટલા અનંતા થાય
તેટલા જાણવા અથાતરે એમ પણ કહ્યુ છે,
જે ઉત્કૃષ્ટ, દેશવિરતિવિશુદ્ધ સ્થાનકના અ-
વિભાગ દશહજાર અસત્કલ્પનાયે કલ્પિયે.
પછી સર્વ જીવતો અનંતા છે તેને પણ
અસત્કલ્પનાયે એકશત પ્રમાણ કલ્પિયે પછી
તે પરસ્પર દશ હજારને સોગુણા કરિયે તે

ધારે દશલાખ થાય, એટલા અવિભાગ સર્વ વિરતિના પ્રથમ સંયમસ્થાનકમાં છે. ॥ ૫ ॥

भाग अनंते आदिथीजी । बीजे ठाणे वृद्धि ॥ इम अनंत भागुत्तरजी ॥ थानकनि होय सिद्धि ॥ गु० ॥६॥

અર્થઃ—એ પહેલા સંયમસ્થાનથકી બીજાસંયમ સ્થાનકમાં અનંતમે ભાગે વૃદ્ધિ હોય, એટલે પહેલા સંયમસ્થાનકમાં જેટલા અવિભાગ છે તે જેટલા ચઉદરાજલોકમાં જીવ છે તે સર્વ જીવને સરખે ભાગે વહેંચી આપતાં એક જીવને ભાગે જેટલા સંયમના અવિભાગ આવે તેટલા અવિભાગની પહેલા સંયમસ્થાનના અવિભાગ કરતાં બીજા સંયમ સ્થાનમાં વૃદ્ધિ થાય, એવી રીતે બીજા સંયમ સ્થાનથી વલી ત્રીજા સંયમ સ્થાનમાં પણ તેટલાજ અવિભાગની વૃદ્ધિ થાય, તેમ ત્રીજાથી

ચોથામા યથોત્તર અનંતભાગ વૃદ્ધિ થાય. તેમજ આગલ પણ સંયમસ્થાનની નિષ્પત્તિ થાયે હવે એમ વૃદ્ધિ કરતા કરતા સર્વ કેટલા સંયમસ્થાનકે એક કંડક થાય તે કહેછે. ॥૬॥

अंगुल भाग असंखमांजी ॥ जे आकाश प्रदेश ॥ तेता थानक नीपजेजी । कंडक तास निवेश ॥गु०॥७॥

અર્થ—એક અંગુલમાત્ર આકાશક્ષેત્રના અસંખ્યાતમા ભાગમા જેટલા આકાશપ્રદેશ છે તેટલા અનંતભાગ વૃદ્ધિના સંયમસ્થાનક નીપજે કે૦ નીપજાવિયે એટલા સયમના સ્થાનકનો સમુદાય તેને આગમ પરિભાષાયે કંડકની સ્થાપના કહિયે. ઉક્તં ચ. કંડંતિએ ત્થસનઇ અગુલભાગો અસખિજ્જો. ॥ ૭ ॥

वीजा कंडक ठाणमांजी । आदि

असंख्यांस जाण ॥ तदनंतरनंत भा-
गनाजी। थानक कंडक माण॥गु०॥८॥

અર્થઃ—હવે પૂર્વે જે અનંતભાગવૃદ્ધિના કંડકનું સ્વરૂપ બતાવ્યું તે અનંતભાગવૃદ્ધિ કંડકની સ્થાપના ને અનંતર બીજો અસંખ્યાત ભાગ વૃદ્ધિના કંડકની સ્થાપના થાય તે આવી રીતે. જે પૂર્વે અનંતભાગ વૃદ્ધિ કંડકના ચર્મસ્થાનકમાં જેટલા અવિભાગ છે તેથકી આ બીજા કંડકના આદિ સ્થાનકમાં અસંખ્યાતમે ભાગે વૃદ્ધિ જાણવી.

એટલે પહેલા કંડકના ચરમસ્થાનકમાં જેટલા અવિભાગ છે તે અસંખ્યાતા લોકાકાશ પ્રદેશને વહેચી આપતાં એક પ્રદેશને ભાગે જેટલા અવિભાગ આવે તેટલા અસંખ્યાત ભાગના અંસની બીજા કંડકના પ્રથમ સ્થાનકમાં વૃદ્ધિ થાય, તેને અનંતર વલી અનં-

તભાગ વૃદ્ધિના સ્થાનક કંડક પ્રમાણ થાયે તે કેમ અસખ્યાતભાગ વૃદ્ધિના પ્રથમ સ્થાનથી અનતમો ભાગ વધે એવું પ્રથમ સ્થાનક તેનુ અનતમોભાગ વૃદ્ધિરુપ બીજુ સ્થાનક એમ યથોત્તર કડકપ્રમાણ હોય. એમ આગલ પણ પાછલા સ્થાનથી આગલા સ્થાનમા ભાગવૃદ્ધિ તથા ગુણવૃદ્ધિ પોતાની બુદ્ધે જાણવી. ॥ ૮ ॥

इम नंत भाग वृद्धिनेजी । कंडक कंडक मध्य ॥ ठाण असंख्यांस वृद्धिनाजी ॥ कंडक माने लद्ध ॥गु०॥९॥

અર્થ—એમ અનતભાગ વૃદ્ધિના કડક પ્રમાણસ્થાનક અને અસખ્યાતભાગ વૃદ્ધિનુ એક સ્થાનક એ રીતે અનંતભાગ વૃદ્ધિ કડક કડકને વિચાલે અસખ્ય ભાગ વૃદ્ધિનુ એકેક સ્થાનક કરતા અસખ્યાત ભાગ વૃદ્ધિના સ્થા-

નકે કેટલા થાય તે કહે છે કંડકમાનેલદ્ધકે૦ કંડક પ્રમાણે લાધા એટલે એક કંડક પ્રમાણ, થયાં એટલે ષટ્વૃદ્ધિમાંહે અસંખભાગ વૃદ્ધિ રૂપ બીજી વૃદ્ધિ પૂરી થઇ ॥ ૯ ॥

ते आगेंनंत भागनाजी । थानक कंडक मात ॥ तदनंतर संख्य भाग-नुंजी । थानक एक विख्यात ॥गु०॥१०

અર્થ:—તે અસંખ્ય ભાગવૃદ્ધિ કંડકના ચરમ સ્થાનકને આગે કે૦ આગલ અનંતર અનંતભાગ વૃદ્ધિના સ્થાનક કંડકમાત્ર થાય, એટલે કંડક પ્રમાણ કરિયે તેવાર પછી સંખ્યાત ભાગવૃદ્ધિનું એક સ્થાનક પ્રસિદ્ધ હોય એટલે પૂર્વે પાશ્ચાત થયેલા કંડકના ચરમસ્થાનકમાં જેટલા અવિભાગ છે તેને ઉત્કૃષ્ટ સંખ્યાતપદ સાથે ભાગ દેતાં એકને ભાગે

જેટલા આવે તેટલા વધે એમ આગલ પણ
સ્વબુદ્ધે જાણી લેવું ॥ ૧૦ ॥

ते ऊपर द्वय वृद्धिनाजी । जेता
ठाण अतीत ॥ ते कीधे संख्यभाग-
नुंजी । बीज्युं ठाण पवित्त ॥गु०॥११

અર્થ—હવે તે સંખ્યાતભાગ વૃદ્ધિના
પ્રથમ સ્થાનકને ઊપર દ્વયકે૦ બે વૃદ્ધિના
સ્થાનક જેટલા અતિક્રમ્યા છે એટલે પૂર્વે
અનંતભાગવૃદ્ધિ અને અસંખ્યાત ભાગવદ્ધિ
એ રીતે એ બે વૃદ્ધિના જેટલા સ્થાનક ગયાં
છે તે સર્વને આ પહેલા સંખ્યાતભાગ વૃદ્ધિ
નાંમા સ્થાનકને આગલ કરિયે તે કરવા પછી
સંખ્યાતભાગ વૃદ્ધિનુ બીજુ સ્થાનક પવિત્ર
સંયમ પરિણામરુપ આવે ॥ ૧૧ ॥

इम वृद्धि द्वय अंतरेजी । कंडक

माने इठ ॥ असंख्याते वृद्धिनाजी थानकजिनवर पुठ ॥गु० ॥१२॥

અર્થઃ—એજ રીતે આગલ પણ તે અનંતભાગ વૃદ્ધિ તથા અસંખ્યાતભાગ વૃદ્ધિ એ દ્વય કે૦ બે બે વૃદ્ધિના સ્થાનકને વિચમાં એકેક સંખ્યાત ભાગ વૃદ્ધિનું સ્થાનક કરતા કંડક પ્રમાણ નીપજે. હે ઇષ્ટ! હે પ્રાણવલ્લભ! તે સંખ્યાતભાગ વૃદ્ધિના સ્થાનક હે જિનવર હે વીતરાગ! તુમે ફરસ્યા ॥ ૧૨ ॥

वलि पूरव द्वय वृद्धिनाजी। थानक सरव करेह ॥ आगल गुण संख्यातनुंजी। थानक एक धरेह ॥गु० ॥१३॥

અર્થઃ—સંખ્યાતભાગ વૃદ્ધિ કંડકના ચરમસ્થાનકને આગલે પૂર્વલી બે વૃદ્ધિના જેટલા સ્થાનક ગયાં છે તેટલા સર્વ સ્થાનક

કરવા એટલે કરિયે, તેને આગલ સંખ્યાત ભાગવૃદ્ધિનું કંડક પુરૂં થયું તે માટે તેને ઠેકાણે સંખ્યાત ગુણવૃદ્ધિનું એક સંયમ સ્થાનક ધરે એટલે ધરિયે થાપિયે એટલે પાછલ અનંતભાગ વૃદ્ધિનું કંડક ગયુ છે તેના ચરમ સ્થાનકમા જેટલા અવિભાગ છે તેને ઉત્કૃષ્ટ સંખ્યાતગુણા કરિયે તે સંખ્યાતગુણા કરતાં જેટલા અવિભાગ થાય તેટલા અવિભાગ પ્રથમ સખ્યાત ગુણ વૃદ્ધિના સ્થાનકમાં વધે એ રીતે આગલ પણ સ્વબુદ્ધે જાણવુ. ॥૧૩॥

इम त्रिक वृद्धिने अंतरेजी । गुण संख्यातना ठाण ॥ कंडक माने नीपजेजी । जाणे तुं वर नाण ॥गु० ॥१४

અર્થઃ—એમ ત્રિકવૃદ્ધિને વિચાલે એટલે પૂર્વે જે અનતભાગ વૃદ્ધિ અસંખ્યાતભાગ વૃદ્ધિ સંખ્યાતભાગ વૃદ્ધિ એ ત્રણ ત્રણ વૃદ્ધિના

સર્વ સ્થાનકને વિચાલે એક એક સંખ્યાત ગુણનું સ્થાનક કરિયે એમ કરતાં સંખ્યાત ગુણ વૃદ્ધિના સ્થાનક કંડક પ્રમાણ નીપજે। એટલે ષટ્વૃદ્ધિ માંહે ચોથી સંખ્યાત ગુણ વૃદ્ધિ પૂરી થઇ. સંયમ સ્થાનક ચારિત્ર પરિણામરૂપ હોવાને લીધે અરૂપી છે તે માટે હે સર્વજ્ઞ! ત સર્વ તું જાણે છે.

पुनरपि त्रिक वृद्धी तणाजी । पूरी थानक सर्व ॥ असंख्यात गुण वृद्धिनुंजी । थानक एक अगर्व ॥गु०॥१५

અર્થઃ—સંખ્યાતગુણ વૃદ્ધિ કંડકના ચરમા સ્થાનકથી આગલ વલી ત્રણ વૃદ્ધિના એટલે અનંતભાગ વૃદ્ધિ અસંખ્યાત ભાગ વૃદ્ધિ અને સંખ્યાત ભાગ વૃદ્ધિ એ ત્રણ વૃદ્ધિના સ્થાનક જેટલાં પૂર્વે ગયાં છે તે સર્વ સંયમસ્થાનક પૂરીને નીપજાવીને તે પછી અસંખ્યાતગુણ

વૃદ્ધિનુ એક સયમસ્થાનક આવે, માટે હે ભગવં! પાશ્ચાત એટલે પૂર્વે થયલા અનંતર કડકના ચરમ સયમસ્થાનકમા જેટલા અવિભાગ છે તેને અસખ્યાત લોકાકાશ પ્રદેશે પ્રમાણે ગુણાકાર કરતા જેટલા અવિભાગ થાય તેટલા અવિભાગ પ્રથમ અસખ્યગુણ વૃદ્ધિના સ્થાનકમા વધે ॥ ૧૫ ॥

चउरंतर चउरंतरेंजी। थानक कंडक मेय ॥ असंख्यात गुण वृद्धिनाजी। पंडित वीर्य वरेय ॥ गु०॥१६॥

અર્થ — તેવાર પછી વલી આગલ પણ ચાર ચાર વૃદ્ધિને વિચાલે એકેક અસખ્યાત ગુણ વૃદ્ધિનુ સંયમ સ્થાનક નીપજે, એમ નીપજાવતા કંડક માત્ર થાય એ અસંખ્યાત ગુણવૃદ્ધિના સયમ સ્થાનક એટલે અસંખ્યાત ગુણ વૃદ્ધિના પ્રથમ સ્થાનક પછી

અનંતભાગ વૃદ્ધિ અસંખ્યભાગ વૃદ્ધિ સંખ્યાતભાગ વૃદ્ધિ સંખ્યાત ગુણવૃદ્ધિ એવાં ચાર વૃદ્ધિનાં સ્થાનક કર્યા પછી અસંખ્ય ગુણવૃદ્ધિનું બીજું સ્થાનક આવે. એ રીતે ચાર ચાર ચાર વૃદ્ધિને વિચાલેં એકેક અસંખ્યાત ગુણ વૃદ્ધિનું સ્થાનક કરતાં કંડક માત્ર થાય એટલે ષટ વૃદ્ધિમાંહે અસંખ્ય ગુણ વૃદ્ધિરૂપ પાંચમી વૃદ્ધિ પૂરી થઈ. એ સર્વ સંયમસ્થાનકરૂપ આત્મગુણ તે હે વીર! હે પરમેશ્વર! તુમેં પંડિત વીર્યે કરીને વરચા, પામ્યા, માટે તુમે વંદ્ય પૂજ્ય સ્તુત્ય છો તમારી સ્તવના કરતાં એવા ગુણ પામિયે ॥ ૧૬ ॥

उपर वली चउ वृद्धिनाजी। फरसे थानक सार॥ तदनंतरनंत गुणनुंजी। थानक एक उदार ॥ गु० ॥१७॥

અર્થઃ—હવે તે અસંખ્ય ગુણવૃદ્ધિ કંડ-

કના ચરમ સ્થાનકને ઉપર વલી ચારવૃદ્ધિના સ્થાનક એટલે અનંતભાગ વૃદ્ધિ તથા અસ ખ્યભાગ વૃદ્ધિ અને સંખ્યાતભાગ વૃદ્ધિ તથા સંખ્યાતગુણ વૃદ્ધિ એ ચાર વૃદ્ધિના સર્વ સ્થાનક ફરસે હે સાર । હે જગત ઉત્કૃષ્ટ પ્રભુ! તેવાર પછી વલી આતરારહિત અનંતગુણ વૃદ્ધિનું એક પ્રથમ સ્થાનક મહોટું આવે એટલે પાશ્ચાત્ય જે (પુર્વે થયલા) અનંતર પ્રથમ સ્થાનકમા જેટલા અવિભાગ છે તે સર્વ જીવોની સખ્યા રુપજે અનંતા છે તે અનતા સાથે અનંત ગુણ કરતા જેટલા અવિભાગ થાય તેટલા અવિભાગ અનંતગુણ વૃદ્ધિના પ્રથમ સ્થાનકમા વધે

पंच पंच वुद्धी विचेंजी। ठाण एक इक जोय॥ इम अनंत गुण वुद्धिना-जी॥ कंडक माने होय ॥गु० ॥१८॥

અર્થઃ—અનંતગુણ વૃદ્ધિના પ્રથમ સ્થાનક પછી અનંતર અનંતભાગવૃદ્ધિ, અસંખ્ય ભાગવૃદ્ધિ સંખ્યાતભાગ વૃદ્ધિ સંખ્યાતગુણ વૃદ્ધિ અસંખ્યાતગુણ વૃદ્ધિ એવાં પાંચ વૃદ્ધિ રુપ સમસ્ત સંયમ સ્થાનક ઉપજે. તેવાર પછી એક અનંતગુણ વૃદ્ધિનું બીજું સંયમ સ્થાનક આવે. એ રીતે પાંચ પાંચ વૃદ્ધિને વિચમાં એક એક અનંતગુણ વૃદ્ધિનું સ્થાનક નીપજે. તે જ્ઞાન દ્રષ્ટિયે જુઓ. એમ કરતાં અનંતગુણ વૃદ્ધિના સંયમસ્થાનક કેટલા થાય તે કહે છે. કંડક પ્રમાણે હોય એટલે અંગુલના અસંખ્યાતમા ભાગમાં જેટલા આકાશપ્રદેશ છે તેના જેટલા અનંતગુણ વૃદ્ધિના સંયમ સ્થાનક થાય તે કંડક થયું ॥ ૧૮ ॥

उपर वली पंच वृद्धिनाजी। फरसे संयम ठाण ॥ प्रवचन अनुसारें कहुंजी। षट थानक परिमाण ॥गु०॥१९

યમનું મૂલ ષટ સ્થાનક ને ઉપર ઉપર વલી બીજા ષટ સ્થાનિક ઉપજે એટલે અસંખ્યાતિવાર ઉપરા ઉપર ષટ સ્થાનક થાય. ઉક્તંચ. છઠ્ઠાણુગ અવસાણે, અન્નં છઠ્ઠાણુયં પુનો અન્નં; એવ મસંખા લોગા, છઠાણાણું મુણેયવ્વા ॥ ૧ ॥ ॥ ૨૦ ॥

ए संयम गुण ठाणमांजी। जे वरते मुनि सोय ॥ वंद्य अपर भजना पणेंजी भाष्यकल्पमां जोय ॥ गु० ॥ २१ ॥

અર્થઃ—એ સંયમ કે૦ ચારિત્ર ગુણસ્થાનકમાં એટલે છઠ્ઠાગુણઠાણાના આદ્યના સ્થાનકથી માંડીને યથાખ્યાત ચારિત્રરુપ ચરમ સ્થાનકપર્યંત તેમાં જે મુનિરાજ વર્તે છે તે મુનિ વાંદવાયોગ્ય છે, પણ વેશમાત્રને વાંદવાનું પ્રયોજનનથી. ઉક્તંચ ॥ વેસોવિ અપ્પમાણો, અસંજમપએસુ વટ્ટમાણસ્સ ॥ કિંપરિ અત્તિ-

યવેસં, વિસં ન મારેઈ ખજ્જત ॥૨॥ ઈતિ માટે અપર કેo બીજા જે સંયમશ્રેણીથી બાહ્ય તે ભજનાયે વંદનીક એટલે કારણે વાંદવાયોગ્ય, પણ કારણવિના વાંદવાયોગ્ય નહી. એ અર્થ બૃહત્કલ્પ ભાષ્યમા જોઈ લેવું. ઉક્તાચ ॥ સંયમ ઠાણ ઠિયાણં, કિઇકમ્મ-વાહિરાણભઈ યવ્વં ॥ ૨૧ ॥

ઈહા પટસ્થાનકના નામ કહે છે. ૧ અનંતભાગવૃદ્ધિ ૨ અસંખ્યભાગવૃદ્ધિ, ૩ સંખ્યાતભાગવૃદ્ધિ, ૪ સંખ્યાતગુણવૃદ્ધિ, ૫ અસંખ્યાતગુણવૃદ્ધિ ૬ અનતગુણવૃદ્ધિ એમા ભાગ તથા ગુણવૃદ્ધિ કહી તે કેવી સંખ્યાયે છે તે જાણવાને આગમની ગાથા કહે છે:—સવ્વ જિએહિ અનત, ભાગંચ ગુણં અસખ લોગેહિં ॥ જાવ અસખં મખ, સખિજેવુ ચ જિઠેપ ॥ ૧ ॥ એનો અર્થ —એપટવૃદ્ધિરૂપ પટ સ્થાનકને વિષે જે અનતભાગનુ સ્થા-

નક તથા અનંતગુણનું સ્થાનક એ બે સ્થાનકની સંખ્યા તે સર્વ ચઉદ રાજલોકમાં જેટલા જીવની સંખ્યા છે તે સંખ્યાયે ભાગ તથા ગુંણની વૃદ્ધિ કરવી અને અસંખ્યભાગ વૃદ્ધિ તથા અસંખ્યગુણ વૃદ્ધિ એ બે સ્થાનક તે અસંખ્યાત લોકાકાશ પ્રદેશની જેટલી સંખ્યા છે તે સંખ્યાયે ભાગ તથા ગુણની વૃદ્ધિ કરવી અને સંખ્યાત ભાગવૃદ્ધિ તથા સંખ્યાતગુણવૃદ્ધિ એ બે સ્થાનક તે ઉત્કૃષ્ટ સંખ્યાતાની જેટલી સંખ્યા છે તેટલી સંખ્યાયે ભાગ તથા ગુણની વૃદ્ધિ કરવી. ઇતિભાવ.

તથા જે સંયમસ્થાનક અનંતભાગ વૃદ્ધિને પામે તે પાછલા સંયમસ્થાનકના જેટલા અવિભાગ હોય તેને સમસ્ત જીવોની જેટલી સંખ્યા છે તે સંખ્યાયે ભાગ આપતાં જેટલા અવિભાગ આવે તાવત્પ્રમાણ અનંતભાગે અધિક જાણવું અને જે સંયમસ્થાનક અ-

સંખ્યાતભાગ વૃદ્ધિને પામે તે પાછલા સંયમસ્થાનકના નિર્વિભાગ ભાગ જેટલા હોય તેને અસખ્ય લોકાકાશ પ્રદેશ પ્રમાણે ભાગ આપતા જેટલા અવિભાગ લાભે, તાવત્ પ્રમાણુ અસખ્યેય ભાગે અધિક જાણવુ તથા જે સયમસ્થાનક સખ્યાતભાગ વૃદ્ધિને પામે તે પાછલા સંયમસ્થાનકના જેટલા અવિભાગ હોય તેને ઉત્કૃષ્ટ સંખ્યાતાયે ભાગ કરતા જે અવિભાગ લાભે તેટલા સખ્યાત ભાગે અધિક જાણવુ વલી જે સયમ સ્થાનક સંખ્યાતગુણ વૃદ્ધિને પામે તે પાછલા સયમસ્થાનકના જે નિર્વિભાગ ભાગ છે તેને ઉત્કૃષ્ટ સંખ્યાતગુણની રાસિયે ગુણતા જે અવિભાગ થાય, તાવત્પ્રમાણ સખ્યાતગુણે અધિક જાણવું તથા જે સયમસ્થાનક અસંખ્યાત ગુણવૃદ્ધિને પામે તે પાછલા સંયમસ્થાનના જે અવિભાગ છે તેને અસંખ્યાત લોકાકાશના જે પ્રદેશ

છે તદ્દગુણિત કરિયેં તાવત્ પ્રમાણ અસં-ખ્યાતગુણો અધિક જાંણવું તથા જે સંયમ-સ્થાનક અનંતગુણવૃદ્ધિને પામે છે તે પાછલા સંયમસ્થાનકના જેટલા અવિભાગ છે તેને સમસ્ત જીવોની અનંતિ સંખ્યાયેં ગુણતાં જેટલા અવિભાગ થાય તાવત્પ્રમાણ અનંત-ગુણો અધિક જાણવું. ઇતિ જ્ઞેયં. ॥ ૨૧ ॥

षट थानक संयम तणाजी। कहेतां स्तवतां वीर ॥ क्षमाविजय जिन भक्तिथीजी । उत्तम लहे भव तीर ॥ गु० ॥ २२ ॥

અર્થઃ—એ સંયમના ષટસ્થાનક કહેતાં થકાં તથા સંયમશ્રેણી ગર્ભિત વીર પરમેશ્વરને સ્તવતાં તથા વલી ક્ષમાગુણે કરીને મોહનું જેણે વિજેય કર્યો છે, અણુત્તરાએ ખંતિએ. ઇતિ વચનાત્. એહવા જિન કે૦ વીતરાગ જે

શ્રીવીરસ્વામિ તેની ભકિતથી ઉત્તમ જીવ હોય તે ભવ કે૦ સંસાર સમુદ્રનો પાર પામે. સિદ્ધ પરમેશ્વર થાય એટલે પંડિત શ્રી ક્ષમાવિજયગણિ તત્ શિષ્ય પંડિતશ્રી જિનવિજયગણિ તેમની ભકિતથી મુનિ ઉત્તમવિજયજી સંસારનો પાર પામે, એમ પણ જાણવું ॥ ૨૨ ॥

અવતરણ —પૂર્વોક્ત સંયમસ્થાનક સમજવાને સુગમ થાય તે માટે શ્રી વીરપ્રભુની સ્તવના કરતા યંત્રનો બીજો ઢાલ કહે છે ઇતિ સંબંધ ॥

ढाल बीजी.

सुरती महीनानी देशी.

वस्तु स्वभाव प्रकाशक भाशित लोगालोग । वीर जगत गुरु भोगवे रत्नत्रयीनो भोग ॥ संयमना पट था-

निक सूक्षम बुद्धि गम्य ॥ स्व पर
विबोधन हेतें थापुं यंत्र सुरम्य ॥१॥

અર્થઃ—સદસદાદિક અનંતધર્માત્મક વસ્તુ સ્વભાવ તંનું પ્રકાશક તથા કેવલ જ્ઞાનરુપ આરસીમાં જેને લોકાલોકનું સ્વરુપ ભાસ્યો છે એહવો શ્રીવીરપરમેશ્વર ત્રણ જગતનો ગુરુ ભાવરત્નત્રયીનો આસ્વાદ અનુભવે છે, સમ્યક્ જ્ઞાન યથાર્થં વિબોધ સમ્યક્ દર્શનં તત્વપ્રેતીતિ સમ્યક્ ચારિત્રં નિજસ્વરુપ રમણ સ્થિરતારુપ ઇતિ રત્નત્રયી. સ્વરૂપં સંયમની ષટવૃદ્ધિના સ્થાનકે તીક્ષ્ણ બુદ્ધિયેં ગમ્ય છે તે માટે પોતાને તથા પરને સમજવાને અર્થે અસત્કલ્પનાયેં મનોહર યંત્ર થાપુ છું તિહાં અનંત ભાગવૃદ્ધિને સ્થાનકે મીંડાં અને અસંખ્યાત ભાગવૃદ્ધિ સ્થાનકે એકડાં સંખ્યાત ભાગવૃદ્ધિ સ્થાનકે બગડા, સંખ્યાત ગુણવૃદ્ધિ સ્થાનકે ત્રગડા, અસંખ્યાતગુણ વૃદ્ધિસ્થાનકે

ચોગઠા અનંતગુણ વૃદ્ધિસ્થાનકે પાચશા- એમ અસત્કલ્પનાયે ચાર મીડાયે અનંતભાગવૃદ્ધિ કંડક, ચાર એકડે અસંખ્યભાગવૃદ્ધિ કંડક ઇત્યાદિક સંજ્ઞા જાણવી ॥ ૧ ॥

भाग अनंतह वृद्धिना ठाण छे कं-
डक सार। छे यद्यपि ते असंख्य ठवुं
तस विंदु चार ॥ असंख्य भाग वृद्धिनुं
थानक आगल एक ॥ तस ठामें ठवुं
एको मन धरी अतिहि विवेक ॥२॥

અર્થઃ—અનંતભાગવૃદ્ધિના સ્થાનક ભલા કંડકમાત્ર અંગુલ અસંખ્યભાગવત આકાશ પ્રદેશ પ્રમાણ છે, એ રીતે જો પણ તે અનંતભાગ વૃદ્ધિના સ્થાનક અસંખ્યાતા છે તોપણ અસત્કલ્પનાયેં તેના ચાર બિંદુ સ્થાપું છું એટલે અનંતભાગવૃદ્ધિનું કંડક પુરૂ થયું તેથી

આગલ અસંખ્યાતભાગ વૃદ્ધિનુ સ્થાનક એક આવે તેને ઠેકાણે મનમાં અત્યંત વિવેક ધરીને એકડો થાપું છું તે પૂર્વોક્ત સ્થાનકથી ભિન્ન પાડવા નિમિત્તે થાપું છું. એમ સર્વત્ર જાણવું ॥૨॥

चउ चउ बिंदु अंतर इम होय एकाचार । तदनंतर चउ बिंदु सघलां वीस उदार ॥ आगल भाग संख्यातह वृद्धिनो बीउ जाण । इम चउ बिया ठवतां मींडां शत परिमाण ॥ ३ ॥ चउ बीआवीस एका मींडां शत समुदाय ॥

चउ बीआ वीस एका मींडा शत समुदाय । भागनी वृद्धि मांहे थयां

हवे गुण वृद्धि कहाय ॥ संख्यात गु-
णनी वृद्धिमां तीओ आदि उदार ।
इम सवि मींडा अंका विच ठवि ति-
आ चार ॥ ४ ॥

અર્થઃ—વલી આગલ અનંતભાગ વૃદ્ધિના એક કડક જેટલા સ્થાનક થાય તેને ઠેકાણે ચારબિંદુ થાપીયે, આગલ અસંખ્યભાગ વૃદ્ધિનું એક સ્થાનક છે તે માટે વલી એકડો થાપીયે, એ રીતે ચાર ચાર બિંદુને આંતરે જેવારે ચાર એકડા થાય એટલે અસંખ્યભાગ વૃદ્ધિનું કડક પુરૂ થયુ. તેવાર પછી આંતરા રહીત છેડાનુ અનંત ભાગવૃદ્ધિનું કડક આવે તેને ઠેકાણે ચાર બિંદુ થાપીયે એટલે સઘલા સરવાલે ચાર એકડાને વીસ મિંડા થયા તે પછી આગલ સંખ્યાતભાગ વૃદ્ધિનુ સ્થાનક

એક આવે તેને ઠામે બગડાની થાપના જાણીયે. એ રીતે ચાર એકડા ગર્ભિત વીસ બિંદુ અનંતર સંખ્યાતભાગ વૃદ્ધિનું એક એક બગડો આણતાં જેવારે ચાર બગડા આવે તેવારેં સંખ્યાતભાગ વૃદ્ધિનું કંડક પુરૂં થાય. તેવાર પછી વલી છેડે ચાર એકડા ગર્ભિત વીસ મીંડા આવે, એમ સંખ્યાતભાગ વૃદ્ધિપર્યંત સર્વ સમુદાયે મીંડાં (૧૦૦) એકડા (૨૦) બગડા (૪) એતાવતા સંખ્યાત ભાગવૃદ્ધિનું કંડક એક અસંખ્યાત ભાગવૃદ્ધિના કંડક પાંચ અનંતભાગવૃદ્ધિના કંડક પચવીસ એટલા સ્થાનક અસત્કલ્પનાયે ભાગવૃદ્ધિમાં થયા. હવે ગુણવૃદ્ધિમાંહે જે સ્થાનક થાય તે કહે છે. હવે આગલ સંખ્યાતગુણ વૃદ્ધિનું એક સ્થાનક આવે તેને ઠેકાણે એક ત્રગડો થાપીયે એટલે સંખ્યાતગુણ વૃદ્ધિમાં પ્રથમ ઉત્તમ સ્થાનકનો ત્રગડો જાણવો. એ રીતે વલી પણ

પૂર્વલા ચાર ખગડા, વીસ એકડા ગણિત શતમિંડા થાપીને તેને અનંતર ઓલો ત્રગડો આવે. એ રીતે જેવારે ચાર ત્રગડા થાય તેવારે તે ચાર ત્રગડે અસંખ્યાતગુણ વૃદ્ધિરૂપ કંડક પુરૂ થયુ ચોથા ત્રગડાને અનતર વલીચાર ખગડા વીસ એકડા અને સાત મીંડા થાપીયે ॥ ૩ ॥ ૪ ॥

त्रीस वीआ शत एका पण सय बिंदु मान । असंख्यात गुण वृद्धिनो चोको धुरि मंडाण ॥ इम चउ चोका आणतां तिक वीस द्विक शत जोय। पण सय एकडा मींडा पंचवीससें होय ॥ ५ ॥

અર્થ—ઈહા સખ્યાતગુણ વૃદ્ધિપર્યંત સર્વમલી ત્રગડા ચાર ખગડા વીસ અને એકડા સો તથા પાચસે મીંડા એટલે સખ્યાતગુણ

વૃદ્ધિનું કંડક એક અને સંખ્યાતભાગ વૃદ્ધિના કંડક પાંચ અસંખ્યાતભાગ વૃદ્ધિના કંડક પચીસ અનંતભાગ વૃદ્ધિના કંડક એકસો ને પચીસ થાય તેવાર પછી અસંખ્યાતગુણ વૃદ્ધિરુપ પ્રથમ સ્થાનકનો ચોગડો માંડીયેં ફરી ચાર ત્રગડા વીસ બગડા એકસો એકડા સહીત પાંચસો મીંડા ગયેથકે વલી બીજો ચોગડો માંડીયેં એ પરીપાટીયેં જેવારે ચાર ચોગડા થાય એટલે અસંખ્યાત ગુણ વૃદ્ધિનું કંડક પુરું થયું વલી ચોથા ચોગડાને અનંતર ચાર ત્રગડા વીસ બગડા એકસો એકડા અને પાંચસેં મીંડા થાપીયેં તો સર્વમલી ચાર ચોગડા વીસ ત્રગડા એકસો બગડા પાંચસેં એકડા પચીસો મીંડા થાય એટલે અસંખ્યાત ગુણવૃદ્ધિનું કંડક એક સંખ્યાત ગુણવૃદ્ધિના કંડક પાંચ સંખ્યાત ભાગવૃદ્ધિના કંડક પચીસ અસંખ્યાત ભાગવૃદ્ધિના કંડક એકસોપચીસ

તથા અનતભાગ વૃદ્ધિના કડક છસોને પચીસ થયા ॥ ૫ ॥

हवे अनंत गुण वृद्धि पदे ठवि पंचक चंग । पुनरपि पूरव रीतें मांडां अंक सुरंग ॥ तिवार पछी पंचक इम पंचक चउ जव थाय । आगें पण पंचवीससें मांडां अक कराय ॥ ६ ॥

અર્થ —હવે અનતગુણ વૃદ્ધિપદેકેo અનતગુણ વૃદ્ધિરુપ પ્રથમ સ્થાનકને ઠેકાણે એક પાચડો થાપીયે પુનરપિ પૂર્વલી રીતે ચાર ચોગડા વીસ ત્રગડા એકસો બગડા પાચસો એકડા ગર્ભિત પચવીસસો મીંડા થાપીયે તેવાર પછી બીજો પાચડો થાપીયે એરીતે અનુક્રમે જેવારે ચાર પાચડા થપાય

તેવારે અનંતગુણ વૃદ્ધિરુપ કંડક પુરૂં થાય વલી આગલ પણ ચોથા પાંચડાને અનંતર ચાર ચોગડા વીસ ત્રગડા એકસો બગડા પાંચસો, એકડાયેં યુક્ત પંચવીસસો મીંડાં કરીયેં એટલે એક ષટસ્થાનક પુરૂં થયું.

पांचडा चोगडा त्रगडा वगडा एकडा बिंदु । षट थानकनां यंत्रनी संख्या कहे जिनचंदु ॥ चउ वीस सय पणसय पंच वीस सय सार ॥ अंका मींडा गणतां साढा बार हजार ॥७॥

અર્થઃ—હવે ષટસ્થાનક મધ્યે આંક તથા મિંડાની સંખ્યા આવી તે પશ્ચાનું પૂર્વિયેં કહિયેં છે પાંચડા ચોગડા ત્રગડા બગડા એકડા તથા બિંદુ તેના સમુદાયરુપ ષટસ્થાનકના

પંચની સંખ્યા તે શ્રી જિનચંદ્રદેવ ઋષ-
ભાદિકે કહી તેરીતે હે વીર પરમેશ્વર તમે
ફરસી તે આવી રીતે ચાર પાચડા વીસચો-
ગડા એકમો ત્રગડા પાચસો બગડા પચવીસો
એકડા અને સાહાબાર હજારપિંડા સરવાલે
થાય એટલે અનંતગુણ વૃદ્ધિનું કંડક એક
અસંખ્યાતગુણ વૃદ્ધિના કંડક પાચ સંખ્યાત
ગુણ વૃદ્ધિના કંડક પચવીસ અસંખ્યાતભાગ
વૃદ્ધિના કંડક એકસો પચવીસ અસંખ્યાત
ભાગ વૃદ્ધિના કંડક છસોને પચવીસ અને
અનંતભાગ વૃદ્ધિના કંડક ત્રણહજાર એક-
સોને પચવીસ એ સર્વ મલી (૩૯૦૬)
કંડક થયા એ સર્વ યંત્ર પ્રમાણે અસત્કલ્પનાયે
લખ્યું છે પણ પરમાર્થ રીતે તો આગલા
સૂત્રના કહીશું ॥ ૭ ॥

संयम श्रेणिमां श्रेणि क्षपक लहि
शुक्ल ध्यान ॥ घाती करमनो क्षय-

करी पाम्यो पंचम ज्ञान ॥ प्रवचन-
सारनी वृत्तिमां यंत्रनी ठवणा दीठ
। क्षमाविजय जिन वयणथी उत्तम
चित्त पविट्ठ ॥ ८॥

અર્થ:—સંયમશ્રેણી આરોહતાં અનુક્રમે ક્ષપકશ્રેણીમાં સુક્લધ્યાન પામીને ઘાતિયાં ચારકર્મ ક્ષય કરતાં યથાખ્યાત ચારિત્ર કેવલજ્ઞાન કેવલ દર્શનરુપ રત્નત્રયી પામ્યા તદનુક્રમો યથા અપ્રમત્તગુણઠાણે અનંતાનુબંધીની ચોકડી દર્શનમોહત્રિક એવં સાતપ્રકૃતિ ક્ષય કરી અપૂર્વકરણ અનિવૃત્તિ ગુણઠાણે ચઢયા તિહાં અનિવૃત્તિના પ્રથમભાગને અંતે સોલપ્રકૃતિ ખપ.વે તન્નામ થાવરતિરિનરયાએવ દુગથીણતિગેગવિગલસાહરંતિ ઇતિ વલી બીજા ભાગને અંતે અપ્રત્યાખ્યાની ચોકડી

તથા પ્રત્યાખ્યાની ચોકડી એવં આઠપ્રકૃતિ ખપાવે ત્રીજે ભાગે નપુંસકવેદ ખપાવે ચોથે ભાગે સ્ત્રીવેદ ખપાવે પાચમે ભાગે હાસ્યછક્ક ખપાવે છઠેભાગે પુરુષવેદ ખપાવે સાતમેં ભાગે સંજ્વલનનું ક્રોધખપાવે આઠમે ભાગેં સંજ્વલનનુમાન ખપાવે અને નવમે ભાગેં સંજ્વલનની માયા ખપાવે એ રીતે નવમેં ગુણઠાણે બીજા પાચાથી વીસપ્રકૃતિ ખપાવે પછી દશમે ગુણઠાણે સંજ્વલનનુ લોભ ખપાવતો શુકલધ્યાનનુ પ્રથક્ત્વ વિતર્ક સવિચારરૂપ પ્રથમપાદ તદ્રૂપ અનલેકરી સકલ મોહનીય ભસ્મ શાતકરે પછી ક્ષીણમોહ ગુણઠાણે ચઢે ક્ષાયક ચારિત્રવંત થાય તિહા એકત્વ વિતર્ક અવિચારરૂપ શુકલધ્યાનનુ બીજેપાદ અનુભવી દ્વિચરમ સમય નિદ્રાદુગખપાવી ચરમ સમયે જ્ઞાનાવરણી પાચ દર્શનાવરણી ચાર અંતરાય પાચ એવ ચઉદ

પ્રકૃતિને ક્ષયે અનંત ચતુષ્ટી વિભૂષિત સિદ્ધ વધુ યોગ્ય થાય ઇતિશ્રી સિદ્ધસેન દિવાકર કૃત પ્રવચન સારોદ્ધારની વૃત્તિમાં ષટસ્થાનકના યંત્રની સ્થાપના દીઠી તે ક્ષમાયેં ઉપલક્ષિત જે દશવિધધર્મ તેણે કરી વિશેષે જયવંતા એવાં જિનકે૦ શ્રુતકેવલી અવધિજિન મનઃપર્યવજિન જે સુધર્મા સ્વામી તેના વચણકે૦ વર્ત્તમાન આગમ તેથી ઉત્તમ સાધુ સાધ્વીઓને ફરસનરૂપે તથા ઉત્તમ શ્રાવક શ્રાવિકાને શ્રદ્ધા મનોરથ રૂપેં સંયમશ્રેણી ચિત્તમાં પેઠી એટલે પંડિતશ્રી ક્ષમાવિજયગણિ શિષ્યરત્ન પંડિતશ્રી જિનવિજયગણિ ના વચનથી મુનિ ઉત્તમવિજયના ચિત્તમાં યંત્રની સ્થાપના પેઠી એટલે સ્થિરપણેરહી ઇતિએ પણ સોચવું.

અવતરણઃ—પ્રથમ ઢાલવડે ષટસ્થાનક પરૂપણા કીધી બીજા ઢાલે તેના યંત્રની સ્થાપના કરતાં સ્થૂલબુદ્ધિને પણ સુખે સમજાય

તેમ કર્યું હવે એકાતરાદિક માર્ગણાયેં કોઈ પૂછે તેને સુખે કહી શકિયેં તે રીતે વીર પ્રભુની સ્તવના કરતા અધસ્તન સ્થાન પરૂપણાનો ઢાલ કહિયેં છે ઇતિ સંબંધ જાણવો ॥

ढाल त्रीजो एकवीसानी देशीनो.

आतम रामीरे । शिव विसरामी नित्यनमु ॥ प्रभुजी स्तवतांरे पाप पोताना निगमु । पटथानिकरे जे अहठाण परूपणा ॥ सुणो सयणारे वयणा कलपनी भाष्यना ॥१॥ त्रूटकः— आदि असंख अंस वृद्धिथी कहो । भाग अनंत अंस केटलां ॥ हेठथानिक एम पूछत । कइयें कंडक जे-

तलां ॥ भाग संख्या तह गुण संख्या-
तें । असंख अनंतह गुण वली ॥
तस प्रथमथी कहे अथ अनंतर ॥
कंडक माने केवली ॥ २ ॥ इत्यनं-
तरमार्गणा ॥

અર્થઃ—શુદ્ધ નિર્મલ નિકલંક આત્મ-
સ્વભાવ રમણશીલ નિરૂપદ્રવ્યસ્થાન ક્ષેત્રથી
ઉર્ધ્વ લોકાગ્રભાવથી નિરાવરણાવસ્થા તેને વિષે
વિસરામી એવાં શ્રી વીરપ્રભુને નિત્ય સદા
નમસ્કાર કરૂં એ પ્રભુને સ્તવતાં અનેક ભવો
પાર્જિત પોતાના કર્યાં ખીરનીરની પરે અ-
ભેદ રહ્યાં જે પાપકર્મ તેને નિગમુ કેં૦
ગમાવું. પ્રભોર્નમસ્કાર સ્તુતિફલ મેતદેવ સંયમ
ષટ સ્થાનકને વિષે જે અનંતર એકાંતરાદિક
અહઠાણ પરૂપણાછે તેહિસમ્યકદ્દષ્ટી ઉત્તમ

સજ્જનો તમે સાંભલો એ વચન શ્રી બૃહત્ક-
લ્પના ભાષ્યના છે. ॥ ૧ ॥

હે ઉત્તમ જીવો તમે કહો કે અસંખ્યાત ભાગ વૃદ્ધિના પ્રથમ સયમ સ્થાનકથી અનંત ભાગ વૃદ્ધિના હેઠલા સયમ સ્થાનક કેટલા ગયા એમ કોઈ પૂછે તેને ઉત્તર જે અનંત ભાગ વૃદ્ધિના હેઠલા સ્થાનક એક કડક જેટલા ગયા છે કેમકે અનત ભાગ વૃદ્ધિ કડક પૂરૂં થયુ તેને અનત રેજ અસંખ્ય ભાગ વૃદ્ધિનું પ્રથમ સ્થાનક થયું છે તે માટેજ એમ કેહુ તેમજ સખ્યાત ભાગ વૃદ્ધિના પ્રથમ સયમ સ્થાનકથી અસખ્ય ભાગ વૃદ્ધિના હેઠલા સયમ સ્વાનક કેટલા ગયા તથા સખ્યાત ગુણ વૃદ્ધિના પ્રથમ સ્થાનથી સખ્યાત ભાગ વૃદ્ધિના હેઠલા સ્થાનક તથા અસખ્યાત ગુણ વૃદ્ધિના પ્રથમ સ્થાનકથી સખ્યાત ગુણ વૃ

દ્ધિના હેઠલા સ્થાનક વલી અનંત ગુણ વૃદ્ધિના પ્રથમ સ્થાનકથી હેઠલા અસંખ્યાતગુણ વૃદ્ધિના સ્થાનક કેટલા ગયાં એ રીતે કોઈ પૂછે તે વારે સર્વત્ર હેઠલના આંતરા રહીત માર્ગણાયેં કંડક પ્રમાણે સંયમ સ્થાનક કેવલી કહે યદુક્તં પંચ સંગ્રહે સ૦વાસિં વુઢ્ઢિણં કંડક મેતા અનંતરા વુઢ્ઢિ ॥ ઈત્યનંતર માર્ગણા. ॥ ૨ ॥

एकांतररे मार्गणा सुणो सवि संतरे ॥ भाग संख्यातेरे मूल थानकथी तंतरे ॥ हेठे थानिकरे भाग अनंतना भाषीयें । एककंडकरे कंडक वर्गते दाषीयें ॥ ३ ॥ त्रूटक ॥ दाषीयें गुण संख्यातथी वली ॥ असंख अ-

नंत गुणथी तथा ॥ पढम ठाणथी एक अंतर ॥ कंडक वर्ग कंडक यथा ॥ इति एकांतर मार्गणा ॥ एक अंतर मार्गणा कही ॥ सुणो द्यंतर मार्गणा ॥ संख्यात गुणथी हेठथानक अनंत भागना सुभमना ॥४॥

અર્થ—હવે એકાતર માર્ગણા કહે છે તે હે સર્વ સત જનો ઉત્તમ પુરૂષો તમે સાભલો કે એકાતર માર્ગણા તે શુ જે એક વૃદ્ધિ વિચમા પડતી મૂકીને પૃચ્છાકરવી તે એકાતર માર્ગણા કહેવાય તે આવી રીતે જે સંખ્યાત ભાગ વૃદ્ધિના મૂલકે૦ પ્રથમ સ્થાનકથી હેઠલ અસંખ્યાતભાગવૃદ્ધિના જે સ્થાનકે ગયા તેની પૃચ્છાન કરવી અને તેને

હેઠલ વલી જે અનંત ભાગ વૃદ્ધિના સ્થાનક ગયાં છે તે પૂછવા એમ કોઇક એકાંતરે પૂછે તે વારે એમ કહિયે જે એક કંટક અને કંડક વર્ગ પ્રમાણ જેમાં હેઠલ અસંખ્યાત ભાગ વૃદ્ધિના સ્થાનક કંડકમાત્ર ગયાં છે તેમાં એકેકા અસંખ્યાત ભાગ વૃદ્ધિ સ્થાનકને હેઠલ એકેક અનંત ભાગ વૃદ્ધિનું કંડક ગયું છે અને અસંખ્યાત ભાગ વૃદ્ધિના સ્થાનક કંડક માત્ર છે માટે કંડક કંડક સાથે ગુણાકાર કરિયે એટલે કંડક વર્ગ થાય તદ્ગુણો વર્ગ ઇતિવચનાત્ અને અસંખ્ય ભાગ વૃદ્ધિ ઉપરે અનંત ભાગ વૃદ્ધિનું એક કંડક થયું છે તે માટે એક તો કંડક વર્ગ અને તેના ઉપર વલી એક કંડક પ્રમાણ એટલા અનંત ભાગ વૃદ્ધિના સ્થાનક ગયાં છે એમ કહેવું.॥૩॥

તેમજ વલી સંખ્યાત ગુણ વૃદ્ધિના પ્રથમ સ્થાનકથી હેઠે સંખ્યાત ભાગ વૃદ્ધિના સ્થા-

નક ગયા તે મુકીને અસખ્યાત ભાગ વૃદ્ધિના સ્થાનક પૂછવા તથા અસખ્યાત ગુણ વૃદ્ધિના પ્રથમ સ્થાનકથી હેઠલ સખ્યાત ગુણ વૃદ્ધિના સ્થાનક ગયા તે મુકીને સખ્યાત ' ભાગ વૃદ્ધિના સ્થાનક પૂછવા તેમજ વલી અનંતગુણ વૃદ્ધિના પ્રથમ સ્થાનકથી હેઠલ અસંખ્યાત ગુણ વૃદ્ધિના જે સ્થાનક ગયા તે પડતા મૂકીને સખ્યાતગુણ વૃદ્ધિના સ્થાકન એકાતર માર્ગણાયે કેટલા પામીયે એમ કોઈ પુછે તેને એવુ ઉત્તર આપિયે જે કડક ગર્વ અને ઉપર એક કડક જેમ પુર્વે કહ્યા છે તેમ કહેવા ઇતિ એકાતર માર્ગણા યદુક્ત પચ સગ્રહે એગતરાઉ વુદ્ધિ ॥ વગ્ગો કડગ્સ કડચ ઇતિ એ રીતે એકાતર માર્ગણા કહી હવે દયતર માર્ગણા સાભલો જે બે વૃદ્ધિ વચમા મૂકીને પૂછીયે તે દયંતર માર્ગણા કહિયેં તે આવી રીતેં કે સંખ્યાત ગુણ વૃદ્ધિના પ્રથમ સ્થાન-

કેથી અનંત ભાગ વૃદ્ધિના સ્થાનક કેટલાં ગયાં એમ પૂછવાથી હે શુભમના તે કહિયે છે. ॥૪॥

कंडक घनरे, कंडक वर्ग दु, गुणो। करो। एक कंडकरे तस संख्या मनमां धरो ॥ दुग अंतररे असंख्य अनंत गुणथी लह्यां। अध स्थानकरे पूरव परें जाणो कह्यां ॥ ५ ॥ इति द्विकां तरमार्गणा त्रूटकः—त्रिकें अंतर कोई पूछे ॥ आदि असंख्य गुण वृद्धिथी ॥ हेठें भाग अनंत केरां ॥ ठाण कहो गुरु वयणथी ॥ कंडक वर्गनुं वर्ग कीजे ॥ कंडक घन त्रिक

उपरें ॥ कंडक वर्ग त्रिक एक कंडक ॥ होए ते मनमां धरे ॥ ६ ॥

અર્થઃ—કડક ઘન એક અને કડક વર્ગ બે તથા તે ઉપર એક કડક એટલા સ્થાનક પામીયે એ સર્વ ભેલા કરતા કેટલી સખ્યા થાય તે મનમા ધરો કે૦ ધારણા કરો તેજ વિવરીને કહે છે ઈહા પહેલા તો સંખ્યાત ગુણ વૃદ્ધિના પ્રથમ સ્થાનકથી હેઠલા સ-ખ્યાત ભાગ વૃદ્ધિના એકેક સ્થાનકને હેઠલ પ્રત્યેકે એકેક કડકાધિક કડક વર્ગ એટલે એક કંડક વર્ગ અને એક કડક તે અનત ભાગ વૃદ્ધિના સ્થાનકનું પામિયે.

અને સંખ્યાત ભાગ વૃદ્ધિ સ્થાનક કડક પ્રમાણ છે માટે કડક વર્ગ જેવારે એક કડક સાથે ગુણિયે તેવારે કંડક ઘન થાય

અને એક કંડક છે તે કંડક સાથે ગુણિયે તેવારે કંડક વર્ગ થાય અને સંખ્યાત ભાગ વૃદ્ધિ સ્થાનકને હેઠલે કંડક વર્ગ અને એક કંડક પામિયે એ સર્વ ભેલા કરતાં સૂત્રોક્ત પ્રમાણ થાય.

એ રીતે આગળ પણ દુગઅંતર માર્ગ- ણાયે અસંખ્યાત ગુણ વૃદ્ધિના પ્રથમ સ્થાનકે થો તથા અનંત ગુણ વૃદ્ધિના પ્રથમ સ્થાનકથી યથાક્રમેં હેઠલી અસંખ્યાત ભાગ વૃદ્ધિના તથા સંખ્યાત ભાગ વૃદ્ધિના સંયમ સ્થાનકે પૂર્વે જેમ કહ્યાં છે તેમ જાણો યદુક્તં પંચ સંગ્ર- હે કંડં કંડસ્સ ઘનો વગ્ગો દુગુણો દુગંતરા એઉ ॥ ૬ ॥ ઇતિ દ્વિકાંતર માર્ગણા.

હવે ત્રિકાંતર માર્ગણાયે એટલે ત્રણ વૃદ્ધિ વિચમાં મુકાને કોઇ પૂછે કે પ્રથમ જે સંખ્યગુણ વૃદ્ધિનું સ્થાનક તેથી હેઠલા

અનંત ભાગ વૃદ્ધિના સ્થાનક કેટલા ગયા તે સુવિહિત ગીતારથ ગુરુના વચન જાણ્યા હોય તો કહો એક કડક વર્ગ વર્ગ એટલે જેમ અસત્ કલ્પનાયે ચાર આંકને કડકની સ્થાપના કરિયે તેનો વર્ગ કરતા ચાર ચોક સોલ થાય વલી તેનો વર્ગ કરતા બશોને છપન્ન થાય તે વર્ગ વર્ગ કહિયે એ રીતે અસંખ્યાતનો સમજવો કેમકે એક કડકમા અસંખ્યાતા સ્થાનક છે માટે હવે એ એકતો કડક વર્ગ વર્ગ તથા તેના ઉપર વલી કડક ઘન ત્રણ તથા વલી કડક વર્ગ ત્રણ અને વલી ઉપર એક કડક હોય તે સર્વ ઉત્તમ શ્રદ્ધા સહીત મનમા રાખે.

એ સંખ્યા શી રીતે જાણીયે તે રીત કહે છે પ્રથમ અસંખ્યગુણ વૃદ્ધિના સ્થાનકથી હેઠલે સંખ્યાતગુણ વૃદ્ધિના સ્થાનક કડક પ્રમાણ ગયા છે તિહા એકેકા સ્થાનકને હેઠલે

પ્રત્યેકે અનંતભાગ વૃદ્ધિના સ્થાનક એક કંડક ઘન તથા કંડકવર્ગબે તથા એક કંડક પ્રમાણ પામિયેં તે માટે એ સર્વને કંડક ગુણાકરીને સરવાલો કરી રાખિયેં પછી સંખ્યાતગુણ વૃદ્ધિ કંડકને ઉપર એક કંડકઘન કંડકવર્ગબે અને એક કંડક છે તે પૂર્વલી રાસીમાં પક્ષેપીયેં તેવારેં યથોક્ત માન થાય યદુક્તં પંચસંગ્રહે કંડસ્સ વગ્ગ વગ્ગો ઘણ વગ્ગ તિગુણિયા કંડમ્ ઇતિ ॥ ૬ ॥

छठी वृद्धिनारे पहेला ठाणथी हेठलां ॥ बीय वृद्धिनारे थानक पूरव जेतलां ॥ इति त्रिकांतर मार्गणा, चउरंतररे अनंत गुणा दिम ठाणथी ॥ हेठ थानकरे भाग अनंत ना मानथी ॥ ७ ॥

त्रूटकः—परिमाणथी ते अष्ट कंडक वर्गवर्गा षट घना ॥ चार कंडक वर्ग आगल । एक कंडक सोभना ॥ इति चतुरं तर मार्गणा, पर्यवसाननी मार्गणा ते । षट थानिक पूरे करे ॥ मूलथी संयम ठाण फरसी ॥ वीर विभू केवल वरे ॥ ८ ॥

અર્થ—એમ છઠી અનંતગુણ વૃદ્ધિના પહેલા સ્થાનકથી હેઠલિ બીજી વૃદ્ધિના એટલે અસંખ્યાત ભાગ વૃદ્ધિના સ્થાનક પણ પૂર્વે જેટલા ત્રિકાંતર વૃદ્ધિના અનંતર કહ્યા છે તેટલા જાણવા ઇતિ ત્રિકાંતર માર્ગણા

હવે ચતુરંતર માર્ગણાને વિષે અનંત-

ગુણ વૃદ્ધિના આદિમકે૦ પ્રથમ સ્થાનકથી
હેઠલા સ્થાનક અનંતભાગ વૃદ્ધિના પ્રમાણથી
કેટલા છે ॥૭॥ તે પરિમાણથી આઠ કંડક વર્ગ
વર્ગ તથા છ કંડકઘન તથા ચાર કંડક વર્ગ
તથા ઉપરેં એક કંડક શોભન સંયમ પરિણામ
રૂપ છે એ કેવી રીતે જાણીયેં તે સમજાવે છે

અનંતગુણ વૃદ્ધિના પ્રથમ સ્થાનકથી
હેઠલિ અસંખ્ય ગુણ વૃદ્ધિના સ્થાનક કંડક
પ્રમાણ ગયાં છે અને અસંખ્ય ગુણના એકેક
સ્થાનકને હેઠલ અનંતભાગ વૃદ્ધિના સ્થાનક
કંડક વર્ગ વર્ગ એક તથા કંડકઘન ત્રણ
અને કંડક વર્ગ ત્રણ વલી કંડક એક પ્રમાણ
પામિયેં તે માટે એ સર્વને કંડકગુણા કરિયેં
જે થાય તે સરવાલો કરી રાખિયેં તથા
અસંખ્યાતગુણ વૃદ્ધિને ઉપરેં કંડક વર્ગવર્ગ
એક કંડકઘન ત્રણ કંડકવર્ગ ત્રણ કંડક
એક પામિયેં છે તે પૂર્વલી રાસીમાં પ્રક્ષેપિયેં

તે વારે યથોક્ત માન થાય યદુક્ત પંચ સગ્રહે, અડ કડ વગ્ગ વગ્ગા, ચત્તારિ વગ્ગા છે ઘનાકંડ ॥ ચઉ, અંતર વુદ્ધીએ, હેઠઠાણુ પરુવણાએ ॥ ૧ ॥ ઇતિ, કડક સંજ્ઞા ચાર તેને તદ્‌ગુણો વર્ગ સોલ વર્ગ. કંડકગુણો ઘન ચોસઠ વર્ગ વર્ગો બસો છપન ઘન કંડક ગુણોપિ બસો છપન યથોચિત સ્થાનકે સંખ્યા કરજો ઇતિ ચતુરંતર માર્ગણા

હવે પર્યવશાનની માર્ગણા કહે છે પર્યન્શાન જે છેહડો તેની માર્ગણા તે પટ સ્થાનક પૂરે થયે જાણવી એ મૂલથીકેં ધુરથી સંયમસ્થાન ફરસીને જગતનું નાયક જે શ્રીવીરપરમેશ્વર તે કેવલજ્ઞાન વર્યો ॥ ૮ ॥

उपर मध्यथीरे संयम थानिक जे भजे ॥ ते नियमारे हेठ उतरी पुन-

रपी सजे ॥ अंतर्मुहूर्त्तनीरे वुद्धी हानि ठाणमां ॥ होय मुनिनेरे ज्ञानी देखे ज्ञानमां ॥ ९ ॥ त्रुटक ॥ अप्पवहुअ विचार करतां अनंत गुणना थोडला ॥ तेहथी गुणह असंख्य केरा । कं-कड वर्ग कंडक भलां ० पच्छानुपूर्वि वुद्धि उत्तर एहन्यायें भावीयें ॥ क्ष-माविजय जिन चरण उत्तम भक्ति मावें पावीये ॥ १० ॥

અર્થઃ—જે ઉપરના સંયમસ્થાનક તથા વચમાંના સંયમસ્થાનક અનુક્રમે ફરસે તે નિયમા હેઠ઼ ઉતરીને કાલાંતરે પુનરપીકે૦ વલી સજેકે૦ સાવધાન થાય સંયમશ્રેણી

પામે યદુક્તં અંતોમુહુત્ત મિત્ત પિ, ફાસિયં હુક્ક જેહિ સમત્ત ॥ તેસિંઅવઠ્ઠ પુગ્ગલ, પરિયટ્ટો ચેવ સંસારો ॥ ૧ ॥ જો એમ છે તો સયમ પામ્યાનુ સું કહેવુ ઇતિ અંતર-મુહુર્ત્ત કાલપ્રમાણે અધસ્તન સંયમસ્થાન થકી ઉપરિ સ્તન સંયમસ્થાનારોહરૂપ વૃદ્ધિ તથા ઉપર સ્તન સ્થાનથકી અધસ્તન સ્થાનાવરોહરૂપ હાણી મુનિને થાય તે હે જ્ઞાનવાન વીત-પરમેશ્વર તમે દેખો છો યદુક્તં કલ્પભાષ્યે ગાથાદ્વય એય ચરિત્ત સેઢિ, પડિવઝઇ હેઠ કોઇ ઉવરિંવા ॥ જે હેઠા પવડિઝઇ, સિઝઇ ણિયમા જહા ભરહો ॥ ૧ મઝેવા ઉવરિંવા, નિયમા ગમણુ તુ હેઠિમં ઠાણુ ॥ અંતો મુહુત્ત વુદ્ધી, હાણુવિ તહેવ નાયવ્વા ॥૨॥ ઇતિ ॥૯॥

હવે અલ્પબહુત્વનો વિચાર કરતા અનંતગુણ વૃદ્ધિના સંયમસ્થાનક સર્વથકી થોડા જાણવા તે થકી અસખ્યાતગુણ વૃદ્ધિના સં-

યમસ્થાનક કંડક વર્ગ અને એક કંડક જેટલાં એટલે પરમાર્થે અસંખ્યાતગુણા પશ્ચાનુપુર્વીયે વૃદ્ધિ આગલે આગલે એરી તે ભાં વિયે સર્વત્ર અનંતર વૃદ્ધિસ્થાનક અસંખ્યાતગુણા ઈતિભાવ ક્ષમાનાવિજય એવાં જિનકે૦ વીરપરમેશ્વર તેના ચરણકમલની ઉત્તમવિધિ યુક્ત ભક્તિના મહિમા થકી સંયમશ્રેણી પામિયે ભવનિસ્તાર થઈયે સંસાર સમુદ્રનો પાર પામિયે ॥ ૧૦ ॥

ढाल चोथो रागधनाश्री कलसरुप

गायो गायोरे भलें वीर जगतगुरू गायो ॥ ए आंकणी छे.

संयमश्रेणी थानक षटविधठवणा यंत्र वनायो ॥ अहठाण परुपण क-

रतां ॥ मनुज जनम फल पायो रे ॥ भलें० ॥ १ ॥

અર્થ—જગતના ગુરૂ જગતના પૂજ્ય એવા શ્રી મહાવીર પ્રભુ તેને ભલે ભાવેકરી ગાયો સ્તવ્યો સયમ શ્રેણીના સ્તવનની સંગ્રહ ગાથા કહેતા (કહીને) કલસ રચીયે છે પ્રથમ ઢાલે સયમ શ્રેણીના ષટસ્થાન પરૂપણા બીજા ઢાલે યંત્ર સ્થાપના ત્રીજા ઢાલે અહ- ઠાણુ પરૂપણા કરતા મનુષ્ય જન્મનુ ફલ પામ્યુ ॥ ૧ ॥

शुद्ध निरंजन अलख अगोचर ॥ एहिज साध्य सुहायो ॥ ज्ञानक्रिया अवलंबी फरसो । अनुभव सिद्धि उपायोरे ॥ भले० ॥ २ ॥

અર્થઃ—શુદ્ધ નિરાવરણ નિરંજન રાગદ્વેષ અંજન રહિત અલખ લિપિ અગોચર તે જે સ્વરૂપ ચર્મ ચક્ષુએ જણાય નહિ એવો પરમાત્મા સ્વરૂપાનંદ વિલાસી પરભાવ ઉદાસી તેહીજ અમારો સ્વરૂપ અમને સાધ્યપણે સુહાયો એટલે રૂચ્યો હે આત્મન્ હે જીવ સમ્યક્‌જ્ઞાન સમ્યક્‌ક્રિયા અવલંબીને ફરસો પામો જે સ્વરૂપના વિચારમાં મન વિસરામ પામે અને અપૂર્વ રસ સ્વાદ ઉપજે એવો જે અનુભવ તે સિદ્ધિનું ઉપાય છે યદુક્તં નાણ કિરિયાહિંમુક્ખો ઇતિવચનાત્ ॥ ૨ ॥

श्रद्धा ज्ञान लह्यांछे तोपण । जो-नवि जाय पमायो ॥ वंध्य तरु उपमते पामे । संयमठाणजो नायो रे ॥ भले० ॥ ३ ॥

અર્થ.—સંયમ શ્રેણીનુ મહીમા કહિયે છે જે સમ્યક્ દર્શન સમ્યક્જ્ઞાન પામ્યા છે તો પણ જો પ્રમાદ સ્થાનક નજાય તો વાઝીયા ફુલ રહિત વૃક્ષની ઉપમા પામે કેમ કે જો સંયમસ્થાનક ન આવ્યો તો રાજા શ્રેણિક તથા સત્યકી વિદ્યાધરની પરે જાણવુ

जम खर चंदन भारनो वाहक । भारनो भागी कहायो ॥ तिणिपरें ज्ञानी संयम हीनो । सदगतीयें नवि जायोरे ॥ भले० ॥ ४ ॥

અર્થ —જેમ ગર્દભ બાવનાચંદનનો ભાર-વહેતોથકો ભારનો ભજનાર કહેવાય પણ સુગંધનો ભોગી ન કહેવાય તેમ જ્ઞાનીપુરૂષ ચારિત્રવિના જ્ઞાનનો ભોગી થાય પણ સદ્ગતીજે મોક્ષ તિહાં જાય નહી યદુક્તં જહાખરો

ચંદન ભારવાહી ॥ ભારસ્સ ભાગી નહુચંદનસ્સ ॥ એવંખુનાણી ચરણેણહીણો નાણસ્સભાગી નહુ સુગ્ગઇએ. ॥ ૧ ॥

आश्रव त्यागें संवर परिणति । अविरति सरव उठायो ॥ स्वस्वरूपमां थिरता तेहिज । संयम शुद्ध ठहरायोरे ॥ भलें० ॥ ५ ॥

અર્થઃ—સંયમનું મૂલસ્વરૂપ કહિયે છે પંચાશ્રવને ત્યાગે પંચસંવર પરણતિરૂપ મનકરણાનિયમુચ્છ જીવવહો એ બાર અવ્રતિને અભાવેં પોતાના સ્વરૂપમાં સ્થિરતા રમણ નિશ્ચલાનુભવ તેહીજ વીતરાગેં આગમમાં શુદ્ધસંયમ ઠહરાયો. ॥ ૫ ॥

अनुभव सुरतरु फलने काजे ।

कीजें आतम अमायो ॥ सनमुखभावें जेह प्रवर्त्तन । तेह निवर्त्त निदायोरे ॥ भलें० ॥ ६ ॥

અથ —અનુભવરૂપજે કલ્પવૃક્ષ તેનુ ફલ જે મોક્ષ તે પામવાને અર્થે આત્મા માયા રહીત કરવો અથવા અનુભવ સુખી જીવન મુક્ત છે મોક્ષને સન્મુખ ભાવેં પ્રભુ માર્ગાનુસારી જે પ્રવર્ત્તન તેહિજ નિવર્ત્તનનુ ઉ-પાય છે યદુક્ત નિર્જિત મદમદનાના વાક્કાયમનો વિકાર રહિતાના ॥ વિનિવૃત્ત પરાશાના મેહૈવ મોક્ષસુવિહિતાના ॥ ૧ ॥ ૬ ॥

ज्ञानक्रिया दुग चक्रे शोभित ॥ संयम रथ सुखदायो ॥ अनुभव धोरी युत शिव नगरे ॥ जाता विघ्नथायोरे ॥ भलें० ॥ ७ ॥

અર્થઃ—જ્ઞાન અને ક્રિયારૂપ બે ચક્કે૦ પઇડા તેણે કરી શોભિત એવો સંયમ રૂપ રથ તે સુખદાઇ છે અને અનુભવરૂપ ધોરિયે જોડયો તદારૂઢ આત્મા ચિદાનંદને શિવનગરિયે જાતાં નિરાવરણ થાતાં વિઘ્ન અંતરાય કોઇ ન થાય ॥ ૭ ॥

रायसिद्धारथ वंश विभूषण । तिसलाराणीजायो ॥ अजअजरामर सहेजानंदी । ध्यान भुवनमां ध्यायोरे ॥ भलें० ॥ ८ ॥

અર્થઃ—ઉદિતોદિત રાજા સિદ્ધાર્થના વંશનો શોભાવનારો શીલ સમ્યકત્વ દેસ વિરતિ એવી ત્રિસલારાણીયે જન્મ્યો અપુનરાવૃત્તિયે યોનિનિર્ગમ એટલે હવે સિદ્ધાવસ્થા કહી છે જન્મરહિત જરામરણ રહીત સહેજ

અકૃતૃમ સ્વસ્વરૂપાનંદી એવો વીર પરમાત્મા તેને ધ્યાનરૂપ ભાવ ધરમા ધ્યાવ્યો ચિંતવ્યો ॥૮॥

संवत नंद निधि मुनि चंद्रे । देव दयाकर पायो ॥ प्रथम जिनेसर पारण दिवशे ॥ स्तवना कलश चढायोरे ॥ भलें० ॥ ९ ॥

અર્થઃ—નવનંદ નવનિદ્ધિ સાતમુનિ એકચંદ્ર અંકાનાવામતોગતીતિ વચનાત્ એટલે સંવત્ ૧૭૯૯ નાવરસમાં દેવદયાનો કરનાર પામ્યો અથવા તેનું શાસન પામ્યો જે દિવસે પ્રથમ જિનેશ્વર શ્રી આદિનાથેં વરસીતપનો પારણો ઈક્ષુરસે શ્રેયાંસને હાથે કીધો તે દિવસેં સયમશ્રેણી ગર્ભિત શ્રીવીરપ્રભુનું સ્તવનરૂપ પ્રાસાદને વિષે કલસ ચઢાવ્યો એટલે સંપૂર્ણ કીધો ॥ ૯ ॥

विजयदेवसुरीस पटोधर । विजय-
सिंह सवायो ॥ सत्याशिष्याधर कपू
रविजयबुध । क्षमाविजय पुण्य पा-
योरे ॥ भलें० ॥ १० ॥

હવે ગુરૂ પરંપરા લિખીયેં છે શ્રીવીર-
સ્વામિના પાંચમાં ગણધર શ્રીસુધર્મસ્વામિ
પહેલા પટ્ટોધર થયા તિહાંથી આઠ પાઠ લગે
નિગ્રંથ બિરૂદધારી ૧ નવમેં પાટે સૂરિમંત્ર
કોટી વાર જપ્યા માટે કોટી બિરૂદધારી ૨
પન્નરમે પાટેં ચંદ્રસૂરિ ચંદ્રવત્ ધનુસોમ્ય
થયા માટે ચંદ્રગચ્છા કહેવાણા ૩ સોલમેં
પાટે સાંમત ભદ્રાચાર્ય ઘણુ નિર્મમ થયા
વનવાસેં રહ્યા માટે વનવાસી બિરૂદ થયું ૪
છત્રીસમેં પાટે સર્વ દેવસૂરિ થયા વડતલેં
આચાર્યપદ આપ્યું અને તેના શિષ્ય જે થયા

તે વડસાખાની પરે પરિવારે વધ્યા ને વલી ઘણા ગુણે વધ્યા માટે વડગચ્છ કહેવાણા ૫ ચુમાલીસમે પાટે આંબિલ વર્દ્ધમાન તપ કીધા માટે રાણાજીયે તપાબિરૂદ દીધો તિહાથી તપા કહેવાણા ૬ અનુક્રમે બાસઠમે પાટે આદેય નામ ધારી શ્રીવિજયદેવસૂરિ તત્પટ પ્રભાવક સવાઇ વિજયસિંહસૂરિ તેની સાચી ગ્રહણા શિક્ષા આ સેવના શિષ્યાધારી અર્થાત્ પંડિત સત્યવિજય ગણિ ગચ્છનાયકની આજ્ઞા માગી ક્રિયા ઉદ્ધાર કીધો શ્રીઆનંદઘન સાથે વનવાસ રહ્યા અનેક તપ કીધા અનુક્રમે વૃદ્ધાવસ્થા જાણીને અનહિલપુર પાટણમાં રહેતા ધર્મોપદેશ દેતાં તેમના શિષ્ય પંડિત કપૂરવિજય અને પંડિત કુશલવિજય થયા તેમા શ્રીકપૂરવિજય ગણિતો અરિહંત પ્રતિમા પ્રતિષ્ઠાદિક અનેક ધર્મકાર્યકારી પ્રભાવક થયા દેશ નગર પુર પાટણે વિહાર કરતા કરતા રહ્યા તેમના શિષ્ય પંડિત વૃદ્ધ વિજય ગણી

તથા પંડિત ક્ષમાવિજય ગણી થયા તેમાં પંડિત ક્ષમાવિજયગણિ તો દેશના આપવાના ગુણે કરી અનેક ભવ્ય જીવોને ઉપકારી પવિત્ર ચરણ કમલ ધારી થયા ॥ ૧૦ ॥

सूरतमांहे सूरय मंडण। श्रीजिन विजय पसायो ॥ विजयदयासूरिराजे जगपति ॥ उत्तमविजय मल्हायोरे ॥ भलें० ॥ ११ ॥

અર્થઃ—શ્રી શ્રીસૂરતબંદરે સૂર્યમંડણ પાર્શ્વનાથની સ્મૃતિ પ્રણુતિ મહિમાયે તથા પંડિત શ્રીક્ષમાંવિજયગણિ શિષ્ય રત્ન સંપ્રતિ વિદ્યમાન ચિરંજીવી પરમોપકારી પંડિતશ્રી જિનવિજય ગણિયે ઉદ્યમ કરી મને પ્રથમ અભ્યાસ કરાવ્યો તે જેમ માતા પિતા પુત્રને પ્રથમ પગ માંડવા તથા બોલવા શિખવે તેમ

ગુર્વાદિકે મને ઉપકાર કીધો એ શ્રી તપાગચ્છ-
ધિરાજ ભટ્ટારક શ્રી વિજયદયા સૂરિશ્વરના
રાજમા જગતપતિ જગત્ પરમેશ્વર શ્રીવીર
સ્વામિને મુનિ ઉત્તમવિજયે મલ્હાચો ગાચો
સ્તવનાગોચર કીધો એ સ્તવન અમચ્છરી
ગીતાર્થ પુરૂષો તમે સોધજો ભણાવજો ભણુતા
ભણાવતા સંયમ શ્રેણીયે ભૂષિત થઈ
સહેજાન દપામજો ॥ ૧૧ ॥

इतिश्री संयमश्रेणी गर्भित वीरविभो स्तवनं समाप्तं श्रीरस्तु.

॥ श्री जिनेंद्राय नमः ॥

अथ श्री लोकनालद्वात्रिंशिका बालावबोध सहित प्रारंभः

प्रथम बालावबोध कर्त्तानुं मंगलाचरणः—

श्रीमदाप्तं प्रणम्यादौ । जगत स्थिति दर्शकं ॥ वक्ष्ये लोक विचारस्य । वार्त्तिकं समयानु गम् ॥१॥

વ્યાખ્યાઃ—જગતની સ્થિતિના દેખાડનારા એટલે જગતની યથાર્થ સ્વરૂપ સ્થિતિના દેખાડનારા શ્રીવીતરાગ ભગવાનને પ્રણામ કરીને એટલે નમસ્કાર કરીને આ લોકના વિચારનું વાર્ત્તિક સમયાનુસારે એટલે આગ-

મોક્ત પ્રકારે હુ કહું છું ॥ ૧ ॥

जिण दंसणं विणाजं । लोअं पूरंति जम्म मरणेहिं ॥ भमइ जिओणंत भवे । तस्स सरूवं किमवि वुच्छं ॥ १ ॥

વ્યાખ્યાઃ—'જિણ'–જિન એટલે શ્રી તીર્થંકરદેવ, તત્પ્રણિત 'દંસણ'–દર્શન એટલે સમ્યક્ત્વ, દર્શન અથવા તીર્થંકરનુ દર્શન તે મનોવચન તથા કાય એ ત્રિકરણ ભાવે કરી જે દેખવુ તે છે 'વિણ'–તે વિના 'જ' –જે 'જમ્મમરણેહિ'–જન્મ તથા મરણે કરી 'લોઅ'–લોક એટલે સામાન્યપણે ચૌદ રાજ લોકને 'પૂરંતિ'–પૂરતો થકો 'અણુત ભવે'–અનંત ભવ પ્રતે 'જિઓ ભમઈ'– જીવ ભમે છે, 'તસ્સરૂવ'–તે લોકનું

સ્વરૂપ, આકાર; લાંબી, પહોલાઇ તથા જાડાઇ 'કિમવી'–કાંઇક સ્તોકમાત્ર 'વુચ્છં'–કહું છું. ॥ ૧ ॥

અવતરણ:—અનંત પ્રદેશ અલોકાકાશને વિષે સામાન્યપણે અલ્પ માત્ર લોકનો આકાર વખાણે છે:—

वइसाह ठाण ठिय पय । कडित्थ कर ग्रुग नरागिई लोगो ॥ उप्पत्ति नास धुअ गुण । धम्माइ छ दव्व पडिपुण्णो ॥ २ ॥

વ્યાખ્યા:—'વઇસાહ'–ખાઇઓ તેના 'ઠાણ'–વિલોવવાના સમયને વિષે 'ઠિય'–સ્થિત એટલે સ્થાપ્યા છે 'પય'–પદ એટલે બે ચરણ જેણે, વલી વિલોવતાં 'કડિ' ત્થ'–કટિસ્થ એટલે કટીને વિષે જે 'કર-

યુગ '–હસ્થ યુગલ એવો જે ' નરાગિઈ '– નરાકૃતિ એટલે મનુષ્યના જેવો જેનો આકાર છે, એવો લોક છે. તથા વિલોવવાના અધિકાર માટે નર શબ્દે કરી પ્રાયે સ્ત્રી જાણી લેવી સ્ત્રી જ્યારે છાસ વિલોવે છે, ત્યારે બે પગ મોકલા રાખે છે અને કટિ પ્રદેશને વિષે યથા બધ સકીર્ણ થાય તેની પેઠે લોક પણ હેઠલ પહોલો છે તથા ચઢતો મધ્ય ભાગને વિષે સ કીર્ણ છે વલી વિલોવતા બન્ને હાથ કટિ દેશમા રાખ્યામા આવે છે, ત્યારે બે કોણીના વચલા ભાગમા કટિ પ્રદેશથી હૃદય સુધી ચઢતો વિસ્તાર થાય છે. અને મસ્તક દિશી સકીર્ણ છે તેમ લોક પણ મધ્ય ભાગથી ઉપર ચઢતા પાચમા દેવ લોકસુધી વિસ્તાર પામેલો છે ત્યાથી વલી સકીર્ણ થાય છે તેમાટે વિલોવનારી સ્ત્રીના આકારનું દૃષ્ટાત કહ્યુ છે હવે એ લોકમા કયા કયા

પદાર્થો છે? તે કહે છેઃ—' ઉપ્પત્તિ '–ઉપજવું, ' નાસ '–નાશને પામવું, ' ધુઅ '–ધ્રુઅ એટલે નિશ્ચલપણું અથવા સ્થિતિ એ ' ગુણ, ગુણો જેને વિષે છે, એવા ' ધમ્મઈ'–ધર્માસ્તિકાયાદિક ' છદ્દવ્વ '–છ દ્રવ્ય એટલે પદાર્થ જેમાં ' પડિપુણ્ણો '–પરિપૂર્ણ ભર્યા છે. ધર્માસ્તિકાય, અધર્માસ્તિકાય, આકાશાસ્તિકાય; પુદ્ગલાસ્તિકાય જીવાસ્તિકાય તથા કાલ એ છ દ્રવ્ય જાણવાં ॥ ૨ ॥

અવતરણઃ—કેટલાએક પરદર્શની એમ કહે છે કે; લોક બ્રહ્માએ ઉત્પન્ન કર્યો છે, વિશ્નુ પાલના કરે છે, મહાદેવ સંહાર કરેછે, શેષનાગ કાછબો તથા કામ ધેનુ ધારણ કરી રહ્યાં છે; એમ કહે છે તેનું નિરાકરણ કરે છેઃ—

केणवि न कओ न धओ । ऽणाहारो नहठिओ सयं सिद्धो ॥ अह-

मुहं महमल्लग लघु, तदुवरि संपुड सरित्थो ॥ ३ ॥

વ્યાખ્યા —'કેણુવિ'–કોઈએ પણ 'નકઓ' આ લોક ઉત્પન્ન કર્યો નથી, ' નધઓ 'કોઈએ પણ ધર્યો નથી ' અણાહારો '–નિરાધાર છે. સર્વ પદાર્થ લોકને આધારે છે, ' નહઠિઓ '– એ લોક નભજે આકાશ તેને વિષે સ્થિત છે, ' સય સિદ્ધો '– તેથી સ્વય સિદ્ધ છે એ લોકનો આકાર પ્રકારાતરે કહે છે –' અહમુહ '–અધ મુખ એટલે ઊંધો કીધેલો જે મોટો ' મહમ લ્લગ '–મહત્ મલ્લક એટલે મોટો સરાવ, 'તદુવરિ'–તેની ઉપર 'લઘુ સંપુડ'–ન્હાના સરાવનો સંપુટ કર્યો હોય તેની ' સરિત્થો '–સદૃશ એટલે તેના સરખો. આ લોકનો આકાર છે ॥૩॥

पयतलि सग मज्झेगा । पण कुप्पंरि सिरतलेग रज्जु पिहु ॥ सो

चउदस रज्जुञ्चो । माघवइ तलाउजा सिद्धी ॥ ४ ॥

વ્યાખ્યાઃ—'પયતલિ'–પહતલે એટલે પહેલાં જે વૈશાખ સ્થાન સ્થિત મનુષ્યને આકારે લોક કહ્યો; તે પગના તલિયાને ઠેકાણે ચારેદિક્ષિએ સાત રાજ પ્રમાણુ પોલો છે; અને મધ્ય ભાગ જે પુરૂષાકારને વિષે નાભિનું ઠામ છે, ત્યાંહાં એક રાજ પ્રમાણ ચારે દિશિએ પોલો છે. બન્ને હાથની કોણીના ઠામને વિષે પાંચ રાજ પ્રમાણુ પોલો છે. અને મસ્તકને ઠેકાણે એક રાજ પ્રમાણુ પોલો છે; વલી તે લોક હેઠલી માઘવતી સાતમી નરક પૃથ્વીના તલાથી ઉપર યાવત્ સિદ્ધ શિલાસુધી જોતાં ચોહદરાજ પ્રમાણુ આ લોક ઊંચો છે ॥ ૫ ॥

अवतरणः—हवे पहोलापनी स्थि-

ति कहे छेः—

सगरज्जु मघवइ तला । पएस
हाणीय महियले एगा ॥ तो वुढि
वंभजा पुण । पण हाणीजा सिवे
एगा ॥ ५ ॥

વ્યાખ્યા —માઘવતી જે સાતમી નરક પૃથ્વી, તેના તલાથી ચારે દિશિને વિષે એ લોક સાત રાજ પ્રમાણ પહોલો છે, ત્યાથી પ્રદેશની હાની કરતા ઉપર તિર્યગલોકની મહી તલને વિષે આવે ત્યારે ચારે દિશિને વિષે એક રાજ પ્રમાણ વિસ્તાર છે ત્યાથી વલી ઉપર જાતાં વૃદ્ધિ થાય છે, તે પાંચમો બ્રહ્મ નામે દેવલોક છે ત્યા ચારે દિશાએ પાચ રાજ પ્રમાણે મહોલો છે ત્યાથી વલી પ્રદેશ ઘટતા છે તે જ્યા સિદ્ધ શિલા છે ત્યા ચારે

દિક્ષિએ એક રાજ પ્રમાણ પહોલો છે. તથા હાણી વૃદ્ધિ જે છે તે તો પ્રદેશ માત્ર કહી છે. તો પૂર્ણ ખાંડુઆ કેમ માંડિયે છૈએ? ત્યાં એ વિશેષ છેઃ—જે બન્ને પાસે પ્રદેશની હાણી છે તોપણ ઉતરતાં તથા ચઢતાં બન્ને પાસાના બે ત્રિખૂણા લઈ, અવલા સવલા જોડી ખાંડુઆમાં ભેલીએ ત્યારે ખાંડુઆં પૂરાં થાય. એમ સર્વત્ર જાણવું. હવે વિસ્તારનો વિવરો લખીએ છૈએઃ–સાતમી નરક પૃથ્વી સાત રાજ પ્રમાણ, છઠી સાડા છ રાજ પ્રમાણ, પાંચમી છ રાજ પ્રમાણ, ચોથી પાંચ રાજ પ્રમાણ, ત્રીજી ચાર રાજ પ્રમાણ, બીજી અઢીરાજ પ્રમાણ તથા પહેલી નરક ધમ્મા નરક પૃથ્વી એક રાજ પ્રમાણ પહોલી છે. ચારે દિશિઓને વિષે એ વિસ્તાર છે. ઉર્ધ્વ-લોકનો વિસ્તાર આગલ કહીશું. એ માન લોકનાલ બત્રીશીને અનુસારે કહ્યું છે. ગ્રંથા-

તરને વિષે અન્ય પ્રકારે પણ દીઠામાં આવે છે. નિશ્ચયની વાર્ત્તાતો જ્ઞાની જાણે ॥ ૫ ॥

अवतरणः—हवे लोकनाल मांडवा नो उपाय कहेतां प्रथम त्रस नाडीनो विचार कहे छेः—

सगवन्न रेह तिरिअं । ठवसु पणुडं च रज्जु चउअंसे ॥ इग रज्जु विच्छरा यय । चउदस रज्जुच्च तसनाडी ॥ ६ ॥

વ્યાખ્યાઃ—સત્તાવન રેખા ચોડી સ્થાપીયે પછી પાંચ રેખા ઉભી માંડિયે એમ કરતાં ઉપજે ૨૩ ગુણા છપ્પન ખંડ થાય, ચોડી સત્તાવન રેખા છે. તે માટે તેના છપ્પન ખંડ

થાય છે. ઉભી પાંચ રેષા છે. તેના ત્રીછો ચાર ખાંડુઆ થાય, ચાર ખાંડુએ એક રાજ થાય, તથા એ ત્રસ નાડી પહોલાઇએ કરી એક રાજ પ્રમાણ, અને લાંબ પણે ચૌદરાજ પ્રમાણ જાણવી. ॥ ૬ ॥

અવતરણઃ—તથા લોકનો મધ્ય નાલ તે ત્રસ નાડી તેમાં બેંદ્રિયાદિક ત્રસ જીવ જન્મ મરણ પામે છે, માટે ત્રસનાડી કહેવાય છે. એ ત્રસનાડીની બહાર જે લોકોનો વિસ્તાર છે, ત્યાં સૂક્ષ્મ એકેંદ્રિય નિગોદ સર્વત્ર વ્યાપી રહ્યું છે. તે બાહારનો વિસ્તાર અધોલોકને વિષે કહ્યો હવે ઊર્ધ્વલોકને વિષે ખાંડુઆનો વિસ્તાર કહે છેઃ

उड्ढं तिरिअं चउरो । दुसु छ दुसु
अट्ठ दसय इक्किक्के ॥ बारस दोसु
सोलस । दोसुं वीसाय चउसु पुढो ॥७

વ્યાખ્યા—ઉર્ધ્વ લોકની શ્રેણીને વિષે
પ્રથમ રત્નપ્રભા નરકપૃથ્વી થકી ઉપર જે
આઠયાવીશ ખાડુઆની શ્રેણી છે તેમા લો-
કના મધ્યથી ઉપર પહેલી બે શ્રેણીને વિષે
ચાર ચાર ખાડુઆ ત્રસ નાડીનાજ છે પણ
ત્રસ નાડીથી બહાર નથી ત્યારપછી વલી
તેથી ઉપર બે શ્રેણીને વિષે છ છ ખાડુઆ
છે, એટલે ચાર ખાડુઆ ત્રસ નાડીના અને
એકેકો બન્ને પાસાનો ખાડુઓ લેખવતા છ
ખાડુઆ થાય. ત્યાર પછી ઉપર એક શ્રેણીને
વિષે આઠ ખાડુઆ છે તે બને ખાડુઆ બે
પાસે તેના ચાર ખાડુઆ અને ત્રસ નાડીના
ચાર ખાડુઆ એ આઠ ખાડુઆ છે વલી
તેની ઉપર એક શ્રેણીને વિષે દશ ખાડુઆ
છે, તે બન્ને પાસે ત્રણ ત્રણ છે, અને ત્રસ
નાડીના ચાર મલી દશ થાય છે. ત્યાર પછી
બે શ્રેણીને વિષે બાર બાર ખાડુઆ છે, ત્યારે

પછી બે શ્રેણીને વિષે શોલ શોલ ખાંડુઆ છે, તેમજ ચાર શ્રેણીને વિષે વીશ વીશ ખાંડુઆ છે. તે બધા પૃથક્ એટલે જુજુઆ છે. ॥૭॥

અવતરણઃ—એવી રીતે ઊર્ધ્વ લોકને વિષે પ્રદેશની વૃદ્ધિના ખાંડુઆ કહ્યા, એટલે અઠાવીશ શ્રેણીમાં ચૌદ શ્રેણી થઈ; હવે હાનીના ખાંડુઆ કહે છેઃ—

पुणरवि सोलस दोसुं। बारस दोसुं च तिसु दस तिसुठ ॥ छदुसु दुसु चउ खडुंअ। सव्वे चउरुत्तरा तिसया॥८

વ્યાખ્યાઃ—વલી પંદરમી તથા શોલમી એ બે શ્રેણીને વિષે શોલ શોલ ખાંડુઆ છે. સતરમી તથા અઢારમી એ બે શ્રેણીને વિષે બાર બાર ખાંડુઆ છે. ઓગણીશમી, વીશમી તથા એકવીશમી એ ત્રણ પંક્તિને વિષે દશ

કશ ખાંડુઆ જાણવા. બાવીશમી ત્રેવીસમી તથા ચોવીશમી એ ત્રણ પંકિતને વિષે આઠ આઠ ખાંડુઆ જાણવા પચીશમી તથા છવીશમી એ બે શ્રેણીને વિષે છ છ ખાંડુઆ છે અને સત્યાવીશમી તથા અઠયાવીશમી એ બે શ્રેણીને વિષે ચાર ચાર ખાંડુઆ ત્રસ નાડિમાં જ છે. ॥ ૮ ॥

અવતરણ —એવી રીતે ઉર્ધ્વ લોકની અઠયાવીશ શ્રેણીના ખાંડુઆનું માન કહ્યુ એ પ્રમાણે સર્વ ઉર્ધ્વ લોકના ખાંડુઆ ત્રણસેને ચાર થાય છે, વલી પણ કહે છે —

उयरीय लोअ मज्झा । चउ चउ ठाणेसु सत्त पुढवीसु ॥ चउर दस सोल वीसा । चउवीस छवीस अड-वीसा ॥ १ ॥

વ્યાખ્યાઃ—ચૌદ રાજ પ્રમાણનો મધ્ય એટલે જે વચ્ચેનો પ્રદેશ છે, ત્યાંથી અધો-લોક પ્રતે ઉતરતાં ' સાત નરક પૃથ્વીને વિષે પ્રત્યેકે પ્રત્યેકે ચાર ચાર શ્રેણીને વિષે કહે છે તે કેમ ? અધો લોકની અઠયાવીશ શ્રેણીમાં પહેલી નરક પૃથ્વીની ચાર શ્રેણીને વિષે ચાર ખાંડુઆ છે. તેના શોલ ખાંડુઆ થાય છે. બીજી નરક પૃથ્વીને વિષે ચાર શ્રેણીએ પ્રત્યેકે પ્રત્યેકે દશ દશ ખાંડુઆ છે. તેને દશ ગુણા કરતાં ચાલીશ ખાંડુઆ થાય છે. ત્રીજી નરક પૃથ્વીએ ચાર શ્રેણીમાં પ્રત્યેકે પ્રત્યેકે શોલ શોલ ખાંડુઆ છે. તેના ચોસઠ થાય છે, ચોથી નરક પૃથ્વીએ ચાર શ્રેણીમાંની પ્રત્યે-કમાં વીશ વીશ ખાંડુઆ છે, તેના એંશી ખાંડુઆ થાય છે. પાંચમી નરક પૃથ્વીએ ચાર શ્રેણીમાં પ્રત્યેકે ચોવીશ ચોવીશ ખાંડુઆ છે, તેના છનુ થાય છે. છઠી નરક પૃથ્વીએ

ચાર શ્રેણીમાં પ્રત્યેકે છવીશ છવીશ ખાંડુઆ છે, તેના એકશોને ચાર થાય છે સાતમી નરક પૃથ્વીને વિષે ચાર શ્રેણીએ પ્રત્યેકમાં અઠાવીશ અઠાવીશ ખાડુઆ છે તેના એકશોને બાર થાય છે એવી રીતે શોલ, ચાળીશ, ચોસઠ, એંશી, છનુ, એકશોને ચાર તથા એકશો ને બાર ॥ ૯ ॥

अह पण सय वारुत्तर । खंडुअ सोलहिय अट्ठसय सवे ॥ घम्माइ लोकमज्झं। जोयण अस्संख कोडीहिं

વ્યાખ્યા —અધોલોકના સર્વ એકઠા ખાંડુઆ મળીએ તો પાંચશેને બાર ઉપર થાય અને પૂર્વે ઊર્ધ્વ લોકના ખણ્ડુઓને ચાર કહ્યા તેને ભાગે મેળવીયે તેવારે સર્વ મળી આઠશેને સોળ ખાંડુઆ થાય છે. હવે લોકના માપનું કેમ કહે છે પહેલા નાનાની પ્રથમ નરક

પૃથ્વીને વિષે અસંખ્યાત યોજનની કોડી મેરુના મૂલને વિષે ગોસ્તનાકાર રુચકથી હેઠલ લોકનો મધ્યભાગ જાણવો. ॥ ૧૦ ॥

અવતરણ:—હવે ચૌદ રાજને વિષે અધો લોક, તિર્યગ્ લોક તથા ઉર્ધ્વ લોકમાં કોણ કોણ રહે છે તે કહે છે:—

सग रज्जु जोयण सया, अट्ठार सुण सगरज्जु माण इहं ॥ अह तिरिय उड्ढ लोआ, निरय नर सुराइ भावुल्ला ॥ ११ ॥

વ્યાખ્યા:—લોકના મધ્યથી આઠમા રાજને વિષે સમભૂતલથી નવશેં યોજન ઊંચો તથા નવશેં યોજન હેઠલ એ અઢારશેં યોજન પ્રમાણ તિર્યગ્ લોક કહેવાય છે. ત્યારે ઉર્ધ્વ લોકના સાત રાજ છે. તે અઢારશેં યોજન

ઊર્ધ્વ લોકમા ગણ્યાથી હેઠલા સાત રાજ તે અધો લોક કહેવાય, અઢારશે યોજન રહિત સાત રાજ પ્રમાણ ઊર્ધ્વ લોક કહેવાય છે હવે અધો લોકને વિષે નારકી પ્રમુખ, તિર્યક્ લોકને વિષે મનુષ્યાદિક, અને ઊર્ધ્વ લોકને વિષે દેવતા પ્રમુખ વશે છે. યદ્યપિ ભવન પત્યાદિક દેવતા અધો લોકમા વશે છે તથાપિ નારકી ઘણા છે, માટે તેજ અધો લોકે કહ્યા છે. ॥ ૧૧ ॥

अह लोय निरय असुरा, वंतर नर तिरिअ जोइस तरुग्गी ॥ दीवु दहि तिरिअ लोए, सुर सिद्धा उढ्ढ लोगम्मि ॥ १२ ॥

વ્યાખ્યા —પાછલી ગાથાને વિષે ' નિરય નર સુરાઈ '-એ વાક્યમા આદિ શબ્દ આ-

વ્યો છે માટે આદિ શબ્દ નિરયાદિ ત્રણે શ-
બ્દોની સાથે જોડિયે. ત્યારે નિરયાદિક નારકી
અસુર દેવતા અધો લોકમાં વશે છે. વ્યંતર
નર મનુષ્યાદિક તિર્યંચ જયોતિષી, તરૂ વ-
નસ્પતિકાય અગ્નિકાય એ અસંખ્યાતા દ્વીપ
સમુદ્રરૂપ તિર્યંક લોકમાં વસે છે. સુરાદિક સુર
દેવતા, સિદ્ધ કહિયે મુક્ત જીવ તે સર્વ ઊર્ધ્વ
લોકમાં રહ્યા છે. ॥ ૧૨ ॥

इक्किक्क रज्जु इक्किक्क, निरय सग पुढवि असुर पढमंतो ॥ तह वंतर तदुवरि नर, गिरिमाइ अ जोइसा गयणे ॥ १३ ॥

વ્યાખ્યાઃ—એકેક રાજ પ્રમાણ એકેક
નરક પૃથ્વી છે. એટલે સાતે નરકે સાત રાજ
થયા. તથા પહેલી નરક પૃથ્વીમાં અસુર

એટલે ભવન પતિ રહે છે, તથા પ્રકારે વ્યં-
તર પણ પહેલી નરક પૃથ્વિમા રહે છે તથા
પ્રથમ પૃથ્વીની ઉપર નર મનુષ્ય અનેક ન-
ગર ગિરિ એટલે મેરૂ પર્વતાદિક પદાર્થના
સમૂહ છે ચંદ્રમા, સૂર્ય, ગ્રહ, નક્ષત્ર તથા
તારા એ પાચ પ્રકારના જ્યોતિષી ગયલોકે૦
આકાશને વિષે રહે છે. ॥ ૧૩ ॥

छसु खंडुगेसु अ दुगं, चउसु दुगं
छसु अ कप्प चत्तारी ॥ चउसु चऊ
सेसेसु अ, गेविझ णुत्तराय सिद्धंते॥

વ્યાખ્યા—લોકના મધ્યથી ઉપર ૭
ખાડુઆના ઉપરલા ભાગને વિષે સૌધર્મ ઈ
શાન એ નામના બે દેવલોક છે. એટલે અહી
લોકના મધ્યથી દોઢ રાજ ઊચા બે દેવલોક
છે. વળી ત્યાથી ચાર ખાડુઆ ઉપરના ભા
ગને વિષે સનત્કુમાર તથા માહેંદ્ર નામના

બે દેવલોક છે. ત્યાંથી છ ખાંડુઆમાં અનુક્રમે બ્રહ્મ, લાંતક, શુક્ર તથા સહસ્રાર નામના ચાર દેવલોક છે. ત્યારપછી ચાર ખાંડુઆને વિષે ચાર દેવલોક આનત, પ્રાણુત, આરણ, તથા અચ્યુત નામના છે. બાકીના આઠ ખાંડુઆને વિષે નવ ગ્રૈવેયક તથા પાંચ અનુત્તર વિમાન છે. તેમાં પ્રથમ ચાર ખાંડુઆને વિષે નવ ગ્રૈવેયક છે ને ઉપરના ચાર ખાંડુઆને વિષે પાંચ અનુત્તર વિમાન છે. અંતખાંડુઆના છેડાને વિષે સિદ્ધ શિલા છે.

અવતરણઃ—એવી રીતે ઉર્ધ્વ લોકને વિષે દેવલોકની સ્થિતિ કહી, તે વિષે આગમની સાખ કહે છે તથા ચાગમે—

सोहम्मम्मि दिवढा, आढइज्जा य रज्जु माहिंदे ॥ चत्तारी सहसारे, पणच्चुए सत्त लोगंते ॥ १५ ॥

વ્યાખ્યા—લોકના મધ્યથી સૌધર્મ દેવલોક દોઢરાજ ઊચો છે, લોકના મધ્યથી માહિંદ્ર દેવલોક અઢીરાજ ઊચો છે, લોકના મધ્યથી સહસ્રાર દેવલોક ચાર રાજ ઊચો છે, લોકના મધ્યથી અચ્યુત બારમો દેવલોક પાચરાજ ઊંચો છે, અને લોકના મધ્યથી લોકાંત સાત રાજ ઊંચો છે. ॥ ૧૫ ॥

सम्मत्त चरण रहिया, सव्वं लोगं फुसे निरवसेसं ॥ सत्तय चउदस भाए, पंचय सुय देस विरईए ॥१६॥

વ્યાખ્યા—સમ્યકત્વ એટલે દેવને વિષે દેવની સદ્દહણા, ગુરૂને વિષે ગુરૂની સદ્દહણા દયા મૂલ ધર્મને વિષે ધર્મની સદ્દહણા, ચરણ એટલે ૫ આશ્રવથી વિરમણ, પાંચ ઇંદ્રિયનો નિગ્રહ, અનંતાનુબંધિયા ક્રોધ,

માન, માયા તથા લોભનો ત્યાગ; મનોદંડ, વચન દંડ કાયદંડ, તેની વિરતિ એવા જે સંયમના સત્તર ભેદ, તેણે કરી સંયુક્ત જે ચારિત્ર તેણે કરિ રહિત એટલે મિથ્યાત્વ કુગુરૂ, કુદેવ, તથા કુધર્મના સદ્દહનાર અવિરતિ એવા જે સંસારી જીવ તેને સમ્યકત્વ ચરણ રહિત કહિયે, એવા જીવો ચૌદ રાજલોક પ્રતે સૂક્ષ્મ તથા બાદર જીવ યોનિમાં ફરતા થકા નિરવિશેષપણે ફરસે એટલે ચૌદરાજમાં તિલમાત્ર ભૂમિ અણ ફરસી ન મૂકે; શ્રુતજ્ઞાની જે યતિ છે તે લોકના મધ્યથી ઊંચે સાત રાજ ફરસે છે; કારણ કે શ્રુત જ્ઞાનીને ઉત્કૃષ્ટી ગતિ સર્વાર્થ સિદ્ધિ સુધી છે એવું સિદ્ધાંતમાં કહ્યું છે. તે સર્વાર્થ સિદ્ધિ લોકના મધ્યથી કાંઈ એક ઉણા સાત રાજ છે. તે સ્તોક માત્ર ઊણા હોવાથી. સામાન્ય પણે પૂરાજ ગણ્યામાં આવ્યા છે. " છઉમત્થ

મ'જયાણુ', ઉવવાઓ ઉક્કોસઓ અસંખઠે'
એમ કહ્યું છે ' ચઉદસ ભાગે ૫ ચય, વલી દેશ
વિરતિ બારવ્રત ધર શ્રાવક તે ચૌદ રાજના
ચૌદ ભાગમાથી, પાચ ભાગ ઉર્ધ્વ લોકના
ફરશે, કેમકે, શ્રાવકની ઉત્કૃષ્ટી ગતિ અચ્યુત
નામના બારમા દેવલોક સુધી કહી છે તે બારમો
દેવલોક લોકના મધ્યથી પાચ રાજ ઉચો છે
તે માટે પાચ રાજ કહ્યા

અવતરણ'—હવે પ્રથમ સુચિરજ્જુ, પ્રતરરજ્જુ, ઘનરજ્જુ, તેઓના અનુક્રમે પ્રમાણ કહેતા પ્રથમ સાતમી નરક પૃથ્વીની આદિથી માડીને સુચિરજ્જુ કહે છે —

अडवीसा छव्वीसा, चउवीसा वीस सोल दस चउरो ॥ सुइ रज्जु सत्त पुढविसु, चउ चउ भइआउ पयर

વણા ॥ ૧૭ ॥

અર્થ ॥ સાતમી નરક પૃથ્વીને વિષે અઠાવીશ સુંચિરજ્જુ છે, છઠી નરક પૃથ્વીને વિષે છવીશ સુચિરજ્જુ, પાંચમી નરક પૃથ્વીને વિષે ચોવીશ સુચિરજ્જુ, ચોથી નરક પૃથ્વીને વિષે વીશ સુચિરજ્જુ, ત્રીજી નરક પૃથ્વીને વિષે શોલ સુચિરજ્જુ, બીજી નરક પૃથ્વીને વિષે દશ સુચિરજ્જુ તથા પહેલી નરક પૃથ્વીને વિષે ચાર સુચીરજ્જુ, જે ચાર ખંડુઆ શ્રેણીબંધ, અને પહોલાઇએ એકજ ખંડુઓ હોય તેને સુચિરજ્જુ કહિયે. સાતમી નરક પૃથ્વી ચાર ખંડુઆ ઊંચી છે; અને અઠાવીશ ખંડુઆ ત્રીછી ઓલીએ છે; એ માટે અઠાવીશ સુચિરાજ જાણવા. એવી સર્વત્ર ભાવના કરવી હવે. એ સાતે નરક પૃથ્વીના સુચિરજ્જુનું માન જે એકશોને

અઠાવીશ થાય છે તે ચાર ભાગે કરીયે તો પ્રતર રજ્જુનું માન મલે વલી તે પ્રતર રજ્જુનું આક ચારે ભાગે દેતા જે ફલિતાંક થાય તેટલા ઘનરજ્જુ જાણવા ચાર ચાર ખાડુઆ ચારે દિશિએ એટલે અકેક રાજ લાંબો તથા પહોલો અને પારાજ જાડો હોય તે પ્રતરરજ્જુ કહેવાય છે, તથા ચાર ખાડુઆ જાડાપણે, લાંબપણે તથા પહોલપણે તે ઘનરજ્જુ કહિયે પહેલા પ્રતર રજ્જુને વિષે શોલ ખાડુઆ હોય ઘન રજ્જુને વિષે ચોસઠ ખાડુઆ હોય તે આગલ કહેવાશે ॥ ૧૭ ॥

अडवीस सयं छसयरि, अह उड्ढ चउ जुया दुसय सव्वे ॥ सुइ रज्जु पयर रज्जु, दुतीसि गुण वीस इग-वण्णा ॥ १८ ॥

વ્યાખ્યાઃ--અધો લોકને વિષે પાંચશેને બાર ખાંડુઆ છે; તેના ચાર ભાગ કરતાં પ્રત્યેક ભાગ એકશોને અઠાવીશનો થાય તેટલા સુચિરજ્જુ જાણવા. ઊર્ધ્વ લોકને વિષે ત્રણશેને ચાર ખાંડુઆ છે તેના ચાર ભાગ કરતાં પ્રત્યેક ભાગ છોતેરનો થાય; તેટલા સુચિરજ્જુ જાણવા. તે અધો લોકના એકશોને અઠાવીશ સુચિરજ્જુ, તથા ઊર્ધ્વ લોકના છોતેર સુચિરજ્જુ, બન્ને એકઠા કરિયે ત્યારે બસેને ચાર સુચિરજ્જુ થાય. અધો લોકના એકશોને અઠાવીશ સુચિરજ્જુને ચાર ભાગ દઇયે ત્યારે બત્રીસ પ્રતરરજ્જુ થાય. ઉર્ધ્વલોકના છોતેર સુચિરજ્જુને ચાર ભાગ દઇયે તો ઓગણીશ પ્રતરરજ્જુ થાય. ॥૧૯॥

अवतरण-हवे घनरज्जुनुं मान कहेछे.

घणरज्जु अट्ठ हिट्ठा, पउण पणुद्धं

उभे पउण तेर ॥ घण पयर सूइ रज्जु, खंडुअ चउसट्ठि सोल चउ ॥ १९ ॥

વ્યાખ્યા –અધો લોકના બત્રીશ પ્રતરરજ્જુ છે, તે ચાર ભાગે દેતા આઠ થાય, માટે અધો લોકને વિષે આઠ ઘનરજ્જુ જાણવા ઊર્ધ્વ લોકને વિષે ઓગણીશ પ્રતરરજ્જુ છે તે ચાર ભાગે દેતા પોણા પાચ ઘનરજ્જુ છે તે ઉભે કહેતા અધ તથા ઊર્ધ્વ લોકના એકઠા કરિયે તો પોણા તેર ઘનરજ્જુ થાય હવે ઘન પ્રતર તથા સુચીરજ્જુનુ માન કહે છે –ચોસઠ ખાડુઆનો એક ઘનરજ્જુ થાય, શોલ ખાડુઆનો એક પ્રતરરજ્જુ થાય ચાર ખાડુઆનો એક સુચિરજ્જુ થાય. એ સામાન્ય પ્રકારે દૃષ્ટાંત માત્ર ચતુરસ્ર લોકનું પરિણામ દેખાડયુ, પણ લોકનુ સ્વરૂપ વૃત્તાકાર નહીકને આકારે છે, તે વૃત્તાકારના ખા-

ડુઆ યંત્રમાં લખાય નહી, માટે ચોરસ કહ્યા છે. ॥ ૧૯ ॥

અવતરણ—હવે મન કલ્પનાએ કૃત વૃત્તાકાર લોકને વિષે ઘનરજ્જુ, પ્રતરરજ્જુ, તથા સુચિરજ્જુનું માન કહે છે, તેમાં પ્રથમ ખાંડુઆની સંખ્યા કેહે છેઃ—

सयवग्गु सिंगुणे पुण, बिसय गुणयाल हवंति घण रज्जु ॥ सङ्ख पणहत्तरि सयं, सङ्ख तिसङ्घी अहुङ्घ कमा ॥ २० ॥

વ્યાખ્યા—પોતાના વર્ગથી ખાંડુઆ ગણીએ. તે આ પ્રમાણે—સાતમી માઘવતી પૃથ્વીને વિષે હેઠલી શ્રેણી એ અઠાવીશ ખાંડુઆ છે; તેને અઠાવીશના આંકથી ગુણીએ ત્યારે સાતશેને ચોરાશી ખાંડુઆ એક શ્રે-

ણીમા થાય એવી ચાર શ્રેણી છે તેથી સાતશોને ચોરાશીને ચારે ગુણતા ત્રણહજાર એકસોને છત્રીશ ખાડુઆ થાય એમ છઠી નરક પૃથ્વીનેવિષે હેઠલની શ્રેણીએ છવીસ ખાડુઆ છે તેને છવીસથી ગુણતા છશોને છોતેર થાય એવી ચાર શ્રેણીઓ છે તેથી છશોને છોતરને ચારથી ગુણતા બે હજાર સાતશેને ચાર ધનરજ્જુના ખાડુઆ થાય પાચમી નરક પૃથ્વીને વિષે હેઠલની શ્રેણીએ ચોવીસ ખાડુઆ છે તેને ચોવીશથી ગુણતા પાચશોને છોતેર થાય એવી ચાર શ્રેણી છે તેથી પાચશોને છોતરને ચારથી ગુણતા બે હજાર ત્રણશેને ચાર ધનરજ્જુના ખાડુઆ થાય ચોથી નરક પૃથ્વીને વિષે છેલી શ્રેણીએ વીશ ખાડુઆ છે તેને વીશથી ગુણતા ચારશે થાય એવી ચાર શ્રેણી છે તેથી ચારશેને ચારથી ગુણતા શોલશે ધનરજ્જુના ખાડુઆ થાય. ત્રીજી નરક પૃથ્વીને વિષે છેલી

શ્રેણીએ શોલ ખાંડુઆ છે. તેને શોલથી ગુણતાં બશેને છપ્પન થાય. એવી ચાર શ્રેણી છે. તેથી બશેને છપ્પનને ચારે ગુણતાં એક હજારને ચોવીશ ઘનરજ્જુના ખાંડુઆ થાય. બીજી નરક પૃથ્વીને વિષે છેલી શ્રેણીએ દશ ખાંડુઆ છે. તેને દશે ગુણતાં એકશો થાય. એવી ચાર શ્રેણી છે. તેથી એકશોને ચારે ગુણતાં ચારશો ખાંડુઆ થાય. અને પેલી નરક પૃથ્વીને વિષે છેલી શ્રેણીએ ત્રસ નાડીના ચાર ખાંડુઆ છે. તેને ચારે ગુણતાં શોલ થાય. એવી ચાર શ્રેણી છે તેથી શોલને ચારથી ગુણતાં ચોસઠ થાય. ત્યારે પહેલી નરક પૃથ્વીને વિષે ઘનરજ્જુના ચોશઠ ખાંડુઆ જાણવા. એવી રીતે સાત નરકપૃથ્વીનો ખાંડુઆનો વર્ગ કરી સર્વ અંક એકઠા કરીએ તો અગ્યાર હજાર બશોંને બત્રીસ અધોલોકને વિષે ઘનરજ્જુના ખાંડુઆ થાય. હવે ઊર્ધ્વ-

લોકને વિષે ઘનરજ્જુના ખાંડુઆનો વિચાર કહે છે -ઊપર લોકના મસ્તકથી આદિ લેવી ઊપરની શ્રેણીએ ચાર ખાંડુઆ ત્રસ નાડીના છે. તેને ચારે ગુણતા શોલ થાય એવી બે શ્રેણીઓ હોવાથી શોલને બમણા કરતા બત્રીશ ઘનરજ્જુના ખાડુઆ થાય તેથી હેઠલની શ્રેણીને વિષે છ ખાડુઆ છે તેને છ ગુણા કરતા-છત્રીશ થાય. એવી બે શ્રેણીઓ હોવાથી છત્રીશને બમણા કરતા બોતેર થાય. પછી આઠને આઠ ગુણા કરિયે ત્યારે ચોશઠ થાય એવી ત્રણ શ્રેણીઓ હોવાથી ચોશઠને ત્રણ ગુણા કરતા એકશોને બાણુ થાય ત્યારપછી દશને દશ ગુણા કરિયે ત્યારે એકશો થાય. એવી ત્રણ શ્રેણીઓ હોવાથી, એકશોને ત્રણથી ગુ-ણતા ત્રણશેં થાય પછી બારને બાર ગુણા કરિયે ત્યારે એકશોને ચુમાલીશ થાય એવી બે શ્રેણીઓ હોવાથી એકશોને ચુમાલીશને બમણા

કરતાં બશેંને અઠયાશી થાય. પછી શોલને શોલથી ગુણતાં બશેંને છપ્પન થાય એવી બે શ્રેણીઓ હોવાથી બશેંને છપનને બમણા કરતાં પાંચશેંને બાર થાય. પછી વીશને વીશથી ગુણતાં ચારશે થાય. એવી ચાર શ્રેણીઓ હોવાથી ચારશેને ચારથી ગુણતાં શોલશેં થાય. વલી ત્યાંથી ઘટતા શોલને શોલથી ગુણતાં બશેને છપન થાય. એવી બે શ્રેણીઓ હોવાથી બશેંને છપનને બમણાં કરતાં પાંચશેને બાર થાય ત્યાંથી હેઠલ બારને બારે ગુણતાં એકશોને ચુમાલીશ થાય. એવી બે શ્રેણીઓ હોવાથી એકશોને ચુમાલીશને બમણા કરતાં બશેને અઠાશી થાય ત્યાંથી હેઠલ દશને દશે ગુણતાં એકશો થાય એવી એકજ શ્રેણી હોવાથી એકશોજ ગણુવા. ત્યાંથી હેઠલ આઠને આઠે ગુણતાં ચોશઠ થાય. એવી એકજ શ્રેણી હોવાથી ચોસઠજ

ગણવા ત્યાથી હેઠલ છને છથી ગુણતા છત્રીસ થાય એવી બે શ્રેણીઓ હોવાથી છત્રીસને બમણા કરતા બોતેર થાય ત્યાથી હેઠલા ચારને ચારે ગુણતા શોલ થાય એવી બે શ્રેણીઓ હોવાથી શોલને બમણા કરતાં બત્રીશ થાય એ સર્વ અંક એકઠા કરતા ઉર્ધ્વલોકને વિષે ચાર હજારને ચોસઠ ઘનરજ્જુના ખાડુઆ થાય છે. તેને પૂર્વોક્ત અધોલોકના અગ્યારહજાર બશો બત્રીસ ખાડુઆની સાથે એકઠા ગણુતા પંદર હજાર બશોને છનુ ઘનરજ્જુના ખાડુઆ થાય. એવી રીતે પોતાના વર્ગની સાથે ગણુતા ચોસઠ ખાડુએ એક ઘનરજ્જુ થાય છે. માટે પંદર હજાર બશોછનુને ચોસઠ ભાગે વેંચતા બશોને ઓગણચાલીશનો ભાગ આવે. ત્યારે એ વૃત્તાકાર લોકને વિષે બશે ને ઓગણચાલીશ ઘનરજ્જુ થાય છે હવે અધોલોકના તથા ઉર્ધ્વલોકના ઘનરજ્જુઓ ભિન્ન ભિન્ન કરી કહે છે –

'સડ્ઢ પણ હત્તરિયં' અધોલોકને વિષે એક-શોને સાડી પંચોતેર ઘનરજ્જુ થાય છે. 'સડ્ઢુતિ સટ્ઠીઅ હુટ્ઠકમા' ઊર્ધ્વ લોકને વિષે સાડી ત્રેસઠ ઘનરજ્જુ થાય છે. અનુક્રમે એ માન જાણી લેવો. એ બન્ને એકઠા કરિયે ત્યારે બશોને ઓગણચાલીશ ઘનરજ્જુ થાય ॥૨૦॥

અવતરણ:-હવે ઘનરજ્જુના ખાંડુઆના પ્રતરરજ્જુ કહે છે:—

चउ गुणिय पयर रज्जु, सत्त दुरुत्तरय दुसय चउपपणा ॥ अह उढ नव छप्पपणा, सव्वे चउ गुणिय सुइ रज्जु ॥ २१ ॥

વ્યાખ્યા:-અધોલોકને વિષે એકશોને સાઢી પંચોતેર ઘનરાજ છે. તેને ચારથી ગુણતાં સાતશે ને બે અધોલોકને વિષે પ્રતર-

રાજ થાય ઊર્ધ્વ લોકને વિષે માટી ત્રેસઠ ઘનરાજ છે, તેને ચારથી ગુણતા બશે ને ચોપન પ્રતર રાજ થાય એમ અધોલોક તથા ઊર્ધ્વલોકના એકઠા કરિયે ત્યારે નવશે ને છપ્પન પ્રતરરાજ થાય એ સર્વ પ્રતર રાજને ચોગુણા કરતા જે અંક આવે તે સૂચીરજ્જુનું માન જાણવુ ॥ ૨૧ ॥

અવતરણ —હવે સૂચિરજ્જુનુ માન ગાથાએ કરી કહે છે —

अडवीस सयठुत्तर, दस सोला
अठतीस चोवीसा ॥ इय संवग्गिय
लोए, तिह रज्जु खंडुआ नेया ॥२२॥

વ્યાખ્યા —અધો લોકને વિષે સાતશે ને બે પ્રતર રજ્જુ છે. તેને ચોગુણા કરતા બે હજાર આઠશે ને આઠ સૂચિ રજ્જુ થાય. ઊ-

ર્ધ્વ લોકને વિષે બશેને ચોપન પ્રતર રજ્જુ છે, તેને ચોગુણા કરતાં એક હજારને શોલ સૂચિ રજ્જુ થાય. તથા અધો લોક અને ઊર્ધ્વ લોકના એકઠા કરતાં ત્રણ હજાર આઠશે અને ચોવીશ સૂચિ રજ્જુ થાય. પોતાના વર્ગે ગણિત લોકને વિષે ત્રિક રજ્જુ કહિયે. એમ ઘન રજ્જુ તથા પ્રતરરજ્જુ તથા સુચિ રજ્જુ એ ત્રણ રાજના ખાંડુઆની સંખ્યા જાણવી. ॥ ૨૨ ॥

હવે વર્ગના અંકથી ગણતાં જે ખાંડુઆની સંખ્યા આવે તે સંગ્રહ ગાથામાં કહે છેઃ—

एगार सहस दुसया, बत्तीसा चउसहस्स चउसट्ठी ॥ अह उड्ढं सव्व पन्नर, सहस्स दुन्नि सय छ न्नउआ॥

વ્યાખ્યાઃ—અધો લોકને વિષે વર્ગને અંકથી ગણતાં અગ્યાર હજાર બશોને બત્રીશ

ખાંડુઆ થાય. ઊર્ધ્વ લોકની શ્રેણી વર્ગના અંકથી ગણતા ચાર હજારને ચોસઠ ખાંડુઆ થાય તે બેહુ એકઠા કરિયે ત્યારે પદર હજાર બશેને છન્નુ થાય ॥ ૨૩ ॥

અવતરણ—હવે વર્ગ કરવાનો વિધિ ગાથાએ કરી કહે છે—

अड छ चउवीस वीसा, सोल दस चऊ अ. हुह्र चउ छ्ठ ॥ दस वार सोल वीसा, सरिसंक गुणाउ चउहि गुणो ॥ २४ ॥

વ્યાખ્યા—અહી વીસ શબ્દ ત્રણ ઠેકાણે જોડવો તે આમ—અઠાવીશ, છવીશ તથા ચોવીશ એમ જાણવુ તથા એ માઘવની સાતમી પૃથ્વીથી આદિ લઇને જે અઠાવીશાદિક અંક નીચી શ્રેણીને વિષે આવે તે પો-

ત પોતાને સરખે અંકે ગુણી એ અને એકઠા કરિયે પછી તેને ચોગુણા કરતાં જે અંક આવે તે ખાંડુઆની સંખ્યા જાણવી તે આવી રીતે :—સાતમી નરક પૃથ્વીને તલેથી અઠાવીશને અઠાવીસથી ગુણતાં સાતશોને ચોરાસી થાય છવીસને છવીશથી ગુણતાં છશેને છોતેર થાય; ચોવીસને ચોવીસથી ગુણતાં પાંચશોને છોતેર થાય વીશને વીશથી ગુણતાં ચારશોં થાય; શોલને શોલથી ગુણતાં બશેં ને છપન્ન થાય; દશને દશથી ગુણતાં એકશો થાય; અને ચારને ચારથી ગુણતાં શોલ થાય; એ સાતે સ્થલના અંકોને એકઠા કરિયે ત્યારે બે હજાર આઠશોને આઠ થાય; તેને ચોગુણા કરતાં અગ્યાર હજાર બશેં ને બત્રીસ થાય. એ અધો લોકના ખાંડુઆ જાણવા. હવે ઊર્ધ્વ લોકના ખાંડુઆ કહે છે:—ચાર, છ, આઠ, દશ, બાર, શોલ તથા વીશ એ અંકોને સરખા અંકથી

ગુણવા, તે આવી રીતે,–ચારને ચાર ગુણ્ કર્યાથી શોલ થાય છે છને છથી ગુણતા છત્રીસ થાય આઠને આઠથી ગુણતા ચોસઠ થાય, દશને દશથી ગુણતા એકશો થાય બારને બારથી ગુણતા એકશોને ચુમાલીસ થાય, શોલને શોલથી ગુણતા બશોને છપન થાય, વીસને વીસથી ગુણતા ચારશે થાય, એ સાત સ્થલોના અંક એકઠા કર્યાથી એક હજારને શોલ થાય તેને ચારથી ગુણતા ચાર હજારને ચોસઠ ઊર્ધ્વ લોકના ખાડુઆની સંખ્યા થાય પછી અધોલોકના તથા ઊર્ધ્વ લોકના ખાડુઆ એકઠા કરિયે ત્યારે ૫૯૨ હજાર બશોને છનુ થાય ॥ ૨૪ ॥

અવતરણ —વલી પ્રકારાંતરે વર્ગ કરવાનો વિધિ ગાથાએ કરી કહે છે–

चउ अडवीसा छप्प, पणपयरस-

रिसंक गुणिय पिहुमिलिए ॥ सम दीह पिहुवेहा, उड्ढमहो खंडुआ नेआ ॥ २५ ॥

વ્યાખ્યા:—લોકના મસ્તકને વિષે ઉપરલી ત્રીછી શ્રણીએ ચાર ખાંડુઆ છે. સાતમી નરક પૃથ્વીની છેલી શ્રેણી અઠાવીશ ખાંડુઆની છે. એમ ચારથી આદિ લઈને છેલી છપનમી શ્રણી અઠાવીસ ખાંડુઆની છે એટલે પુરુષાકાર લોકને વિષે ત્રીછી છપન પ્રતરની શ્રેણી છે. આદિ તથા અંતની શ્રેણીઓનું ગ્રહણ કર્યાથી મધ્યની શ્રેણીનું પણ ગ્રહણ થાય છે; માટે છપન શ્રણી છે. જે શ્રેણીને વિષે ત્રીછી શ્રેણીના જેટલા ખાંડુઆ છે, તેટલા અંકથી ગુણીએ; જેમકે, સર્વથી ઉપરની મસ્તક શ્રેણીને વિષે ચાર ખાંડુઆ ત્રીછા છે. ત્યારે ચારને ચારથી ગુણતાં શોલ થાય એમ

છપન શ્રેણીઓ સરખે આકે ગણી એકઠી કરિએ ત્યારે પૂર્વોક્ત ૫દર હજાર બશેને છનુ ખાઙ-વાની સખ્યા થાય હવે ખાડુઆનુ પરિમાણ કહે છે–લાબપણે, પોલાઇએ તથા જાડપણે કુભીની પેઠે સરખા છે. એટલે પોલા, લાબા તથા જાડાપા રાજ પ્રમાણ ઊર્ધ્વલોક તથા અધોલોકના સર્વ એવા ખાડુઆ જાણવા.॥૨૫॥

અવતરણ–હવે વૃત્તાકાર લોક ઘન કર-વાનો વિધિ કહે છે—

दाहिण पास दुखंडा, उड्ढं वामे ठविज्ज विवरीया ॥ नाडी सहियत्ति रज्जु, पिहु जाया सत्त दीहुच्चे ॥२६॥

વ્યાખ્યા—ઊર્ધ્વ લોકને વિષે ત્રસ નાડી થકી દક્ષિણ બાજુએ એટલે જમણી બાજુના બે ખડ, તે આમ–ઊર્ધ્વ લોકને વિષે જ્યા

કોણોની જગો છે, તે મધ્યથી જોતાં બારમી શ્રેણી છે. તે બારમી શ્રેણીથી બે ખંડ કરિયે એટલે ઊપરલા ખંડને વિષે શોલ શ્રેણીઓ રહે. એવી રીતે દક્ષિણ બાજૂના જે બે ખંડ છે તે ઉર્દ્ધ્વ લોકને વિષે ત્રસ નાડીની ડાબી બાજૂને વિષે ઉલટા કરી નાખીએ. તે આમઃ—ઊપરના ખંડની કૂર્પરની જે દિશા, તે મસ્તકની તરફ કરિયે; અને હેઠલા ખંડની કૂર્પરની જે દિશા તે લોકના મધ્ય તરફ કરિયે. એટલે ઊપરલો ખંડ ઉપરની દિશાએ તથા હેઠલો ખંડ હેઠલી દિશાએ થાપીએ. ત્રસ નાડી સહિત ડાબી બાજૂએ ત્રાછા ત્રણ રાજ થાયછે તે આમઃ— ત્રસ નાડીથી બાહાર કૂર્પરને ઠેકાણે જમણી બાજૂએ આઠ ખાંડુઆ ત્રીછા છે; તેના બે રાજ અને એક ત્રસ નાડીનું રાજ, એમ ત્રણ રાજ પોલાઇએ થાય છે; અને લાંબપણે તથા

ઉંચપણે સાત રાજ હોય છે ॥ ૨૬ ॥

हिट्ठाउ वाम खंडे, दाहिण पासे ठविज्ज विवरीअं॥ उवरिम ति रज्जु खंडं, वामे ठाणे अहो दिज्जा ॥२७॥

વ્યાખ્યા–અધો લોકની ત્રસ નાડીથી જે ાણી બાજૂનો આખો ખંડ છે, તે વિપરીત ોટલે અવળો અથવા ઉંચો હેઠલી ત્રસ ના-ીની જમણી બાજાને વિષે થાપીએ એટલે અધોલોકને વિષે જમણી બાજૂએ ત્રીછા ચાર ાજ, અને લાબપણે સાત રાજ થયા તે આ પ્રમાણે —ત્રસ નાડીથી જમણી બાજુમા અ ધોલોકની હેઠે બાર ખાડુઆ છે, તેના ત્રણ રાજ, અને ત્રસ નાડીનુ એક રાજ, એમ ચાર રાજ થાય પછી ઊર્ધ્વલોકની ડાબી બાજુનો ત્રીછો ત્રણ રાજ લાબો સાત રાજ

પ્રમાણ ખંડ છે. તે અધોલોકની જે ત્રસ નાડી છે તેની ડાબી બાજુએ દેઈએ, એટલે સર્વત્ર પૂર્વ, પશ્ચિમ, દક્ષિણ તથા ઉત્તર દિશિઓએ તથા જાડ પણે સાતઘનરજ્જુ પ્રમાણ ઘન લોક થયો. ॥ ૨૭ ॥

इय संवट्टियलोओ, बुद्धि कओ सत्त रज्जु माण घणो ॥ सग रज्जु आहिय हिट्ठा, गिण्हइ पासाइ पूरिज्जा ॥ २८ ॥

વ્યાખ્યાઃ—એ પ્રકારે કરી ઈય સંવર્ત્તિત લોક વૃત્તાકાર કીધો પણ તે લોક વૃતાકારેજ તે કેવી રીતે કીધોઃ-બુદ્ધિએ કરી, મન કલ્પનાએ કરી સાત રાજ પ્રમાણ ઘન કીધો, તથા સાત ઘનરજ્જુ થતા લાંબપણે, પોલપણે તથા ઉંચપણે જે અધિક

ખાંડુઓ થાય તે લઈને હેઠલ જે જગોએ ઓછુ હોય તે પાસૂં પૂરિયે એવી રીતે ચોરસ સાત ઘનરજ્જુ પ્રમાણ લોક કરયો પણ ચોરસ નથી ગોલાને આકારે લોક વૃત્તાકાર છે પણ ઘનલોક વૃત્તાકાર લખાય નહીં. તે માટે ચોરસ કીધો છે ॥ ૨૮ ॥

અવતરણ—હવે એ સમઘન લોકને વિષે ઘનરજ્જુ, પ્રતરરજ્જુ, સૂચીરજ્જુ અને ખાડુઆની સંખ્યા કહે છે—

घण रज्जु तिसय तेया, ल तेर वावत्तरीय पयर सूइ ॥ चउपन्न डसी खंडुअ, सहसि गवीसा नवदु पन्ना॥२९॥

વ્યાખ્યા—એ વૃત્તાકાર ઘનીકૃત ચોરસ લોકને વિષે ત્રણશે ને તેતાલીશ ઘનરજ્જુ છે એક હજાર ત્રણશેને બોતર પ્રતર રજ્જુ છે

પાંચ હજાર ચારશેને અઠ્યાશી સૂચી રજ્જુ છે. ખાંડુઆની સંખ્યા કહે છેઃ—સાતરાજ પ્રમાણ ઘનલોકના ખાંડુઆ એકવીશ હજાર નવશેને બાવન જાણવા ॥ ૨૯ ॥

અવતરણઃ—હવે ઘનરજ્જુ, પ્રતરરજ્જુ, સૂચિરજ્જુ અને ઘનલોકના ખાંડુઆ આણવાની કરણી ગાથાએ કરી કહે છેઃ—

सगवग्गो सग चउ तिग, गुणिए उभयं अदुह खंडू घणा ॥ छन्नूसओ सिआलं, चउ गुणिए पयर सुइ अंसा ॥ ३० ॥

વ્યાખ્યાઃ—એ સાત ઘનરજ્જુ પ્રમાણ સમચોરસ જે લોક છે. તે સાત સાત વર્ગથી ગણિએ તે સપ્ત વર્ગ કહિયે. ત્યારે સાતને સાતથી ગુણિયે, ત્યારે ઓગણ પચાસ થાય એવી

ઓગણપચાસ ઘનરજ્જુની સાત શ્રેણી છે તે ઓગણપચાશને સાતથી ગુણતા ત્રણશેને તેતાલીશ ઘનરજ્જુની સખ્યા થાય પછી ઘનરજ્જુનો આક ત્રણ વાર ચોગુણો કરિયે ત્યારે અનુક્રમે અધોલોક તથા ઉર્ધ્વ લોકના પ્રતરજ્જુ, સુચીરજ્જુ, તથા ખાડુઆની સખ્યા મલે છે, તે આ પ્રમાણે—ત્રણશો તેતાલી ઘનરજ્જુને ચોગુણા કરિયે ત્યારે એક હજાર ત્રણશેને બોંતેર પ્રતરરજ્જુ થાય છે તે પ્રતરરજ્જુનો આક ચોગુણો કરીયે ત્યારે પાચ હજાર ચારશે ને અઠયાસી શુચિરજ્જુ થાય તથા સુચિરજ્જુનો ચોગુણો આક કરતા ખાડુઆની સખ્યા એકવીસ હજાર નવસેને બાવન થાય હવે અધોલોક તથા ઊર્ધ્વલોકની જુદીજુદી ઘનરજ્જુ સુચિરજ્જુ પ્રતરજ્જુ તથા ખાડુઆની સખ્યા કહે છે—અધોલોકને વિષે એક સો ને છનુ ઘનરજ્જુ છે અને

ઊર્ધ્વ લોકનેવિષે એકશોને સુડતાલીશ ઘનરજ્જુ છે, એને વલી ત્રણ વાર ચોગુણા કરતાં અનુક્રમે પ્રતરરજ્જુ, તથા સુચિરજ્જુના અંસ એટલે ખાંડુઆનો માન અધોલોક તથા ઉર્ધ્વલોકને વિષે ભિન્ન ભિન્ન મિલી આવે છે. ॥ ૩૦ ॥

અવતરણ:—અધો લોક તથા ઉર્ધ્વ લોકના ખાંડુઆનો ભિન્ન ભિન્ન પ્રમાણનો સંગ્રહ કરી કહે છે:—

**सग चुलसी पण अडसी, इग ती-
स छतीस तिविस बावन्ना ॥ पण
चुअल जुआ बारस, हस्स चउण
वइसय ह हिआ ॥ ३१ ॥**

વ્યાખ્યા:—અધોલોકને વિષે એક શો ને છનુ ઘનરજ્જુ છે; તેને ચોગુણા કરિયે ત્યારે સાતસેં ને ચોરાશી અધોલોકને વિષે પ્રતરજ્જુ

થાય અને ઉર્ધ્વ લોકને વિષે એકસો ને સુડતાલીશ ઘનરજ્જુ છે, તેને ચોગુણા કરિયે ત્યારે ઉર્ધ્વ લોકનેવિષે પ્રતરરજ્જુ પાચશો ને અઠયાશી થાય અને અધોલોકને વિષે ત્રણ હજાર એકશોનેછત્રીશ સુચિરજ્જુ થાય, ઉર્ધ્વ લોકનેવિષે બેહજાર ત્રણશેને બાવન સુચિરજ્જુ છે હવે ખાડુઆની સખ્યા કહે છે—અધોલોકને વિષે પણ બારહજાર પાચશોને ચુમાલીસ ખાડુઆ છે ઉર્ધ્વ લોકને વિષે નવ હજાર ચારસો ને આઠ ખાડુઆ છે અધોલોક તથા ઉર્ધ્વ લોકના એકઠા ખાડુઆ કરિયે તો એક વીશ હજાર નવસોને બાવન પૂર્વોક્ત સખ્યા મલે તથા અહી ત્રણશે ને તેંતાલીશ રાજ કહ્યા પણ તેના ખાડુઆ નથી માત્ર બશોને ઓગણ ચાલીશ રાજના ખાડુઆ છે તેથી એકશોને ચાર ઘનરજ્જુ અધિકછે તેના ખાડુઆનો ઠામ નથી. પણ એક વિશેષ છે, કે એ

ઘનલોક ચોરસ કરયો છે, અને લોક વૃત્તાકાર છે, ત્યારે ચારે દિશિના ખૂણા અધિક થાય; તો પણ એવડો અંતર પડે નહી. પણ એ ચોરસનું જે પરિમાણ કહ્યું છે તે અંતરંગ વૃત્તાકાર લોકનું માન ધરીને કહ્યું છે. માટે ખુણાનો ભાગ અધિક થાય નહી. પછી પ્રકારાંતરની વાત તો જ્ઞાની જાણે. પણ પૂર્વોક્ત વર્ણના આંક ગણતાં પંદર હજાર બશોને છનુ ખાંડુઆ થાય. તેને ચોસઠ ભાગ દેતાં ઘનરાજ થાય. અધિક ખાંડુઆ નથી ત્યારે ત્રણશોને તેતાલીશ રાજ કેમ થાય તે ગીતાર્થે વિચારી લેવું, અસંખ્યાત યોજનનો એક રાજ થાય છે. અથવા સહસ્ત્ર ભાર લોહનો ગોલો કોઈ એક મહાર્દ્ધિક દેવતા પોતાની શક્તિએ કરી તેને નીચે નાખી દિયે ત્યારે તે ગોલો છ માસ, છ દિવસ, છ પહોર; છ ઘડી અને છ પલ જેટલા કાલે નીચે આવીને પડે.

તેટલો એક ગજ થાય એ ચારે દિશિઓને વિષે રાજનું પ્રમાણ થાય તે જાણવુ ॥ ૩૧ ॥

इय पयर लिहिय वग्गिय, संवट्टिय लोग सार मुवलम्न ॥ सुअ धम्म कित्तिअं तह । जय ह जहा भमह ब्र इह भिसं ॥३२॥

વ્યાખ્યાઃ —એ પ્રકારે કરી જે છપન પ્રતર, તે પ્રકારે લિખિત વલી સવર્ગિત એટલે વર્ગને આડે ગણિત લોક તેનો સાર તત્વ જ્ઞાનવિચાર યથાર્થ પણે લોક સ્વરૂપ સદ્ગુરૂથી પામીને તે પ્રકારે યત્ન એટલે ઉદ્યમ કરવો પૂર્વે જે પ્રકારે ચૌદ રાજ લોક નુ પ્રમાણ કહ્યુ, તે લોકમા અનત જન્મમરણ પામતા થકા વારવાર અત્યર્થપણે મા ભ્રમો, એવો તીર્થંકર સકલ જીવ હિતકર પારગ

પરમેશ્વરનો ભવ્ય જીવને ઉપદેશ છે. લોકનો સાર કેવો છેઃ-તે શ્રુતધર્મ એટલે જે સિદ્ધાંત માર્ગમાં જ્ઞાનના બલે કરી જ્ઞાનવાન તીર્થંકરે કહેલું છે. ॥ ૩૨ ॥

श्रीमदाप्तोक्त विधिना । लोकना लस्य वार्त्तिकं ॥धिमित्र धनराजस्य, गंगाख्य तनुजाकृते ॥१॥ श्रीमत्स्व हंज रत्नेन । व्याख्यात मुदयाब्धिना ॥ असंगत यदुक्तंतं, द्विशोध्य धीधनैर्भृशं ॥ २ ॥ युग्मम् ॥

इतिश्री લોકનાલદ્વાત્રિંશિકા બાલાવબોધ સમાપ્ત.

અથ શ્રી જ્ઞાનપંચમીની ઢાલો લીખ્યતે.

॥ ઢાલ. ॥

જાલમ જોગીડારે ॥ એ દેશી ॥ શ્રીવાસુપુંજ જીનેસર વયણથીરે ॥ રૂપ કુંભ કંચન કુંભ મુનિ દોય । રોહિણી મંદીર સુંદીર આવીયારે ॥ નમીભવ પુછે દંપત્તિ સોય ॥૧॥ ચઉનાણિ વયણુરે દંપતિ મોહીયારે ॥ એ આંકણિ ॥ રાજા રાણિ નીજ સુત આઠનોરે ॥ ફલ નીજ ભવ ધારી સબંધ ॥ વીનય કરી પુછે માહારાજનેરે ॥ ચાર સૂતાના ભવ પરબંધ ॥ ચ૦ ॥ ૨ ॥ રૂપવંતિ સીયલવંતિ ને ગુણવંતિરે ॥ સરસ્વતી જ્ઞાનકલા ભંડાર ॥

જન્મથી રોગ સોગ દિઠો નથિરે ॥ કુણ પુંન્યે લીધો એહ અવતાર ॥ ચ૦ ॥ ૩ ॥

॥ ઢાલ ૧ લી. ॥

વાલાજી વાઇછે વાંશલિરે ॥ એ દેશી ॥

ગુરૂ કહે વઈતાઢય ગીરીવરૂરે ॥ પુત્રી વીદ્યાધરી ચ્યાર ॥ નિજ આયુ જ્ઞાનીને પુછીયોરે॥ કરવા સફલ અવતાર ॥ ૧ ॥ અવધારો અમ વીનતિરે ॥ એ આંકણી ॥ ગુરૂ કહે જ્ઞાનુ ઉપયોગથીરે ॥ એક દિવસનું આયુ ॥ એહવાં વચન શ્રવણે સૂણ્યારે ॥ મનમાં વીમાસણ થાએ ॥ અ૦ ॥૨॥ થોડામાં કારજ ધર્મનારે॥ કીમ કરીએ મુનિરાજ ॥ ગુરૂ કહે જોગ અસંખ્ય છેરે ॥ જ્ઞાનપંચમી તુમકાજ ॥ અ૦ ॥ ૩ ॥ ખીણ આરાધ્યે સવી અઘ ટલેરે ॥ સૂત્ર પરીણામે સાધ્ય ॥ કલ્યાંણક નવ જીન તણાંરે ॥ પંચમી દીવસે આરાધ ॥ અવધારો અમ વિનતિ રે. ॥ ૪ ॥

॥ ઢાલ ૨ ૭. ॥

જઈને કેજો ॥ એ દેશી ॥ ચઇતર વદી પંચમી દીને ॥ સૂણો પ્રાણિરે ॥ ચવીયા ચન્દ્રપ્રભુ સ્વામી ॥ લહે સૂખ ઠામ ॥ સૂણ પ્રાણિજીરે ॥ ૧ ॥ એ આંકણિ ॥ અજીત સંભવ અનંતજી ॥ સૂ૦ ॥ પંચમી શુદિ શિવ ધામ ॥ શુભ પરીણામ ॥ સૂ૦ ॥ ૧ ॥ વઇશાક શુદિ પંચમીદીને ॥ સૂ૦ ॥ સંજમ લિએ કૂંનાથ ॥ સહ્રૂ નર સાથ ॥ સૂ૦ ॥ જેષ્ટ શુદિ પંચમી વાસરે ॥ સૂ૦ ॥ સૂગતિ પામ્યા ધર્મનાથ ॥ શીવપૂરિ સાથ ॥ સૂ૦ ॥ ૨ ॥ શ્રાવણ શુદિ પંચમી દીને ॥ સૂ૦ ॥ જનમ્યા નેમ સૂરંગ ॥ અતિ ઉછરંગ ॥ સૂ૦ ॥ માગશર વદ પંચમ દીને ॥ સૂ૦ ॥ સુવિધિ જન્મ શુભ સંગ ॥ પુન્ય અભંગ ॥ સૂ૦ ॥ ૩ ॥ કાર્તિક વદ પંચમી તિથી ॥ સૂ૦ ॥ સંભવ કેવલ જ્ઞાન ॥ કરો બહુ માન ॥ સૂ૦ ॥ દશ ક્ષેત્રે નેંઉ જીનના ॥ સૂ૦ ॥ પંચમી દિનનાં કલ્યાણ ॥ સુખનાં નીધાન ॥ સૂ૦ ॥ ૪ ॥

॥ ઢાલ ॥ ૩ જી ॥

હારે મારે જોબનિયા ॥ એ દેશી ॥ હાંરે મારે જ્ઞાની ગુરૂનાં વણ સુણિ હીતકારજો ॥ ચ્યાર વીધા ધરી પંચમી વીધીશું આદરેરે લોલ ॥ ૧ ॥ એ આંકણિ ॥ હાંરેમારે શાશન દેવતા પંચમ જ્ઞાન મનોહારજો ॥ ટાલીરે આશાતના દેવ વંદન સદારે લોલ ॥ ૨ ॥ હાંરેમારે તપ પૂરણથી ઉજમણાનો ભાલજો ॥ એહવે વીરૂત યોગે સુરપદવી વર્યારે લોલ ॥ ૩ ॥ હાંરેમારે ધર્મ મનોરથ આલશ તજતાં હોયજો ॥ ધન્ય તે આજત અવીલંબી કારજ કર્યાંરે લોલ ॥ ૪ ॥ હાંરેમારે દેવ થકિ તુમ કુખે લિયો અવતારજો ॥ સાંભલ રોહણિ જ્ઞાન આરાધન ફલ ઘણાંરે લોલ ॥ ૫ ॥ હાંરેમારે ચ્યારે ચતુરા વીનોદ વીવેક વીચારજો ॥ ગુંણ કહેતાં ઓલખાઈ તુમ પુત્રી તણાંરે લોલ ॥ ૬ ॥

॥ ઢાલ ॥ ૪ થી ॥

આસાસુનારે જોગી ॥ એ દેશી ॥ જ્ઞાનીરે
લક્ષણથી ચ્યારે બેહનિ ॥ જાતિસમરણ પા-
મ્યારે ॥ જ્ઞાની ગુણવંતા ॥ ત્રીજા ભવમા
ધારણ કીધી ॥ સિધ્યાં મનનાં કાંમોરે ॥ જ્ઞાની
ગુંણુવંતા ॥ ૧ ॥ એ આંકણિ ॥ શ્રી જીન-
મદિર પંચ મનોહાર ॥ પચવરણ જીન
પડીમારે ॥ જ્ઞા૦ ॥ જીનવર આગમનેં અનુ-
સારે ॥ કરીએ ઉજમણાં મહીમારે ॥ જ્ઞા૦
॥ ૨ ॥ પંચમી આરાધન તિથી પચમી ॥
કેવલનાણ તે થાએરે ॥ જ્ઞા૦ ॥ શ્રી વીજય-
લક્ષ્મીસૂરી અનુભવ નાણેં ॥ સંઘ સયલ
સુખદાયારે ॥ જ્ઞાની૦ ॥ ॥ ૩ ॥

ઇતી પંચમી તપ સ્તવન ઢાલો સંપુર્ણ ॥





बे बोल.



दरेक ज्ञातिना जेवा के जैन, विष्णु, बौद्ध वगेरे धर्म पालनारा लोको पण एकतारा, मंजीरानी धूनमां बे घडी संगीतमय मार्गी पदमां मस्त जणाय छे तथा केटलाक ठुमरी अने साधारण पदोमां ईश्वर स्तवनादि पोताना हृदयने प्रिय लागे तेवा रागोमां गाय छे. केटलाक सज्जनो भैरवी मालकोश, धन्याश्री, सारंग, कल्याणवगेरे रागोमा सतार, हारमोनीयम वगेरे वाद्योमा गाया जमावी घडीभर दुःखनी विस्मृति करावे छे. नाटकोमां पण गायन गायन ने गायनज अर्थात् आखा देशोना देशोमां संगीतनी

लगनी लागी रही छे. तो आवे समये संगीतद्वाराए लोकोनां हृदयने उन्नत करवां ए एक मुख्य कर्तव्य छे. तेने माटे प्रसिद्ध थयेला श्री आनंदघनजी तथा चिदानंदजी महाराजनां करेलां पदोनो संग्रह करीने यथाशक्ति शुद्ध करीने आ ग्रंथ छपाव्यो छे. आ ग्रंथमां एकंदर पदो १७८ आपवामां आवेलां छे. तेनी अंदर ज्ञान,भक्ति, वैराग्य,धर्म, अध्यात्म, स्वानुभूत वगेरे श्रीयुत बन्ने पंडितोए पोतानी शुद्ध भावनाने प्रतिभाना प्रवाहमां एवी वहन करेली छे के जे वांचकने क्षणे क्षणे अपूर्व आनंदनी साथे प्रभुभक्तिनो घणोज उत्साह आपे छे. आ ग्रंथ अगाउ मोटी साइझमां झीणा अक्षरमां छपावेल हतो. तेनी आ आवृत्ति

सुधारीने मोटा अक्षरमां पोकेट साइझमां छपावेल छे, तेथी तेनी अंदर घणोज वधारो थयेल छे वली आ ग्रंथनी अंदर चोवीश जिनेश्वरोना छंद नाखवामा आवेल छे. आ चारीक समयमां कागलना भाव घणाज वधी जवा छता जैनबंधुओने वांचवा जाणवा घणीज सवल पडे ते सारु प्रथमनीज किमत राखवामां आवेल छे, तेथी दरेक जैनबंधु आवा अमूल्य ग्रंथनो लाभ लेवा चूकशे नहि.

क्षमापना.

आं ग्रथनी अदर मतिदोषथी के दृष्टिदोषथी जे काइ भूलचूक रही गइ

होय तेनी अमो सकल जैनसंघनी पासे क्षमा चाहीए छीए अने ते भूलो वांचकवर्ग सुधारीने वांचशे एवी अमारी विनंति छे. किं बहुना !

घर नां. २२५ थी २३१ ता. २० मी मे १९१५ शाकगल्ली, मांडवी, मुंबइ	ली. श्रावक भीमसिंह माणकना कार्यप्रवर्तक शा. भाणजी माया.



॥ अथ ॥

॥ अस्य ग्रंथस्यानुक्रमणिका ॥



॥ १ ॥ प्रथम भैरव रागमां गवातां पदो ॥

॥ २ ॥ विज्ञास रागमा गवातां पदो ॥

देत पहोरीयां घरीय घाउ रे ॥
क्या० ॥ १ ॥
इंद्र चंद्र नागिंद्र मुनिंद्र चले,
कोण राजापति साह राउ रे॥
भ्रमत भ्रमत भवजलधि पायकें,
भगवंत भजन विन भाउ नाउ रे।
क्या० ॥ २ ॥
कहा विलंब करे अब बाउरे, ॥
तरी भवजलनिधि पार पाउ रे।
आनंदघन चेतनमय मूरति,
शुद्ध निरंजन देव ध्याउ रे क्या०



॥ पद बीजुं ॥

॥ राग वेलावल ॥ एकताली ॥

रे घरियारे बाउरे,
मत घरीय बजावे ॥
नर सिर बांधत पाघरी,
तुं क्या घरीय बजावे ॥ रे० ॥१॥
केवल काल कला कले,
वे तुं अकल न पावे ॥
अकल कला घटमें धरी,
मुज सो घरी भावे ॥ रे० ॥२॥
आतम अनुभव रस भरी,

यामें और न मावे ॥
आनंदघन अविचल कला,
विरला कोइ पावे ॥ रे० ॥ ३ ॥



॥ पद त्रीजुं ॥ राग वेलावल ॥
जीय जाने मेरी सफल घरी री ॥
जीय० ॥ ए आंकणी ॥
सुत वनिता धन यौवन मातो,
गर्न तणी वेदन विसरी री ॥
जीय० ॥ १ ॥
पनको राज साच करी माचत,

राचत गंह गगन बदरी री ॥
आइ अचानक काल तोपची,
गहेगो ज्युं नाहर बकरी री ॥
जीय० ॥ २ ॥

अतिही अचेत कछु चेतत नांहि,
पकरी टेक हारिल लकरी री ॥
आनंदघन हीरो जन छांरी,
नर मोह्यो माया ककरी री ॥
जीय० ॥ ३ ॥

॥ पद चोथुं ॥ राग वेलावल

सुहागण जागी अनुभव प्रीत ॥
सुहा० ॥ ए आंकणी ॥
निंद अज्ञान अनादिकी,
मिट गइ निज रीत ॥ सु० ॥ १ ॥
घट मंदिर दीपक कीयो,
सहज सुज्योति सरूप ॥
आप पराइ आपही,
ठानत वस्तु अनूप ॥ सु० ॥ २ ॥
कहा दिखावुं औरकुं,
कहा समजाउं भोर ॥
तीर अचूक है प्रेमका,

लागे सो रहे ठोर ॥ सु० ॥ ३ ॥
नादविलुब्धो प्राणकुं,
गिने न तृण मृग लोय ॥
आनंदघन प्रभु प्रेमकी,
अकथ कहानी कोय ॥ सु० ॥४॥

॥ पद पांचमुं ॥ राग आशावरी ॥
अवधू नट नागरकी बाजी,
जाणे न बांभण काजी ॥ अ० ॥
ए आंकणी ॥
थिरता एक समयमें ठाने,

उपजे विणसे तवही ॥
उलट पलट ध्रुवसत्ता राखे,
या हम सुनी न कबही॥अ०॥१॥
एक अनेक अनेक एक फुनी,
कुंडल कनक सुभावे ॥
जलतरंग घटमाटी रविकर,
अगनित ताहि समावे॥अ०॥२॥
है नांही है वचन अगोचर,
नय प्रमाण सत्तभंगी ॥
निरपख होय लखे कोइ विरला,
क्या देखे मत जंगी ॥अ०॥ ३॥

सर्वमयी सरवंगी माने,
न्यारी सत्ता नावे ॥
आनंदघन प्रभु वचन सुधारस,
परमारथ सो पावे ॥ अ० ॥ ४ ॥

॥ पद ९हुं ॥ साखी ॥
आतम अनुभव रसिककों,
अजब सुन्यो विरतंत ॥
निर्वेदी वेदन करे,
वेदन करे अनंत ॥ १ ॥
॥ राग रामग्री ॥
माहारो बालुडो संन्यासी,

देह देवल मठवासी ॥ मा० ॥ १ ॥
ए आंकणी ॥
इडा पिंगला मारग तज योगी,
सुखमना घर वासी ॥
ब्रह्मरंध्र मधी आसन पूरी बाबु,
अनहद तान बजासी ॥ मा० ॥ २ ॥
यम नियम आसन जयकारी,
प्राणायाम अभ्यासी ॥
प्रत्याहार धारणा धारी,
ध्यान समाधि समासी ॥ मा० ॥ ३ ॥
मूल उत्तरगुण मुद्रा धारी,

पर्यंकासन वासी ॥
रेचक पूरक कुंभक सारी,
मन इंद्रिय जयकासी॥मा०॥४॥
थिरता जोग युगति अनुकारी,
आपो आप विमासी ॥
आतम परमातम अनुसारी,
सीझे काज समासी ॥मा०॥ ५ ॥



॥ पद सातमुं ॥ साखी॥
जग आशा जंजीरकी,
गति उलटी कुल मोर ॥

ऊकस्यो धावत जगतमें,
रहे छूटो इक ठोर ॥ २ ॥

॥ राग आशावरी ॥

अवधू क्या सोवे तन मठमें,
जाग विलोकन घटमें॥अवधू०॥
ए आंकणी ॥
तन मठकी परतीत न कीजें,
ढहि परे एक पलमें ॥
हलचल मेटि खबर ले घटकी,
चिह्ने रमता जलमें॥अवधू०॥१॥
मठमें पंच भूतका वासा,

सासा धूत खवीसा ॥
छिन छिन तोही छलनकुं चाहे,
समजे न बौरा सीसा॥अवधू० २।
शिर पर पंच वसे परमेश्वर,
घटमें सूछम वारी ॥
आप अभ्यास लखे कोइ विरला,
निरखे धूकी तारी॥अवधू०॥३॥
आशा मारी आसन घर घटमें,
अजपा जाप जपावे ॥
आनंदघन चेतनमय मूरति,
नाथ निरंजन पावे ॥अवधू०।४।

॥ पद आठमुं ॥ साखी ॥

आतम अनुभव फूलकी,
नवली कोउ रीत ॥
नाक न पकरे वासना,
कान ग्रहे न प्रतीत ॥ १ ॥

॥ राग धन्याश्री अथवा सारंग॥

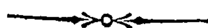
अनुभव नाथकुं क्युं न जगावे ॥
ममता संग सो पाय अजागल,
थनतें दूध दुहावे ॥ अ०॥ १ ॥
मैरे कहेतें खीज न कीजे,
तुं ऐसीही सीखावे ॥

वहोत कहेतें लागत ऐसी,
अंगुली सरप दिखावे॥अ०॥२॥
औरनके संग राते चेतन,
चेतन आप बतावे ॥
आनंदघनकी सुमति आनंदा,
सिद्ध सरूप कहावे ॥ अ०॥ ३॥



॥ पद नवमुं ॥ राग सारंग ॥
नाथ निहारो आपमतासी,
वंचक शठ संचकसी रीतें,
खोटो खातो खतासी॥नाथ०।१।

आप विगुंचण जगकी हासी,
सियानप कौन बतासी ॥
निजजन सुरिजन मेला ऐसा,
जैसा दूध पतासी ॥ नाथ०॥२॥
ममता दासी अहितकरी हर वि-
धि, विविध भांति संतासी ॥
आनंदघन प्रभु विनति मानो,
और न हितु समतासी।नाथ०।३



॥ पद दशमुं ॥ राग टोडी ॥
परम नरममति और न आवे।प०।

मोहन गुन रोहन गति सोहन,
मेरी वैरन ऐसें निठुर लिखावे
॥ परम० ॥ १ ॥
चेतन गात मनात न एतें,
मूल वसात जगात वढावे ॥
कोउ न दूती दलाल विसीठी,
पारखी प्रेम खरीद वनावे
॥ परम० ॥ २ ॥
जांघ उघारी अपनी कहा एते,
विरहजार निस मोही सतावे॥
एती सुनी आनंदघन नावत,

और कहा कोउ डुंड वजावे
॥ परम० ॥ ३ ॥

॥ पद अगीआरमुं ॥
।राग मालकोश वेलावल, टोडी।
आतम अनुभव रीति वरीरी ॥
आ० ॥ ए आंकणी ॥
मोर बनाए निज रूप निरुपम,
तिछन रुचिकर तेग धरीरी ॥
आतम० ॥ १ ॥
टोप सन्नाह शूरको बानो,

एकतारी चोरी पहिरीरी ॥
सत्ता थलमें मोह विदारत,
ऐ ऐ सुरिजन मुह निसरीरी ॥
आतम० ॥ २ ॥
केवल कमला अपछर सुंदर,
गान करे रस रंग जरीरी ॥
जीत निशान वजाइ विराजे,
आनंदघन सर्वंग धरीरी ॥
आतम० ॥ ३ ॥

॥ पद बारमुं ॥ साखी ॥
कुबुद्धि कुबजा कुटिल गति,
सुबुद्धि राधिका नारी ॥
चोपर खेले राधिका,
जीते कुबजा हारी ॥ १ ॥
॥ राग रामग्री ॥
खेले चतुर्गति चौपर ॥ प्रानी मेरो
खेले० ॥ ए आंकणी ॥
नरद गंजीफा कौन गिनत है,
माने न लेखे बुद्धिवर ॥ प्रा० ॥ १ ॥
राग दोष मोहके पासे,

आप बनाए हितकर ॥
जैसा दाव परे पासेका,
सारी चलावे खीलकर॥प्रा०।२॥
पांच तलें है दूआ ज्ञाइ,
छका तलें है एका ॥
सब मिल होत बराबर लेखा,
यह विवेक गिनवेका ॥प्रा०॥३॥
चउराशी माचे फिरे नीली,
त्याह न तोरी जोरी ॥
लाल जरद फिरे आवे घरमें,
कबहुक जोरी बिगोरी॥प्रा०॥४॥

भाव विवेकके पाउ न आवत,
तव लग काची बाजी ॥
आनंदघन प्रभु पाउ देखावत,
तो जीते जीय गाजी ॥प्रा०॥५॥



॥ पद तेरमुं ॥ राग सारंग ॥
अनुभव हम तो रावरी दासी
॥ अनु० ॥
आइ कहांतें माया ममता,
जानुं न कहांकी वासी॥अनु०।१।
रीज परें वाके संग चेतन,

तुम क्युं रहत उदासी ॥
वरज्यो न जाय एकांत कंतको,
लोकमें होवत हांसी॥अनु०॥१॥
समजत नांही निठुर पति एती,
पल एक जात छमासी ॥
आनंदघन प्रभु घरकी समता,
अटकली और लबासी॥अनु० २



॥ पद चौदमुं ॥ राग सारंग ॥
अनुभव तुं है हेतु हमारो
॥ अनु० ॥ ए आंकणी ॥

आय उपाय करो चतुराइ,
औरको संग निवारो ॥ अ० ॥ १ ॥
तृष्णा रांड भांडकी जाइ,
कहा घर करे सवारो ॥
शठ ठग कपट कुटुंबही पोखै,
मनमें क्युं न विचारो (पाठांतर)
उनकी संगति वारो ॥ अ० ॥ २ ॥
कुलटा कुटिल कुबुद्धि संग खे-
लकें, अपन पत क्युं हारो ॥
आनंदघन समता घर आवे,
वाजे जीत नगारो ॥ अ० ॥ ३ ॥

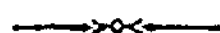
॥ पद पंदरमुं ॥ राग सारंग ॥
मेरे घट ग्यान भानु भयो भोर ॥
मेरे० ॥
चेतन चकवा चेतन चकवी,
भागो विरहको सोर ॥मेरे०॥१॥
फैली चिहुंदिस चतुरा भाव रुचि,
मिट्यो भरम तम जोर ॥
आपकी चोरी आपही जानत,
और कहत न चोर ॥ मेरे० ॥२॥
अमल कमल विकच भये भूतल,
मंद विषय शशिकोर ॥

आनंदघन प्रभु आवशे,
सेजडी रंग रोला ॥निश०॥ ५॥



॥ पद सत्तरमुं ॥ राग सोरठ ॥
छोराने क्युं मारे छे रे,
जाये काट्या डेण ॥
छोरो छे म्हारो बालो भोलो,
बोले छे अमृत वेण ॥छोरा०॥१॥
लेय लकुटियां चालण लागो,
अब कांइ फूटां छे नेण ॥
तुं तो मरण सिराणें सूतो,

रोटी देशे कोण ॥ गेरा० ॥ २ ॥
पाच पचीश पचासां ऊपर,
बोले हे सुधां वेण ॥
आनंदघन प्रज्ञु दास तिंहारो,
जनम जनमके सेण॥गेरा०॥३॥



॥ पद अढारसुं ॥
॥राग मालकोश, रागणी गोडी॥
रीसानी आप मनावो रे,
विच्च वसीठ न फेर ॥ रीसा०॥
सौदा अगम है प्रेमका रे,

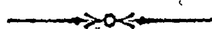
परख न बूझे कोय ॥
ले दे वाही गम पडे प्यारे,
और दलाल न होय॥रीसा०।१
दो बातां जीयकी करो रे,
मेटो मनकी आंट ॥
तनकी तपत बूझाइयें प्यारे,
वचन सुधारस छांट॥रीसा०॥२॥
नेक नजर निहारीयें रे,
उजर न कीजे नाथ ॥
तनक नजर मुजरे मले प्यारे,
अजर अमर सुखसाथ॥री०।३।

निसि अंधियारी घनघटा रे,
पाउं न वाटके फंद ॥
करुणा करो तो वहुं प्यारे,
देखुं तुम मुखचद ॥रीसा० ॥४॥
प्रेम जहां डुविधा नहीं रे,
मेट कुराहित राज ॥
आनंदघन प्रभु आय विराजे,
आपहीसमता सेज॥रीसा० ।५।



। पद उंगणीशमुं। राग वेलावल।
डुलह नारी तुं वमी बावरी,

पिया जागे तुं सोवे ॥
पिया चतुर हम निपट अग्यानी,
न जानु क्या होवे ॥ छल० ॥ १ ॥
आनंदघन पिया दरस पियासें,
खोल घूंघट मुख जोवे ॥ छ० ॥ २ ॥



॥ पद वीशमुं ॥

॥ राग गोडी, आशावरी ॥

आज सुहागन नारी, अवधू
आज० ॥ ए आंकणी ॥
मेरे नाथ आप सुध लीनी,

कीनी निज अंगचारी॥अ०॥१॥
प्रेम प्रतीत राग रुचि रंगत,
पहिरे जीनी सारी ॥
महिंदी भक्ति रंगकी राची,
भाव अंजन सुखकारी॥अ०।२।
सहज सुभाव चूरी मैं पेनी,
थिरता कंकन भारी ॥
ध्यान उरवसी उरमें राखी,
पिय गुनमाल आधारी॥अ०।३।
सुरत सिंदूर मांग रंग राती,
निरतें वेनी समारी ॥

उपजी ज्योत उद्योत घट त्रिभु-
वन, आरसी केवल कारी ॥
अ० ॥ ४ ॥
उपजी धुनी अजपाकी अनहद,
जीतनगारे वारी ॥
झडी सदा आनंदघन बरखत,
बिन मोर एकनतारी॥ अ०॥५॥



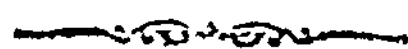
॥ पद एकवीशमुं ॥ राग गोडी ॥
निशानी कहा बताउं रे,
तेरो अगम अगोचर रूप ॥
निशानी० ॥ ए आंकणी ॥

रूपी कहुं तो कछु नहीं रे,
बंधे कैसे अरूप ॥
रूपारूपी जो कहुं प्यारे,
ऐसे न सिद्ध अनुप ॥ निशा०।२।
शुद्ध सनातन जो कहुं रे,
बंध न मोक्ष विचार ॥
न घटे संसारी दशा प्यारे,
पुण्य पाप अवतार ॥निशा०।३।
सिद्ध सनातन जो कहुं रे,
उपजे विनसे कौन ॥
उपजे विनसे जो कहुं प्यारे,

नित्य अवाधित गौन ॥नि०॥३॥
सर्वांगी सब नयधनी रे,
माने सब परमान ॥
नयवादी पल्लो ग्रही प्यारे,
करे लराइ ठान ॥ निशा०॥ ४ ॥
अनुभव अगोचर वस्तु है रे,
जाणवो इह इलाज ॥
कहन सुननको कछु नहीं प्यारे,
आनंदघन महाराज ॥नि०॥५॥
॥ पद बावीशमुं ॥ राग गोडी ॥
विचारी कहा विचारे रे,

तेरो आगम अगम अथाह
॥ वि० ॥ ए आंकणी ॥
विनु आधे आधा नहीं रे,
विन आधेय आधार ॥
मुरगी विन इंडा नहीं प्यारे,
या विन मुरगकी नार ॥वि०॥१॥
भुरटा वीज विना नहीं रे,
वीज न भुरटा टार ॥
निसि विन दिवस घटे नहीं प्यारे,
दिन विन निसि निरधार।वि०२।
सिद्ध संसारी बिन नहीं रे,

सिद्ध विना संसार ॥
करता विन करनी नहीं प्यारे,
विन करनी करतार ॥ वि० ॥ ३ ॥
जनम मरण विना नहीं रे,
मरण न जनम विनाश ॥
दीपक विन परकाशता प्यारे,
विन दीपक परकाश ॥ वि० ॥ ४ ॥
आनंदघन प्रभु वचनकी रे,
परिणति धरो रुचिवंत ॥
शाश्वत भाव विचारके प्यारे,
खेलो अनादि अनंत ॥ वि० ॥ ५ ॥



॥ पद त्रेवीशमुं ॥
॥ राग आशावरी ॥

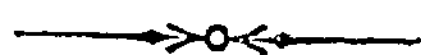
अवधू अनुभवकलिका जागी,
मति मेरी आतम समरन लागी
॥ अ० ॥ ए आंकणी ॥
जाये न कबहु उर ढिग नेरी,
तेरी बिनता वेरी ॥
माया चेरी कुटुंब करी हाथे,
एक डेढ दिन घेरी ॥ अ० ॥१॥
जरा जनम मरन वस सारी,
असर न डुनिया जेती ॥

देढवकाय न वागमें मीयां,
किस पर ममता एती॥अ०॥२॥
अनुभव रसमें रोग न सोगा,
लोकवाद सब मेटा॥
केवलअचल अनादि अबाधित,
शिव शंकरका भेटा॥ अ०॥३॥
वर्षा बुंद समुद समानी,
खबर न पावे कोइ॥
आनंदघन व्है ज्योति समावे
अलख कहावे सोइ॥अ०॥४॥

॥ पद चोवीशमुं ॥ राग रामग्री ॥
सुने म्हारो कब मिलसे
मनमेलू ॥ सु० ॥
मनमेलु विण केलि न कलीए,
वाले कवल कोइ वेलू ॥ १ ॥
आप मिल्याथी अंतर राखे,
सुमनुष्य नहीं ते लेलू ॥
आनंदघन प्रभु मन मलीया
विण, को नवि विलगे चेलू ॥

॥ पद पचीशमुं ॥ राग रामग्री ॥
क्यारे मुने मिलशे माहारो संत

सनेही ॥ क्यारे० ॥ टेक ॥
संत सनेही सूरिजन पाखे,
राखे न धीरज देही॥क्यारे०॥१॥
जन जन आगल अंतरगतनी,
वातडली कहुं केही ॥
आनंदघन प्रभु वैद्य वियोगें,
किम जीवे मधुमेही॥क्या०॥२॥



॥पद छवीशमुं॥राग आशावरी॥
अवधू क्या मागुं गुनहीना,
वे गुन गनिन प्रवीना ॥ अ० ॥
ए आंकणी ॥

गाय न जानुं वजाय न जानुं,
न जानुं सुर भेवा ॥
रीज न जानुं रीजाय न जानुं,
न जानुं पदसेवा ॥ अ० ॥ १ ॥
वेद न जानुं किताव न जानुं,
जानुं न लछन छंदा ॥
तरकवाद विवाद न जानुं,
न जानुं कविफंदा ॥ अ० ॥ २ ॥
जाप न जानुं जुवाव न जानुं,
न जानुं कविवाता ॥
भाव न जानुं भगति न जानुं,

जानुं न सीरा ताता ॥अ०॥३॥
ग्यान न जानुं विग्यान न जानुं,
न जानुं भजनामा (॥पाठांतर॥)
न जानुं पदनामा ॥
आनंदघन प्रभुके घरद्वारे,
रटन करुं गुणधामा ॥अ०॥४॥

॥ पद सत्तावीशमुं ॥
॥ राग आशावरी ॥
अवधू राम राम जग गावे,
विरला अलख लखावे ॥ अ०॥
ए आंकणी ॥

मतवाला तो मतमें माता,
मठवाला मठराता ॥
जटा जटाधर पटा पटाधर,
छता छताधर ताता ॥ अ० ॥ १ ॥
आगम पढि आगमधर थाके,
मायाधारी छाके ॥
दुनियादार दुनिसें लागे,
दासा सब आशाके ॥ अ० ॥ २ ॥
बहितराम मूढा जग जेता,
मायाके फंद रहेता ॥
घट अंतर

ब्रह्म अग्नि परजाली ॥
तन भाठी अवटाइ पीये कस,
जागे अनुभव लाली ॥
आशा० ॥ ३ ॥
अगम पीयाला पीयो मतवाला,
चिह्नी अध्यातम वासा ॥
आनंदघन चेतन व्है खेले,
देखे लोक तमासा ॥
आशा० ॥ ४ ॥

॥ पद उंगणत्रीशमुं ॥
॥ राग आशावरी ॥

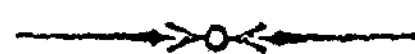
अवधू नाम हमारा राखे,
सो परम महा रस चाखे ॥
अ० ॥ ए आंकणी ॥
नहीं हम पुरुषा नहीं हम नारी,
वरन न भात हमारी ॥
जाति न पांति न साधन साधक,
नहीं हम लघु नहीं भारी ॥
अ० ॥ १ ॥
नहीं हम ताते नहीं हम सीरे,
नहीं दीर्घ नहीं छोटा ॥
नहीं हम भाइ नहीं हम भगिनी,

नहीं हम बाप न बेटा ॥ अ०॥२॥
नहीं हम मनसा नहीं हम शब्दा,
नहीं हम तरणकी धरणी ॥
नहीं हम भेख, भेखधर नांही,
नहीं हम करता करणी। अ०। ३॥
नहीं हम दरसन नहीं हम पर-
सन, रस न गंध कछु नांही ॥
आनंदघन चेतनमय मूरति,
सेवकजन बली जाही॥ अ०॥४॥

॥पद त्रीशमुं ॥ राग आशावरी॥
साधो भाइ समता रंग रमीजें,

अवधू ममता संग न कीजें ॥
सा० ॥ ए आंकणी ॥
संपत्ति नांहि नांहि ममतामें,
ममतामां मिस मेटे ॥
खाट पाट तजी लाख खटाउ,
अंत खाखमें लेटे ॥ सा० ॥ १ ॥
धन धरतीमें गाडे बौरे,
धूर आप मुख ल्यावे ॥
मूषक साप होवेगो आखर,
तातें अलछि कहावे ॥ सा०॥२॥
समता रतनागरकी जाइ,

अनुभव चंद सुभाइ ॥
कालकूट तजी भावमें श्रेणी,
आप अमृत ले आइ॥सा०॥३॥
लोचन चरन सहस चतुरानन,
इनतें बहुत डराइ ॥
आनंदघन पुरुषोत्तम नायक,
हित करी कंठ लगाइ॥सा०॥४॥



॥ पद एकत्रीशमुं ॥ श्रीराग ॥
कित जांनमतें हो प्राननाथ,
इत आय निहारो घरको साथ ॥
कित० ॥ १ ॥

उत माया काया कवन जात,
यहु जड तुम चेतन जग
विख्यात ॥
उत करम भरम विषवेलि संग,
इत परम नरम मति मेलि रंग ॥
कित० ॥ ३ ॥
उत काम कपट मद मोह मान,
इत केवल अनुभव अमृत पान॥
आलि कहे समता उत दुःख अ-
नंत,इत खेले आनंदघन वसंत॥
कित० ॥ ३ ॥

———

॥ पद बत्रीशमुं ॥ राग सामेरी ॥
निठुर भये क्युं ऐसें, पीया तुम ॥
निठुर० ॥ ए आंकणी ॥
मैं तो मन वच क्रम करी राउरी,
राउरी रीत अनैंसे ॥ नि० ॥ १ ॥
फूले फूले भमर कैसी भांउरी भ-
रतहुं, निवहे प्रीत क्युं ऐसें ॥
मैं तो पीयुतें ऐसी मलि आली,
कुसुम वास संग जैसें॥नि० ॥ २॥
ऐंठी जान कहा परे एती,
नीर निवहीयें भैसें ॥

गुन अवगुन न विचारो आनं-
दघन,कीजीयें तुम तैसें।नि०।३।

॥ पद तेत्रीशमुं ॥ राग गोडी ॥
मिलापी आन मिलावो रे,
मेरे अनुभव मीठडे मित्त॥मि०॥
चातक पीउ पीउ रटे रे,
पीउ मिलाव न आन ॥
जीव पीवन पीउ पीउ करे प्यारे,
जीउ नीउ आन ए आन॥मि० १
दुखीयारी निसदिन रहुं रे,

फिरुं सब सुधवुध खोय ॥
तन मनकी कबहु लहुं प्यारे,
किसैं दिखाउं रोय ॥ मि० ॥२॥
निसि अंधारी मुहि हसे रे,
तारे दांत दिखाय ॥
भादो कादो में कीयो प्यारे,
असुअन धार वहाय॥मि०॥३॥
चित्त चातक पीउ पीउ करे रे,
प्रणमे दो कर पीस ॥
अबलासुं जोरावरी प्यारे,
एती न कीजे रीस ॥ मि०॥ ४ ॥

आतुर चातुरता नहीं रे,
सुनि समता टुंक वात,
आनंदघन प्रज्ञु आय मिले प्या-
रे,आज घरे हर न्नात॥मि०॥५॥

॥ पद चोत्रीशमुं ॥ राग गोडी ॥
देखो आली नट नागरको सांग॥
दे० ॥
औरही और रंग खेलत तातें,
फीका लागत अंग ॥ दे० ॥१॥
औरह तो कहा दीजे वहुत कर,
जीवित है इह ढंग ॥

मेरो और विच अंतर एतो,
जैतो रूपें रंग ॥ दे० ॥ २ ॥
तनु सुध खोय घूमत मन ऐसें,
मानुं कछुइक खाइ भंग ॥
एते पर आनंदघन नावत,
और कहा कोउ दीजें संग ॥
दे० ॥ ३ ॥

॥ पद पांत्रीशमुं ॥
॥ राग दीपक अथवा कान्हरो ॥
करे जारे जारे जारे जा ॥ करे० ॥

सजि सणगार बनाये जूखन,
गइ तव सूनी सेजा ॥ करे० ॥१॥
विरहव्यथा कछु ऐसी व्यापती,
मानुं कोइ मारती वेजा ॥
अंतक अंत कहांलुं लेगो प्यारे,
चाहे जीव तुं ले जा ॥करे०॥२॥
कोकिल काम चंद्र चूतादिक,
चेतन मत है जेजा ॥
नवल नागर आनंदघन प्यारे,
आइ अमित सुख दे जा ॥
करे० ॥ ३ ॥

॥ षट्त्रीशमुं ॥

॥ राग मालसिरि ॥

वारे नाह संग मेरो,
युंही जोवन जाय ॥
ए दिन हसन खेलनके सजनी,
रोते रेन विहाय ॥ वारे० ॥१॥
नग भूषणसें जरी जातरी,
मोतन कछु न सुहाय ॥
इक बुध जीयमें ऐसी आवत है,
लीजेरी विष खाय ॥ वारे० ॥२॥
ना सोवत है लेत उसास न,

मनहीमें पिगताय ॥
योगिनी हुयकें निकसूं घरतें,
आनंदघन समजाय॥ वारे०।३।

॥ पद साडत्रीशमुं ॥
॥ राग वेलावल ॥

ता जोगें चित्त ल्याउं रे
वहाला ॥ ता० ॥
समकित दोरी शील लंगोटी,
घुलघुल गांठ घुलाउं ॥
तत्त्वगुफामें दीपक जोउं,

नट नागरसूं जोरी सखी हम,
और सबनसों तोरी हो॥म०॥१॥
लोक लाजसूं नांही न काज,
कुल मरयादा गोरी हो॥
लोक बटाउ हसो बिरानो,
अपनो कहत न कोरी हो॥म०॥२॥
मात तात अरु सजन जाति,
वात करत है चोरी हो॥
चाखे रसकी क्युं करी छूटे,
सुरिजन सुरिजन टोरी हो
॥ म० ॥३॥

औरहनो कहा कहावत औरपें,
नांहि न कीनी चोरी हो ॥
काछ कछ्यो सो नाचत निवहे,
और चाचर चरं फोरी हो
॥ म० ॥ ४ ॥
ज्ञानसिंधू मथित पाइ,
प्रेमपीयूप कटोरी हो ॥
मोदत आनंदघन प्रभु शशिधर,
देखत दृष्टि चकोरी हो ॥ म०।५।

॥ पद उंगणचालीशमुं ॥
॥ राग जयजयवंती ॥

तरसकी जइ दइ कौ दइकी
सवारीरी, तीक्ष्ण कटाक्ष
छटा लागत कटारीरी ॥ तर० ॥ १॥
सायक लायक नायक प्रानको
पहारीरी, काजर काज न लाज
बाज न कहुं वारीरी॥तर० ॥२॥
मोहनी मोहन ठग्यो जगत ठ
गारीरी, दीजीये आनंदघन
दाह हमारीरी ॥ तर० ॥ ३ ॥

॥ पद चालीशमुं ॥
॥ राग आशावरी ॥

मीठडो लागे कंतडो ने,
खाटो लागे लोक ॥
कंत विहूणी गोठडी,
ते रण मांहे पोक ॥ मी० ॥ १ ॥
कंतडामें कामण,
लोकडामें शोक ॥
एक ठामे केम रहे,
दूध कांजी थोक ॥ मी० ॥ २ ॥
कंत विण चउ गति,

आणुं मानुं फोक ॥
उघराणी सिरूं फिरउ,
नाणुं तेजे रोक ॥ मी० ॥ ३ ॥
कंत विना मति मारी,
अह्वाडानी बोक ॥
धोक द्युं आनंदघन,
अवरने ढोक ॥ मी० ॥ ४ ॥



॥ पद एकतालीशमुं ॥
॥ वेलावल अथवा मारु ॥
पीया बिनु सुद्ध बुद्ध मूली हो,

आंख लगाइ दुःखमहेलके,
जरूखे झूली हो ॥ पीया०॥१॥
हसती तबहु विरानीया,
देखी तन मन छीज्यो हो ॥
समजी तब एती कही,
कोइ नेह न कीज्यो हो॥पी०॥२॥
प्रीतम प्राणपति विना,
प्रिया कैसें जीवे हो ॥
प्रान पवन विरहा दशा,
भुयंगम पीवे हो ॥ पीया० ॥३॥
शीतल पंखा कुमकुमा,

चंदन कहा लावे हो ॥
अनल न विरहानल ये है,
तन ताप बढावे हो ॥पीया०॥४॥
फागुन चाचर इक निसा,
होरी सिरगानी हो ॥
मेरे मन सब दिन जरे,
तन खाख उडानी हो ॥ पी०।५॥
समता महेल बिराज है,
वाणी रस रेजा हो ॥
बलि जाउं आनंदघन प्रभु,
ऐसें निठुर न व्हेजा हो ॥पी०।६।



॥ पद बेंतालीशमुं ॥

॥राग सारंग अथवा आशावरी॥

अब हम अमर भये न मरेंगे ॥
अब० ॥

या कारन मिथ्यात दीयो तज,
क्युं कर देह धरेंगे ॥ अ० ॥ १ ॥

राग दोस जग बंध करत है,
इनको नाश करेंगे ॥

मर्यो अनंत कालतें प्रानी,
सो हम काल हरेंगे ॥ अ० ॥२॥

देह विनाशी हुं अविनाशी,

अपनी गति पकरेंगे ॥
नासी जासी हम थिर वासी,
चोखे व्है निखरेंगे ॥ अ० ॥ ३॥
मर्यो अनंत वार बिन समज्यो,
अब सुख दुःख विसरेंगे ॥
आनंदघन निपट निकट अक्षर
दो, नहीं समरे सो मरेंगे ॥ अ० ॥

॥ पद त्रैंतालीशमुं ॥ राग टोडी ॥
मेरी तुं मेरी तुं काहीं डरेरी । मे० ।
कहे चेतन समता सुनी आखर,

औैर डेढ दिन जूठ लरेरी ॥
मेरी० ॥ १ ॥
एती तो हुं जानुं निहचे,
रीरी पर न जराउ जरेरी ॥
जब अपनो पद आप संभारत,
तब तेरे परसंग परेरी ॥मेरी०॥२॥
औसर पाइ अध्यातम शैली,
परमातम निज योग धरेरी ॥
शक्ति जगावे निरुपम रूपकी,
आनंदघन मिलि केलि करेरी ॥
॥ मेरी० ॥ ३ ॥

॥ पद चुमालीशमुं ॥ राग टोडी ॥

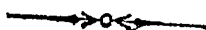
तेरी हुं तेरी हुं एती कहुंरी,
इन बातमें दगो तुं जाने,
तो करवत काशी जाय गहुंरी ॥
तेरी० ॥ १ ॥
वेद पुराण किताब कुरानमें,
आगम निगम कछु न लहुंरी ॥
वाचा फोर सिखाइ सेवनकी,
मैं तेरे रस रंग रहुंरी ॥
तेरी० ॥ २ ॥
मैरे तो तुं राजी चहीये,

औरके बोल में लाख सहुंरी॥
आनंदघन पिया वेग मिलो प्या-
रे, नहीं तो गंग तरंग वहुंरी ॥
तेरी० ॥ ३ ॥

॥पद पीस्तालीशमुं॥ राग टोडी॥
ठगोरी जगोरी लगोरी जगोरी॥
ए आंकणी ॥
ममता माया आतम ले मति,
अनुत्नव मेरी और दगोरी ॥
ठगो० ॥ १ ॥

आत न तात न मात न जात न,
गात न वात न लागत गोरी ॥
मेरे सब दिन दरसन परसन,
तान सुधारस पान पगोरी ॥
ठगो० ॥ २ ॥

प्राननाथ विछरेकी वेदन,
पार न पावुं अथाग थगोरी ॥
आनंदघन प्रभु दर्शन औघट,
घाट उतारन नाव मगोरी ॥
ठगो० ॥ ३ ॥



॥ पद छेंतालीशमुं ॥ राग टोडी ॥
चेतन चतुर चोगान लरीरी॥चे०।
जीत लै मोहरायको लसकर,
मिसकर गंड अनाद धरीरी ॥
चेतन० ॥ १ ॥
नागो कादल ताड ले डुसमन,
लागे काचो दोय घरीरी ॥
अचल अबाधितकेवल मनसुफ,
पावे शिव दरगाह भरीरी ॥
चेतन० ॥ २ ॥
और लराइ लरे सो बावरा,

सूर पठाडे नांउं अरीरी ॥
धरम मरम कहा बूझे न औरें,
रहे आनंदघन पद पकरीरी ॥
चेतन० ॥ ३ ॥



॥पद सुडतालीशमुं॥ राग टोडी॥
पिय बिन निसदिन झूरुं खरीरी॥
पिय० ॥ ए आंकणी ॥
लहुडी वडीकी कहानी मिटाइ ॥
द्वारतें आंखे कवन टरीरी ॥
पिय० ॥ १ ॥

पट भूखन तन भौंक न उंढे,
भावे न चौंकी जराउं जरीरी ॥
शिवकमला आली सुख नउ पा-
वत, कौन गिनत नारी अमरीरी॥
पिय० ॥ २ ॥

सास उसास विसास न राखे,
नणदी निगोरी भोरी लरीरी ॥
और तवीव न तपत बुऊावे,
आनंदघन पीयुष ऊरीरी ॥
पिय० ॥ ३ ॥



॥ पद अडतालीशमुं ॥

॥ राग मारु—जंगलो ॥

मायड़ी मुने निरपख किणही न मूकी ॥ निरपख० ॥ माय० ॥

निरपख रहेवा घणुंही झूरी,

धीमे निज मति फूंकी॥माय०।१।

योगीए मलीने योगण कीनी,

यतिए कीनी यतणी ॥

भगते पकडी भगताणी कीनी,

मतवाले कीनी मतणी॥माय०२

केणे मूकी केणे लूंची,

केणे केसैं लपेटी ॥
एकपखो में कोइ न देख्यो,
वेदन किणही न मेटी॥माय०।३।
राम भणी रहीमान भणाइ,
अरिहंत पाठ पढाइ ॥
घर घरने हुं धंधे वलगी,
अलगी जीव सगाइ॥माय०।४॥
केणे ते थापी केणे उथापी,
कैणे चलावी किण राखी ॥
केणे जगाडी केणे सूआडी,
कोइनुं कोइ नवि साखी॥माय० ५

धींग दुर्बलने ठेलीजे,
ठींगे ठींगो वाजे ॥
अबला ते केम बोली शकीए,
बड्योद्धाने राजे ॥ माय० ॥६॥
जे जे कीधुं जे जे कराव्युं,
तेह कहेतां हुं लाजुं ॥
थोडे कहे घणुं प्रीछी लेजो,
घरशुं तीरथ नहीं बीजुं॥माय० ७
आप बीती कहेतां रीसावे,
तेथी जोर न चाले ॥
आनंदघनवाहालोबांहडीझाले,

तो वीजुं सघळुं पाळे ॥
माय० ॥ ८ ॥



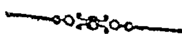
॥ पद ओगणपचासमुं ॥
॥ राग सोरठ ॥

कंचन वरणो नाह रे,
मुने कोय मिलावो ॥ कं० ॥
अंजन रेखन आंख न भावे,
मंजन शिर पडो दाह रे ॥
मुने कोय० ॥ १ ॥

कौन सेन जाने पर मनकी,
वेदन विरह अथाह ॥
थरथर धूजे देहडी मारी,
जिम वानर भरमाह रे ॥
मुने कोय० ॥ २ ॥
देह न गेह न नेह न रेह न,
भावे न दूहा गाहा ॥
आनंदघन वालो बांहडी झाले,
निशदिन धरुं उमाहा रे ॥
मुने कोय० ॥ ३ ॥

॥पद पचासमुं॥ राग धन्याश्री॥
अनुनव प्रीतम कैसे मनासी॥
अनु० ॥
छिन निर्धन सधन छिन निर्मल,
समल रूप वतासी॥अनु०।१।
छिनमें शक्र तक्र फुनि छिनमें,
देखुं कहत अनासी॥
विरज न विच्च आपा हितकारी,
निर्धन जूठ खतासी॥अनु०।श॥
तोहि तूं मेरो मैंहि तुं तेरी,
अंतर काहैं जनासी ॥

आनंदघन प्रभु आन मिलावो,
नहितर करो धनासी॥अनु०॥३॥



॥ पद एकावनमुं ॥ राग धमाल॥
माउंकी राति कातीसी वहे,
छातीय छिन छिन छीना ॥
॥ माउं० ॥ १ ॥
प्रीतम सब छबी निरखके हो,
पीउ पीउ पीउ कीना ॥
वाही बिच चातक करे हो,
प्रान हरे परवीना ॥माउं०॥२॥

एक निसि प्रीतम नांउंकी हो.
विसर गइ सुध नाउ ॥
चातक चतुर विना रही हो,
पीउ पीउ पीउ पीउ पाउ ॥
नांइं० ॥ ३ ॥
एक समे आलापके हो,
कोने अडाने गान ॥
सुघर वपीहा सुर धरे हो,
देत है पीउ पीउ तान ॥
नांइं० ॥ ४ ॥
रात विभाव विलात है हो,

उदित सुभाव सुभान ॥
सुमता साच मते मिले हो,
आए आनंदघन मान ॥
झाडु० ॥ ५ ॥



॥ पद बावनमुं ॥
॥ राग जयजयवंती ॥

मेरे प्रान आनंदघन,
तान आनंदघन ॥
ए आंकणी ॥

मात आनंदघन,

तात आनंदघन ॥
गात आनंदघन,
जात आनंदघन ॥ मे० ॥ १ ॥
लाज आनंदघन,
काज आनंदघन ॥
साज आनंदघन,
लाज आनंदघन ॥ मे० ॥ २ ॥
आभ आनंदघन,
गाभ आनंदघन ॥
नाभ आनंदघन,
लाभ आनंदघन ॥ मे० ॥ ३ ॥



॥ पद त्रेपनमुं ॥ राग सोरठ
सुलतानी ॥ नटरागिणी ॥
॥ सहेली ॥

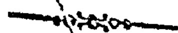
सारा दिल लगा है,
वंसीवारेसूं ॥ वंसीवारेसूं
प्रान प्यारेसूं ॥ सा० ॥
मोर मुकुट मकराकृतकुंडल,
पीतांबर पटवारेसूं ॥ सा० ॥१॥
चंद चकोर भये प्रान पपइया,
नागरनंद दूलारेसूं ॥
इन सखीके गुन गंडप गावे,

आनंदघन उजीयारेसूं॥सा० ३।

॥ पद चोपनमुं ॥ राग प्रजाती ॥
आशावरी ॥ रातडी रमीने
इहांथी आवीया ॥ ए देशी ॥
मूलडो थोमो जाइ व्याजडो
घणो रे,
केम करी दीधो रे जाय ॥
तलपद पूंजी में आपीसघली रे,
तोहे व्याज पूरुं नवि थाय ॥
मू० ॥ १ ॥

व्यापार मांगो जलवट थलवटें रे,
धीरे नहीं नीसानी माय ॥
व्याज छोडावी कोइ खंदा परठवे
रे, तो मूल आपुं सम खाय ॥
मू० ॥ २ ॥

हाटडुं मांडुं रूडा माणक चोकमा
रे, साजनीयानुं मनडुं मनाय ॥
आनंदघन प्रभु शेठ शिरोमणि
रे, बांहडी झालजो रे आय ॥
मू० ॥ ३ ॥



॥पद पंचावनमुं॥राग धन्याश्री॥
चेतन आपा कैसें लहोइ॥चे०॥
सत्ता एक अखंड अबाधित,
इह सिद्धांत पख जोइ॥चे०॥१॥
अन्वय अरु व्यतिरेक हेतुको,
समज रूप भ्रम खोइ॥
आरोपित सर्व धर्म और है,
नंदघन तत सोइ॥चे०॥२॥

छप्पनमुं॥ राग धन्याश्री॥
डी अबला जोर किस्युं करे,

पीउडो पर घर जाय ॥
पूरवदिसि पछिमदिसि रातडो,
रवि अस्तंगत थाय ॥ बा० ॥ १ ॥
पूनम ससी सम चेतन जाणीये,
चंद्रातप सम नाण ॥
वादल भर जिम दलथिति आ-
णीये, प्रकृति अनावृत जाण ॥
बा० ॥ २ ॥
पर घर भमतां स्वाद कियो लहे,
तन धन यौवन हाण ॥
दिन दिन दीसे अपयश वाधतो,

निज जन न माने कांण ॥
वा० ॥ ३ ॥
कुलवट छांडी अवट ऊवट पडे,
मन मेहूवाने घाट ॥
आंधो आंध मिले बे जण,
कोण देखाडे वाट ॥ वा० ॥ ४॥
बंधु विवेके पीजडो बूझ्यो,
वाल्यो पर घर संग ॥
आनंदघन समताघर आणे,
वाधे नव नव रंग ॥ वा० ॥ ५॥



।पद सत्तावनमुं।।राग आशावरी।।

देखो एक अपूरव खेला,
आपही बाजी आपही बाजीगर,
आप गुरु आप चेला।।देखो०।।
लोक अलोक बिच आप विरा-
जित, ग्यान प्रकाश अकेला ॥
बाजी छांड तहां चढ बैठे,
जिहां सिंधुका मेला ॥
देखो० ॥ १ ॥
वाग्‌वाद खटनाद सहुमें,
किसके किसके बोला ॥

पाहाणको ज्ञार कांही उगावत,
एक तारेका चोला॥देखो०॥३॥
षट्पद पदके जोगसिरिखस,
क्यों कर गजपद तोला ॥
आनंदघन प्रभु आय मिलो
तुम, मिट जाय मनका झोला ॥
देखो० ॥ ४ ॥



॥ पद अगावनमुं ॥ राग वसंत ।
प्यारेआय मिलो कहायेंतें जात,

मेरो विरह व्यथा अकुलात गात

॥ प्यारे० ॥ १ ॥

एक पेसाभर न भावे नाज,

न भूषण नहीं पट समाज

॥ प्यारे० ॥ २ ॥

मोहन रास न हूसत तेरी आसी,

मदनो भय है घरकी दासी

॥ प्यारे० ॥ ३ ॥

अनुभव जाहके करो विचार,

कद देखे हैं वाकी तनमें सार

प्यारे० ॥ ४ ॥

जाय अनुभव जइ समजाये कंत,
घर आये आनंदघन भये वसंत
॥ प्यारे० ॥ ५॥

॥ पद उंगणसाठमुं ॥
॥ राग कल्याण ॥
मोकूं कोऊ केसी हूतको,
मेरे काम एक प्रानजीवनसूं,
और भावे सो वको ॥ मो०॥१॥
में आयो प्रभु सरन तुमारी,
लागत नाहीं धको ॥
भुज न उठाय कहुं औरनसूं,

करहुं ज करही सको ॥ मो० ॥१॥
अपराधी चित्त ठान जगत जन,
कोरिक भांत चको ॥
आनंदघन प्रभु निहचे मानो,
इह जन रावरो थको ॥मो०॥२॥



॥ पद साठमुं ॥ राग सारंग ॥
अब मेरे पति गति देव निरंजन॥
अब० ॥
भटकूं कहां कहां सिर पटकूं,

कहा करुं जन रंजन ॥
अव० ॥ १
खंजन द्दगन द्दगन लगावुं,
चाहू न चितवन अंजन ॥
ंजन घट अंतर परमातम,
सकल दुरित भय भंजन ॥
अव० ॥ २ ॥
एह कामगवि एह कामघट,
एही सुधारस मंजन ॥
आनंदघन प्रभु घटवनके हरि,
काम मतंग गज गंजन ॥अ०।३

॥ पद एकसठमुं ॥

॥ राग जयजयवंती ॥

मेरीसुं तुमतें जु कहा,
दूरीके होनें सवैरी री ॥ मे० ॥ १ ॥
रूठेसें देख मेरी,
मनसा दुःख घेरी री ॥
जाके संग खेलो सो तो,
जगतकी चेरी री ॥ मे० ॥ २ ॥
शिर छेदी आंगे धरे,
और नहीं तेरी री ॥
आनंदघन कीसो,

जो कहुं हुं अनेरी री॥ मे० ॥३॥

॥पद बासठमुं ॥ राग मारु ॥
पीया विन सुधवुध खूंदी हो,
विरह भुयंग निसा समे,
मेरी सेजडी खूंदी हो॥ पी०॥१॥
भोयण पान कथा मिटी,
किसकुं कहुं सूधी हो ॥
आजकाल घर आनकी,
जीव आस विलुधी हो॥पी०॥२॥
वेदन विरहे अथाह दे,

पाणी नव नेजा हो ॥
कौन हवीव तवीव है,
टारे कर करेजा हो ॥ पी० ॥ ३ ॥
गाल हथेली लगायकें,
सुरसिंधु समेली हो ॥
असुअन नीर वहायकें,
सिंचुं कर वेली हो ॥ पी० ॥ ४ ॥
श्रावण भाडुं घनघटा,
विच वीज झबूका हो ॥
सरिता सरवर सब भरे,
मेरा घटसर सब सूका हो ॥ पी० ५

अनुभव बात बनायकें,
कहे जैसी भावे हो ॥
समता टुक धीरज धरे,
आनंदघन आवे हो ॥पी० ॥ ६ ॥



॥ पद त्रेसठमुं ॥ राग मारु ॥
॥ व्रजनाथसें सुनाथ विण,
हाथो हाथ विकायो ॥
विचकों कोउ जनकृपाल,
सरन नजर नायो ॥ व्र० ॥ १ ॥
जननी कहुं जनक कहुं,

सुत सुता कहायो ॥
भाइ कहुं भगिनी कहुं,
मित्र शत्रु भायो ॥ व्र० ॥ २ ॥
रमणी कहुं रमण कहुं,
राउ रज उतायो ॥
सेवकपति इंद चंद,
कीट भृंग गायो ॥ व्र० ॥ ३ ॥
कामी कहुं नामी कहुं,
रोग भोग मायो ॥
निशपतिधर देह गेह धरी,
ववित्र विध धरायो ॥ व्र० ॥४॥

विधिनिषेध नाटक धरी,
भेद आठ गयो ॥
भापा षट् वेद चार,
सांग शुद्ध पढायो ॥ भ० ॥ ५ ॥
तुमसें गजराज पाय,
गर्दभ चढी धायो ॥
पायस सुग्रद्का विसारी,
भीख नाज खायो ॥ भ० ॥ ६ ॥
लीलाजुं दटुक नचाय,
कहोजु दास आयो ॥
रोमरोम पुलकित हुं,

परम लाभ पायो ॥ व्र० ॥ ७ ॥
एरि पतितके उधारन तुम,
कहिसो पीवत मामी ॥
मोसुं तुम कब उधारो,
क्रूर कुटिल कामी ॥ व्र० ॥ ८ ॥
और पतित केइ उधारे,
करणी बिनुं करता ॥
एक काही नाउं लेउं,
जूठे बिरुद धरता ॥ व्र० ॥ ए ॥
करनी करी पार भए,
बहोत निगम साखी ॥

शोभा दइ तुमकूं नाथ,
अपनी पत राखी ॥ त्र० ॥१०॥
निपट अज्ञानी पापकारी,
दास है अपराधी ॥
जानु जो सुधार हो,
अव नाथ लाज साधी॥त्र०॥११।
औरको उपासक हुं,
कैसें कोइ उधारुं ॥
दुविधा यह राखो मत,
या वरी विचारुं ॥ त्र० ॥ १२ ॥
गइ सो तो गइ नाथ,

फेर नहीं कीजे ॥
हारे रह्यो हींग दास,
अपनो करी लीजे ॥अ०॥ १३ ॥
दासकों सुधारी लेहु,
बहुत कहा कहियें ॥
आनंदघन परम रीत,
नाउंकी निवहियें ॥ अ०॥१४ ॥

॥ पद चोसठमुं ॥ राग वसंत ॥
॥ अब जागो परमगुरु परम-
देव प्यारे,

मेटहुं हम तुम बिच भेद। अ० १
आलीलाजनिगोरीगमारी जात,
मुहि आन मनावत विविध भात ॥ अ० ॥ २ ॥
अलि पर निर्मूली कुलटी कान,
मुनि तुहि मिलन बिच देत हान ॥ अ० ॥ ३ ॥
पति मतवारे और रंग,
रमे ममता गणिकाके प्रसंग ॥ ॥ अ० ॥ ४ ॥
जब जड तो जड वास अंत,

चित्त फूले आनंदघन जय व-
संत ॥ आ० ॥ ५ ॥

॥ पद पांसठमुं ॥

॥ साखी ॥

रास ससी तारा कला,
जोसी जोइने जोस ॥
रमता सुमता कब मिले (॥ पा-
ठांतर)
आतम मित्ता किम मिले,
जांगे विरहा सोस ॥ १ ॥
॥ गोडी रागमां ॥

॥ पीया विन कौन मिटावे रे,
विरहव्यथा असराल ॥ पी०॥१॥
निंद नीमाणी आंख तेरे,
नाठी मुज दुःख देख ॥
दीपक शिर डोले खरो प्यारे,
.न थिर धरे न निमेष ॥पी०॥२
।सि सरिण तारा जगी रे,
वेनगी दामिनी तेग ॥
रयणी दयण मते दगो प्यारे,
मयण सयण विनु वेग॥पी०॥३॥
तनपिंजर झूरे पखो रे,

उडी न सके जीव हंस ॥
विरहानल जाला जली प्यारे,
पंख मूल निरवंस ॥ पी० ॥ ४ ॥
ऊसासासें वढाउकों रे,
वाद वदे निशि रांड ॥
न मने ऊसासामनी प्यारे,
हटके न रयणी मांड ॥पी०।५॥
इह विधि छे जे घरधणी रे,
उससुं रहे उदास ॥
हरविध आइ पूरी करे प्यारे,
आनंदघन प्रभु आस ॥पी०।६

॥पद ग्यारहमुं। राग आशावरी॥

॥ साधु भाइ अपना रूप जब देखा ॥ साधु० ॥

करता कौन कौन फुनी करनी,
कौन मागेगो लेखा॥साधु०॥१॥
साधुसंगति अरु गुरुकी कृपातैं,
मिट गइ कुलकी रेखा ॥
आनंदघन प्रभु परचो पायो,
उतर गयो दिल भेखा ॥
साधु० ॥ २ ॥



॥पद सडसठमुं॥राग आशावरी॥

॥ राम कहो रहेमान कहो कोउ,
कान कहो महादेव री ॥
पारसनाथ कहो कोउ ब्रह्मा,
सकल ब्रह्म स्वयमेव री॥रा०॥१
भाजन भेद कहावत नाना,
एक मृत्तिका रूप री ॥
तैसें खंड कल्पना रोपित,
आप अखंड सरूप री॥रा०॥२॥
निज पद रमे राम सो कहियें,
रहिम करे रहेमान री ॥

करशे करम कान सो कहियें,
महादेव निर्वाण री ॥ रा० ॥ ३ ॥
परसे रूप पारस सो कहियें,
ब्रह्म चिह्ने सो ब्रह्म री ॥
इह विध साधो आप आनंदघन,
चेतनमय निःकर्म री॥ रा०॥४॥



।पद अडसठमुं।राग आशावरी।
॥ साधुसंगति विनु कैसें पैयें,
परम महारस धाम री ॥ ए आं-
कणी ॥

कोटि उपाय करे जो बौरो,
अनुभवकथा विश्रामरी।साधु०
॥ १ ॥

शीतल सफल संत सुरपादप,
सेवै सदा सुछांइ री ॥
वंछित फले टले अनवंछित,
भवसंताप बूजाइ री ॥ साधु०
॥ २

चतुर विरंची विरंजन चाहे,
चरणकमल मकरंद री ॥
को हरि भरम विहार दिखावे,

शुद्ध निरंजन चंद री ॥ साधु०
॥ ३ ॥

देव असुर इंद्रपद चाहु न,
राज न काज समाज री ॥
सेगति साधु निरंतर पावुं,
आनंदघन महाराज री॥साधु०
॥ ४ ॥



॥ पद उगणोतेरमुं ॥
॥ राग अलहियो, वेलावल ॥

॥प्रीतकी रीत नहीं हो प्रीतम
॥ प्रीत० ॥
मैं तो अपनो सरव शृंगारो,
प्यारेकी न लई हो ॥ प्री० ॥१॥
मैं वस पियके पिय संग औरकै
या गति किन सीखई ॥
उपगारी जन जाय मनावो,
जो कछु भई सो भई हो।प्री०।२।
विरहानलजाला अतिहि क-
ठिन है,
मोसें सही न गई ॥

आनंदघन युं सघन धारा,
तवही दे पठइ हो ॥ पी० ॥३ ॥

॥ पद सीतेरमुं ॥

॥ साखी ॥

संआतम अनुनव रस कथा,
ऱ्याला पिया न जाय ॥
।तवाला तो ढहि परें,
निमता परे पचाय ॥ १ ॥

॥ राग वसंत, धमाल ॥

॥ठविले लालन नरम कहे,

आली गरम करत कहा बात
॥ टेक ॥

मांके आगें मासुकी कोई,
वरनन करय गिवार ॥
अजहु कपटके कोथरी हो,
कहा करे सरधा नार ॥आ०॥ १॥
चउगति महेल न छारिही हो,
कैसें आत भरतार ॥
खानो न पीनो इन बातमें हो
हसत भानन कहा हाड॥आ०॥२॥
ममता खाट परे रमे हो,

ओर निंदे दिन रात ॥
लैनो न देनो इन कथा हो,
भोरही आवत जात ॥ व० ॥ ३ ॥
कहे सरधा सुनि सामिनी हो,
एतो न कीजे खेद ॥
हेरे हेरे प्रभु आवही हो,
वदे आनंदघन मेद ॥ व० ॥ ४ ॥



॥ पद एकोतेरमुं ॥ राग मारु ॥
॥ अनंत अरूपी अविगत सा-
सतो हो,

॥पद् बहोंतेरमुं ॥ राग केदारो॥

।मेरेमाजी मजीठी सुण एकवात,
मीठडे लालन विन न रहु र-
लीयात ॥ मे० ॥ १ ॥
रंगीत चूनडी लडी चीडा,
कायासोपारी ऋरु पानका बीडा॥
मांग सिंदूर सदल करे पीडा,
तन कठा माको रे विरहा कीड
॥ मे० ॥ २ ॥
जहां तहां ढुंढुं ढोल न मित्ता,
पण भोगी नर विणासब युग रीता॥

रयणी विहाणी दहाडा थीता,
अजहू न आवे मोहि छेहा दीता
॥ मे० ॥ ३ ॥

तनरंग फूंद जरमली खाट,
चुन चुन कलीयां विछुं घाट ॥
रंग रंगीली फूली पहेरुंगी नाट,
आवे आनंदघन रहे घर घाट
॥ मे० ॥ ४ ॥

॥ पद त्रहोंतेरमुं ॥ राग केदारो॥
॥ जोले लोगा हुं रहुं तुम
जला हांसा,

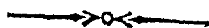
सलूणे साजन विण कैसा घर
वासा ॥ जोले० ॥ १ ।
सेज सुंहाली चांदणी रात,
फूलडी वाडी उर सीतल वात ॥
सघली सहेली करे सुख साता,
मैरा तन ताता मूआ विरहा मा-
ता ॥ जोले० ॥ २ ॥
फिर फिर जोउं घरणी आगासा,
तेरा छिपणा प्यारे लोक तमासा ॥
न वले तनतें लोही मांसा,
सांइडानी बे घरणी छोडी निरासा
॥ जोले० ॥ ३ ॥

विरह कुभावसों मुज कीया,
खबर न पावो तो धिग मेरा जीया
दही वायदो जो बतावे मेरा को-
इ पीया,
ओवे आनंदघन करुं घर दीया
॥ जो० ॥ ४ ॥



" पद चमोतेरमुं ॥ राग वसंत ॥
॥या कुबुद्धि कुमरी कौन जात,
जहां रीजे चेतन ग्यान गात ॥
या० ॥ १ ॥

कुत्सित साख विशेष पाय,
परम सुधारस वारि जाय ॥
या० ॥ २ ॥
जीया गुन जानो और नांही,
गले पडेंगी पलक मांहि।या०॥३॥
रखा ठेदे वाही ताम,
पठीयें मीठी सुगुणधाम।या०।४॥
ते आगें अधिकेरी ताही,
आनंदघन अधिकेरी चाही ॥
या० ॥ ५ ॥



॥पद पंचोतेरमुं ॥ राग वसंत ॥

॥लालन बिन मेरो कुन हवाल,
समजे न घटकी निठुर लाल
॥ ला० ॥ १ ॥
वीर विवेक जुं मांजि मांयि,
कहा पेट दई आगें ठिपाई
॥ ला० २ ॥
"गुम त्रावे जो सो कीजें वीर,
सोइ आन मिलावो लालन धीर
॥ ला० ॥ ३ ॥
अमरे करे न जात आथ,

मन चंचलता मिटे समाध ॥

लाο ॥ ४ ॥

जाय विवेक विचार कीन,
आनंदघन कीने अधीन

॥ लाο ॥ ५ (२

॥पद ७ौंतेरमुं ॥ राग वसंत ॥
॥प्यारे प्रानजीवन ए साच जान,
उत बरकत नांही न तिल समान,

॥ प्यारेο ॥ १ ॥

उनसैं न मांगु दिन नांहि एक,

इत पकरि लाल ठरी करी विवेक
॥ प्यारे० ॥ २ ॥

उत शठता माया मान डुंब,
इत रुजुता मृडुता जानो कुटुंब
॥ प्यारे० ॥ ३ ॥

उत आसा तृष्णा लोभ कोह,
इत शांत दांत संतोष सोह
॥ प्यारे० ४ ॥

उत कला कलंकी पाप व्याप,
इत खेले आनंदघन भूप आप
॥ प्यारे० ॥ ५ ॥

॥ पद सत्योतेरमुं ॥ राग रामग्री॥
॥ हमारी लय लागी प्रभु नाम
॥ ह० ॥
अंब खास अरु गोसल खाने,
दर अदालत नहीं काम॥ह०॥ १॥
पंच पचीश पचास हजारी,
लाख किरोरी दाम ॥
खाय खरचे दीये विनु जात है,
आनन कर कर श्याम॥ह०॥२॥
इनके उनके शिवके न जीउके,
उरज रहे विनुं ठाम ॥

संत सयाने कोय बतावे,
आनंदघन गुनधाम ॥द०॥३॥

॥पद अगेतेरमुं ॥ राग रामग्री॥
जगत गुरु मेरा मैंजगतका चेरा,
मिट गया वाद विवादका घेरा
॥ ज० ॥ १ ॥
गुरुके घरमें नवनिधि सारा,
चेलेके घरमें निपट अंधारा
॥ ज० ॥
गुरुके घर सब जरित जराया,

चेलेकी मढीयांमें ठपर ठाया

॥ ज० ॥ २ ॥

गुरु मोही मारे शब्दकी लाठी,
चेलेकी मति अपराधनी काठी

॥ ज० ॥

गुरुके घरका मरम न पाया,
अकथ कहानी आनंदघन भाया

॥ ज० ॥ ३ ॥

॥पद उंगणयाएंशीमुं ॥
॥ राग जयजयवंती ॥
॥ ऐसी कैसी घरवसी,

जिनस अनेसी री ॥
याही घर रहिसें जगवाही,
आपद है इसी री ॥ ऐ० ॥१॥
परम सरम देसी घरमेंउ पेसी री,
हीतें मोहनी मैसी,
जगत सगैसी री ॥ ऐ० ॥ २ ॥
कौरीसी गरज नेसी,
गरज न चखेसी री ॥
आनंदघन सुनो सीवंदी,
अरज कहेसी री ॥ ऐ० ॥ ३ ॥



॥ पद एंशीमुं ॥ राग सारंग ॥

॥ चेतन शुध्धातमकूं ध्यावो,
पर परचे धामधूम सदाइ,
निजपरचे सुखपावो ॥ चे० ॥ १ ॥
निज घरमें प्रभुता है तेरी,
परसंग नीच कहावो ॥
प्रत्यक्ष रीत लखी तुम ऐसी,
गहियें आप सुहावो ॥ चे० ॥ २ ॥
यावत् तृष्णा मोह है तुमको,
तावत् मिथ्या भावो ॥
ग्यान लही करिवो,

ठंडो भ्रमक विभावो ॥चे० ॥३॥
सुमता चेतन पतिकूं इणविध,
कहे निज घरमें आवो ॥
आतम उन्न सुधारस पीये,
सुख आनंद पद पावो॥चे०॥४॥



॥ पद एकाशीमुं ॥ राग सारंग ॥
॥ चेतन ऐसा ग्यान विचारो,
सोहं सोहं सोहं सोहं,
सोहं अणुनवीया सारो॥चे०।१॥

निश्चय स्वलक्षण अवलंबी,
प्रज्ञा छैनी निहारो ॥
इह छैनी मध्यपाती दुविधा,
करे जड चेतन फारो॥चे०॥२॥
तस छैनी कर ग्रहीयें जो धन
सो तुम सोहं धारो ॥
सोहं जानि दटो तुम मोहं,
व्है है समको वारो ॥चे० ॥ ३ ॥
कुलटा कुटिल कुबुद्धि कुमता,
छंडो व्है निज चारो ॥
सुख आनंदपदे तुम वेसी,

स्वपरकूं निस्तारो ॥ चे० ॥ ४ ॥



।पद व्याशीमुं ।।रागसूरति टोडी।
॥प्रभु तो सम अवर न कोइ
खलकमें,
हरि हर ब्रह्मा विगूते सोतो,
मदन जीत्यो तें पलकमें॥प्र०।१।
ज्यों जल जगमें अगन बूजावत,
वडवानल सो पीये पलकमें ॥
आनंदघन प्रभु वामा रे नंदन,

तेरी हाम न होत हलकमें
॥ प्र० ॥ २ ॥

॥ पद ब्याशीमुं ॥ राग मारु ॥
॥ निःस्पृह देश सोहामणो,
निर्भय नगर उदार हो ॥
वसे अंतरजामी ॥
निर्मल मन मंत्री वडो,
राजा वस्तुविचार हो॥वसे०॥१॥
केवल कमलागार हो,
सुण सुण शिवगामी
केवल कमलानाथ हो,

सुण सुण निःकामी ॥
केवल कमलावास हो,
सुण सुण शुभगामी ॥
आतमा तुं चूकीश मां,
देवा तुं चूकीश मां,
राजिंदा तुं चूकीश मां,
अवसर लही जी ॥ए आंकणी॥
दढ संतोषकामामोदसा,
साधु संगत दढ पोल हो॥वसे०॥
पोलियो विवेक सुजागतो,

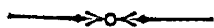
आगम पायकतोल हो॥वसे० २
दृढ विश्वास वितागरो,
सुविनोदी व्यवहार हो ॥वसे०॥
मित्र वैराग विहरे नहीं,
क्रीमा सुरति अपार हो ॥वसे०
॥ ३
भावना बार नदी वहे,
समता नीर गंभीर हो ॥वसे०।
ध्यान चहिवचो भर्यो रहे,
समपन भावसमीरहो॥वसे० ४।
उचालो नगरी नहीं,

दुष्ट दुःकाल न योग हो॥वसे०॥
ईति अनीति व्यापे नहीं,
आनंदघन पद भोग हो ॥
वसे० ॥ ५ ॥



राद चोराशीमुं ॥ इमन राग ॥
लागी लगन हमारी,
जिनराज सुजस सुन्यो में ॥
ला० ॥ टेक ॥
काहूके कहे कबहूं नहि छूटे,

लोक लाज सब मारी ॥
जैसें अमलि अमल करत समे,
लाग रही ज्युं खुमारी ॥ जि०।२।
जैसें योगी योगध्यानमें,
सुरत टरत नहीं टारी ॥
तैसें आनंदघन अनुहारी,
प्रभुके हुं बलिहारी ॥जि०॥३॥



॥ पद पंचाशीमुं ॥ राग काफी ॥
॥ वारी हुं बोलडे मीठडे,
तुज विनमुज नहि सरेरेसूरिजन,

लागत और अनीठडे॥वा० ।१।
मेरे मनकूं जक न परत है,
बिनु तेरे मुख दीठडे ॥
प्रेम पीयाला पीवत पीवत,
लालन सब दिन नीठडे॥वा०।२
पूछू कौन कहांलूं ढुंढुं,
किसकूं भेजुं चीठडे ॥
आनंदघन प्रभु सेजडी पाउं तो,
भागे आन वसीठडे ॥वा०॥३॥



॥ पद ७्यासीमुं ॥राग धमाल॥
॥ सवूणे साहेब आवेंगे मेरे,
आलीरी वीर विवेक कहो साच
॥ स० ॥
मोसुं साच कहो मेरीसुं,
सुख पायो के नाहिं ॥
कहांनी कहा कहुं उहांकी,
हिंडो रे चतुरगति मांहि।स०।
भली भइ इत आवही हो,
पंचम गतिकी प्रीत ॥
सिद्ध सिद्धंत रस पाककी हो,

देखे अपूरव रीत॥ स० ॥ २ ॥
वीर कहे एती कहुं हो,
आए आए तुम पास ॥
कहे समता परिवारशुं हो,
हम है अनुभव दास॥स० ॥३॥
सरधा सुमता चेतना हो,
चेतन अनुभव आंहि ॥
सगति फोरवे निज रूपकी हो,
लीने आनंदघन मांहि॥स०।४।



॥पद सत्यासीमुं॥राग धमाल ॥
॥ विवेकी वीरा सह्यो न परे,

वरजो क्युं न आपके मित्त ॥
वि० ॥ टेक।
कहा निगोडी मोहनी हो,
मोहत लाल गमार ॥
वाके पर मिथ्या सुता हो,
रीज पडे कहा यार॥ वि० ॥ १ ॥
क्रोध मान बेटा भये हो,
देत चपेटा लोक ॥
लोभ जमाइ माया सुता हो,
एह बढ्यो परमोक ॥ वि० ॥२॥
गइ तिथिकूं कहा बंभणा हो,

पूछे सुमता आव ॥
घरको सुत तेरे मतें हो,
कहालौं करत वढाव॥वि०॥३॥
तव समत उद्यम कीयो हो,
मेट्यो पूरव साज ॥
प्रीत परमशुं जोरिकें हो,
दीनो आनंदघन राज॥वि०४॥



॥पद अठ्याशीमुं॥राग धमाल ॥
॥ पूछीयें आली खवर नहीं,

आये विवेक वधाय ॥ पू० ॥
ए आंकणी ॥
महानंद सुखकी वरनीका,
तुम आवत हम गात ॥
प्रानजीवन आधारकी हो,
खेमकुशल कहो बात ॥पू०॥ १॥
अचल अबाधित देवकुं हो,
खेम शरीर लखंत ॥
व्यवहारि घटवध कथा हो,
निहचें सरम अनंत ॥पू०॥ २॥
बंध मोख निहचें नहीं हो,

विवहारे लख होय ॥
कुशल खेम अनादिही हो,
नित्य अबाधित होय॥पू०॥३ ॥
सुन विवेक मुखतें नइ हो,
बानी अमृत समान ॥
सरधा समता दो मिली हो,
ल्याइं आनंदघन तान॥पू०॥४॥



॥पद नेव्याशीमुं॥रागधन्याश्री॥
॥चेतन सकल वियापक होइ ॥
सकल० ॥ चे० ॥

सत असत गुन परजय परनति,
भाव सुभाव गति दोइ ॥चे०।१।
स्व पर रूप वस्तुकी सत्ता,
सीझे एक न दोइ ॥
सत्ता एक अखंड अबाधित,
यह सिधांत पख होइ॥चे०।२।
अनवय व्यतिरेक हेतुको,
समजी रूप भ्रम खोइ ॥
आरोपित सब धर्म और है,
आनंदघन तत सोइ ॥चे०॥३॥

॥ पद नेवुंमुं ॥ राग सोरठ ॥
॥ साखी सोरठो ॥

॥ अण जोवतां लाख,
जोवे तो एक नहीं ॥
लाधी जोवन साख,
वाहाला विण एले गइ ॥ १ ॥

॥म्होटी वहूयें मन गमतुं कीधुं
॥ म० ॥ ए आंकणी ॥
पेटमें पेसी मस्तक रेहेंसी,
वेरी साही स्वामीजीने दीधुं
॥ म० ॥ १ ॥

खोले बेसी मीठुं बोले,
कांइ अनुभव अमृत जल पीधुं॥
ळानी ळानी ळरकडा करती,
ळरती आंखें मनडुं विंध्युं
॥ म० ॥२॥

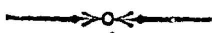
लोकालोक प्रकाशक छैयुं,
जणाता कारज सीधुं ॥
अंगो अंगे रंगभर रमतां,
आनंदघन पद लीधुं ॥म०॥३॥



॥ पद एकाणुंमुं ॥ राग मारु ॥

॥ वारो रे कोइ परघर रमवानो ढाल,
न्हानी वहूने परघर रमवानो ढाल ॥ए आंकणी॥
परघर रमतां थइ जूठाबोली,
देशे धणीजीने आल॥वारो० १
अलवे चाला करती हींडे,
लोकडां कहे छे छीनाल ॥
छेलंजडा जण जणना लावे,

हैडे उपासे शाल ॥ वारो० ॥३॥
बाइ रे पझोसण जुवने लगारेक,
फोकट खाशे गाल ॥
आनंदघन प्रभु रंगे रमतां,
गोरे गाल झबूके झाल॥वारो०



॥ पद बाणुंमुं ॥ राग कानमो
॥दरिसन प्रानजीवन मोहे दीजे
बिन दरिसन मोहि कल न प

रतु है,
तलफ तलफ तन छीजे।दरि० १

कहा कहुं कछु कहत न आवत,
विन सेजा क्युं जीजे ॥
सोहुं खाइ सखी काहु मनावो,
आपही आप पतीजें॥दरि०२।
देउर देरानी सासु जेठानी,
युंही सव मिल खीजें ॥
आनंदघन विन प्रान न रहेछिन,
कोमी जतन जो कीजें॥दरि०।३।

॥ पद त्राणुंमुं ॥ राग सोरठ ॥
॥ मुने महारा माधवीयाने मलवानो कोम॥ ए देशी ॥

॥मुने म्हारा नाह्लीयाने मल-
वानो कोड॥
हुं राखुं माझी कोइ मुने बीजो
वलेगो छोड ॥ मुने० ॥ १ ॥
मोह्नीया नाह्लीया पांखे म्हारे
जग सवि उजड जोड ॥
मीठाबोला मनगमता नाह्जी,
विण
तन मन थाये चोड ॥मुने० ।२।
कांइ ढोलीयो खाट पछेडी तलाइ,
भावे न रेसम सोड ॥

अवर सवे म्हारे जजारे जलेरा,
म्हारे आनंदघन शरमोड ॥
मुने० ॥ ३ ॥

॥ पद चोराणुंमुं ॥ राग सोरठ ॥
॥ निराधार केम मूकी,
श्याम मुने निराधार केम मूकी ॥
कोइ नहीं हुं कोणशुं बोलुं,
सहु आलंबन टूकी ॥ श्या० ।१।
प्राणनाथ तुमे दूर पधार्या,
मूकी नेह निराशी ॥

जण जणना नित्य प्रति गुण
गातां,
जनमारो किम जासी॥श्या०॥२॥
जेहनो पक्ष लहीने बोलुं,
ते मनमां सुख आणे ॥
जेहनो पक्ष मूकीने बोलुं,
ते जनम लगें चित्त ताणे॥श्या०
॥ ३ ॥
वात तमारी मनमां आवे,
कोण आगल जइ बोलुं ॥
ललित खलित खल जो ते देखुं,

आम माल धन खोलुं॥श्या०।४।
घटें घटें बो अंतरजामी,
मुजमां कां नवि देखुं ॥
जे देखुं ते नजर न आवे,
गुणकर वस्तु विशेखुं॥श्या० ।५।
अवधें केहनी वाटडी जोउं,
वेण अवधें अति कुरुं ॥
आनंदघन प्रभु वेगे पधारो,
जिम मन आशा पूरुं॥श्या०।६॥

॥पद पंचाणुंसुं॥
॥ राग अलइयो वेलावल ॥

॥ ऐसे जिनचरने चित्त ल्याउं
रे मना ॥

ऐसे अरिहंतके गुन गाउं रे
मना॥ऐसे जिन०॥ ए आंकणी॥

उदर भरनके कारण रे,
गौआं वनमें जाय ॥
चार चरे चिहुं दिस फिरे,
वाकी सुरति वछरुआ मांहे रे
ऐसे जिन० ॥ १

सात पांच साहेलीयां रे,
हिल मिल पाणी जाय ॥

ताली दीये खडखड हसे रे,
वाकी सुरति गगरुआ मांहे रे॥
ऐसे जिन० ॥ २ ॥
नटुआ नाचे चोकमें रे,
लोक करे लख सोर ॥
वांस ग्रही वरते चढे,
वाको चित्त न चले कहुं ठोर रे॥
ऐसे जिन० ॥ ३ ॥
जूआरी मनमें जूआरे,
कामीके मन काम ॥
आनंदघन प्रभु युं कहे,

तुमे ल्यो नगवंतको नाम रे ॥
ऐसे जिन० ॥ ४ ॥



॥ पद बन्नुमुं ॥ राग धन्याश्री ॥
॥ अरी मेरो नाहेरी अतिवारो ॥
मैं ले जोबन कित जाउं,
कुमति पिता बंनना अपराध
नउ वाहै व जमारो ॥ अरी० ॥ १
नलो जानीके सगाई कीनी,
कौन पाप उपजारो ॥
कहा कहीयें इन घरके कुटुंबते,

जिन मैरो काम बिगारो॥ अरी०
॥ ९ ॥



॥पद सत्ताणुंमुं॥राग कल्याण॥

॥ या पुद्गलका क्या विसवासा,
सुपनेका वासा रे॥ या० ॥
ए आंकणी॥
मतकार विजली दे जैसा,
ानी विच पतासा॥
ा देहीका गर्व न करना,
जंगल होयगा वासा॥या०॥१॥

जूठे तन धन जूठे जोबन,
जूठे है घर वासा ॥
आनंदघन कहे सबही जूठे,
साचा शिवपुर वासा ॥ या० ॥२॥

॥पद अठाणुमुं॥ राग आशावरी॥
॥अवधू सो जोगी गुरु मेरा,
इन पदका करे रे निवेरा
॥ अवधू० ॥ ए आंकणी
तरुवर एक मूल बिन गया,
बिन फूलें फल लागा ॥

शाखा पत्र नहीं कछु उनकूं,
अमृत गगनें लागा ॥ अ० ॥ १ ॥
तरुवर एक पंछी दोउ बेठे,
एक गुरु एक चेला ॥
चेलेने जुग चुण चुण खाया,
गुरु निरंतर खेला ॥ अ० ॥ २ ॥
गगनमंडलके अधविच कूवा,
उहां हे अमीका वासा ॥
सगुरा होवे सो भर भर पीवे,
नगुरा जावे प्यासा ॥ अ० ॥ ३ ॥
गगनमंडलमें गउआं विहानी,

धरती दूध जमाया ॥
माखन था सो विरला पाया,
गसें जगत भरमाया॥अ०॥४॥
थड बिनुं पत्र पत्र बिनुं तुंबा,
बिन जीभ्या गुण गाया ॥
गावनवालेका रूप न रेखा,
सुगुरु सोही बताया॥अ०॥५॥
आतम अनुभव बिन नहीं जाने,
अंतर ज्योति जगावे ॥
घट अंतर परखे सोही मूरति,
आनंदघन पद पावे॥अ०॥६॥

॥पद नवाणुंमुं॥राग आशावरी॥

॥अवधू एसो ज्ञान विचारी,
वामें कोण पुरुष कोण नारी ॥
अवधू० ॥ ए आंकणी ॥
वम्मनके घर न्हाती धोती,
जोगीके घर चेली ॥
कलमा पढ पढ भई रे तुरकडी तो,
आपही आप अकेली॥अवधू०
॥ १ ॥
ससरो हमारो वालो भोलो,
सासू बाल कुंवारी ॥

पीयुजीहमारोप्होढे पारणीएतो
में हुं झुलावनहारी॥अवधू०।२
नहीं हुं परणी नहीं हुं कुंवारी
पुत्र जणावनहारी ॥
काली दाढीको में कोइ नहीं
गेड्यो तो,
हजुए हुं बाल कुंवारी॥अवधू०
॥ ३
अढी द्वीपमें खाट खटूली,
गगन उंशीकुं तलाई ॥
धरतीको छेडो आभकी पीछोडी,

तोय न सोड जराई ॥ अवधू०
॥ ४ ॥
गगनमंम्लमें गाय वीआणी,
वसुधा दूध जमाई ॥
सउ रे सुनो भाइ वलोणुं व-
लोवे तो,
तत्त्व अमृत कोइ पाई॥अवधू०
॥ ५ ॥
नहीं जाउंसासरीये ने नहीं जाउं
पीयरीये,
पीयुजीकी सेज बिगाई ॥

आनंदघन कहे सुनो भाइ साधु तो, ज्योतसें ज्योत मिलाई ॥ अवधू० ॥ ६ ॥



॥पद एकसोमुं॥राग आशावरी॥ बेहेर बेहेर नहीं आवे, अवसर बेहेर बेहेर नहीं आवे ॥ ज्युं जाणे त्युं कर ले भलाई, जनम जनम सुख पावे॥अव० १ तन धन जोबन सबही जूठो, प्राण पलकमें जावे॥अव०॥२॥

तन बूटे धन कौन कामको,
कायकूं कृपण कहावे॥अव०॥३॥
जाके दिलमें साच बसत हे,
ताकूं जूठ न भावे ॥अव०॥ ४ ॥
आनंदघन प्रभु चलत पंथमें,
समरी समरी गुण गावे॥ अव०
॥ ५ ॥

॥ पद एकसो एकमुं ॥
॥ राग आशावरी ॥
॥ मनुप्यारा मनुप्यारा,

रिखभदेव मनुप्यारा

॥ ए आंकणी ॥

प्रथम तीर्थंकर प्रथम नरेसर,
प्रथम यतिव्रतधारा॥रिखभ० १
नाभिराया मरुदेवीको नंदन,
जुगला धर्म निवारा ॥ रिखभ०
॥ २ ॥
केवल लइ प्रभु मुगतें पोहोता,
आवागमन निवारा ॥ रिखभ०
॥ ३ ॥

आनंदघन प्रभु इतनी विनति,
आ भव पार उतारा ॥ रिखभ०
॥ ४ ॥

॥पद एकसो बेसुं ॥राग काफी॥
॥ ए जिनके पाय लाग रे,
तुने कहीयें केतो ॥ ए जिनके०॥
ए आंकणी ॥
आठोइ जाम फिरे मदमातो,
मोहनिंदरीयासुं जाग रे॥ तुने०
॥ १ ॥

प्रभुजी प्रीतम विन नहीं कोइ
प्रीतम,
प्रभुजीनी पूजा घणी माग रे ॥
तुने० ॥ २ ॥
भवका फेरा वारी करो जिनचंदा,
आनंदघन पाय लाग रे ॥ तुने०
॥ ३ ॥

॥पद एकसो त्रणमुं॥राग केरबो॥
॥प्रभु भज ले मेरा दील राजी रे
॥ प्र० ॥ ए आंकणी ॥

आठ पोहोरकी साठज घडीयां,
दो घडीयां जिन साजी रे ॥
प्र० ॥ १ ॥
दान पुण्य कछु धर्म कर ले,
मोह मायाकूं त्याजी रे ॥ प्र०।२।
आनंदघन कहे समज समज ले,
आखर खोवेगा बाजी रे॥प्र० ३।



॥ पद एकसो चारमुं ॥
॥ राग आशावरी ॥
॥ हठीली आंख्यां टेक न मेटे,

फिर फिर देखण जाउं ॥हठी०॥
ए आंकणी ॥
छयल छबीली प्रिय छबि,
निरखित तृपति न होइ ॥
नट करिडक हटकू कन्नी,
देत नगोरी रोइ ॥ ह० ॥ १ ॥
मांगर ज्यों टमाके रही,
पीप सबीके धार ॥
लाज डांग मनमें नहीं,
काने पछेरा डार ॥ ह० ॥ २ ॥
अटक तनक नही काहूका,

हटक न इक तिल कोर ॥
हाथी आप मने अरे,
पावे न महावत जोर॥ह० ॥३ ॥
सुन अनुभव प्रीतम बिना,
प्रान जात इह ठांहि ॥
है जन आतुर चातुरी,
दूर आनंदघन नांहि ॥ह० ॥४॥



॥ पद एकसो पांचमुं ॥
॥ राग आशावरी ॥
॥ अवधू वैराग बेटा जाया,

वाने खोज कुटुंब सब खाया ॥
अ० ॥

जेणे ममता माया खाई,
सुख दुःख दोनों भाई ॥
काम क्रोध दोनोकुं खाई,
खाई तृष्णा बाई ॥ अ० ॥ १ ॥
दुर्मति दादी मत्सर दादा,
मुख देखतही मूआ ॥
मंगलरूपी बधाइ वांची,
ए जब बेटा हूवा ॥ अ० ॥ २ ॥
पुण्य पाप पाडोशी खाये,

मान काम दोउ मामा ॥
मोह नगरका राजा खाया,
पीछेही प्रेम ते गामा ॥अ०॥३॥
भाव नाम धस्यो बेटाको,
महिमा वरण्यो न जाइ ॥
आनंदघन प्रभु भाव प्रगटकरो,
घट घट रह्यो समाइ॥अ०॥४॥



॥ पद एकसो छमुं ॥ राग नट्ट ॥
॥ किन गुन भयो रे उदासी
भमरा ॥ कि० ॥
पंख तेरी कारी मुख तेरा पीरा,

सब फूलनको वासी ॥ त्र० ॥ कि० १
सब कलियनको रस तुम लीनो,
सो क्यूं जाय निरासी ॥ त्र० ॥
कि० ॥ २ ॥
आनंदघनप्रभु तुमारे मिलन प्र
जाय करवत ल्यूं कासी ॥ त्र० ॥
कि० ॥ ३ ॥

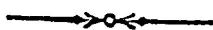
॥ पद एकसो सातमुं ॥ राग वसंत ॥
॥ तुम ज्ञान विभो फूली बसंत,
मन मधुकरही सुखसों रसंत ॥
तु० ॥ १ ॥

दिन बडे भये वैरागभाव,
मिथ्यामति रजनीको घटाव ॥
तु० ॥ २ ॥
बहु फूली फेली सुरुचि वेल,
ग्याताजनसमतासंगकेल।तु० ३
द्यानत वानी पिक मधुर रूप,
सुर नर पशु आनंदघन सरूप ॥
तु० ॥ ४ ॥
॥ इति श्रीआनंदघनजी कृत
वहोंतेरी संपूर्ण ॥



॥ श्री चिदानंदाय नमः ॥

॥ अथ श्री चिदानंदजी अपर नाम कर्पूरचंदजी कृत बहोंतेरीनां पद प्रारंभः ॥



॥ पद पहेलुं ॥ राग मारु ॥

॥ पिया परघर मत जावो रे, करी करुणा महाराज ॥ पिया० ॥ ए आंकणी ॥

कुल मरजादा लोपकें रे,

जे जन परघर जाय ॥
तिणकुं उभय लोक सुण प्यारे,
रंचक शोभा नांय ॥पिया०॥२॥
कुमतासंगें तुम रहे रे,
आगुं काल अनाद ॥
तामें मोह दिखा बहु प्यारे,
कहा निकल्यो स्वाद ॥ पिया०
॥ ३ ॥
लगत पिया कहो माहारो रे,
अशुभ तुमारे चित्त ॥
पण मोथी न रहाय रे प्यारे,

कह्या विना सुण मित्त॥पिया०॥
॥ ३ ॥

घर अपने वालम हो रे,
कोण वस्तुकी खोट ॥
फोगट तद केम लीजीयें प्यारे,
शीश भरमी पोट ॥ पिया० ॥४॥
सुनी सुमताकी विनति रे,
चिदानंद महाराज ॥
कुमता नेह निवारकें प्यारे,
लीनो शिवपुर राज॥पिया०॥५॥



॥ पद बीजुं ॥ राग मारु ॥

॥ पिया निज महेल पधारो रे,
करी करुणा महाराज ॥ ए आं-
कणी ॥

तुम बिन सुंदर साहेबा रे,
मो मन अति दुःख थाय ॥
मनकी व्यथा मनहीं मन जानत,
केम मुखथी कहेवाय॥ पिया० ॥
॥ १ ॥

बाल भाव अब वीसरी रे,
ग्रह्यो उचित मरजाद ॥

आतम सुख अनुभव करो प्यारे,
भांगे सादि अनादि॥पिया०॥२॥
सेवककी लज्जा सूधी रे,
दाखी साहेब हाथ॥
तोसी करो विमासणा प्यारे,
अम घर आवत नाथ॥पिया० ३
मम चित्त चातक घन तुमे रे,
इस्यो भाव विचार॥
याचक दानी उभय मल्यो प्या
शोभे न ढील लगार॥पि ॥४,
चिदानंद प्रभु चिर॥पिया०॥

सुमताकी अरदास ॥
निज घर घरणी जाणके प्यारे,
सफल करी मन आस॥पिया० ५

॥ पद त्रीजुं ॥ राग मारु ॥
॥ सुअप्पा आप विचारो रे,
पर पख नेह निवार ॥ सु० ॥
ए आंकणी ॥
पर परणीत पुद्गल दिसा रे,
तामें निज अभिमान ॥
भाव न जीव एही कह्यो प्यारे,
सो अचित

बंधहेतु भगवान ॥ सु० ॥ १ ॥
कनक उपलमें नित्य रहे रे,
दूध मांहे फुनी घीव ॥
तिल संग तेल सुवास कुसुम संग,
देह संग तेम जीव ॥ सु० ॥ २ ॥
रहत हुताशन काष्ठमें रे,
प्रगट कारण पाय ॥
वही कारण कारजता प्यारे,
सहेजें सिद्धि थाय ॥ सु० ॥ ३ ॥
खीर नीरकी भिन्नता रे,
जैसें करत मराल ॥

तैसें नेद ज्ञानी लह्या प्यारे,
कटे कर्मकी जाल ॥ सु० ॥ ४ ॥
अज कुलवासी केसरी रे,
लेख्यो जिम निज रूप ॥
चिदानंद तिम तुमहू प्यारे,
अनुनव शुद्ध स्वरूप॥सु०॥५॥

॥ पद चोथुं ॥ राग मारु ॥
॥ बंध निज आप उदीरत रे,
अजा कृपाणी न्याय ॥ बंध० ॥
ए आंकणी ॥

झकड्यां किणें तोहे सांकला रे,
पकड्या किणें तुज हाथ ॥
कोण नृपके पहरुये प्यारे,
रहत तिहां रे साथ ॥ बंध० ॥ १॥
वांदर जिम मदिरा पीये रे,
वीछू डंकित गात ॥
भूत लगे कौतुक करे प्यारे,
तिम भ्रमको उतपात॥बंध०॥ ८
कीर बंध्या जिम देखीयें रे,
नलिनी भ्रमर संयोग ॥
इणविध माया जीवकूं प्यारे,

बंधन रूपी रोग ॥ बंध० ॥ ३ ॥
भ्रम आरोपित बंधथी रे,
परपरिणति संग एम ॥
परवशता दुःख पावते प्यारे,
मर्कट मूठी जेम ॥ बंध० ॥ ४ ॥
मोह दशा अलगी करो रे,
धरो सु संवर भेख ॥
चिदानंद तव देखीयें प्यारे,
शशि स्वभावकी रेख॥बंध०।५॥

॥ पद पाचमुं ॥ राग काफी ॥
॥ मति मत एम विचारो रे,
मत मतीयनका भाव ॥ म० ॥
ए आंकणी ॥
वस्तुगतें वस्तु लहो रे,
वाद विवाद न कोय ॥
सूर तिहां परकाश पीयारे,
अंधकार नवि होय॥ म० ॥ १
रूप रेख तिहां नवि घटे रे,
मुद्रा भेख न होय ॥
भेद ज्ञान दृष्टि करी प्यारे,

देखो अंतर जोय ॥ म० ॥ २ ॥
तनता मनता बचनता रे,
परपरिणति परिवार ॥
तन मन बचानातीत पीयारे,
निज सत्ता सुखकार ॥ म० ॥३॥
अंतर शुद्ध स्वभावमें रे,
नहीं विभाव लवलेश ॥
भ्रम आरोपित लक्षथी प्यारे,
हंसा सहत कलेश ॥ म० ॥ ४ ॥
अंतर्गत निहचें गही रे,
कायाथी व्यवहार ॥

चिदानंद तव पामीयें प्यारे,
भवसायरको पार ॥ म० ॥ ५ ॥



॥ पद ७७ ॥
॥राग काफी अथवा वेलावल ॥
॥ अकल कला जगजीवन तेरी
॥ अकल० ॥ ए आंकणी ॥
अनंत उदधिथी अनंत गुण
तुज
ज्ञान महा लघु बुद्धि ज्युं मेरी
॥ अकल० ॥ १ ॥

नय अरु नंग निखेप विचारत,
पूरवधर थाके गुण हेरी ॥
विकल्प करत थाग नवि पाये,
निर्विकल्पतें होत नये री
॥ अकल० ॥ २ ॥
अंतर अनुनव विनुं तुव पदमें,
युक्ति नहीं कोउ घटत अनेरी ॥
दानंद प्रनु करी किरपा अब,
दीजें ते रस रीऊ नले री
॥ अकल० ॥ ३ ॥

॥ पद सातमुं ॥

॥ राग काफी तथा वेलावल ॥

॥ जौंलौं तत्त्व न सूज पडे रे ॥ जौं० ॥

तौंलौं मूढ भरम वश भूल्यो, मत ममता ग्रही जगथी लडे रे ॥ जौं० ॥ १ ॥

अकर रोग शुभ कंप अशु

भ

भवसायर इण भांत रडे रे ॥ २

धान काज जिम मूरख खितहड,

उखर भूमिको खेत खडे रे
॥ जौं० ॥ २ ॥
उचित रीत उलख विण चेतन,
निशिदिन खोटो घाट घडे रे ॥
मस्तक मुकुट उचित मणि अ-
नुपम,
पग भूषण अज्ञान जडे रे
॥ जौं० ॥ ३ ॥
ता वश मन वक्र तुरंग जिम,
हि विकल्प मग मांहि अडे रे॥
चिदानंद निज रूप मगन भया,

लोहा कनक स्वरूप लिखावे ॥
ध्याता ध्यान धरत चित्तमें इम,
ध्येयरूपमें जाय समावे
॥ आ० ॥ ४ ॥

भज समता ममताकुं तज जवे,
शुद्ध स्वरूपथी प्रेम लगावे ॥
चिदानंद चित्त प्रेम मगन भया
दुविधा भाव सकल मिट जावे
॥ आ० ॥ ५ ॥



॥ पद नवमुं ॥

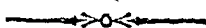
॥ राग काफी तथा वेलावल ॥

अरज एक घवडीचा स्वामी,
सुणहुं कृपानिधि अंतरजामी
॥ अ० ॥

अति आनंद नयो मन मेरो,
चंद वदन तुम दर्शन पामी
॥ अ० ॥ १ ॥

हुं संसार असार उदधि पड्यो,
तुम प्रजु नये पंचम गति गामी
॥ अ० ॥ २ ॥

विभाव अंधेरो ॥ मंद० ॥ १ ॥
जाग जीया अब परिहरो,
भववास वसेरो ॥
भववासी आशा ग्रही,
भयो जगको चेरो ॥ मंद० ॥२॥
आश तजी निराशता,
पद सास ताहेरो ॥
चिदानंद निज रूपको,
सुख जाण भलेरो ॥ मंद० ॥३॥



॥ पद अगीआरमुं ॥

॥ राग वेलावल ॥

॥ जोग जुगति जाण्या विना,
कहा नाम धरावे ॥
रमापति कहे रंककूं,
धन हाथ न आवे ॥ जो० ॥१॥
भेख धरी माया करी,
जगकूं भरमावे ॥
पूरण परमानंदकी,
सुधि रंच न पावे ॥ जो० ॥ २ ॥
मन मुंड्या विन मुंडकूं,

अति घेट मुंडावे ॥
जटाजूट शिर धारकें,
कोउ कान फरावे ॥ जो० ॥ ३ ॥
ऊर्ध्व बाहु अधोमुखें,
तन ताप तपावे ॥
चिदानंद समज्या विना,
गिणती नवि आवे ॥ जो०॥४॥

॥ पद बारमुं ॥ राग वेलावल ॥
॥ आज सखी मेरे वालमा,
निज मंदिर आये ॥

अति आनंद हिये धरी,
हली कंठ लगाये ॥ आ० ॥ १ ॥
सहज स्वभाव जलें करी,
रुचि धर नवराये ॥
थाल भरी गुण सुखडी,
निज हाथ जिमाये ॥ आ० ॥२॥
सुरभि अनुभव रस भरी,
वीडा खवराये ॥
चिदानंद मिल दंपती,
मनोवंछित पाये ॥ आ० ॥ ३ ॥



॥ पद तेरमुं ॥ राग विन्नास ॥
॥जूठी जगमाया नर केरी काया,
जिम बादरकी छाया माइ री ॥
ए आंकणी ॥
ज्ञानांजन कर खोल नयण मम,
सद्गुरु इणे विध प्रगट लखाइरी
॥ जू० ॥ १ ॥
मूल विगत विषवेल प्रगटी इक,
पत्ररहित त्रिभुवनमें छाइ री ॥
तास पत्र चुण खात मिरगवा,

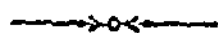
मुख विन अंचरिज देखुं हुं आइ
री ॥ जू० ॥२ ॥
पुरुष एक नारी निपजाइ,
ते तो नपुंसक घरमें समाइ री ॥
पुत्र जुगल जाये तिण वाला,
ते जग मांहे अधिक दुःखदाइ
री ॥ जू० ॥ ३ ॥
कारण विन कारजकी सिद्धि,
केम भई मुख कही नवि जाइ री॥
चिदानंद एम अकल कलाकी,

गति मति कोउ विरले जन पाइ
री ॥ जू० ॥ ४ ॥



॥ पद चौदमुं ॥ राग विभास ॥
॥ देखो भवि जिनजीके जुग,
चरन कमल नीके ॥ देखो० ॥
ए आंकणी ॥
जिम उदयाचल उदय भयो रवि,
तिम नख भाननके ॥ देखो० ॥ १ ॥
नीलोत्पल सम शोभ चरण छबि,
रिष्ट रतनहूके ॥ देखो० ॥ २ ॥

सुरभि सुमनवर यक्षकर्दम,
कर अर्चित देवनके॥देखो०।३॥
निरख चरन मन हरख भयो
अति, वामा नंदजूके॥देखो०।४।
चिदानंद अब सकल मनोरथ,
सफल भये मनके ॥ देखो०॥५॥



॥ पद पन्नरसुं ॥ राग केरवो ॥
॥ अखीयां सफल भई,
अलि निरखित नेमि जिनंद ॥
अ० ॥ ए आंकणी ॥

पद्मासन आसन प्रभु सोहत,
मोहत सुर नर वृंद ॥
घूंघरवाला अलख अनोपम,
मुख मानुं पूनम चंद॥अ० ॥१॥
नयन कमलदल शुकमुख नासा,
अधर बिंब सुख कंद ॥
कुंदकली ज्युं दंति पंति,
रसना दल शोभा अमंद ॥
अ० ॥ २ ॥
कंबुग्रीव भुज कमल नालकर,
रक्तोत्पल अनुचंद ॥

हृदय विशाल थाल कटि केसरी,
नाभि सरोवर खंद ॥
अ० ॥ ३ ॥
कदली खंभ युग चरनसरोज
जस,
निशिदिन त्रिभुवन वंद ॥
चिदानंद आनंद मूरति,
ए शिवादेवीनंद ॥ अ० ॥ ४ ॥



॥ पद सोलमुं ॥ राग भैरव ॥
॥ विरथा जनम गमायो ॥
मूरख विर० ॥ ए आंकणी ॥

रंचक सुखरस वश होय चेतन,
अपनो मूल नसायो ॥
पांच मिथ्यात धार तुं अजहुं,
साच भेद नवि पायो ॥मू०॥१॥
कनक कामिनी अरु एहथी,
नेह निरंतर लायो ॥
ताहुथी तुं फिरत सोरांनो,
कनकबीज मानुं खायो॥मू०२॥
जनम जरा मरणादिक दुःखमें,
काल अनंत गमायो ॥
अरहट घटिका जिम कहो याको,

अंत अजहुं नवि आयो ॥
मू० ॥ ३ ॥
लख चोराशी पेहेर्या चोलना,
नव नव रूप बनायो ॥
बिन समकित सुधारस चाख्या,
गिणती कोउ न गिणायो ॥
मू० ॥ ४ ॥
एती पर नवि मानत मूरख,
ए अचरिज चित्त आयो ॥
चिदानंद ते धन्य जगतमें,

जिणे प्रभुसुं मन लायो ॥
मू० ॥ ५ ॥

॥ पद सत्तरमुं ॥ राग भैरवी ॥
॥ जग सपनेकी माया रे ॥
नर जग० ॥ ए आंकणी ॥
सुपने राज पाय कोउ रंक ज्युं,
करता काज मन भाया ॥
उघरत नयन हाथ लख खपर,
मनहुं मन पछताया रे ॥
नर जग० ॥ १ ॥

चपला चमत्कार जिम चंचल,
नरभव सूत्र बताया ॥
अंजलि जल सम जगपति जि-
नवर, आयु अथिर दरसाया रे ॥
नर जग० ॥ २ ॥
यौवन संध्याराग रूप फुनि,
मल मलिन अति काया ॥
विणसत जास विलंब न रंचक,
जिम तरुवरकी छाया रे ॥
नर जग० ॥ ३ ॥
सरिता वेग समानजु संपत्ति,

स्वारथ सुत मित जाया ॥
आमिष लुब्ध मीन जिम तिन
संग, मोहजाल बंधाया रे ॥
नर जग० ॥ ४ ॥
ए संसार असार सार पण,
यामें इतना पाया ॥
चिदानंद प्रभु सुमरन सेंती,
धरीयें नेह सवाया रे ॥
नर जग० ॥ ५ ॥



॥पद अढारमुं॥ राग प्रभाती॥
॥मान कहा अब मेरा मधुकर॥
मान० ॥ ए आंकणी ॥
नाभिनंदके चरण सरोजमें,
कीजें अचल बसेरा रे ॥
परिमल तास लहत तन सहेजें,
त्रिविध पाप उतेरा रे ॥
मान० ॥ १ ॥
उदित निरंतर ज्ञान भान जिहां,
तिहां न मिथ्यात अंधेरा रे ॥
संपुट होत नहीं तातें

सांज कहा सवेरा रे ॥

मान० ॥ २ ॥

नहींतर पछतावोगे आखर,
बीत गया यो वेरा रे ॥
चिदानंद प्रभु पदकज सेवत
बहुरि न होय भव फेरा रे

मान० ॥

॥ पद उंगणीशमुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥

॥भूल्यो भमत कहा बे अजान।
भूल्यो भ० ॥ ए आंकणी ॥

आल पंपाल सकल तज मूरख,
कर अनुभव रस पान ॥
भू० ॥ १ ॥
आय कृतांत गहेगो इक दिन,
हरि मृग जेम अचान ॥
परिो तन धनथी तूं न्यारो,
जिम पाक्यो तरुपान ॥
भू० ॥ २ ॥
मात तात तरुणी सुत सेंती,
गरज न सरत निदान ॥
चिदानंद ए वचन हमारो,

धर राखो प्यारे कान ॥

जू० ॥ ३ ॥

॥ पद वीशमुं ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ संतो अचरिज रूप तमासा ॥

संतो० ॥ ए आंकणी ॥

कीडीके पग कुंजर बांध्यो,

जलमें मकर पीयासा ॥

संतो० ॥

करत हलाहल पान रुचि धर,

तज अमृत रस खासा ॥

चिंतामणि तजी धरत चित्तमें,
काचशकलकी आसा ॥
संतो० ॥ २ ॥
विन वादर वरखा अति वरसत,
विन दिग वहत वतासा ॥
वज्र गलत हम देखा जलमें,
कोरो रहत पतासा ॥
संतो० ॥ ३ ॥
वेर अनादि पण उपरथी,
देखत लगत वगासा ॥
चिदानंद सोही जन उत्तम,

कापत याका पासा ॥

संतो० ॥ ४ ॥



॥पद एकवीशमुं॥राग धन्याश्री॥

॥कर ले गुरुगम ज्ञान विचारा॥

कर ले० ॥ ए आंकणी ॥

नाम अध्यातम ठवण द्रव्यथी,

भाव अध्यातम न्यारा ॥

कर० ॥ १ ॥

एक बुंद जलथी ए प्रगट्या,

श्रुत सायर विस्तारा ॥

धन्य जिनोने उलट उदधिकूं,
एक बुंदमें डारा ॥ कर० ॥ २ ॥
बीज रुचि धर ममता परिहर,
लही आगम अनुसारा ॥
परपखथी लख इणविध अप्पा,
अही कंचुक जिम न्यारा ॥
कर० ॥ ३ ॥
भास परत भ्रम नासहु तासहु,
मिथ्या जगत पसारा ॥
चिदानंद चित्त होत अचल इम,
जिम नभ ध्रुका तारा॥कर०॥४॥

॥ पद बावीशमुं ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ अब हम ऐसी मनमें जाणी ॥
अ० ॥ ए आंकणी ॥

परमारथ पथ समज विना नर,
वेद पुराण कहाणी ॥ अ० ॥ १ ॥
अंतरलक्ष विगत उपरथी,
कष्ट करत बहु प्राणी ॥
कोटि यतन कर तूप लहत नहीं,
मथतां निशिदिन पाणी ॥
अ० ॥ २ ॥
लवण पूतली थाह लेणकूं,

सायर मांहि समाणी ॥
तामें मिल तद्रूप भई ते,
पलट कहे कोण वाणी ॥
अ० ॥ ३ ॥
खटमत मिल मातंग अंग लख,
युक्ति वहुत वखाणी ॥
चिदानंद सरवंग विलोकी,
तत्त्वारथ ल्यो ताणी ॥
अ० ॥ ४ ॥



अब लागी अब लागी ॥
अब लागी अब लागी,
अब प्रीत सही री ॥ अब०
ए आंकणी.
अंतर्गतकी बात अली सुन्ये,
मुखथी मोपें न जात कही री।
चंद चकोरकी उपमा इण समे
साच कहुं तोहे जात वही री।
अ० ॥ १
जलधर बुंद समुद समाणी,
भिन्न करत कोउ तास मही री।

द्वैत भावकी टेव अनादि,
छिनमें ताकुं आज दही री ॥
अ० ॥ २ ॥
विरहव्यथा व्यापत नहीं आली,
प्रेम धरी पियु अंक ग्रही री ॥
चिदानंद चूके किम चातुर,
ऐसो अवसर सार लही री ॥
अ० ॥ ३ ॥

॥ पद पचीशमुं ॥ राग टोडी ॥
॥ प्रीतम प्रीतम प्रीतम प्रीतम,

प्रीतम प्रीतम करती मैं हारी ॥
प्री० ॥ ए आंकणी ॥
ऐसे निठुर भये तुम कैसे,
अजहुं न लीनी खबर हमारी ॥
कवण भांत तुम रीझत मोपें,
लख न परत गति रंच तिहारी ॥
प्री० ॥ १ ॥
मगन भए नित्य मोह सुता संग
विचरत हो स्वछंद विहारी ॥
पण इण वातनमें सुण वालम,

शोभा नहीं जग मांहि तिहारी ॥
प्री० ॥ २ ॥
जो ए वात तात मम सुणीयें,
मोहरायकी करीहे खुवारी ॥
मम पीयर परिवारके आगल,
कुमता कहा ते रंक विचारी ॥
प्री० ॥ ३ ॥
कोटि जतनकरी धोवत निशदिन,
कजरी न होवत कामर कारी ॥
तिम ए साची शिखामण मनमां,

धारत नांही नेक अनारी ॥

प्री० ॥ ४ ॥

कहत विवेक सुमति सुण जिम तिम, आतुर होयने बोलत प्यारी ॥ चिदानंद निज घर आवेंगे, दोय दिनोमें उमर सारी ॥

प्री० ॥ ५ ॥ ॥

॥ पद छवीशमुं ॥

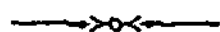
॥ राग आशावरी तथा गोडी ॥

॥ अवधू निरपक्ष विरला कोइ ॥

देख्या जग सहु जोई । अवधू० ।
ए आंकणी ॥
समरस भाव भला चित्त जाके,
थाप उथाप न होई ॥
अविनाशीके घरकी वातां,
जानेंगे नर सोई ॥ अव० ॥ १ ॥
राव रंकमें भेद न जाने,
कनक उपल सम लेखे ॥
नारी नागणीको नहीं परिचय,
ते शिवमंदिर देखे ॥ अव० ॥२॥
निंदा स्तुति श्रवण सुणीने,

हर्ष शोक नवि आणे ॥
ते जगमें जोगीसर पूरा,
नित्य चढते गुणगाणे ॥
अव० ॥ ३ ॥
चंद्र समान सौम्यता जाकी,
सायर जेम गंभीरा ॥
अप्रमत्तें भारंड परें नित्य,
सुरगिरि सम शुचि धीरा ॥
अव० ॥ ४
पंकज नाम धराय पंकसुं,
रहत कमल जिम न्यारा ॥

चिदानंद इस्या जन उत्तम,
सो साहेबका प्यारा॥अव०॥५॥



॥ पद सत्तावीशमुं ॥
॥ राग विहाग वा टोडी ॥
॥ लघुता मेरे मन मानी,
लइ गुरुगम ज्ञान निशानी ॥
लघु० ॥ ए आंकणी ॥
मद अष्ट जिनोंने धारे,
ते दुर्गति गये विचारे ॥
देखो जगतमें प्रानी,

दुःख लहत अधिक अभिमानी

॥ लघु० ॥ १ ॥

शशी सूरज बडे कहावे,
ते राहुके वस आवे ॥
तारा गण लघुता धारी,
स्वरभानु भीति निवारी

॥ लघु० ॥ २ ॥

छोटी अति जोयणगंधी,
लहे खटरस स्वाद सुगंधी ॥
करटी मोटाइ धारे,

ते गर शीश निज डारे
॥ लघु० ॥ ३ ॥
जब बालचंद्र होइ आवे,
तब सहु जग देखण धावे ॥
पूनमदिन वडा कहावे,
तव क्षीण कला होय जावे
॥ लघु० ॥ ४ ॥
गुरुवाइ मनमें वेदे,
उप श्रवण नासिका वेदे ॥
अग मांहे लघु कहावे,

ते कारण चरण पूजावे
॥ लघु० ॥ ५ ॥

शिशु राजधाममें जावे,
सखी हिलमिल गोद खीलावे ॥
होय बडा जाण नवि पावे,
जावे तो सीस कटावे
॥ लघु० ॥ ६ ॥

अंतर मद भाव वहावे,
तव त्रिभुवन नाथ कहावे ॥
इम चिदानंद ए गावे,

रहणी बिरला कोउ पावे
॥ लघु० ॥ ७ ॥

॥ पद अठावीशमुं ॥ राग टोडी ॥
॥ कथणी कथे सहु कोइ,
रहणी अति दुर्लभ होइ ॥
कथ० ॥ ए आंकणी ॥
शुक रामको नाम वखाणे,
नवि परमारथ तस जाणे ॥
या विध भणी वेद सुणावे,
पण अकल कला नवि पावे ॥
कथ० ॥ १ ॥

षट्त्रीश प्रकारें रसोइ,
मुख गणतां तृप्ति न होइ ॥
शिशु नाम नाही तस लेवे,
रस स्वादत सुख अति लेवे ॥
कथ० ॥ २ ॥
बंदीजन कड़खा गावे,
सुणी सूरा सीस कटावें ॥
जब रुंढमूंढता भासे,
सहु आगल चारण नासे ॥
कथ० ॥ ३ ॥
कहणी तो जगत मजूरी,

रहणी है बंदी हजूरी ॥
कहणी साकर सम मीठी,
रहणी अति लागे अनीठी ॥
कथ० ॥ ४ ॥

जब रहणीका घर पावे,
कथणी तब गिणती आवे ॥
अब चिदानंद इम जोई,
रहणीकी सेज रहे सोई ॥
कथ० ॥ ५ ॥

॥ पद उंगणत्रीशमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥

॥ ज्ञानकला घट जासी ॥

जाकूं ज्ञा० ॥ ए आंकणी ॥

तन धन नेह नहीं रह्यो ताकूं,

छिनमें जयो उदासी ॥जा०॥१॥

हुं अविनाशी जाव जगतके,

निश्चें सकल विनाशी ॥

एहवी धार धारणा गुरुगम,

अनुजव मारग पासी॥जा०॥२॥

में मेरा ए मोह जनित जस,

ऐसी बुद्धि प्रकाशी ॥
ते निःसंग पग मोह सीस दे,
निश्चें शिवपुर जासी॥जा०॥३॥
सुमता नई सुखी इम सुनके,
कुमता नई उदासी ॥
चिदानंद आनंद लह्यो इम,
तोर करमकी पासी ॥जा० ॥४॥

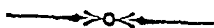
॥पद त्रीशमुं॥ राग आशावरी॥
॥ अनुनव आनंद प्यारो ॥
अब मोहे, अनुनव० ॥
ए आंकणी ॥

एह विचार धार तुं जसथी,
कनक उपल जिम न्यारो ॥ अ० १
बंधहेतु रागादिक परिणति,
लख परपख सहु न्यारो ॥
चिदानंद प्रभु कर किरपा अब,
भव सायरथी तारो ॥ अ० ॥२॥

॥ पद एकत्रीशमुं ॥
॥ राग आशावरी ॥
॥ उं घट विणसत वार न लागे
॥ उं० ॥ ए आंकणी ॥

याके संग कहा अब मूरख,
छिन छिन अधिको पागे ॥
उं० ॥ १ ॥
काचा घमा काचकी शीशी,
लागत ठणका न्हांगे ॥
सडण पमण विध्वंस धरम जस,
तसथी निपुण नीरागे ॥
उं० ॥ २ ॥
आधि व्याधि व्यथा डुःख इण
नव, नरकादिक फुनि आगें ॥
डगहु नचलत संग विणापोप्या,

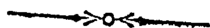
मारगहुमें त्यागे ॥ ७० ॥ ३ ॥
मदबक गाक गहेल तज विरला,
गुरु किरपा कोउ जागे ॥
तन धन नेह निवारी चिदानंद,
चलीयें ताके सागे ॥ ७० ॥४॥



॥पद बत्रीशमुं॥राग आशावरी॥
॥ अवधू पियो अनुभव रस
प्याला, कहत प्रेम मतिवाला ॥
अ० ॥ ए आंकणी ॥

अंतर सप्तधात रस भेदी,
परम प्रेम उपजावे ॥
पूरव भाव अवस्था पलटी,
अजब रूप दरसावे ॥ अ० ॥ १ ॥
नख शिख रहत खुमारी जाकी,
सजल सघन घन जैसी ॥
जिन ए प्याला पिया तिनकूं,
और केफरति कैसी ॥ अ० ॥२॥
अमृत होय हलाहल जाकूं,
रोग शोक नवि व्यापे ॥
रहत सदा गरकाव नसामें,

बंधन ममता कापे ॥ अ० ॥३॥
सत्य संतोष हीयामें धारे,
आतम काज सुधारे ॥
दीन भाव हिरदे नहीं आणे,
अपनो बिरुद संभारे॥अ०॥४॥
भावदया रणथंभ रोपके,
अनहद तूर बजावे ॥
चिदानंद अतुलीबल राजा,
जीत अरि घर आवे॥ अ०॥५॥



॥ पद तेत्रीशमुं ॥
॥ राग आशावरी ॥

॥ मारग साचा कोउ न बतावे ॥
जासुं जाय पूछीयें ते तो,
अपनी अपनी गावे ॥ मारग० ॥
ए आंकणी ॥

मतवारा मतवाद वाद धर,
थापत निज मत नीका ॥
स्याद्वाद अनुभव विन ताका,
कथन लगत मोहे फीका ॥
मा० ॥ १ ॥

मत वेदांत ब्रह्मपद ध्यावत,
निश्चय पक्ष उर धारी ॥
मीमांसक तो कर्म वदे ते,
उदय भाव अनुसारी ॥
मा० ॥ २ ॥
कहत बौद्ध ते बुद्ध देव माम,
क्षणिक रूप दरसावे ॥
नैयायिक नयवाद ग्रही ते,
करता कोउ ठेरावे ॥ मा० ॥ ३ ॥
चारवाक निज मनःकल्पना,
शून्य वाद कोउ ठाणे ॥

तिनमें नये अनेक नेद ते,
अपणी अपणी ताणे ॥
मा० ॥ ४ ॥
नय सरवंग साधना जामें,
ते सरवंग कहावे ॥
चिदानंद ऐसा जिन मारग,
खोजी होय सो पावे ॥ मा० ॥ ५ ॥

॥ पद चोत्रीशमुं ॥
॥ राग आशावरी ॥
॥ अवधू खोली नयन अव जोवो,

डिग मुडित कहा सोवो ॥
अवधू० ॥ ए आंकणी ॥
मोह निंद सोवत तूं खोया,
सरवस माल अपाणा ॥
पांच चोर अजहुं तोय लूंटत,
तास मरम नहीं जाण्या ॥
अवधू० ॥ १ ॥
मली चार चंडाल चोकडी,
मंत्री नाम धराया ॥
पाई केफ पीयाला तोहे,

सकल मुलक ठग खाया ॥
अवधू० ॥ २ ॥
शत्रुराय महाबल जोधा,
निज निज सेन सजाये ॥
गुणठाणेमें बांध मोरचे,
घेरया तुम पुर आये ॥
अवधू० ॥ ३ ॥
परमादी तूं होय पियारे,
परवशता दुःख पावे ॥
गया राज पुर सारथ सेंती,

फिर पाछा घर आवे ॥ अवधू० ४
सांभली वचन विवेक मित्तका,
तिनमें निज दल जोड्या ॥
चिदानंद एसी रमत रमतां,
ब्रह्म बंका गढ तोड्या ॥
अवधू० ॥ ५ ॥

॥ पद पांत्रीशमुं ॥ राग प्रभाती ॥
॥ वस्तुगतें वस्तुको लक्षण,
गुरुगम विण नहीं पावे रे ॥
गुरुगम विन नवि पावे कोउ,

झटक झटक झरमावे रे ॥
॥ व० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥
भवन आरीसे श्वान कूकडा,
निज प्रतिबिंब निहारे रे ॥
इतर रूप मन मांहे विचारी,
महा जुध्द विस्तारे रे ॥
व० ॥ २ ॥
निर्मल फिटक शिला अंतर्गत,
करिवर लख परगांहि रे ॥
दसन तुराय अधिक दुःख पावे,

द्वेष धरत दिल मांहि रे ॥
व० ॥ ३ ॥

ससले जाय सिंहकूं पकड्यो,
दूजों दीयो देखाई रे ॥
निरख हरि ते जाण दूसरो,
पड्यो झंप तिहां खाई रे ॥
व० ॥ ४ ॥

निज छाया वेताल भरम धर,
डरत बाल चित्त मांहि रे ॥
रज्जु सर्प करी कोउ मानत,

जौलों समजत नांहि रे ॥
व० ॥ ५ ॥
नलिनी भ्रम मर्कट मूठी जिम,
भ्रमवश अति दुःख पावे रे ॥
चिदानंद चेतन गुरुगम विन,
मृग तृष्णा धरी धावे रे ॥
व० ॥ ६ ॥

॥ पद त्रीशमुं ॥ राग भैरव ॥
॥ लाल ख्याल देख तेरे,
अचरिज मन आवे ॥ लाल० ॥
ए आंकणी ॥

धारे बहु रूप भिन्न,
मांहे होय रंक नूप ॥
आप तो अरूप सहु,
जगमें कहावे ॥ ला० ॥ १ ॥
करता अकरताहु,
हरताके भरता ज्युं ॥
एसा हे जो कोण तोहे,
नाम ले बतावे ॥ ला० ॥ २ ॥
एकहुमें एक है,
अनेक है अनेकहुमें ॥
एक न अनेक कछु,

कह्यो नहीं जावे ॥ ला० ॥ ३ ॥
उपजे न उपजत,
मूर्उ न मरत कछु ॥
खटरस ञोग करे,
रंचहु न खावे ॥ लाल० ॥ ४ ॥
परपरणीत संग ॥
करत अनोपेखे रंग ॥
चिदानंद प्यारे,
नट वाजीसी दिखावे ॥ला०॥५॥

॥ पद साम्त्रीशमुं ॥ राग जैरव ॥
॥ जाग रे वटाउ अब,

भई भोर वेरा ॥ जा० ॥

ए आंकणी ॥

भया रबिका प्रकाश,

कुमुदहू थए विकास ॥

गया नाश प्यारे मिथ्या,

रेनका अंधेरा ॥ जा० ॥ १ ॥

सूता केम आवे घाट,

चालवी जरूर वाट ॥

कोइ नांही मित्त,

परदेशमें ज्युं तेरा ॥ जा० ॥ २ ॥

अवसर वीत जाय,

पीछें पिछतावो थाय ॥
चिदानंद निहचें,
ए मान कहा मेरा ॥ जा० ॥ ३ ॥

॥ पद आडत्रीशमुं ॥ राग भैरव ॥
॥ चालणां जरूर जाकूं,
ताकूं कैसा सोवणां ॥ चा० ॥
ए आंकणी ॥
भया जब प्रातःकाल,
माता धवरावे बाल ॥
जग जन करत हे,

सकल मुख धोवणां ॥चा०॥१॥

सुरभिके बंध छूटे,

घूवड भये अपूठे ॥

ग्वाल बाल मिलकें,

बिलोवत वलोवणां ॥चा०॥२॥

तज परमाद जाग,

तूंभी तेरे काज लाग ॥

चिदानंद साथ पाय,

वृथा न आयु खोवणां ॥चा०।३।



॥ पद ऊंगणचालीशमुं ॥

॥ राग भैरव ॥

॥ जाग अवलोक निज,
शुध्दता स्वरूपकी ॥ जाग० ॥
ए आंकणी ॥

जामें रूप रेख नांही,
रंच परपंच गांही ॥
धारे नहीं ममता,
सुगुण भवकूपकी ॥ जा० ॥१॥
जाको है अनंत ज्योत,
कबहु न मंद होत ॥

चार ज्ञान ताके सोत,
उपमा अनूपकी ॥ जा० ॥ २ ॥
उलट पलट ध्रुव जान,
सत्तामें विराजमान ॥
शोभा नांहि कही जात,
चिदानंद नूपकी ॥ जा० ॥ ३ ॥



॥ पद चालीशमुं ॥ राग प्रभाती ॥
॥ ऐसा ग्यान विचारो प्रीतम,
गुरुमुख शैली धारी रे ॥ ऐ० ॥
ए आंकणी ॥

स्वामीकी शोभा करे सारी,
ते तो बाल कुमारी रे ॥
जे स्वामी ते तात तेहनो,
कह्यो जगत हितकारी रे ॥
ऐसा० ॥ १ ॥
अष्ट दीकरी जाई बाला,
ब्रह्मचारिणी त्रोवे रे ॥
परणावी पूरणचंदाथी,
एक सेज नवि सोवे रे ॥
ऐसा० ॥ २ ॥
अष्ट कन्याका सुत वली जाये,

द्वादश ते वली सोई रे ॥
ते जग मांहे अजनमे कहीयें,
करता नवि तस कोई रे ॥
ऐसा० ॥ ३ ॥
मात तात सुत एक दिन जनमे,
छोटे बडे कहावे रे ॥
मूल तिनोंका सहु जग जाणे,
शाखा भेद न पावे रे ॥
ऐसा० ॥ ४ ॥
जो इणके कुल केरी शाखा,
जाणे खोज गमावे रे ॥

खोज जाय जगमे तोपण ते,
सहुथी वडे कहावे रे ॥
ऐसा० ॥ ५ ॥
अथवा नर नारी नपुंसक,
सहुकी ए छे माता रे ॥
षटमत बाल कुमारी बोलत,
ए अचरिजकी वाता रे ॥
ऐसा० ॥ ६ ॥
लोक लोकोत्तर सहु कारजमें,
या विन काम न चाले रे ॥
चिदानंद ए नारीशुं रमण,

मुनि मनथी नवि टाळे रे ॥
ऐसा० ॥ ७ ॥

॥ पद एकतालीशमुं ॥
॥ राग प्रभाती ॥
॥ उठोने मोरा आतमराम,
जिनमुख जोवा जइयें रे ॥
॥ ए देशी ॥
॥ विषय वासना त्यागो चेतन,
साचे मारग लागो रे ॥
ए आंकणी ॥

तप जप संजम दानादिक सहु,
गिणती एक न आवे रे ॥
इंद्रिय सुखमें जौंलौं ए मन,
वक्र तुरंग जिम धावे रे ॥
विषय० ॥ १ ॥
एक एकके कारण चेतन,
बहुत बहुत दुःख पावे रे ॥
ते तो प्रगटपणे जगदीश्वर,
इण विध भाव लखावे रे ॥
विषय० ॥ २ ॥
मन्मथ वश मातंग जगतमें,

परवशावता दुःख पावे रे ॥
रसनालुब्ध होय झख मूरख,
जाल पडी पिछतावे रे ॥
विषय० ॥ ३ ॥
घ्राण सुवास काज सुन भमरा,
संपुट मांहे बंधावे रे ॥
ते सरोज संपुट संयुत फुन,
करटीके मुख जावे रे ॥
विषय० ॥ ४ ॥
रूप मनोहर देख पतंगा,
पडत दीपमां जाई रे ॥

देखो याकूं दुःख कारनमें,
नयन भये है सहाई रे ॥
विषय० ॥ ५ ॥
श्रोत्रेंद्रिय आसक्त मिरगला,
छिनमें शीश कटावे रे ॥
एक एक आसक्त जीव एम,
नानाविध दुःख पावे रे ॥
विषय० ॥ ६ ॥
पंच प्रबल वर्त्ते नित्य जाकूं,
ताकूं कहा ज्युं कहीयें रे ॥
चिदानंद ए वचन सुणीने,

निज स्वभावमें रहीयें रे ॥
विषय० ॥ ७ ॥

॥ पद बेंतालीशमुं ॥
॥ राग भैरव ॥

॥ अजित जिनंद देव,
थिर चित्त ध्याईयें ॥ अ० ॥
थिर चित्त ध्याईयें,
परम सुख पाईयें ॥ अजि० ॥
ए आंकणी ॥

अति नीको भाव जल,

विगत ममत मल ॥
ऐसो ज्ञानसरथी,
सुजल भर लाइयें ॥
अजि० ॥ १ ॥
केशर सुमति घोरी,
भरी भावना कचोरी ॥
कर मन भोरी अंग,
अंगीया रचाइयें ॥
अजि० ॥ २ ॥
अभय अखंड क्यारी,
सिंचकें विवेक वारी ॥

सहज सुभावमें सुमन निपजा-
ईयें ॥ अजि० ॥ ३ ॥
ध्यान धूप ज्ञान दीप,
करी अष्ट कर्म छीप ॥
द्विविध सरूप तप,
नैवेद्य चढाईयें ॥ अजि० ॥ ४ ॥
लीजीयें अमल दल,
होईयें सरस फल ॥
अक्षत अखंड बोध,
स्वस्तिक लखाईयें ॥ अजि० ॥ ५ ॥
अनुभव भोर भयो,

मिथ्यामत दूर गयो ॥
करी जिन सेव इम,
गुण फुनि गाईयें॥अजि० ॥६॥
इणविध जाव सेव,
कीजीयें सुनित्यमेव ॥
चिदानंद प्यारे इम,
शिवपुर पाईयें॥ अजि० ॥ ७॥

॥ पद त्रेंतालीशमुं ॥ राग काफी ॥
॥ जौंलौं अनुजव ज्ञान,
घटमें प्रगट जयो नहीं।जौंलौं०
ए आंकणी ॥

तौलौं मन थिर होत नहीं छिन,
जिम पीपरको पान ॥
वेद भणयो पण भेद विना शठ,
पोथी थोथी जाण रे ॥घ०॥१॥
रस भाजनमें रहत द्रव्य नित्य,
नहीं तस रस पहिचान रे ॥
तिम श्रुतपाठी पंडितकूं पण,
प्रवचन कहत अज्ञान ॥ घ०।२।
सार लह्या विण भार कह्यो श्रुत,
खर दृष्टांत प्रमाण ॥
चिदानंद अध्यातमशैली,

समज परत एक तान रे ॥
घ० ॥ ३ ॥

॥पद चुंमालीशमुं ॥ राग काफी॥
॥ अकथ कथा कुण जाणे हो,
तेरी चतुर सनेही ॥ अकथ० ॥
ए आंकणी ॥
नयवादी नयपद ग्रहीने,
जूठा झगडा गाणे ॥
निरपख लख चख स्याद सुधाको,
ते तो तनक न ताणे हो ॥
तेरी० ॥ १ ॥

कनक उपल मल भिन्नता काजे,
जोगानल उपजावे हो ॥
ऐसी० ॥ २ ॥
एक समय समश्रेणी रोपी,
चिदानंद इम गावे ॥
अलख रूप होइ अलख समावे,
अलख भेद एम पावे हो ॥
ऐसी० ॥ ३ ॥

॥ पद छेंतालीशमुं ॥
॥ राग काफीनी होरी ॥
॥अनुभव मित्त मिलाय दे मोकूं,

श्याम सुंदर वर मेरा रे॥अनु०॥
ए आंकणी ॥
शीयल फाग पिया संग रमूंगी,
गुण मानुंगी में तेरा रे ॥
ज्ञान गुलाल प्रेम पीचकारी,
शुचि श्रध्धा रंग जेरा रे ॥
अनु० ॥ १ ॥
पंच मिथ्यात निवार धरुंगी में,
संवर वेश जलेरा रे ॥
चिदानंद ऐसी होरी खेलत,

बहुरि न होय भव फेरा रे ॥
अनु० ॥ २ ॥

॥ पद सुडतालीशमुं ॥
॥ राग काफीनी होरी ॥
॥ एरि सुख होरी गावो री,
सहज श्याम घर आए ॥
सखीसुख० ॥ ए आंकणी ॥
भेद ज्ञानकी कुंजगलनमें,
रंग रचावो री॥सखी सुख०
शुद्ध श्रद्धान सुरंग

मंरूप गावो री ॥
एरि घर मंडप गावो री ॥
सखी० ॥ २ ॥
वास चंदन शुभ्र भाव अरगजा,
अंग लगावो री ॥
एरि पीया अंग लगावो री ॥
सखी० ॥ ३ ॥
अनुभव प्रेम पीयाले प्यारी,
भर भर पावो री ॥
कंतकूं भर भर पावो री ॥
सखी० ॥ ४ ॥

चिदानंद सुमता रस मेवा,
हिल मिल खावो री ॥
सहज श्याम घर आए,
सखी मुख होरी गावो री ॥
सखी० ॥ ५ ॥



॥ पद अडतालीशमुं ॥
॥ राग जंगलो काफी ॥

॥ जगमें नहीं तेरा कोई,
नर देखहु निहचें जोई ॥ जग०॥
ए आंकणी ॥

सुत मात तात अरु नारी,
सहु स्वारथके हितकारी ॥
बिन स्वारथ शत्रु सोई ॥
जग० ॥ १ ॥

तुं फिरत महा मदमाता,
विषयन संग मूरख राता ॥
निज संगकी सुधबुध खोई ॥
जग० ॥ २ ॥

घट ज्ञानकला नव जाकूं,
पर निज मानत सुन ताकूं ॥

आखर पछतावा होई ॥
जग० ॥ ३ ॥
नवि अनुपम नरभव हारो,
निज शुद्ध स्वरूप निहारो ॥
अंतर ममता मल धोई ॥
जग० ॥ ४ ॥
प्रभु चिदानंदकी वाणी,
धार तुं निश्चैं जग प्राणी ॥
जिम सफल होत भव दोई ॥
जग० ॥ ५ ॥



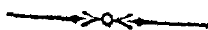
॥ पद ओगणपचासमुं ॥
॥ राग जंगलो काफी ॥
॥ जूठी जूठी जगतकी माया,
जिन जाणी न्नेद तिन पाया ॥
जू० ॥ ए आंकणी ॥
तन धन जोवन सुख जेता,
सहु जाणहुं अथिर सुख तेता॥
नर जिम बादलकी गया ॥
जू० ॥ १ ॥
जिम अनित्य न्नाव चित्त आया,
लख गलित वृषन्नकी काया ॥

बूझें करकंडु राया ॥ जू० ॥ २ ॥
इम चिदानंद मन मांही,
कछु करीयें ममता नांही ॥
सद्गुरुए भेद लखाया ॥ जू० ॥ ३ ॥

॥ पद पचासमुं ॥ राग सोरठ ॥
॥ आतम ध्यान समान
जगतमें ॥ आ० ॥
साधन नवि कोउ आन ॥
जग० ॥ ए आंकणी ॥
रूपातीत ध्यानके कारण,

रूपस्थादिक जान ॥
ताहुमें पिंडस्थ ध्यान पुन,
ध्याताकूं परधान ॥ जग० ॥ १ ॥
ते पिंडस्थ ध्यान किम करीयें,
ताको एम विधान ॥
रेचक पूरक कुंनक शांतिक,
कर सुखमन घर आन॥जग०।२।
प्रान समान उदान व्यानकूं,
सम्यक् ग्रहहुं अपान ॥
सहज सुनाव सुरंग सनामें,

अनुभव अनहद तान ॥
जग० ॥ ३ ॥
कर आसन धर शुचि समसुद्रा,
गही गुरुगम ए ज्ञान ॥
अजपा जाप सोहं सु समरनां,
कर अनुभव रस पान ॥
जग० ॥ ४ ॥
आतम ध्यान भरत चक्री लह्यो,
भवन आरीसा ज्ञान ॥
चिदानंद शुभ ध्यान जोग जन,
पावत पद निरवाण॥जग० ॥५॥



॥ पद एकावनमुं ॥

॥ राग सोरठ गिरनारी ॥

॥ प्रभु मेरो मनको हटक्यो न माने ॥ प्रभु० ॥ ए आंकणी ॥

बहुत भांत समजायो याकूं,
चोडेहू अरु छाने ॥
पण इस शीखामण कछु रंचक,
धारत नवि निज काने ॥
प्रभु० ॥ १ ॥
छिनमें रुष्ट तुष्ट होय छिनमें,
राव रंक छिन मांहि ॥

चंचल जेम पताका अंचल,
तेह विगत इण मांहि ॥
प्रभु० ॥ २ ॥
वक्र तुरंग जिम सुलटी शिक्ष
तज उलटी हु गाने ॥
विषम गति अति याकी साहेब,
अतिशयधर कोउ जाने ॥
प्रभु० ॥ ३ ॥
अति उगतियें कहुं हुं तुमथी,
तुम विन कोउ न सियाने ॥

चिदानंद प्रजु ए विनतिकी,
अव तो लाज हे थांने।प्रजु०।४।

॥ पद बावनमुं ॥
॥ राग सोरठ मलार ॥
॥ तारो जी राज तारो जी राज,
दीनानाथ अव मोहे तारो जी
राज ॥ ए आंकणी ॥
पूरव पुण्य उदय तुम नेटे,
तारण तरण जिहाज ॥
दीना० ॥ १ ॥

पतित उद्धारण तुम पण धार्‍यो,
हुं पतितन सिरताज ॥
दीना० ॥ २ ॥
आगें अनेक उधारे तदपि न,
कठिनता मळ्यो आज ॥
दीना० ॥ ३ ॥
इणे अवसर जिमतिम करी र-
खीयें, बिरुद ग्रहेकी लाज ॥
दीना० ॥ ४ ॥
चिदानंद सेवक जिन साहेब,

नीको वन्यो हे समाज ॥
दीना० ॥ ५ ॥



॥ पद त्रेपनमुं ॥ राग सोरठ ॥
॥आवो जी राज आवो जी राज,
साहेबा थें म्हारे मोलें आवो जी
राज ॥ ए आंकणी ॥
सीस नमाय कर जोड कहतहुं,
जरतेकों न जरावो ॥
हस हस नाथ जरे पर अब तुम,
काहेकूं लौंन लगावो ॥
साहे० ॥ १ ॥

भार अढार अपार कीयो तिहां,
वनराजी विस्तार ॥
निर्मल नीर समीर वहत नित्य,
पथिक जन मनोहार ॥
रूडो० ॥ १ ॥
शुद्ध समाधि विगत उपाधि,
जोगीसर चित्त धार ॥
करत गंभीर गुहामें निशदिन,
गुरुगम ज्ञान विचार ॥
रूडो० ॥ २ ॥
कल्याणकहू थाय तिहां रे,

शोन्नत जगदाधार ॥
चिदानंद प्रन्नु अब मोहे तारो,
जिम तारो निज नार ॥
रूडो० ॥ ३ ॥

॥पद पंचावनमुं॥ राग सोयणी॥
॥ अनुन्नव ज्योति जगी ठे,
हैये हमारे वे ॥ अ० ॥
ए आंकणी ॥
कुमता कुटिल कहा अब करिहा,
सुमता हमारी संगी ठे ॥
अ० ॥ १ ॥

मोह मिथ्यात निकट नवि आवे,
भव परिणत ज्युं पगी हे ॥
अ० ॥ २ ॥
चिदानंद चित्त प्रभुके भजनमें,
अनुपम अचल लगी हे ॥
अ० ॥ ३ ॥

॥ पद छप्पनमुं ॥ राग सोयणी ॥
॥ सरण तिहांरे गही हे,
चंदा प्रभुजी वे ॥ स० ॥
ए आंकणी ॥

जनम जरा मरणादिक केरी,
पीडा वहुत सही है ॥ स० ॥ १ ॥
परदुःख भंजन नाथ विरुद तुव,
तातें तुमकों कही है ॥ स० ॥२ ॥
चिदानंद प्रभु तुमारे दरसथी,
वेदना अशुभ दही है॥स० ॥३॥

॥ पद सत्तावनमुं ॥ राग केरवो ॥
॥ समज परी मोहे समज परी,
जग माया अब जूठी मोहे
समज० ॥ ए आंकणी.॥

काल काल क्या करे मूरख,
नांही भरुंसा पल एक घरी ॥
स० ॥ १ ॥
गांफिल छिन भर नांही रहो तुम,
शिर पर घूमे तेरे काल अरी ॥
स० ॥ २ ॥
चिदानंद ए वात हमारी प्यारे,
जाणो मित्त मन मांहे खरी ॥
स० ॥ ३ ॥

॥ पद अठावनमुं ॥ राग केरबो ॥
" हांरे चित्तमें धरो प्यारे,

चित्तमें धरो एती शीख हमारी
प्यारे, अब चित्तमें धरो ॥
ए आंकणी ॥

थोडासा जीवनके काज अरे नर,
कांहेकूं छल परपंच करो ॥
एती० ॥ १ ॥

हांरे कूडकपट परद्रोह करत तुम,
अरे नर परभवथी न डरो ॥
एती० ॥ २ ॥

चिदानद जो ए नहीं मानो तो,

जनम मरण नव दुःखमें परो॥
एती० ॥ ३ ॥

॥ पद ओगणसाठमुं ॥
॥ राग मलार ॥

॥ ध्यानघटा घन छाए,
सु देखो माई ॥ ध्यान० ॥
ए आंकणी ॥
दम दामिनी दमकती दहु दिस
अति, अनहद गरज सुनाए ॥
सु० ॥ १ ॥

मोटी मोटी बुंद खिरत वसुधा
शुची, प्रेम परम जर लाए ॥
सु० ॥ २ ॥
चिदानंद चातक अति तलपत,
शुद्ध शुद्दा जल पाए ॥
सु० ॥ ३ ॥



॥ पद साठमुं ॥ राग मल्हार ॥
॥ मत जावो जोर विछोर,
वालम अब॥मत०॥एआंकणी॥
पीउ पीउ पीउ रटत बपैया,

गरजत घन अति घोर ॥
वालम० ॥ १ ॥

चम चम चम चम चमकत
चपला, मोर करत मिल सोर ॥
वालम० ॥ २ ॥

उमंग चली सरिता सायर सुख,
भर गए जल चिहुं ओर ॥
वालम० ॥ ३ ॥

ऊंची अटारी रयण अंधारी,
विरही करत झकजोल ॥
वालम० ॥ ४ ॥

चिदानंद प्रभु एक वार कह्यो,
जाणो वार करोर॥ वालम०॥५॥

॥ पद एकसठमुं॥ राग विहाग ॥
॥ पीया पीया पीया,
बोल मत पीया पीया पीया॥ पी०॥
ए आंकणी ॥
रे चातुक तुम शब्द सुणत मेरा,
व्याकुल होत हे जीया ॥
फूटत नांहि कठिन अति घन
सम, निठुर भया ए हीया ॥
बो० ॥ १ ॥

एक शोक्य दुःखदायी कंतजीने,
कर कामण वस कीया ॥
दूजे बोल बोल खग पापी,
तुं अधिका दुःख दीया ॥
बो० ॥ २ ॥
कर्ण प्रवेश उठी होइ व्याकुल,
विरहानल जलतीया ॥
चिदानंद प्रभु इन अवसर मिल,
अधिक जगत जस लीया ॥
बो० ॥ ३ ॥

॥ पद वासठमुं ॥

॥ अजित जिणंदशुं प्रीतडी ॥
ए देशी ॥

॥ परमातम पूरण कला,
पूरण गुण हो पूरण जन आश ॥
पूरण दृष्टि निहालीयें,
चित्त धरीयें हो अमची अरदास
॥ परमा० ॥ १ ॥
सर्व देव घाती सहु,
अघाती हो करी घात दयाल ॥
वास कीयो शिव मंदिरें,

मोहे वीसरी हो भमतो जग
जाल ॥ परमा० ॥ २ ॥

जग तारक पदवी लही,
तार्या सही हो अपराधी अपार॥
तात कहो मोहे तारतां,
किम कीनी हो इणे अवसर वार
॥ परमा० ॥ ३ ॥

मोह महा मद छाकथी,
हुं छकीयो हो नांहि सूध लगार॥
उचित सही इणे अवसरें,

सेवकनी हो करती संभाल ॥
परमा० ॥ ४ ॥

मोह गयां जो तारशो,
तिणवेला हो कहा तुम उपकार ॥
सुखवेला सज्जन घणा,
दुःखवेला हो विरला ससार ॥
परमा० ॥ ५ ॥

पण तुम दरिसन जोगथी,
थयो हृदयें हो अनुभव परकाश।
अनुभव अभ्यासी करे,

दुःखदायी हो सहु कर्म विनाश॥
परमा० ॥ ६ ॥

कर्मकलंक निवारीने,
निज रूपें हो रमे रमता राम ॥
लहत अपूरव भावथी,
इण रीतें हो तुम पद विश्राम ॥
परमा० ॥ ७ ॥

त्रिकरण जोगें वीनवुं,
सुखदायी हो शिवादेवी नंद ॥
चिदानंद मनमें सदा,

तुमे आपो हो प्रभु नाण दिणंद॥
परमा० ॥ ८ ॥

॥ पद त्रेसठमुं ॥

॥ उड भमरा कंकणी पर बैठा,
नयणीसें ललकारुंगी ॥
ए देशी ॥

॥ श्रीशंखेसर पास जिनंदके,
चरणकमल चित्त लाउंगी ॥
सुणजो रे सजन नित्य ध्याउंगी।
ए आंकणी ॥

एहवा पण हठधारी हियामें,
अन्य द्वार नहि जाऊंगी ॥
सु० ॥ १ ॥
सुंदर सुरंग सलूनी मूरत,
निरख नयन सुख पाऊंगी ॥
सु० ॥ २ ॥
चंपा चंबेली आन मोघरा,
अंगियां अंग रचाऊंगी ॥
सु० ॥ ३ ॥
शीलादिक शणगार सजी नित्य,

नाटक प्रभुकूं देखाउंगी ॥
सु० ॥ ४ ॥
चिदानंद प्रभु प्राणजीवनकूं,
मोतियन थाल वधाउंगी ॥
सु० ॥ ५ ॥

॥ पद चोसठमुं ॥

॥ अजित जिणंदशुं प्रीतडी ॥
ए देशी ॥
॥ अजित अजित जिन ध्याइयें,
धरी हिरदे हो भवि निर्मल ध्यान।
हृदय सरोजामें रह्यो,

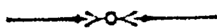
सुरभीसम हो लही तास विज्ञान
॥ अ० ॥ १ ॥

कीट ध्यान भृंगी तणो,
निज धरतां हो ते भृंगी निदान॥
अकल धौत स्वरूपता,
लोह फरसत हो पारस पाखान
॥ अ० ॥ २ ॥

पीचुमंदादिक सही,
होय चंदन हो मलयागरु संग॥
सैंधव क्यारिमें पड्या,

जिम पालटे हो वस्तुनो रंग
॥ अ० ॥ ३ ॥
ध्येय रूपनी एकता,
करे ध्यातां हो धरे ध्यान सुजान॥
करे कतक मल भिन्नता,
जिम नासे हो तम उगते भान
॥ अ० ॥ ४ ॥
पुष्टालंबन योगथी,
निरालंबता हो सुख साधन जेह॥
चिदानंद अविचल कला,

हाण मांहे हो भवि पावे तेह
॥ अ० ॥ ५ ॥



॥ पद पांसठमुं ॥
॥निर्मल होई भज ले प्रभु प्यारा
॥ ए देशी ॥
॥लाग्या नेह जिनचरण हमारा,
जिम चकोर चित्त चंद पीयारा॥
सुनत कुरंग नाद मन लाई,
प्राण तजे पण प्रेम निभाई ॥
घन तज आनन जावत जोई,

ए खग चातुक केरी बडाइ ॥

लाο ॥ १ ॥

जलत निःशंक दीपके मांहि,
पीर पतंगकूं होत के नांहि ॥
पीडा तदपण तिहां जहि,
शंक प्रीतिवश आनत नांहि ॥

लाο ॥ २ ॥

मीन मगन नवि जलथी न्यारा,
मान सरोवर हंस आधारा ॥
चोर निरख निशि अति अंधि-

यारा, केकी मगन फुन सुन गर-
जारा ॥ ला० ॥ ३ ॥
प्रणव ध्यान जिम योगी आराधे,
रस रीति रससाधक साधे ॥
अधिक सुगंध केतकीमें लाधे,
मधुकर तस संकट नवि वाधे ॥
ला० ॥ ४ ॥
जाका चित्त जिहां थिरता माने,
ताका मरम तो तेहिज जाने ॥
जिनभक्ति हिरदयमें ठाने,

चिदानंद मन आनंद आले ॥
लाо ॥ ५ ॥



॥ पद ગસઠમું ॥

॥ हो वांसलडी वेरण थइ,
लागीरे व्रजनी नारने ॥ए देशी॥
॥ हो प्रीतमजी प्रीतकी रीत,
अनित्य तजी चित्त धारीयें ॥
हो वालमजी वचन तणो,
अति ऊंडो मरम विचारीयें ॥
ए आंकणी ॥

तुमे कुमतिके घर जावो छो,
निज कुलमें खोट लगावो छो,
धिक एह जगतनी खावो छो ॥
हो प्री० ॥ १ ॥
तमे त्याग अमी विष पीयो छो,
कुगतिनो मारग लीयो छो,
ए तो काज अजुगतो कीयो छो॥
हो प्री० ॥ २ ॥
ए तो मोह रायकी चेटी छे,
शिव संपत्ति एहथी छेटी छे,

ए तो साकरतें गल पेटी बे ॥
हो प्री० ॥ ३ ॥
एक शंका मेरे मन आवी बे,
किण विध ए तुम चित्त लावी बे,
ए तो डाकण जगमें चावी बे ॥
हो प्री० ॥ ४ ॥
सहु रुद्धि तुमारी खाई बे,
करी कामण मति नरमाई बे,
तुमे पुण्य जोगे ए पाई बे ॥
हो प्री० ॥ ५ ॥
मत आंब काज बावल वोवो,

अनुपम भव विरथा नवि खोवो,
अब खोल नयण प्रगट जोवो ॥
हो प्री० ॥ ६ ॥
इण विध सुमता बहु समजावे,
गुण अवगुण कहीसहु सरसावे,
सुणी चिदानंद निज घर आवे॥
हो प्री० ॥ ७ ॥

॥ पद सडसठमुं ॥ गहुंली ॥
॥ चंद्रवदनी मृगलोयणी,
ए तो सजी सोल शणगार रे ॥

ए तो आवी जगगुरु वादवा,
धरी हियडे हरख अपार रे ॥
अ० ॥ १ ॥
हांरे ए तो मुक्ताफल मूठी भरी,
रचे गहुंली परम उदार रे ॥
जिहां वाणी योजनगामिनी,
घन वरसे अखंडित धार रे ॥
अ० ॥ २ ॥
हांरे जिहां रजत कनक रतनना,
सुर रचित त्रण प्राकार रे ॥
तस मध्य मणिसिंहासने,

शोभित श्री जगदाधार रे ॥
अ० ॥ ३ ॥
हांरे जिहां नरपति खगपति
लछपति,
सुरपति युत परखदा बार रे ॥
लब्धि निधान गुण आगरु,
जिहां गौतमसें गणधार रे ॥
अ० ॥ ४ ॥
हांरे जिहां जीवादिक नवतत्त्वनो
षट्द्रव्य भेद विस्तार रे ॥
ए तो श्रवण सुणी निर्मल करे,

निज बोधवीज सुखकार रे ॥
अ० ॥ ५ ॥
हांरे जिहां तीन छत्र त्रिभुवन
उदित,
सुर ढालत चामर चार रे ॥
सखी चिदानंदकी वंदना,
तस होजो वारंवार रे ॥
अ० ॥ ६ ॥

॥ पद अडसठमुं ॥
॥ हो कुंथु जिन मनडुं किणही न
वाजे ॥ ए देशी ॥

॥ अनुभव अमृतवाणी हो ॥
पास जिन ॥ अ० ॥
सुरपति भयो जे नाग श्रीमुखथी,
ते वाणी चित्त आणी हो ॥
पा० ॥ १ ॥
स्याद्वाद मुद्रा मुद्रित शुचि,
जिम सुर सरिता पाणी ॥
अंतर मिथ्या भावलता जे,
छेदण तास कृपाणी हो ॥
पा० ॥ २ ॥
अहोनिश नाथ असंख्य मल्या

तिम, तिरगते अचरिज एही ॥
लोकालोक प्रकाश अंश जस,
तस उपमा कहो केही हो ॥
पा० ॥ ३ ॥
विरह वियोगहरणी ए दंती,
संधी वेग मिलावे ॥
याकी अनेक अवंचकतायी,
आणा विमुख कहावे हो ॥
पा० ॥ ४ ॥
अक्षर एक अनंत अंश जिहां,
लेप रहित मुख भाखो ॥

तास क्षयोपशम भाव वंध्याथी,
शुद्ध वचन रस चाखो हो ॥
पा० ॥ ५ ॥
चाख्याथी मन तृप्त थयुं नवि,
शे माटे लोभावो ॥
कर करुणा करुणारस सागर,
पेट भरी ते पावो हो ॥
पा० ॥ ६ ॥
ए लवलेश लह्या विण साहिब,
अशुभ युगलगति वारी ॥
चिदानंद वामासुत केरी,

वाणीनी बलिहारी हो ॥

पा० ॥ ७ ॥

॥ पद उगणोतेरसुं ॥

॥ राग मालकोश ॥

॥ पूरव पुण्य उदय करी चेतन,
नीका नरभव पाया रे ॥ पू० ॥
ए आंकणी ॥

दीनानाथ दयाल दयानिधि,
डुर्लभ अधिक बताया रे ॥
दश दृष्टांते दोहिला नरभव,

उत्तराध्ययने गाया रे॥ पू०॥१॥
अवसर पाय विषय रस राचत,
ते तो मूढ कहाया रे॥
काग उडावण काज विप्र जिम,
डार मणि पछताया रे॥ पू०॥२॥
नदी घोल पाखान न्याय कर,
अर्द्ध वाट तो आया रे॥
अर्द्ध सुगम आगल रही तिनकूं,
जिन कछु मोह घटाया रे। पू०।३।
चेतन चार गतिमें निश्चे,
मोक्षद्वार ए काया रे॥

करत कामना सुर पण याकी,
जिनकूं अनर्गल माया रे।पू०।४।
रोहणगिरिजिम रतनखाणतिम,
गुण सहु यामें समाया रे ॥
महिमा मुखथी वरणत जाकी,
सुरपति मन शंकाया रे॥पू०।५।
कल्पवृक्ष सम संयम केरी,
अति शीतल जिहां छाया रे॥
चरणकरण गुण धरण महामुनि,
मधुकर मन लोभाया रे॥पू०।६।
या तन विण तिहुं काल कहो

किन, साचा सुख निपजाया रे ॥
अवसर पाय न चूक चिदानंद,
सद्गुरु यूं दरसाया रे॥पू० ॥७॥

॥ पद सीत्तेरमुं॥पर्यूषण स्तुति ॥
॥ मणि रचित सिंहासन,
बेठा जगदाधार ॥
पर्यूषण केरो,
महिमा अगम अपार ॥
निज मुखथी दाखी,
साखी सुर नर वृंद ॥
ए पर्व पर्वमां,

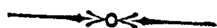
जिम तारामां चंद ॥ १ ॥
नागकेतुनी परे,
कल्प साधना कीजे ॥
व्रत नियम आखडी,
गुरुमुख अधिकी लीजे ॥
दोय भेदे पूजा,
दान पंच परकार ॥
कर पडिक्कमणां धर,
शीयल अखंडित धार ॥ २ ॥
जे त्रिकरण शुद्धे,
आराधे नवकार ॥

नव सात आठ अव,
शेषे तास संसार ॥
सहु सूत्र शिरोमणि,
कल्पसूत्र सुखकार ॥
ते श्रवण सुणीने,
सफल करो अवतार ॥ २ ॥
सहु चैत्य जुहारी,
खमतखामणां कीजे ॥
करी साहामीवत्सल,
कुगति द्वार पट दीजे ॥
अठाइ महोत्सव,

चिदानंद चित्त लाई ॥
इम करतां संघने,
शासनदेव सहाई ॥ ४ ॥

॥ पद एकोतेरमुं ॥ राग सोरठ ॥
॥ क्या तेरा क्या मेरा,
प्यारे सहु पडाइ रेहगा ॥
पंखी आय फिरत दहुं दिशथी,
तरुवर रेन वसेरा ॥
सहु आपणे आपणे मारगतें,
होत भोरकी वेरा ॥ प्या० ॥ १ ॥

इंद्रजाल गंधर्व नगर सम,
डेढ दिनाका घेरा ॥
सुपन पदारथ नयन खुल्या जिम,
जरत न बहुविध हेरया॥प्या० २
रविसुत करत शीश पर तेरे,
निशिदिन ढाना फेरा ॥
चेत शके तो चेत चिदानंद,
समज शब्द ए मेरा॥ प्या०॥३॥



चोवीश जिनेश्वरना छंद.

॥ दुहा ॥

आर्या ब्रह्मसुता गीरवाणी । सुमति विमल आपो ब्रह्माणी । कमल कमंडल पुस्तक पाणी । हुं प्रणमुं जोडी जुग पाणी ॥ १ ॥ चोवीशे जिनवर तणा, छंद रचुं चोसाल । भणता शिवसुख संपजे । सुणता मंगलमाल ॥ २ ॥

॥ छंद जाति सवैया ॥

॥ आदि जिणंद नमे नरइंद स पुनमचंद समान मुखं ॥ समा मृत कंद टाले भवफंद मरुदेवीनंद करत सुखं ॥ लगे जस पाय सुरिंद निकाय भला गुण गाय भविक जनं ॥ कंचन काय नहि जस माय नमे सुख

थाय श्री आदि जिनं ॥१॥ अजित जिणंद दयाल मयाल विसाल नयन कृपाल जुगं। अनोपम गाल महामृग चाल सुन्नाल सुजानग बाहु जुगं॥ मनुष्य मेलीह मुनिसरासिंह अबीह नरीह गये मुगति। कहे नय चित्त धरी बहु न्नक्ति नमे जिननाथ न्नली जुगति॥ ॥ २॥ कहे संन्नवनाथ अनाथको नाथ मुगतिको साथ मिल्यो प्रन्नु मेरो। न्नवोदधिपाज गरीबनिवाज सबे शिरताज निवारत फेरो॥ जितारीको जात सुसेना मात नमे नर जात मिली बहु घेरो। कहे नय शुद्ध धरी बहु बुद्ध जिनावन नाथकुं सेवक तेरो॥३॥ अन्निनंदन स्वाम लीधे जस नाम सरे सवि काम न्नविक तणो॥ वनिता जस गाम निवासको गाम करे गुणग्राम नरिंद

घणो ॥ मुनीश्वर रूप अनोपम ऋप अकल स्वरूप जिनंद तणो । कहे नथ खेम धरी बहु प्रेम नमे नर पावत सुख घणो ॥४॥ मेघ नरिंद मलार विराजित सोवनवान समान तनु । चंद सुचंद वदन सुहावत रूपविगजित कीम तनु । कर्मकी कोरू सवे दुःख ठोरू नमे कर जोरू करी जगति । वंश इक्ष्याग विभूषण साहिब सुमति जिनंद गए मुगति ॥ ५ ॥ हंसपाद तुल्य रंग रति अर्ध राग रग अढीसें धनुष चंग देहको प्रमाण हे । जगतो दिणंद रग लाल केसु फुल रंग रूप हे अनंग जंग अंग केरो वान हे ॥ अंगको तरग रग देवनाथहि अजंग ज्ञानको विसाल रंग शुद्ध जाको ध्यान हे । निवारीए क्लेश संग पद्मप्रभु स्वामी धींग दीजीए

सुमति संग पद्म केरो जाण हे ॥ ६ ॥ जिणंद सुपास तणा गुण रास गावे ज्ञवि ज्ञास आणंद घणे । गमे ज्ञवि पास महिमा निवास पूरे सवि आस कुमति हणे ॥ चिहुं दिसे वास सुगंध सुखास ऊसास निःसास जिनेंद्र तणो । कहे नय खास मुनींद्र सुपास तणो जस वास सदैव ज्ञणो ॥ ७ ॥ चंद्र चंद्रिका समान रूप सेवसे समान दोढसो धनुषमान देहको प्रमाण हे। चंद्रप्रज्ञु स्वामी नाम लीजीये प्रज्ञात जाम पामीये सुख ठाम ठाम गामज समान हे ॥ महासेन अंग जात लक्ष्मणाज्ञिधान मात जगमां सुवास वात चिहुं दिसे ख्यात हे । कहे नय ठोरी तात ध्याइये जो दिनरात पामीये तो सुख सात छुःखको मी जात हे ॥ ८ ॥

ढोलो मुधफेन पिंम उजलो कपूरखंम अमृत सरस कुंम शुद्ध जाको तुंम हे। सुधावीजी नंद संत कीजीये कर्म अंत शुन्न नक्ति जास दंत श्वेत जाको वाण हे॥ कहे नय सुणो संत पूजीये जो पुष्पदत्त पामीये तो सुख संत शुद्ध जाको ध्यान हे॥ ए॥ सीतल सीतल वाणी घनाघन चाहेत हे नविकोककिसोरा। काक जिणंद प्रजासु नरिंद वली जिम चाहत चंद' चकोरा॥ विध गयंद सुचि सुरिंद सति निज कंत सुमेघ मयुरा। कहे नय नेह धरी गुण गेह तथाहु धावत साहेव मेरा॥ १०॥ विष्णु नूपको मह्हार जगजंतु सुखकार वंशको शृगारहार रूपको अगार हे। गोमी सवि चित्तकार मान मोहको विकार काम को-

धको संचार सर्व वेरी वार हे । आदयों संजमन्नार पंच महाव्रत सार उतारे संसारपार ज्ञानको भंमार हे। इग्यारमो जिणंद सार खम्गीजीव चित्त धार कहे नय वारोवार मोक्षको दातार हे ॥ ११ ॥ लाल केसु फूल लाल रति अर्ध रंग लाल उगतो दिणंद लाल लालचोल रंग हे। केसरीकी जीह लाल केसरको घोल लाल चूनमीको रंग लाल लाल पान रंग हे ॥ लाल कीर चंचू लाल हींगलो प्रवाल लाल कोकिलाकी दृष्टि लाल लाल धर्म रंग हे। कहे नय तेम लाल बारमो जिणंद लाल जयादेवी मात लाल लाल जाको अंग हे ॥ १२ ॥ कृतवर्म नरिंद तणो एह नंद नृमंत सुरेंद प्रमोद धरी । गमे दुःख दंद दीये सुखवृंद

जाको पद सोहृत्त चित्त धरी ॥ विमल जिनंद प्रसन्न वदन जाके सुन्न मन्न सुगंग परि । एमे एक मन्न कहे नव धन्य नमो जिनराज दिणंद सुप्रीत धरी ॥ १३ ॥ अनंत जिणंद देव देवमा देवाधिदेव पूजो ञवि नितमेव धरी वहु ञावना । सुर नर सारे सेव सुख कीजे स्वामी हेव तुज पीखे जेर देव न करुं हु सेवना ॥ सीहसेन अंग जात सुजसञ्चिधान मात जगमां सुजस ख्यात चिहुं दिशे व्यापतो । कहे नय तास वात कीजीए जो सुप्रञात निज होइ सुख सात कीर्ति कोम आपतो ॥ १४॥ जाके प्रताप पराजित निरवल ञूतल थइ ञमे ञानु आकासे । सोम्य वदन विनिर्जित अंतर स्याम वासीखेन होत प्रकासे । ञानु मही-

पति वंसे कुसय वोध न दीपत जानु प्रकासे । नमे नय नेह नितु साहिव एह धर्म जिणंद त्रिजग प्रकासे ॥ १५ ॥ सोलमा जिणंद नामे शांति होय गमोगमे सिद्धि होइ सर्व कामे नामके प्रज्ञावथे । कंचन समान वान चालीस धनुष मान चक्र प्रतिको नि- धान दीपतो ते सूरथे । चौद रयण समान दीपता नवय निधान करत सुरेंद्र गान पुण्यके प्रज्ञावथे । कहे नय जोमी हाथ अवहु थयो सनाथ पाइउं सुमति साथ शां- तिनाथके दिदारथे ॥१६॥ कहे कुंथु जिणंद दयाल मयाल निधि सेवकनी अरदास सुणो । जव नीम महार्णव पूर अगाह अ- थाह उपाधि सुनीर घणो । वहु जन्म जरा मरणादि विज्ञाव निमिस घणादि कलेस

घणो । अवतार कतार किपा पर साहिब सेवक जाणीए ते अपणो ॥१७॥ अरदेव सुदेव करे नर सवे सेव दुःख दोहग दूर करे। उपदेश घनाघन नीरझरे भवि मान समानस पूरितरे ॥ सुदर्शन नाम नरेसर अंगज भव्यमने प्रभु जास वसे । तस संकत सोग वियोग योग दरिद्र कुसंगति न आवत पासे ॥१८॥ नील कीर वंखी नील मागवलि पत्र नील तरुवर राजि नील नील नीलद्राख हे। काचको सुगोल नील इंद्रनील रत्नील पत्रनील चास हे ॥ जमुना प्रवाह नील भृंगराज पंखी नील जेहवो असोक रुख नील रंग हे । कहे नय तेम नील रागथे अतिव नील मल्लिनाथ देवनील जाको अंग नील हे॥१९॥ सुमित्र नरिंद तणो वरनंद सुचन्द्र वदन

सोहावत हे। मंदर धीर सवेन रहीर सु-
साम शरीर विराजित हे। कजलवान सुक-
ठपयान करे गुणगान नरिंद घणो। मुनि-
सुव्रत स्वामी तणो अभिधान लहे नय मान
आनंद घणो॥२०॥ अरिहंत सरूप अनो-
पम रूप के सेवक दुःखने दूर करे। निज
वाणी सुधारस मेघ जले भवि मान समान-
स भूरि रे। नमिनाथको दर्शन सार लही
कुण विष्णु महेस घरे जो परे॥ अब मा-
नव मूढ लही कुण सकर ठेरूके कंकर हा-
थ धरे॥२१॥ जादव वंश विभूषण साहिब
नेमि जिणंद महानंदकारी। समुद्रविजय
नरिंद तणो सुत उज्जल शंख सुलक्षण धारी॥
राजुल नार मूकी निरधार गये गिरनार
कलेस निवारी। कजल काय शिवादेवी माय

नमे नय पाय महाव्रतधारी ॥ २२ ॥ पार्श्व-
नाथ अनाथको नाथ सनाथ भयो प्रभु
देखतथे । सवि रोग विजोग कुजोग महा
दुःख दूर गए प्रभु धावतथे । अश्वसेन
नरेस सपुत विराजित घनाघनवान समान
तनु। नय सेवक वंछित पूरण साहिब अचि-
तव काम करी रमनु॥ २३ ॥ कुकमठ कु-
लंठ छलंठ हठी हठ भंजन जास प्रताप
विराजे । चंदन वाणीसू वामानंदन पुरु-
सादाणी विरुद जस गाजे । जस नामके
ध्यान थको सवि दोहग दारिद्र दुःख
महा सवि भाजे।नय सेवक वछित पूरण सा-
हिब अष्ट महा सिद्धि नित्य नीवाजे ॥२४॥
सिद्धारथ भूप तणा प्रतिरूप नमे नर भूप
आनद धरी। अचिंत्य सरूप अनोपम रूप